FUBLISHED BY THE DEFARTMENT OF PUBLICATIONS, SANSKRIF UNIVERSITY, VARANASI (INDIA).

PRINTED AT THE TARA PRINTING WORKS, VARANASI.

वाराणसेयसंस्कृतविश्वविद्यालयस्थ-सरस्वतीभवनपुस्तकालये

ख्रिस्तीय १७९१ तमवर्षात् १९५० तमवर्षपर्यन्तं सङ्गृहीतानां हस्तलिखितसंस्कृतग्रन्थानां

विवरणपञ्जिका

तस्या अयं

व्याकरणयन्थसङ्ग्रहात्मकः

दशमो भागः

वाराणसेयसंस्कृतिवश्वविद्यालयस्थ-सरस्वतीभवनाख्यपुस्तकालयहस्तलिखितग्रन्थविभागसंबद्धविद्वद्भिः सम्पादितः १८८६तमे शकाव्दे ।

NOTE

The Sarasvati Bhavana Library was established as a constituent part of the Government Sanskrit College, Varanasi, in 1791. Ever since this institution came into existence Sanskrit manuscripts have been acquired and preserved in it. Though there were a few catalogues of manuscripts already published in the past, in course of time, however, all of them became out-of-print and out-of-date on account of the number of manuscripts having increased manifold. Therefore, early in 1951 steps were taken towards preparation of a comprehensive catalogue of all the manuscripts acquired upto the end of the preceding year. The first four volumes of the thus prepared new catalogue of our manuscripts were published by March 1958. Then this Library merged with the Government Sanskrit College into the newly established Vārāṇaseya Sanskrit Viśvavidyālaya, and the work of compilation and publication of catalogues of manuscripts has been continued under the auspicies of this institution.

It will be observed that the pattern of this catalogue adopted by us in 1951 is substantially in accord with the form later approved for cataloguing of Sanskrit manuscripts by University Grants Commission.

Up till now we have published eleven volumes of such catalogues and the present one is volume X. It enlists altogether 2521 manuscripts of works on Vyākaraṇa, All the manuscripts described here have their titles arranged in an alphabetical order to facilitate reference, since in the existing condition we have not been able to arrange the titles in any standard order in the body of the catalogue.

Vārāņasī 11th Śrāvaņa 1886 Śakābda

Subhadra Jhā Granthādhyakṣa, Vārāṇaseya Sanskrit Visvavidyālaya.

हस्तिलिखितग्रन्थविवरणपञ्जिकायाः

· दशमो मागः

| क्रमर्थस्या | ग्रन्थनाम | अन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---------------|----------------------------|--------------------------------|------------------------------------------------------------------|
| ३७९२५ | प्रवोधचन्द्रिका . | वैजलभूपतिः | १–२८•्। |
| ३७९२६ | काशिका | | 8-001 |
| ३७९२७ | पद्मञ्जरी | हरदत्तमिश्रः | २-८४, १-१०७, २४-६८, १५३-१८१, १-७०, १-११५, १-३०, ३०-३२, १-१२०। |
| ३७९२८ | कारकादिविचारः | | ३। (गणनया) |
| ३७९२९ | समासादिविचारः | | ξl " |
| ३७९३० | परिभाषेन्दुशेखरटीका | | રા " |
| ३७९३१ | गणपाठः | | १–४१ । |
| ३७९३२ | लघुशन्देन्दु <u>शे</u> खरः | नागोजिभट्टः | २१-५९ । |
| ३७९३३ | " | | १६। (गणनया) |
| ३७९३४ | शन्दकोस्तुभः | | १–१४ । |
| ३७९३५ | लघुशब्देन्दुशेखर: | | ४४–६८, ७०–८१ । |
| ३७९३६ | प्रौढमनोरमा | | ३९। |
| ३ ७९३७ | महाभाष्यं सटीकम् | | प्र। |
| ३७९३८ | वैयाकरणभूपणसारः | कौण्डभट्टः | १। |
| १७९३९ | सारप्रदीपिका | | १४–२७ |
| ३७९४० | गणपाठः | गोवद्ध नः ? | १–९। |
| ३७९४१ | वृत्तिवादः | | ३-४, ७-१५ । |
| ३७९४२ | वे याकरणसिद्धान्तलघुमञ्जूप |) [| १-३, ३-१३ (=१३-१४), १६। |
| ३७९४३ | खण्डितपत्राणि | | ७६। (गणनया) |
| ३७९४४ | प्रक्रियाकौ मु दी | | १-४। |
| ३७९४५ | प्रक्रियाकौमुदी सटीका | रामचन्द्रः टी.विद्वलाचार्यः | ३-१८। |
| ३७९४६ | ,, | ,, | १-४३ । |
| ३७९४७ | व्याकरणमन्थविशेषः | | ९। (गणनया) |

| श्राकार: | पंक्ति- संख्या | श्रच्र- संख्या | | ग्राधारः | लिपिकाल: | पूर्णापूर्ण- विवेक: | विशेषविवरणम् • |
|--------------------------------------|-------------------|-------------------|---------|----------|----------|------------------------|---------------------------------------|
| १० - ३×४-= | ९ | ३० | दे. ना. | का. | १३४९ | पू० | |
| १० ' ५×४'६ | 9 | ३९ | " | " | | ,, | अष्टाध्यायीटीका, प्रथमाध्यायमात्रम् । |
| ११ [.] ६×४ [.] २ | ११ | ग्रं७ | ٠, |)7 | | अपू० | काशिकाव्याख्या । |
| १०°७×४°६ | २० | 8त | " | " | | " | |
| १०७×४४ | १९ | 8= | " | " | 7 | 22 | |
| ११ -६×४-९ | १२ | 88 | 33 | " | | 27 | |
| १०.६×८.त | 5 | ३२ | " | " | | पूर | |
| ११ [.] १ × ३ [.] ७ | ११ | पूप | 77 | " | | अपू० | |
| १० - ४×४.४ | १० | цo | ,, | " | | 77 | कारकप्रकरणस्य । |
| १०•६×४•५ | ११ | પૂ૦ | ננ | " | : | 77 | |
| १० ⁻ ३×४ [.] १ | હ | २८ | " | 77 | | 93 | स्वरसन्धिप्रकरणस्य । |
| ९. ₫ ×8. <u>\$</u> | ९ | २१ | 77 | " | | 9 3 | वै० सि० कौ० टीका। |
| १२ः≒⊻७ः६ | १० | ४= | 97 | 77 | | ,,, | |
| १० ⁻ ३×४ [.] ६ | 5 | ર ૪ | 33 | 77 | | 9 3 | |
| ९ -५×३-५ | = | ३१ | " | 77 | - | " | सारस्वतटीका १-६ प्रकाशाः। |
| १० [.] ५४४७ | २२ | ४७ | 23 | 25 | | 57 | प्रथमाध्यायात् पञ्चमाध्यायांशः । |
| १० [.] ६×४७५ | १२ | ४७ | 33 | 33 | | 77 | |
| १०×४ [.] २ | છહ | ς | " | " | | 77 | वौद्धार्थप्रकरणस्य । |
| विभिन्नः | 8 | ñо | वङ्ग | 37 | | " | |
| १०७×३:= | ११ | Sđ | दे. ना. | " | : | पूर | वैदिकभागः। |
| १० ° म×३ ° म | ९ | ३३ | " | " | १६३० | अपूर् | वैदिकभागस्य, टीका प्रसादः। |
| ₹ ○'≒×₹ <u>'</u> ७ | १३ | 84 | 75 | " | | पूर | स्वरभागस्य । |
| ₹६ ′७×३ ′५ | ९ | ७१ | वङ्ग | " | | अपू० | पाणिनीयभिन्नं च्याकरणं प्रतिभाति । |

| क्रमसंख्या | भ्रन्थनाम् | ब्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् | |
|------------------|---------------------------------------|------------------------------------------|------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|--|
| ३७९४= | प्रक्रियाको मुदीप्रसादः | विद्वलाचार्यः | न्छ । (गणनया) | |
| ३७९४९ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | भट्टोजिदीक्षितः | १-५,९(=१-३) १०-२९, ३१-४५, ७१-२२५, ५५-१२५, १२७-१७७, +१, ९३-९४, १६१, १६६-१६७, १७१। | |
| ३७९५० | शब्दरत्नभावप्रकाशिका | वैद्यनाथपायगुण्डे | १, ३-५६, १–३७, ==-९३, ९३-९६, ९=- ११=, १२१-१६५, १६७-१६=, १=०-३४४, ३४६-४१७। | |
| ३७९५१ | लघुशव्देन्दु शेखरः | नागेशभट्टः | १-४३, ७४-९६, ९६(=९६,९७), ९⊏-१५१, १⊏१-१⊏७, १९६-२०५, २५०-४०३, ४०५- ४२९, ४४२, ४४६-४⊏२, १६३ (=२२), ४⊏४-५९२। | |
| ३७९५२ | वृत्तिदीपिका | कृप्णसट्टः | १–२३। | |
| ३७९५३ | धातुपाठः | | १–२७। | |
| રહ ૧૫૪ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी- व्याख्या | जयकृष्णः | १–४८,५०। | |
| ર હજ્યૂયૂ | परिभाषेन्द्धशेखरः | नागोजिमट्टः | १-१८(=१८,१९),२०-५१,५१(=५१,५२),५३ | |
| ३७९५६ | कातन्त्रवृत्तिविवरणपञ्जिका | त्रिलोचनदासः | १–६६। | |
| ३७९५७ | शब्दरत्नभावप्रकाशिका | वैद्यनाथपायगुण्डे | १–२२। | |
| ३७९५८ | पद्मञ्जरी | ह्रद्त्त्तिमिश्रः | १-५५, १-१०३, १०६-११८, १-५९, १-३१, ३३-३४, ८६-१२७। | |
| ३७९५९ | पदचन्द्रिकावृत्तिः | | प्फ-रं१० (=११०,१११), १११-११६। | |
| ३७९६० | वैयाकरणभूषणसारदर्पणः | हरिवह्नभः | १–२५, ५६–२३९। | |
| ३७९६१ | वैयाकरणसिद्धान्तलघु- मञ्जूपा सटीका | | १–१०E İ | |
| ३७९६२ | वैयाकरणसिद्धान्तलघु- मञ्जूपाटीका | नागेशः टी. ऋष्णमित्रः | १-१नन, २५५-३१४ (=३१४,३१५), ३१६- ३१न (=३१न,३१९), ३१९-३न९ (=२न९), २९५ । | |
| ३७९६३ | वै. सि. लघुमञ्जूपाटीका | | २१-४१। | |
| ३७९६४ | महाभाष्यं सप्रदीपोद्योतम् | पतञ्जलिः टी. कैयटः नागी- जिभट्टस्च | २-=, १२, १४-४०, १०५-१४७, १९९- २४२, २९७-३३६। | |

| दे. ना. " | का. ;; | १⊏४ ७ १७९३ - | अपू ० " | समासतद्धितप्रकरणयोः । भावकर्मप्रक्रियान्ता । वै. सि. कौ. टी. टी. टी. । वै. सि. कौ. टी. । |
|--------------|----------------------------------------|------------------------------------------|---------------------------------------|---------------------------------------------------------------------------------------------------|
| 27 | " | | ,,, ,,, | वै. सि. कौ. टी. टी. टी. । |
| 33 | 77 | १७९३ | ,,, | |
| >> | | १७९३ | | वै. सि. कौ. टी.। |
| | ,, | | | |
| | " | | | |
| ,, | 1 | | पू० | |
| | 22 | | " | पाणिनीयः । |
| 33 | " | | अपू० | व्याख्या-सुवोधिनी,स्वरवैदिकप्रकरणयोः। |
| ,, | " | १८५३ | पू० | |
| ,, | ;; | १५३९ | ,, | १-६ पादाः। |
| ,, | " | | अपू० | वै. सि. कौ. टी. टी. टी. । |
| ,,, | ,, | १७३ २ १ <u>५</u> ३३ | ,, | अप्टाध्यायीटी. टी. । प्रथमनृतीयाध्यायांशा । |
| ,,, | 37 | १६४४ | ,, | स्वाद्यन्तिबवेकः । |
| 7,7 | ,, | | 33 | स्फोटवादान्तः। |
| ;; | " | | " | |
| 33 | " | | 27 | दी. कुञ्जिका । |
| ,,, | " | | ,, | |
| , , | " | | ,, | अ. १, पा. १, आ. २-३,५-६। |
| | 77 77 77 77 77 77 77 77 77 77 77 77 77 | 32 32 32 32 32 32 32 32 32 32 32 32 32 3 | , , , , , , , , , , , , , , , , , , , | १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ |

| कम संख्या | प्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | ं पश् रंख् याविवरण म् | |
|------------------|------------------------------------|--------------------|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|--|
| ३७९६५ | शव्द्रत्तभावप्रकाशः | | ३५-७६। | |
| ३७९६६ | प्रौढसनोरमा | | १६, २९, ३૨-४९, ૫૨-६७ (=६७-६⊏),६९- ⊏૫, ९१-१०२, १३०, १३२-१३७, १४७ (=११)-१७०, १-૫३, ૨-૪૪ (=१), ૨-૫૨, १-४, १-२७ (=२३૫), ૨-१૫, १७-૫૫ । | |
| ३७९६७ | छघुश व्दरत्नम् | हरिदीक्षितः | ३-२५, २०-४०, ७३-९९, ९९-१३६, १३६- १८४, १८९-२१६, २६-२७, ७२-७३। | |
| ३७९६⊏ | लघुश न्दे न्दु शेखरः | | २-९, १२-११२, ११५-१७९ । | |
| ३७९६९ | स्फोटचन्द्रिका | श्रीकृष्णः | १६-२० । | |
| ३७९७० | परिभापापाठः | | 8-81 | |
| ३७९७१ | परिभापाभास्करः | भास्क रः | १-४= (=४९), ४९ । | |
| ३७९७२ | परिभापेन्दुशेखरः | नागोजिभट्टः | १–७२ । | |
| ३७९७३ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | | १–४० । | |
| ३ ७९ ७४ | सारस्वतविवृतिः | <u>पु</u> ञ्जराजः | १–२३२। | |
| રહ િલ્યુ | महाभाप्यप्रदीपः | कैयट: | १, ३-१६, १-१३६, १-१०, १-२९, १-२५, +१, १-≒। | |
| ३७९७६ | शब्दकौस्तुभः | <u>'</u> | १-१५, १-२०, १-५। | |
| ३७९७७ | कातन्त्रवृत्तिटीका | दुर्गसिंह: | ५७–६७ । | |
| ३७९७८ | कातन्त्रचिचरणपञ्जिका | त्रिलोचनदासः | ⊏४-१००, १०२-१४१, १४३-१ ६० । | |
| ३७९७९ | परिभापेन्दुशेखरः | नागोजिभट्टः | २६-५७। | |
| ३७९८० | प्रक्रियाकौमुदीप्रसादः | श्रीविहल: | १-४१ । | |
| ३७९⊏१ | वैयाकरणसिद्धान्तकोमुदी | | २३-३७, ४५-४७, ५४, ८७-९६, ९८-१२८, १२८ । | |
| ३७९८२ | वै.सि. लघुमञ्जूपा सटीका | नागेशभट्टः | १–२५ । | |
| ३७९८३ | वै. सि. लघुमञ्जूपा | ** | १-२०, २२-३७, ३९-५८, ६०-६६ । | |
| ३७९८४ | कातन्त्रविवरणम् | पृथ्वीधरः | १–२, ४–१०४। | |
| ३७९८५ | कविकल्पद्र्मः सटीकः | | १–६५ । | |

| श्रादार: | पंच्छि- संस्वा | ष्रदर- संख्या | लिपि: | श्राधारः | लिपिकालाः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविषरणम |
|---------------------------|-------------------|------------------|---------|-----------|-----------------|------------------------|-----------------------------------|
| ሪ.≃×გ.გ | १२ | ઝ ય. | दे. ना. | फा. | | अपू० | यै० सि० काँ० टी० टी० टी० । |
| ९'¤×४'४ | ११ | ३७ | ,, | 22 | | 75 | यै० सि० फीं० टी०। |
| | | | | | | | |
| &.±×8.8 | v | ३७ | ,, | " | १दर्द | ,, | भाँडमनोरमाच्याग्त्या । |
| ९'=×४' १ | ११ | So | ,, | ,,, | | 3 7 | सुवन्तप्रकरणस्य । |
| ९७×४६ | ११ | ३० | " | " | | 35 | |
| ९'≒×५ | १० | ३७ | " | ,, | | पृ० | १-१२६ परिभाषाः । |
| १०७×४≔ | ११ | ક્ય | ,, | 27 | १=२१ | 27 | |
| ११'२×४'५ | 9 | 80 | " | 33 | १नन्ध | ** | |
| ११·६×४·१ | v | ३६ | 27 | 97 | १७४५ स. १६९० | 17 | उणादिप्रकरणस्य । |
| ८.=×۶.८ | १० | રપ્ | •• | ,, | 41. 1910 | ,, | आर्ग्यातान्ता । |
| १२:७×४:९ | १३ | ६१ | ,, | ,, | | अपूर | १, २, ६, ७, अभ्यायाः। |
| १ १'≒×४'१ | १३ | นูต | ** | ,. | 1 | ** | अ. १, ४-६ आ । |
| १०'६×२'= | 5 | ६१ | यङ्ग | ,, | | 27 | गृत्सु पष्टः पादः । |
| ११४४×२५ | Ę | ६२ | दे. ना. | ,,, | - | ,, | |
| 6.8×8.8 | ११ | ३८ | " | ,, | १८२७ | " | |
| \$0.5×8.8 | ११ | 88 | ,, | ,, | | Ãο | |
| १०°≒×४°६ | 9 | ર્ષ્ટ | ,, | ,, | | अपृ० | |
| १३:न×५:४ | y | પૂર્ | " | 1 " | | ,, | स्फोटप्रफरणप्, टीका-कुखिका । |
| १२'७×४' = | ९ | 80 | 77 | ,, | | ,, | |
| ११.४×8.0 | ११ | २३ | " | " | | , ,, | आख्याते १-= पादाः। |
| १३ ° ६ ×४°५ | 5 | ų,c | ١,, | ,, | | qo | धातुपाठोता । टीका कामधेन्वाख्या । |

| क्रम सं ख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---------------------|-----------------------------------|---------------------------|-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| ३७९८६ | , मध्यमनोरमा | | १–५७। |
| ३७९८७ | महाभाष्यप्रदीपोद्योतः | नागेशः | १, ३-४६, १-२, ५-५५, १-४, ६-११। |
| ३७९नन | प्रबोधचन्द्रिका | वैजलभूपतिः | १-११, १३। |
| ३७९८९ | प्रयोगसारः | वाहडाख्यशर्मा | १-५। |
| ३७९९० | काशिका | | ४०-४१, ४३-६०, ६२, ६४-६७, ७०। |
| ३७९९१ | शब्दकौस्तुभटीका | | १८। (गणनया) |
| ३७९९२ | गणपाठः | | २-४, ६-१४। |
| ३७९९३ | वैयाकरणभूपणसारः | कौण्डभट्टः | १–६४, ६४–६६, ६६–२६७ । |
| ३७९९४ | चिद्स्थिमाला | | १, ३-२९, २९-७३, ७३, <i>७-१</i> २९, १३१- २१४, २१६-२५⊏ । |
| ३७९९५ | बृहच्छव्दरत्नम् | हरिदीक्षितः | १, ३–५९, ६१–६७ । |
| ३७९९६ | कातन्त्रविस्तरः - | वर्द्धमानः | २-५०। |
| ३७९९७ | महाभाष्यप्रदीपोद्योतः | नागेशः | १–१५३, १५२–३६४, ३६४–३०८। |
| ३७९९८ | वै० सि० कौमुदीटीका | ज्ञानेन्द्रसरस्वती | ६५-२१९, २१९=(२१९-२२०), २२१-२२३, ४७४-५=०=(५=०,५=१), ५=२-६९५, १६-४=, ५५-६०, ६३-१००, २=२-३५४, ३७६-३९३, ४०२-५११। |
| ३७९९९ | सिद्धान्तरत्नाकरः | रामकृष्णमृहः | १-३१५=(३१५-३१७), ३१⊏-३४९ । |
| ३८००० | " | 77 | १–४५, २-४७, ८३-९८। |
| ३८००१ | भाषावृत्त्यर्थविवृतिः | सृष्टिधरशर्मा ़ | १–२२९ । |
| ३८००२ | महाभाष्यसिद्धान्तरत्नप्रकाशः ~ | 9 | १२-१५, २६-६५, म्म-१३२, ६, म-४२, १- ११९, १-३३ (=३४-३५) ३६-६६, १००- १२९, १३१-१९२, २-२९७, २-७४=(७४- ७५), ७६-७म, ११०-१४१ |
| ३८०.०३ | सारस्वतम् | अनुभूतिस्व- रूपाचार्यः | १, ३-१३१, १३३ । |
| ३५००४ | प्रक्रियाकोे मुदीप्रसादः | विद्वेलाचार्यः | १-६२, ५३-९३ + १, ९४-९६ + १, ९७- १२४, १२६ । |

| आकारः | पंक्ति- संख्या | श्रच्र- संख्या | लिपि: | श्राधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------------------------------|-------------------|-------------------|---------|------------|----------|------------------------|--------------------------------------------------------------------------------------------------|
| १२ [.] ७×४ [.] ९ | 91 | ४१ | दे. ना. | का. | १८४८ | पू० | मध्यसि० फौ० च्याख्या, सुबन्तान्ता। |
| १०.४×८. <i>६</i> | ११ | पुर | 22 | " | | अपू० | अ० १, पा० १, आ० १-२, पा० २, आ० ३ अन्ते भाष्यप्रदीपोऽपि । |
| ८.०×८.४ | १२ | 80 | 77 | 37 | १८४५ | " | |
| ₹%×8.8 | ۳. | २० | 55 | 57 | | 77 | |
| ሪ.ጸ×ጸ | ११ | ३३ | 33 | 33 | | " | अष्टाध्यायीटी० अ० १, पा० ३- ४ । |
| \$0.α×8.π | १० | રપૂ | 23 | " | | " | |
| १० <i>.</i> ०× <i>६.</i> ० | १२ | 8त | 77 | 22 | | " | |
| ११×४७ | 4 | ३≒ | 33 | " | | " | |
| ११.४० × ८.३ | 5 | ४६ | " | 37 | | " | लघुशञ्देन्दु रो खरटीका । |
| १० [.] ४×४ [.] ६ | 9 | 88 | 37 | 37 | | " | वै० सि० कौ० टी० टी०। |
| १३'न×४'६ | ९ | પ્રર | 25 | 55 | | " | |
| २२'२×५'२ | १० | === | ,, | 55 | १८५३ | 33 | महाभाष्यदी. टी. (कै. वि.) प्रथमाथ्या० प्र.पा. तृती. १, पा.२ आ. यावत् पूर्णः। |
| १० [.] २×३ [.] द | १० | ३७ | ,, | " | १=४९ | 5 5 | टीका-तत्त्ववोधिनी । |
| | | | | | | | |
| १२.त×८.८ | 5 | ३६ | 27 | 77 | | पूर | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी टीका । विभक्त्यथीविचारं यावत् । |
| \$0×8.8 | १० | ३९ | 27 | 53 | | अपू० | भ |
| १८८×३ | Ę | 58 | चङ्ग | 33 | | पू० | कलापटीका । |
| १२°=×४'९ | १२ | ठत | दे. ना. | ;; | | अपृ्० | प्रथमाध्यायस्य प्रथमपादस्य प्रथमाहि- करारभ्य चतुर्थाध्यायस्य चतुर्थपादे प्रथमाहिकं यावत् । |
| ९'२×४'३ | ٢ | રપ્ર |),, | " | १८१३ | 33 | |
| ₹0°₹×8°Ę | 9 | રય | 35 | ,,, | | 55 | |

| ; | क्रमसंख्या | प्रन्यनाम | प्रन्यकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् | |
|---|------------|---------------------------------------|---------------------------------------|-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|--|
| | ३⊏००५ | अप्टाध्यायी | पाणिनिः | १–२१, २६–७= । | |
| | ३५००६ | बृह च्छव्दरत्नम् | हरिदीक्षितः | १-१४, २-२१, २७, २८-३०७, २-१३। | |
| | ३८००७ | कातन्त्रविवरणटीका | | रं–११७। | |
| | ३८००८ | आख्यातवृत्तिटिप्पणी | मोत्तेश्वरः | १-१५, १७-७९, =१-== । | |
| | ३५००९ | अप्टाध्यायी | पाणिनिः | १–११। | |
| | ३८०१० | रत्नार्णवः | कृ ष्णमित्रः | २–७३। | |
| | ३⊏०११ | सुवोधिनी | जयकृष्णः | ३–४४ । | |
| | ३८०१२ | सिद्धान्तसुधानिधिः | | २-११, २-४१, १-१३, १५-२६ । | |
| | ३८०१३ | चन्द्रकला | | २–५९। | |
| | ३८०१४ | कलापपरिशिष्टप्रवोधः | गोपीनाथः | १–९२। | |
| | ३८०१५ | मु ग्घवोधः | | २-१२०, १२०-१५२, १५२, १५३≔(१५३, १५४), १५५-१६७, ३२⊏। | |
| | ३८०१६ | धातुपाठः | | २-३०, ३०-३२। | |
| | ३⊏०१७ | कलापसूत्रव्याख्या | | १–२९, १। | |
| | ३८०१८ | कलापसूत्रम् | | १, १–९। | |
| | ३८०१९ | महाभाष्यं सप्रदीपम् | पतञ्जलिः प्रदीपकारः–कैयटः | १–१८, १–२२। | |
| | ३८०२० | ,, | " | १–२२। | |
| | ३⊏०२१ | , , , , , , , , , , , , , , , , , , , | , , , , , , , , , , , , , , , , , , , | १-३६, १-२९, १६१-१७८, १-९२, १-७६, १-८८, १-३७, १-११५, १-१३०, १-१६, १८-८६=(८६,८०), ८८-१९६, १-१५३= (=१५३, १५४-१६३) १६४-१९६, ११६- २११, १-३३, ३३-१०७, २-९३। | |
| | ३८०२२ | वाक्यपदीयं सटीकम् | भर्तृहरिः टी० हरिवृपभः | . १०-मॅ० । | |
| | ३८०२३ | . ,, | भर्तृ हरिः टी० पुण्यराजः | १-४२, १-४२, १-३७, र-१७, १७-२१, १-२६। | |
| | | | | _ | |

| श्राद्याः | ंचिः ग्रम् | श्रद्धाः हिस्स | े जिवि: | त्राभार | লিবিছাল: ' | पूर्त दुर्ध- विवेडः | वरोधविवरणम् |
|------------------------------------|-----------------|-------------------|-------------|---------|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|------------------------|--------------------------------------------------------------|
| ₹0.5×2 € | ¥ | ? c | दे. ना | ग. | १९२८ | अपृ० | |
| 4×44 | १्प | , Sc | •• | •. | | • • | |
| १ १. २×३.३ | Ę | 84 | ; ••• | | | ; * | |
| ९. ६ × | े च्या | 48 | ** | | १४६६ | 23 | |
| ९७ ×४२ | = |] \$q_ | ** | | : | 77 | |
| ११:=×४:७ | १० | 39 | •• | | | •• | वै० मि० को० टीका |
| १२ [.] ६×४ [.] ९ | 1 82 | ६२ | 1 | | | ,• | वै० सि०को०दी०,स्वस्वदिकत्मण्ड |
| १२'३×४'⊏ | २० | ડેર | | | 1 | •• | महाभाष्यदीका । |
| १२७×४७ | १० | yo | ., | | | ** | राव्देन्दुअंखरदीका, कारकप्रकरणस् |
| १२:६ × ३:३ | 3 | ४१ | वद्ग | | , , , | •• | नामप्रकरणम् (क० प० टी०) |
| १२ [.] ६×४ [.] ९ | و | SA | •• | ,, | a de la companya de l | •• | |
| ==× €;= | Ę | =,६ | •• | •• | | ,• | |
| १०'९× ३ '२ | ្ រុំ | દપુ | | •• | Toronto with the control of the cont | •• | अन्तिमं पत्रं भगानन्दरुत्तरारकाराधे निर्णयस्य । |
| १२.७ X इ.च | । ७ | ် မွေး | •• | •• | | •• | प्रथममेत्राद्भितं पत्रं कळारमृत्रच्या स्थानरूपं । |
| (२ '=×६ | १ २ | યુલ | इ. ना. | ,. | | 7* | |
| १६ × ६५. | ે ફ ્યું | 4= | | •• | veni v | •• | |
| १६४६५ | , &c | 46 | •• | •• | र≈ऽप | ** | |
| 3 × 1. É | 40 | ८ ६ , | | •• | १९३२ | | प्रथमराण्डम् । टी० प्रकाशः |
| 19 | 1 | # * | | | - | •• | व्यास्था व्यास्थाति । |
| [3×8.5 | Ę | 33 | | •• | १९३२ | •• | डिनीय नाण्टम् |

| ļ | क्रमसंख्या | प्रन्यनाम | प्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याबिवरणम् | | |
|---|----------------|-------------------------|---------------------------------------|----------------------------------------|--|--|
| | ३८०२४ | वाक्यपदीयं सटीकम् | મર્રુદ્ધરિ: ટી. દ્ રિ વૃષમઃ | १–४, १–५१। | | |
| | ३⊏०२५ | " | भर्वेहरिः | १–१२, ५५ । | | |
| | ३⊏०२६ | 27 | भर्तृहरिः टी. पुण्यराजः | १–३५ । | | |
| | ३८०२७ | " | 55 | १–३०, १–११। | | |
| | ३८०२८ | " | " | १-१३, १-१५५ । | | |
| | ३८०२९ | " | भर्तृ हरिः टी. हरिवृपभाचार्यः | १–३, १–३२, १–९ । | | |
| | ३⊏०३० | वाक्यपदीयम् | भतृ हरिः | १-१० (=१०, ११, १२, १३, १४) १५- ४९ । | | |
| | ३⊏०३१ | " | " | 8-81 | | |
| | ३८०३२ | सिद्धान्तकौमुदी | | २–१६। | | |
| | ३५०३३ | धातुरत्नमञ्जरी | | १–३२+१। | | |
| | ३८०३४ | मध्यसिद्धान्तकौमुदीटीका | | २–५, २–५, ⊏ | | |
| | ३८०३५ | वै० सिद्धान्तकौमुदीटीका | | २-७, ११-१=। | | |
| Į | ३८०३६ | मध्यसिद्धान्तकोमुदी | वरदराजः | ९२। (गणनया) | | |
| } | ३⊏०३७ | " | " | १–१८ । | | |
| 1 | ३ ८ ०३८ | 27 | | ९–४२, ४४–४९ । | | |
| | ३⊏०३९ | " | | १२–१७, १७–२१ । | | |
| | ३८०४० | धातुपाठः | | ३। (गणनया) | | |
| | ३⊏०४१ | गणपाठ: | | २–७। | | |
| | ३८०४२ | वै० सि० कौसुदीटीका | | ७–१९। | | |
| | ३८०४३ | धातुपाठः | | ७। (गणनया -) | | |

| श्राकारेः | पंक्ति- संख्या | | लिपिः | आवारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेक: | विशेषविवरणम् |
|------------------------------------|-------------------|-------|--------|---------|----------|------------------------|--------------------------------------------------------------------------|
| १३.४×८. <i>५</i> | v | 88 | दे.ना. | का. | १९३२ | अपू० | नह्यकाण्डं, टीका प्रकाशः |
| १३×४ : १ | v | 8મ | " | " | | 77 | ५० श्लोकतः शक्तिव्यापारभेदोऽस्मि- न्नितित्र्याख्यापर्यन्तम् । |
| १०°≒×४°५ | 5 | પૂર | " | " | | 77 | ५५ रलोकतः २३३ रलोकान्तम् । द्वितीयकाण्डम् । |
| १० [.] ५×४:६ | 5 | ૪ર | ,, | " | | " | द्वितीयकाण्डम् , म्पू श्लोकतः २३४ श्लोकान्तम् । |
| ११×४:= | v | ३० | ,, | " | १९२४: | पू० | द्वितीयकाण्डम् । संख्याविच्छेदेऽपि प्रन्थः पूर्णे एव । |
| १३ [.] १×४ [.] २ | Ę | Йo | ,, | ,, | १९३२ | " | व्रह्मकाण्डम् । टी० प्रकाशः |
| ११×४°६ | 4 | ३९ | " | ,, | | अपू ० | काण्डद्वयम्, तृतीयकाण्डस्यापि वहवः रुळोकाः सन्ति । |
| १३ [,] ३×५ [,] ६ | १० | ४३ | " | ,, | | पू० | प्रथमकाण्डम् |
| १०×४ : ५ | ९ | રુષ્ટ | " | ,, | | अपू० | वैदिकप्रकरणम् |
| ६ॱ२×९७ | १३ | 28 | " | >> | | 77 | |
| ११×४७ | v | ३० | ,, | 57 | | ,,, | |
| ११×४ ° = | 5 | રપૂ | 37 | ,, | | " | |
| ९ ⁻ ६×४ ⁻ २ | 9 | २६ | 37 | ,, | १७९९ | ,, | |
| ९×३·९ | ٩ | 80 | " | " | | 77 | |
| १०°५×४७ | १० | ४१ | , נכ | " | | 77 | तिङन्तप्रकरणम् |
| ९'म×४'६ | १३ | Йo | 37 | " | | ,, | ,,, |
| ११५×२२ | 3 | ३४ | 77 | " | | 33 | |
| v°∉×v | ی | २० | 27 | " | | ,, | |
| ११: ३×३:९ | 5 | ४९ | ,, | ,, | | 77 | टीका-तत्त्ववोधिनी |
| ६.०.×८.≾ | 8 | १६ | " | } >7 | | ** | , |

| | कमसंख्या | ग्रन्थनाम | मन्यकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|--------------|---------------------------|----------------------------------|----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| | १८०४४ | अप्टाध्यायीपाठः | | १–३ । |
| | ३८०४५ | अधध्यायी | | १४ । (गणनया) |
| | ३⊏०४६ | घातुरूपाव ली | | नक्ष्म। " |
| | ३८०४७ | कातन्त्रवृत्तिविवरणपिङका | त्रिलोचनदासः | ३–७६, ७=–९२। |
| | ३८०४८ | " | " | १-५२। |
| | ३⊏०४९ | 55 | " | २-११, १३-२६, र⊏-१२⊏, १३१-१५५ +२ । |
| | ३⊏०५० | वै० सिद्धान्तमञ्जूपा | नागेशः | ३-६, १६-२६, ⊏६-११६, ११९-१४७, १४७-१४≒, १४⊏-१७४। |
| | ३८०५१ | वै० सि. मञ्जूपान्याख्या | वैद्यनाथपायगुण्डे | १–२०, ४२–५० । |
| | ३८०५२ | वैयाकरणसिद्धान्तकोमुदी | | ३०-३३, ३६-३९। |
| | ३⊏०५३ | सारस्वतम् | | २५। (गणनया) |
| | ३८०५४ | मुग्धवोधः | वोपदेवः | १, ३-३९, १-५, १-१५, १७-३२, ३४, १- ४०, ४२-४९, ४०-४७, ५६-६≒+२। |
| | ३८०५५ | संक्षिप्तसारः सटीकः | क्रमदीरवरः टी.का. गोपीचन्द्रः | १–१९०, १९६+१ । |
| | ३८०५६ | काशिका सटीका | वासनजयादित्यौ टी. हरदत्त्तिभः | १-१न्दर, ३-९९, १-१६न, ३६-१६३, १- १३९, १-१९९, १-१२४, १-११४। |
| | ३८०५७ | परिभापेन्दुशेखरः | | १, ३-९, ११-३३। |
| | ३८०५८ | छ घुशव्देन्दुशेखरः | | १-मर। |
| | ३८०५९ | धातुरूपावली | | ९४४-९४६, १००२-१००४, १००६-१०५५, १०५७-१०७७, १०च्य-१०च्६, १०च्च, ११०१, ११०३-११०च, १११०-१११४, १११६-११३५, ११३७-११५९, ११६१- ११६४, ११६६-१५२३। |
| | ३५०६० | <u>धातुवृत्तिः</u> | सायणः | १६३-१६५ । |
| | ३८०६१ | 27 | | १–११३। |
| | ३८०६२ | प्रक्रियाको मुद् | | मम-१०० । |
| _ | ३५०६३ | सारस्वतप्रक्रियां | | ७७। (गणनया) |

| त्राकारः | वंकि- संस्या | श्रच् र- संख्या | लिपि: | श्राधारः | लिपिकाल: | पूर्णापुर्ण- विवेक: | विशेषविवरणम् |
|------------------------------------|-----------------|---------------------------|---------|------------|----------|------------------------|--------------------------------|
| \$ ∘×8.8 | ११ | ३६ | दे.ना. | का. | | पू० | नागेशभट्टपर्यालोचितभाप्यसम्मतः |
| मध्×३°६ | १० | ३४ | 77 | 33 | | अपू० | |
| १२७×४५ | v | ३५ | वङ्ग | " | | ,, | |
| १० . ८×३.८ | હ | પુર | दे.ना. | " | | 5 7 | |
| ११ [.] २×३ | و | પૂપૂ | " | " | १५३७ | पू० | छत्सु षष्ठगादान्ता । |
| १ १ .६×३.४ | ६ | ४१ | " | 5 7 | | अपू० | |
| १२७×४°९ | १३ | યૂલ | ,, | 55 | १८४५ | ,, | |
| १२ [.] ७×५ | २२ | જ | " | " | | ,, | न्याख्य ा क लाख्या |
| १० [.] १×४.६ | १२ | ४१ | " | " | | " | |
| १२ [.] ६×३ [.] ६ | ६ | ક્ષ્ય | वङ्ग | " | | " | |
| ११×३·५ | યુ | ३६ | 37 | " | | " | |
| १३×५ | 4 | 80 | " | " | | 33 | |
| १२ [.] २×६ [.] २ | १४ | ६० | दे. ना. | " | | " | टीका-पद्मञ्जरी |
| \$ ∘×8.8 | 9 | २९ | 77 | " | | 27 | |
| १३.८×८.८ | 9 | રૂપૂ | ,, | " | | " | |
| १२·૫×૪·६ | 9 | ३७ | 77 | 77 | | " | |
| | | i | | | | | |
| १० . ⊏×४.४ | १२ | ३८ | ננ | " | | " | |
| १३ [.] ६×५.२ | ११ | &ત | " | ננ | | 73 | |
| 88.8×8.8 | ९ | ४६ | 33 | " | | ,, - | |
| ११.४×8.5 | ११ | 48 | वङ्ग | ,, | | 53 | |

| क्रमधंख्या | ग्रन्थनाम <u>्</u> | ग्रन्थकारनाम | पश्रसंख्यानिवरणम् • |
|---------------|--------------------------------------|--------------------------|------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| ३८०८४ | वैयाकरणभूषणसारच्याख्या | | ९४-९७,९९,१०१, १३४-२०१=२०२-२३०, २३०-२३१, २३१-२०७=३०म-४४५ |
| ३८०८५ | धातुरूपावली | काशीनाथः | ५३४। (गणनया) |
| ≹⊏०⊏६ | " | | द३६। ,, |
| ₹ ದಂದ⊘ | , ,, | | ६३७। ,, |
| ३८०८८ | तत्त्वबोधिनी | | १३-३४, ४७-५६, ५९-१४७। |
| ३८०८९ | हरिनामामृतव्याकरणम् | जीवगोस्वामी | १–१८, २०–४०। |
| ३८०९० | धातुपाठः | | १–११। |
| ३⊏०९१ | तत्त्ववोधिनी | | १-१५०+१। |
| ३⊏०९२ | धातुरूपावली - | | ३०६। (गणनया) |
| ३८०९३ | " - | | तिंग् भे |
| ३८०९४ | " | | ९२। " |
| ३८०९५ | महाभाष्यसूक्तिरत्नाकरः | शेपनारायणः | १-९४, १-४५, १-५६, १-६७, २-११०,११०, ११५-१९९, ११०-११३, २-९२, ९४-१०९, १११-१२७, २-५३, २-१०७, १-१३,१५-२५। |
| ३८०९६ | सिद्धान्तचन्द्रिका | | १-६७+१। , |
| ३८०९७ | सारस्वतप्रक्रिया | अनुभूतिस्वरूपा- चायेः | १-११, ११-४६, ४⊏-५६ । |
| ३८०९८ | " | ,,, | १२, १४-३५। |
| ३८०९९ | काशिका | जयादित्यः | १-९१, र-१२६, १-१४३। |
| ३८१०० | धातुरूपावली | | ५१८। (गणनया) |
| ३८१०१ | स्फोटविचारः | | 8-81. |
| ३८१०२ | सारस्वतप्रक्रिया | | २६। (गणनया) |
| ३⊏१०३ | 33 | अनुभूतिस्वरूपा- चायः | ३१-५६, ५९-७८, ८०-१०३। |
| ₹⊏१०४ | ल्घुसि द्धा न्तकौ मुदी | | १–१७। |

| श्राकार: | पंकि- संख्या | श्रद्धर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकाल: | पूर्णापूर्ण- विवेक: | विशेषविवरणम् |
|-------------------------------------|-----------------|--------------------|--------------|------------|----------|------------------------|-------------------------------------|
| ११×४°६ | 9 | ३२ | दे. ना- | का• | | अपू० | 1,77 |
| १२ [.] ६×४ [.] ९ | ९ | ३४ | " | " | | , 37 | कीटदंष्टा |
| १२' - ×४'- | 5 | ३४ | वङ्ग | ,, | | 17 | |
| १२७×४°९ | 5 | ३३ | दे. ना. | 55 | | 7 7 | |
| ११ [.] २×४ [.] ६ | ११ | ३४ | " | " | | ,, . | सिद्धान्तकौमुदीटीका |
| ११ [.] १×४ [.] २ | 5 | ફપૂ | ,, | ,, | | ,, | समासप्रकरणम् |
| ९ . न×४.६ | १३ | ४१ | " | . ,,, | - | ,, | |
| १२×४ [.] ६ | 9 | ३९ | 77 | 27 | | ,,, | |
| १३×४ [.] ६ | 4 | ४३ | वङ्ग | " | | " | (बै० सि० कौ० टीका) |
| १२ [.] ६×४ [.] = | 9 | ३६ | , | " | | ,,, | |
| १२५×५ | 5 | ४० | ,, | " | | ,, | |
| १३×५ | ११ | પૂહ | ∣दे. ना. | 3 7 | १८३७ | 77 | |
| | | | | | | | |
| १० [.] ६×४.६ | ११ | २७ | ,, | ,, | | ,, | |
| ५ .८×४.५ | v | ३० | ,, | ,, | | पू० 🕸 | आख्यातप्रक्रियातः कृद्न्तप्रक्रियाः |
| 0.47.4445 | . | | | | | | |
| १० [•] ३ ×५ [•] २ | १० | ३२ | " | ,,, | १८५३ | अपू० | |
| ९.ग×८.५ | 9 | ३६ | " | " | १८३८ | " | १, ३-४ अध्यायाः, अष्टाध्यायीटीका । |
| १२ [.] ७×५ | ٩ | ३० | 33 | 33 | | " | |
| ११'४×४'५. | १३ | ३६ | " | 33 | ; , | te | |
| ९•म×४७५ | १० | २७ | " | ,, | | 77 | |
| ₹0°₹×8″4 | ९ | ३६ | ,, . | " | १६५१ | " | |
| ξ≒×γ | 4 | २० | 77 | | | 35 | |

| 3 | कमसं स् या | प्रन्थनाम | प्रत्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|-----------------------|----------------------------|---------------------|--------------------------------------------|
| | ३८१०५ | पट्कारकविचारः | रत्नपाणिः | १–११ । |
| | ३⊏१०६ | सारस्वतप्रक्रिया | | १९–३१ । |
| | ३८१०७ | ,, | | ४–५, ११–२⊏, ३०–४० । |
| | ३८१०८ | कातन्त्रवृत्तिविवरणपश्चिका | त्रिलोचनदासः | ३१। (गणनया) |
| | ३८१०९ | शब्दानुशासनवृत्तिः | हेमचन्द्रः | १-१२, १२-४९ । |
| | ३⊏११० | वैयाकरणसिद्धान्तकोसुदी | | १-१म । |
| | ३⊏१११ | वृत्तिदीपिका <i>•</i> | रघुनाथभट्टसुतः | १, ४३ । |
| | ३⊏११२ | कातन्त्रपरिशिष्टवृत्तिः | श्रीपतिदत्तः | १, १३० । |
| | ३⊏११३ | धातु वृत्तिः | सायणः | १–१९५, १–४५ । |
| | ३८११४ | तन्त्रप्रदीपः | मैत्रेयरक्षितः | १-१७, १-१५, १-३४, १-१९। |
| | ३८११५ | काशिकाविवरणपश्चिका | जिनेन्द्रबुद्धिपादः | १, १–२६, । |
| | ३⊏११६ | 35 | 77 | १–२८ । |
| | ३⊏११७ | 57 | 99 | १–५, ७–२५, २७। |
| | ३८११८ | ,, | 95 | ५-२ <i>७,</i> २९-४१ । |
| | ३⊏११९ | 25 | ,,, | १-५ (=६), ७-१५१+१। |
| | ३⊏१२० | काशिकावृत्तिः | • | १-१४, १-१०। |
| | ३⊏१२१ | 33 | | १-१९ । |
| | ३⊏१२२ | 33 | | १-१९ । |
| | ३⊏१२३ | रूपावतारः | धर्मकीत्तिः | १–१६, १-३३ । |
| | ३⊏१२४ | प्रक्रियाकोसुद्री | रामचन्द्राचार्यः | ३-५, २०-६३, ६५-११२, २३०० । |
| | ३८१२५ | 55 | | १–९, ⊏–२२, २५–६६, ६६ (=६७), ६⊏-दर्भ । |
| | ३८१२६ | प्रक्रियाकौमुदीप्रसादः | | ५४। (गणनया) |

| श्राकारः | पंकि- संख्या | ग्रचर- संख्या | लिपि: | श्राघारः | लिपिकालाः | पूणीपूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|--------------------------------------|-----------------|------------------|---------|----------|------------------|----------------------|-------------------------------------------------|
| ९.स×८.८ | 5 | ३० | दे. ना. | का. | १९२१ | पू० | पट्कारकप्रतिच्छन्दकंवा । |
| १० [.] ६×४ [.] २ | 5 | ३३ | " | " | | अपू० | |
| ९ ፞፞፞፞፞፞፞፞፞፞፞፞፞፞፞፞፞፞፞፞፞፞፞፞፞፞ዿ | \v_s | २५ | ,, | 33 | १५७५ | 33 | |
| १२:२×२:९ | ६ | ३६ | ,, | " | | " | |
| १४×६•७ | १५ | ४६ | ,, | " | सं. १९३९ | पू० | अ० ८, पा० १-४। प्राकृतव्याख्या । |
| १३ [.] ७×५ [.] ३ | १६ | ৩६ | ,,, | ** | | अपू० | पत्रत्रये टिप्पण्यपि । आदितो हल्- सन्ध्यंशा। |
| १२ [.] ६×४ [.] ६ | ٩ | ३६ | " | ,, | | ,, | पत्रैकदेशे "प्र०" "का०" इति छिखित- मस्ति । |
| १२ : =×३:९ | 9 | ४९ | . वङ्ग | " | श. १७१६ | " | |
| १२'४×४' न | | રૂપ્ | दे. ना. | 33 | | " | भ्त्राद्यदाद्गिणौ । |
| १४'२×३'४ | ६ | ६९ | बङ्ग | " | | " | प्रथमाध्यायस्य द्वितीयपादान्तः । |
| १३ : ५×३:२ | ६ | ६६ | ,, | " | | .पू० | अष्टमोऽध्यायः । १ सं-पत्रं द्विर्लिखितम् । |
| १४ [.] ४ × ३ | ٩ | ७९ | " | ,, | श. १६४५ | " | सप्तमोऽध्यायः। |
| १३ . ७×३.८ | ی | ৩২ | " | ,, | | अपू० | सप्तमोऽध्यायः। |
| १ ४'५ × ३'३ | ६ | ६० | ,, | " | | " | द्वि० अ० प्र० पा०। |
| १३ [.] ७×३ [.] ६ | \o | ६० | दे. ना. | " | १५२१ | ,, | प्रथमाध्यायः । न्यासापरनामधेया । |
| १३ [.] =×३.२ | ६ | ६४ | वङ्ग | " | | पू० | अप्टमाध्याये गोपादः। |
| १४ [.] १ × ३ [.] १ | ų | યુર | 27 | " | | 33 | सप्तमोऽध्यायः । |
| १४°२×३ | પૂ | તૈક | 37 | 27 | | " | अप्रमोध्यायः। |
| १० . ० × ४.४० | १० | 80 | मै० | " | | अपू० | अष्टाध्यायीवृत्तिः । १-६ अध्यायाः । |
| १० [.] ६×३ [.] ४ | v | ४३ | दे. ना | " | सं० १५३० | 22 | सुवन्तप्रकरणम् । |
| ११४×४५ | 4 | २९ | " | " | | 33 | |
| ११ '=×8'4 | १३ | ६१ | 77 | " | 4 | 23 | 55 |

| क्र मसं ख्या | प्रन्थनाम | प्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् | |
|---------------------|--------------------------------------------------------|--------------|----------------------------------------|--|
| ३⊏१२७ | प्रकियाकौमुदी | | १–रप्, ३१–३२ । | |
| ३८१२८ | मध्यसिद्धान्तकौमुदी [*] | वरदराजः | १०-९२ (९२=९३) ९४-१४६,१४५-१७६ 🕂 १ | |
| ३८१२९ | सुवोधिनी | जयकृष्णः | १–६= । | |
| ३८१३० | तत्त्वद्योधिनी | | ५२। (गणनया) | |
| ३ ८१ ३१ | 77 | | २, ४-४५ । | |
| ३⊏१३२ | अप्टाध्यायी | | १,३-४,७, ९-४⊏, ५४-५९, ६२-६७ + १ । | |
| ३८ ३३ | वैयाकरसिद्धान्तकौ मुदी लघुशब्देन्दुशेखरसहिता | | ર–੩, પ્–પૂર, પૂજુ–પૂપ્, પૂર, ૧૦३–૧૪૧ ા | |
| ३८१३४ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी- विलासः | भास्करः | २७५, ७5१३४,१३६-२०४,२०६-२१६। | |
| ३⊏१३५ | शन्दकौस्तुभन्याख्या | | २–३६, ५०–५९। | |
| ३⊏१३६ | रूपमालिका | रङ्गदेवः | १–१९, २१–२५, ३०। | |
| ३८१३७ | सारस्वतम् | | १–२,+२, ५–२९। | |
| ३८१३८ | लघुश च्देन्दु शेखरटीका | | २–३०, ४३, १४६–१४९ । | |
| ३≒१३९ | परिभाषेन्दुशेखरटीका | | ६०-६२, ६२-६३। | |
| ३८१४० | सिद्धान्तचन्द्रिका | | १–२२। | |
| ३८१४१ | अप्राध्यायी | पाणिनिः | 8-701 | |
| ३८१४२ | शब्दरत्नम् | | १–३४। : | |
| ३ ⊏१४३ | अध्यायी | | १–१०, २०, २२–३४, ३६–६६। | |
| ३८१४४ | यमचातुर्विध्यनिर्णयः | | ३। | |
| ३ ८१४५ | <u>ृ्वा</u> क्यपदीयप्रमेयसङ्ग्रहः | <u> </u> | १६। (गणनया) | |
| ३⊏१४६ | निर्द्धारणपष्ठीविचारः | | १,४। | |
| ३८१४७ | रप्रत्याहारमण्डनम् | लन्मणपाठकः | ३–⊏ । | |
| ३८१४८ | इल्ङ्यादिसूत्रविचारः | मन्त्रुरामः | १, १-४। | |

| श्राकारः | पं कि - संख्या | श्रद्धर- सं स् या | लिपि: | आधारः | लिपिकाल: | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------------------------------|--------------------------|-----------------------------|---------|-------|----------|------------------------|--------------------------------------------------|
| म:२×३'५ | <u>ہ</u> | ३२ | दे. ना. | का. | | अपू० | छद्नतप्रक्रिया। |
| ९ . ३×९.८ | 9 | ४१ | ,, | 22 | | ** | |
| द'द×३' ५ | v | २५ | ,, | " | | पू० | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदीटीका स्वरवैदिकखण्डयोः । |
| ९'२×४'९ | ११ | રૂપ | ,, | 77 | | अपू० | वैयाकरणसिद्धान्तकोमुदीटीका । सन्धिप्रकरणस्य । |
| ९પ્×૪પ | 5 | ४६ | ,, | 53 | | ,, | ,, |
| ७'४×३'२ | ی | २६ | 37 | ,, | | ** | पाणिनिसूत्रपाठः । |
| ११'≒×४'२ | ११ | પૂર | " | " | | ,,, | |
| १०×४.८ | १० | 38 | 77 | " | | ,,, | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदीटीका । |
| १० ⁻ ६×४ ⁻ = | १० | રયૂ | 97 | " | | ,, | |
| ९.७× <i>३</i> .८ | v | ३५ | ,, | " | | ,, | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदीस्थशव्दानाम् |
| १०×४ [.] १ | १० | ३० | ,, | ,, | | ,, | तद्धितप्रकरणान्तम् । |
| १ १ [.] ३×४.८ | १० | ४७ | " | " | | " | |
| १०°५×४७ | 9 | રૂપૂ | " | ,, | | , | |
| ९:१ ×४ | १४ | ३३ | ,, | " | | पू० | आख्यातप्रक्रियान्ता । |
| 5°5×3°5 | 9 | ३२ | " | 37 | | ,, | पाणिनिसूत्रपाठः। |
| १०°३×५ | ११ | ३२ | " | " | | अपू० | वै० सि० कौ० टी० टी० । |
| ५ ×३ ° ५ | 5 | २५ | 37 | 33 | | ,, | पाणिनिसूत्रपाठः । |
| १० [.] ८×४.८ | २२ | ६२ | " | ,, | | ,, | |
| ९ ॱ७ × ३ ॱ ⊏ | १५ | પ્રર | , | 37 | | 7,7 | |
| ९×४ | १२ | ४६ | " | ,, | सं. १७१४ | ,, | प्राद्युपसर्गवोधकखण्डनरहस्यख्र । |
| १०'७×४ '६ | १० | ४१ | . 35 | 33 | | ,,, | |
| १०.स× <i>१</i> .€ | 19 | 33 | 9, | 3, | | ,, | • |

| | कमर्सख्या | प्रन्यनाम | म न्थकारनाम | पशसंख्याविवरणम् |
|---|----------------|---------------------------------|---------------------------|-----------------------------------------------------|
| | ३⊏१४९ | प्रकियाकौसुदी | | र–≒०, १–५०+१,१–१२। |
| | ३⊏१५० | लघुसिद्ध ान्तकौ मुदी | वरदराजः | १-२६(=२७), २७-३१, १-२३, २३ (=२४), २४-७१ । |
| | ३⊏१५१ | उ पसर्गार्थसङ्ग्रहः | कृष्णाचार्य्यः | १,३। |
| ļ | ३⊏१५२ | सारस्वतम् | अनुभूतिस्वरूपा- चार्यः | १-१०, १०-५ूम, ६१-६९,६१(=७०),१-६०। |
| | ३⊏१५३ | फक्किकार्थप्रकाशः | इन्द्रदत्तोपाध्यायः | १-१०२, १०२-१०४। |
| | ३⊏१५४ | सारस्वतम् | | १-९ । |
| | ३⊏१५५ | लघुसिद्धान्तकौ मुदी | | ७-२२, २४-५३, ५५-७१ । |
| | ३⊏१५६ | मध्यसिद्धान्तकौमुदी | वरदराजः | १–३०, १-५२, १-१९ । |
| | ३⊏१५ ७ | सारस्वतम् | | २–४⊏, ५९-६५ । |
| | ३८१५८ | सारसिद्धान्तकौमुदी | वरदराजः | १–१९, २१। |
| | ३⊏१५९ | यङ्लुगन्तप्रयोगविचारः | | १-६ । |
| | ३⊏१६∙ | ल घु शब्देन्दुशेखरः | नागेशः | १। |
| | ३ =१६१ | पूर्वपक्षावली | होरिल्रशर्मा | १-11 । |
| | ३८१६२ | वैयाकरणसिद्धान्तक <u>ौम</u> ुदी | भट्टोजिदीक्षितः | १-६७, ६५-७१, (=६९-७२), ७४-५ २ , ५२- १२६ । |
| | ३⊏१६३ | सारस्वतटीका | पुञ्जराजः | १–१९ । |
| | ३ ८१६ ४ | सारस्वतवृत्तिः | सहीधरः | १, ३–१४, १४–१९, ३–२३। |
| | ३८१६५ | सारस्वतम् | अनुभूतिस्वरूपा- चार्यः | १५०। (गणनया) - |
| | ३⊏१६६ | कातन्त्रसूत्रम् | | १-४, ७-१०, १३-७=, =१, =५, ९७-११३, ११६-१२३। |
| | ३८१६७ | कारकचक्रम् | | १–१५। |
| | ३८१६८ | चणादिसूत्रमाला | | ८। (गणनया) |
| | ३⊏१६९ | तत्त्ववोधिनी | | १-२,४-२८,२८-४२(=४३),४४-५४,६४-६५ । |

| श्राकारः | वंकि- चंच्या | श्रच्र- संख्या | लिपि | श्रावारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण - विवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------------------------------|-----------------|-------------------|---------|----------|----------|-------------------------|-----------------------------------------------|
| ₫.₫ × α.≓ | १५ | २० | शा. | का. | | अपू० | ·, |
| ११ [.] ७×६ [.] = | १० | રપૂ | दे.ना | ٠, , | | पू० क्ष | |
| १०.स×८.त | १२ | પૂપૂ | ,, | ,, | | अपू० | |
| १०×६ | ی | २३ | ,, | ,, | | ,, | |
| १३.५×ग.६ | ११ | ३८ | ,, | ,, | | ,, | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदीव्याख्या । |
| १३.४×६.५ | १= | 80 | ,, | ,, | | 27 | कृद्न्तप्रक्रिया । |
| १०.०×८६ | 5 | ३७ | ,, | ,, | | ,, | |
| १२ [.] २×४°७ | ی | ४२ | ,, | " | | Чo | |
| १०•१×४•३ | 5 | २९ | ,, | " | | अपु० | |
| ९७४×४७२ | 5 | ३४ | ,, | ,,, | | ,, | |
| १०:३×४:३ | ११ | 88 | ,, | ,, | | पू० | पुस्तके यङ्लुगन्तटीका,इतिलिखितमस्ति |
| १११×४७ | રપૂ. | ३८ | " | " | | अपू० | वै० सि० कौ० टी० I |
| ९५५×५ | ११ | ३४ | 33 | ,, | | " | |
| ११×५·२ | १४ | ર્પ. | " | " | | 27 | पूर्वार्द्धम् । |
| ९,७×४ ' ४. | १२ | 88. | ,, | " | | ,, | |
| ११•२×५ः= | १४ | 88 | " | ,, | | " | आख्यातप्रकरणस्य । |
| १० ≒ × ३ | ų | ४६ | ,, | ,, | सं. १७०४ | ,, | N. W. |
| १० [.] १×३ [.] १ | ६ | ३९ | " | ,, | | 95 | |
| १३ [,] =×३ [,] ३ | 4 | પ્પ | वङ्ग | ,, | | पू० | |
| १३×३ | v | ьβ | " | 39 | | अपृ० | प्रारम्भे वैयाकरणसिद्धान्तसंग्दुःश्लोक- |
| <u>९.५ × ८.५</u> | 5 | ३८ ह | दे. ना. | ارو_ | | 22 | वै० सि० को० टीका। |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् • | | |
|------------|---------------------------|---------------------------|-----------------------------------------------------------------------------|--|--|
| ३८१७० | - पद्मञ्जरीकुसुमविकासः | शिवदासः | 801 | | |
| ३⊏१७१ | परिभाषेन्दुशेखरः | नागोजिभट्टः | ६–२४। | | |
| ३⊏१७२ | सारस्वतम् | | ९-२०,२२-६२,६५-६=,७३-९०,९४। | | |
| ३८१७३ | सारस्वतदीपिका | सूरसिंह: | ३-५०। | | |
| ३⊏१७४ | धातु गाठः | | १–२१। | | |
| ३⊏१७५ | समासचक्रम् | | १-५। | | |
| ३⊏१७६ | रूपमालिका | रङ्गदेवः | १-१७। | | |
| ३⊏१७७ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | भट्टोजिदीक्षितः | १-१९६, १-१५५। | | |
| ३८१७८ | सारस्वतम् | अनुभूतिस्वरूपा- चार्यः | १, ३–६, १०–२३, २७-४० । | | |
| ३८१७९ | 37 | | १–३३। | | |
| ३८१८० | सिद्धान्तचन्द्रिका | रामाश्रमाचार्यः | १-५०, ३२-५६। | | |
| ३८१८१ | तत्त्वबोधिनी | | १- ર્ ય, १६९– <mark>२२६, २३५–૨૫५</mark> । | | |
| ३८१८२ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | भट्टोजिदीक्षितः | १-३१, ३७-६६, २०१-२०६। | | |
| ३८१८३ | लघुसिद्धान्तकौमुदी | | १–१४, ११-४०। | | |
| इन्दर | 55 | | १~३५ । | | |
| ३८१८५ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | भट्टोजिदीक्षितः | १-६२ (=६३), ६३-७०, ४-७, १२-१३, १५-३२, ७१-७५, =५-=६, १०५-१०७, १११-११३। | | |
| ३८१८६ | सारस्वतं सटीकम् | टी०का० साधुनाथः | १-४५, १-४। | | |
| ३८१८७ | मध्यसिद्धान्तकौमुदी | | १-७, १८-६७ (=६८), ६८-१५१। | | |
| ३म१मम | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | | १, १४–१७, १९-६९, ७ ५-९४, ९६–१७३, १–३१, ३१–४४ । | | |
| ३८१८९ | सारस्वतचिन्द्रका | | ११७ । | | |
| ३८१९० | सारस्वत्म् | | १-४⊏, ३४-६४, ७०-१२२, १२६। | | |

| आकार: | पंकि- संख्या | अत्त्रर संख्या | लिपि: | आधार: | लिपिकाल: | पूर्णीपूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------------------------------|-----------------|-------------------|--------|------------|----------|------------------------|-------------------------------------------------------|
| १०°३×३ ° न | 9 | પૂ૦ | दे.ना. | का. | | अपू० | प्रथसाध्याये तृतीयश्चरणः । अष्टाध्यायी टी० टी० टी० |
| १२ : ५×४:९ | ११ | पूद | , ,, | 57 | | 23 | |
| १० × ४.८ | હ | २९ | ,, | " | | " | |
| १० [.] १×४.८ | હ | ३४ | ,, | " | १९२३ | 55 | आख्यातप्रकरणस्य । |
| 6.8 ×8.8 | १० | ३४ | ,, | 5 7 | | पू० | पाणिनीयः। |
| १०•३×४•६ | ٩ | ३० | ,, | ,, | १९०५ | " | |
| ૧૧૫ ×૪.૮ | ९ | ४० | " | ,, | | " | सिद्धान्तकौमुदीसिद्धशब्दानाम्। |
| ሪ. ቸ×ጸ.ሄ | ९ | ३⊏ | ,,, | 22 | | 79 | पूर्वीत्तरार्द्धे । |
| ११°२×५ | १० | 88 | 55 | יננ | | अपू० | तद्धितप्रक्रिया । |
| 0-10 570 | | 213 | | ı | | | • |
| १०°९×५ | ٩ | 38 | " | " | | 93 | • |
| १० [.] १×४.त | 5 | २५ | 77 | 33 | १मम६ | 17 | आख्यातकृद्न्तभागौ । |
| १०४×४°१ | 4 | ३१ | " | 33 | | ** | सुवन्तभागः। वै० सि० कौ० टीकः। |
| ११.3×8.4 | v | ४१ | ,, | " | | ,, | तिङन्तप्रकरणम् । |
| ९ : ≒×४:२ | = | २७ | ,, | " | १≒४३ | ,,, | ,, |
| ९:६×४:३ | = | ३९ | ,, | " | १म६म | पू० | सुवन्तप्रकरणम् । |
| १० ' ५×४'६ | १२ | ४६ | ". | ,, | | अपू० | |
| | | | | | | | |
| १२'४×४'= | १२ | ३८ | ,, | 27 | | 33 | |
| १० [.] १×४ [.] ३ | 5 | ३२ | ,, | ,, | | 35 | |
| १२°२×४°३ | ه | ३७ | 33 | ,, | १८७२ | 25 | |
| | | | | | | | |
| १३ •३×५•३ | १० | पुर | " | " | | 37 | |
| 9.6×4.4 | 9 | २४ | ,, |] | १५५५ | | · |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकार ना म | पत्रसंख्याविवरणम् |
|----------------|---------------------------|----------------------------|-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| ३ =१ ९१ | शब्दकोस्तुभः | મટ્ટોનિમટ્ટઃ | १५०। (गणनया) |
| ३८१९२ | महाभाष्यं सटीकम् | पतञ्जलिः टी० का० कैयटः | १-५०, १-१⊏, १-२, २४-३७, ६९-११४, ११६-१२१। |
| ३⊏१९३ | शन्दरूपावली | | १ (= १) १-७, ९-१३, १३-१४ । |
| ३८१९४ | लघुशब्देन्दुशेखर: | | १–३, ५, १२–१४, १५–१९ । |
| ३⊏१९५ | रूपमालिका | रङ्गदेवः | १-२, २-१६, २१-३१। ^ |
| ३⊏१९६ | छघुसिद्धान्तकौमुदी | | १-३९ । |
| ३⊏१९७ | धातुवृत्तिः | सायणः | १३-१६, २२-२६, ३१-४८ ५१, ५३-५७, ६९-७४, ८३-८४, ८६-९२, १४२, १४५, १४६-१५३ (= १४७-१५४), १५६-१६१ (=१५७-१६२), १६३-१७८, १८०-१८२ १८४-१८५, १८७-१९०, १९२-२०१,२०३- –२२२, २२५, २२८, २३०-२५०। |
| ३ ८१ ९८ | ,, | | ३६-३९ । |
| ३=१९९ | मध्यसिद्धान्तकौमुदी | वरदराजः | १० − गॅं.8 । |
| ३५२०० | प्रौढमनोरमा | | १–१० । |
| ३⊏२०१ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | | प-१९, ४९-६७, ⊏९-९७, ९९, १०२-१०४, १२०-१२३, ६०, ६२-७३। |
| ३८२०२ | प्रौडमनोरमा | | १, २१–२७, २७-२८, २८-५७, ५९-८१। |
| ३८२०३ | परिभाषेन्दुज्ञेखरः सटीकः | नागेशः टी.का. वैद्यनाथः | १-२०। |
| ३⊏२०४ | परिभाषेन्दुशेखरटीका | जानमा पंचनापः | १–१०। |
| ३८२०५ | चिपथगा | | १३-३५.। |
| ३८२०६ | ळिङ्गानुशासनम् | भट्टोजिदीक्षितः | १–७ । |
| ३८२०७ | तत्ववोधिनी | | १, ३–११६, १-३०, २-२८, ३०-६९। |
| ३८२०८ | शब्द्रत्तभावप्रकाशिका | वैद्यनाथः | १२-६७, + १०, ११-२९, ३६-४५ । |
| ३८२०९ | परिभाषेन्दुशेखरकाशिका | वैद्यनाथभट्टः | ९५-१००, १०३-१६५ । |

| | थाकार: | पंकि- संख्या | अन्तर- संख्या | लिपि: | आधारः | लिपिकाल: | पृणीपूर्ण- विवेकः | विशेष्रविवरणम् |
|---|-------------------------------------|-----------------|------------------|--------|-------|----------|----------------------|--------------------------------|
| | १० . ग×४.४ | १० | ४० | दे. ना | का. | | अपू० | अ०१, पा०१, आ०१-९। |
| 1 | १२પ્×६.૪ | १३ | ųо | " | ,, | | ,, | टीका-प्रदीपः। |
| | ७७×३•६ | v | २२ | ,, | " | | ,, | |
| | १० [.] ५×४ [.] ६ | ११ | 8त | ,, | " | | ,, | |
| | ९ [.] ६×४ [.] २ | 5 | २ १ | " | ,, | | ,, | सिद्धान्तकौमुदीसिद्धशब्दानाम्। |
| | ९ . ८×८.५ | ९ | २९ | ,, | ,, | | " | तिङःतप्रकरणम् । |
| | १० [.] ४×२ [.] ९ | 4 | પુર | " | " | | 33 | |
| | | : | - | | | | | |
| | | | | | | | | |
| | १० [,] ४×२.८ | १० | પૂપૂ | " | ,, | | ,,, | |
| | ५. ४×८ | ዓ | ३६ | ,, | ,, | | ,, | • |
| | 5 *የ×ያ . | १५ | ३४ | ,, | ,, | | ,, | वै० सि० कौ० टीका। |
| | ९ [.] ६×४ [.] २ | १३ | ३८ | ,, | 33 | | ,, | लिपिभेदः |
| | D•6 >4+>10 | . | | } | | • | | |
| 1 | ९ .६ ×४.५ | ११ | 80 | " | " | | ,, | वै० सि० कौ० टीका। छिपिभेदः। |
| 1 | ₹३ . १×ग.३ | 5 | ત્રપ્ર | " | " | | ,,, | टीका-गदा। |
| | ९ . ६×८.३ | १३ | ३७ | ,, | " | 1 | " | |
| | ११ [.] ६×४ [.] १ | १२ | ४६ | " | 55 | | ,, | परिभाषेन्दुशेखरटीका । |
| | १० [.] ७×३.८ | १० | ४७ | ,, | ,, | १मम१ | पू० | |
| | १२×४७ | ११ | પૂહ | " | 73 | ` | श्चपू० | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदीटीका । |
| 1 | १२.८×८.८ | १० | પૂર | ,, | ,, | | " | कारकप्रकरणम् । |
| ! | १० [.] ७×३ं [.] ९ | 9 | 8a । | 77 | 77 | १८४५ | " | |
| _ | 1. | - 1 | | | | | | |

| | क्र मसंख्या | ग्र न ्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् | | |
|---|---------------------------------|--------------------------|---------------------------------------------|----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|--|--|
| | ३द२१० | लिङ्ग वृ त्तिः | वररुचिः | १-१५ । | | |
| | ३⊏२११ | मध्यसिद्धान्तकौमुदी | वरदराजः | १, ३-२८, १-१३, १५-२१ + १, २२-२३, २३-२६, २८-२९, २९-३२,३४-४०,४०-४१, ४०-४३, ४३, ४३-४४, ४४-४५, ४५-४६, ४६-४७, ४०-४८,४८-५०, ५०-५१, ५१-५२, ५२-५३, ५५-६३, ६३-६७, ६९, ६९-८०, १-५, ५-९। | | |
| İ | ३⊏२१२ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | भट्टोजिदीक्षितः | १४०-१४३, १५७-१६७, १८१-१९६। | | |
| | ३८२१३ | परिभाषेन्दुशेखरः | नागेशः | १–३, ६-४२, ४२-४६ । | | |
| | इ न् २१४ | रप्रत्याहारमण्डनम् | ल च्मणपाठकः | २-७। | | |
| | ३⊏२१५ | रुचादिवृत्तिः | | १–११ । | | |
| | ३⊏२१६ | प्रक्रियाकौमुदीप्रसादः | विद्वलाचार्यः | २०–३९, ५०–५१। | | |
| | ३⊏२१७ | सारस्त्रतसूत्रपाठः | | १–११ । | | |
| | ३⊏२१⊏ | सारस्वतटीका | | १-७+१। | | |
| | ३⊏२१९ | प्रक्रियाकौमुदी | रामचन्द्रः | १–१०४ । | | |
| | ३द्भ२२० | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | भट्टोजिदीक्षितः | १–१०१, १-२९, १-४९, १-११। | | |
| | ३⊏२२१ | शैढमनोरमा | | १–१०९, १११-१३४। | | |
| | ३⊏२२२ | सारस्त्रतम् | अनुभूतिस्वरूपा- | १–१०+१। | | |
| | ः ३ ⊏ २२३ | | चाय्यः | १७-१९, १-१६, २०-४१। | | |
| | र- २२ ३८२२४ | " प्रक्रियाकोमुदी | | ९–४२, ६३-६४, ६६-६७, ६९ । | | |
| | २५२२४ ३ द्ध २२५ | कात त्रसूत्रं सवृत्तिकम् | ं ∣ दृ० का०टुरोसिंहः | | | |
| | ३ ८२२६ | सारस्वतम् | ्र ४,१०५,१।सहर अनुभूतिस्वरूपा- चाय्यः | 1-181 | | |
| | ३८२२७ | | 31-04 | १-५७, ११-५५, ६६-६९। | | |
| | ३८२८ | ,, रूपसड्यहः | | १, ७-५, १५-२९ । | | |
| | 3=228 | सिद्धान्तचन्द्रिका | रामाश्रमाचार्यः | २-६, ९-१६,१८-३२, ३४-३५, ३७, ३१-४८। | | |
| | | TANK MALI XAN | Autual state | | | |

| आकार: | पं कि- संख्या | अच्छर- संख्या | लिपि: | आधार: | लिपिकाल: | . पूर्णीपूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------------------------------|-------------------------|------------------|------------|-------|----------|--------------------------|------------------------------------------|
| १२.८×६.2 | १२ | ४१ | दे. ना. | का. | १=४६ | पू० | |
| १०'≒×५'५ | १४ | 38 | 5 7 | 77 | | अपू० | |
| | | | | | | | |
| | | | | | | | |
| १० [.] ७ × ४.त | ११ | ३६ | ,, | ,, | | ,, | पत्रकोणे "बृहत्कौ" इति लिखितमस्ति । |
| ९ . ८×८.५ | १२ | ४३ | ,, | 22 | | " | , |
| १० ५ × ४ ६ | 9 | 88 | 3,7 | 27 | | " | |
| १४'४×३ ' २ | ६ | ४३ | वङ्ग | ,, | | पू० | |
| ११.१ × ३.० | 5 | પ્રશ | दे. ना | . ,, | | अपू० | |
| ९.८× <i>६.</i> | v | २६ | " | ,, | | पू० | |
| १० . ०×८.त | \o | २१ | ,, | ,, | | अपू० | • |
| १०७×४°९ | १० | ३७ | ,; | 99 | | पृ् | सुवन्तान्ता । |
| १०' ५ ×४' ५ | 9 | ३४ | " | ,, | १८२० | ,,, | तद्धित-वैदिक-स्वर-छिङ्गानुशासनप्रकरणानि |
| ११°३×४°५ | 9 | ३७ | ,, | ,, | १=२१ | अपू० | वै० सि० कौ० टीका, सुवन्तप्रकरणस्य। |
| ९ [.] २×३ [.] ५ | ų | २५ | " | " | १६७५ | 55 | भ्वादिप्रकरणांशम् । |
| ९. 8×8 | 9 | ३१ | ,, | ,, | | ,, | , |
| ९:७×8.ત | १० | २७ | ,, | " | | " | तिङन्तभागः। |
| ९×३ | 5 | 88 | ,, | ,, | . १६१६ | ,, | तिद्धतपादान्तम् । |
| ९ [,] ३×३ [,] 8 | v | ३३ | ,, | " | | Áо | कृत्प्रक्रियातः क्त्वादिप्रक्रियान्तम् । |
| ९ [.] १×३ [.] ५ | ų | २५ | ,, | ,, | १६७५ | अपू० | आख्याताःतम् । |
| ८.≅×८.४ | ફ | ર્યૂ | ,, | " | • | ,, | प्रक्रियाप्रोक्तधातृनाम् । |
| ११ [.] ३×४ [.] ६ | ९ | ४० | ,, | " | | 17 | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थका रना म | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|--------------------------|---------------------------|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| ३=२३० | वैयाकरणसिद्धान्तकोमुदी | | १–६७ । |
| ३≒२३१ | 33 | | १४, २१-२३, २५-७५, ४-१० (२६ ७ <i>-२७</i> १, २७१-२७२ । |
| ३=२३२ | सिद्धान्तचन्द्रिका | | १-५१। |
| ३८२३३ | सारस्वतम् | अनुभूतिस्वरूपा- चार्यः | १, ३-५० । |
| ३८२३४ | प्रकियाकौमुदी | | १८-५७, ६०, ७६। |
| ३⊏२३५ | मध्यसिद्धान्तकौमुदी | वरदराजः | १-४६, १-१२, १४, १६-१७। |
| ३⊏२३६ | महाभाष्यं सप्रदीपविवरणम् | | १-३, ३-४, ४, ४, ५, ५-१५, १७-२४। |
| ३८२३७ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | | १-१५३। |
| ३८२३८ | प्र बोधच िद्रका | वैजलभूपालः | १-१६ । |
| ३८२३९ | रूपावली | | १-१९ । |
| ३८२४० | परिभापापाठः | | १-३। |
| ३=२४१ | अष्टाध्यायी | | १-४२। |
| ३⊏२४२ | शन्द्रवावली | | १-६, ६ (=७), ५-९ । |
| ३⊏२४३ | ,, | | १-३, ३-५, ७-१४। |
| ३८२४४ | भाषावृत्तिः | पुरुषोत्तमदेव <u>ः</u> | ९९। (गणनया) |
| ३⊏२४५ | " | " | ৩७। ,, |
| ३⊏२४६ | भाषावृत्त्यर्थविवृतिः | सृष्टिधरशर्मा | ३-१५, २०-२९, ३१-५६ + १। |
| ३८२४७ | भापावृत्तिः | पुरुषोत्तमदेवः | २५६। (गणनया) |
| ३८२४८ | भापादृत्त्र्थविदृतिः | सृष्टिधरशर्मा | १-२, २-१९, ५७-६० । |
| ३=२४९ | शब्दरूपावली | | ४-२१। |
| ३८२५० | भापावृत्तिः | पुरुपोत्तमदेवः | १-१६, १-११, १-१४, १-१३, १-६+१, ९- १६, १-३+१, ४-६+२, १-१३, १-१४, १- ११+१, १२-१ऽ+१, १≍-२१, १-९, १, १०-१९, १, १, १+५, १-३+२, १-७, १- ९+२, १५-२१, ९-१२+५४। |

| आकारः | पंक्ति संख्य | ं अद्य । संख्य | र- _{गि} लि ⁽ | MINIT: | लिपिकालः | पृणीपृणी विवेकः | - विशेषविवरणम् |
|---------------------------------------|-----------------|-------------------|-------------------------------------|------------|----------|--------------------|----------------------------------------|
| १ ૪∙૫ × ६ ∙૫ | १० | 34 | १ दे.न | ा. का | | अपृ० | आदितः कारकप्रकरणांशा । |
| १३×५.८ | 28 | 38 | ,, | ,, | | " | प्रतिपत्रपारचें बृ०कौ०इति लिखितमस्ति । |
| १२×५:३ | 9 | રૂપુ | . ,, | ,, | | ,, | |
| १२×५:१ | 9 | ४२ | ,, | ,, | | ,, | आख्यातप्रक्रिया । |
| १२×५ | हे १ | રે પૂ | ,, | ,, | | ,, | सुवन्तप्रकरणम् । |
| १३ [.] ५ × ५.५ | 5 | २९ | ,, | ,, | | ,,, | |
| १२५×४:= | १२ | પુર્ | .,, | ,, | | ,, | |
| १३×४:९ | 5 | ४३ | ,. | ,, | १९३० | δίο | पूर्वार्ह्डम् । |
| 6.6×8.0 | १३ | ३४ | ,, | ,, | १८७६ | 17 | |
| ₹%×8 | 9 | इ.९ | ,, | ,, | १९०६ | ,, | |
| 80.2×8.0 | १२ | ३६ | ., | , , | १६ | ,,, | |
| ሪ. ደ×ጸ.ጸ | 9 | २५ | ,. | ,, | | अपृ० | |
| 80.0×8.0 | 5 | ર ૪ | ,, | ,, | | पू० ४% | शन्दमालिका वा । |
| १०×४ [.] ६ | v | ર્ષ્ટ | ,, | ,, | | अपृ० | |
| १३.८×३.५ | ४ | ૪૭ | चङ्ग | ,, | | ,, | अष्टाध्यायीटीका । |
| १३.त×३.५ | 8 | ४२ | ,, | 99 | | " |) |
| १० [.] १×२ [.] ९ | ۲ ا | цo | " | " | | " | अप्टमाध्यायः अप्टाध्यायी टी० टी०। |
| .१8 [.] १ × ३ [.] ६ | १० | ६१ | " | ,, | सन् १२६२ | 3 3 | अष्टाध्यायीटीका । |
| १० [.] १×२ [.] ९ | 5 | યૂર | . ,, | ,, | १२७२ | 27 | अष्टाध्यायीटीकाटीका । |
| ९.४× <i>६.</i> ८ | ६ | १९ | दे. ना. | ,, | • | " | |
| १३•२×३·१ | v | ३२ | वङ्ग | ,, | | 33 | अद्याध्यायीटीका । |
| | | | | } | | | |
| | | | | : | | | |

| क्रमधंख्य | ' प्रन्थनाम | श्रन्थकारनाम | पः संख्याविवरणम् | | |
|------------------|--------------------------------------|---------------------|----------------------------------------------------------|--|--|
| ३८२५१ | भागाष्ट ्रस् यर्थविद्यतिः | सृष्टिधरशर्मा | १-३१, १-१४, १-२५, १-१४, २,१-५+१, १-३, ५-९+२, ११-३०+२। | | |
| ३८२५२ | ,, | ,,, | १-२०, १-१६+३, २२-५६+१ । | | |
| ३८२५३ | 5 * | ٠, ا | १-५१, १-२१, १-१८। | | |
| ३⊏२५४ | 27 | ,,, | १-१२, २४ २९ + १,३१-४२,४२-५९ + ३ । | | |
| ३८२५५ | भापावृत्तिः | पुरुपोत्तमदेवः | १-९, १-४, १⊏-२१ + २७ । | | |
| ३⊏२५६ | मुग्धबोधः | बोपदेव: | १-७८ + १, १-१११, १, ३४-३८। | | |
| ३८२५७ | परिभापेन्दु शेखरः | नागेशः | १-५२। | | |
| ३८२५८ | परिभापापाठः | | १–३। | | |
| ३=२५९ | ,, | | १-२, ४-५ । | | |
| ३⊏२६० | धातु पाटः | | १–१६। | | |
| ३≒२६१ | चारूच्चारणचातुरी | शिवशर्मा | १–२, १०–१३। | | |
| ३=२६२ | भाषावृत्तिः | पुरुपोत्तमदेवः | १-२५+२। | | |
| | | | | | |
| ३⊏२६३ | - न्याकरणको ड पत्रम् | | ९। (गणनया) | | |
| ३८२६४ | लघुशब्देन्दुशेखरः | | १–३५, ४६–५६ । | | |
| ३⊏२६५ | शब्दरत्नम् | | ! | | |
| ३⊏२६६ | प्रौढमनोरमा सशब्दरत्ना | | २-१९, २१-७६, १०९-१२१। | | |
| ३⊏२६७ | तत्त्वबोधिनी | | २४७-२६१, २६३-२७७, २९३-३०५, १-१०, १२-१८ । | | |
| ३८२६८ | शब्दरूपाविः | | १-७। | | |
| इ न्दर् ९ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी- सटीका | | १–२१, २३–२४+८ । | | |
| ३८२७० | तत्त्वबोभिनी | | १-१५, १५–३५ । | | |
| ३८२७१ | लघुशब्देन्दु शेखरः | | १-२, ४-७, २-१०, १२-३४,३६-४९, ४-११, ११-१६, १⊏+३। | | |

| | ., | | | | | | |
|------------------------------------|-------------------|-------------------|--------|----------|------------------|-----------------------|---------------------------------------------------------------------------------------|
| श्राकारः | पंक्ति- संख्या | ग्रच्र- संख्या | लिपि: | श्राधारः | लिपिकाल ः | पूर्णापूर्ण विवेक: | विशेषविवरणम् |
| \$8.8× \$. \$ | ११ | =8 | वङ्ग | का. | | अपू० | अष्टाध्यायीटीकाटीका । |
| े१३.८×३. <i>५</i> | ų | ४७ | ,, | ,, | श. १६⊏१ | 72 | >5 |
| १४.४×३.४ | 5 | ६३ | 33 | " | | " | ,, पश्चमाध्यायः। |
| १४×३ [.] २ | ફ | દ્દપૂ | " | ,, | | ,, | ,, अ०५ पा०२ |
| १४ . गॅ× ≴.8 | ч | ४६ | ,, | " | | ** | अष्टाध्यायीटीका । |
| ₹8.8×8. ≨ | ᄪ | ४६ | ,, | לנ | बङ्गाब्द १२४९ | ,, | |
| ९ [.] ३×४ [.] २ | १० | ३४ | दे. ना | " | | ** | |
| ९×३°९ | १५ | ४६ | ,, | 33 | | पृ ० | |
| ७° ५ ×३°५ | ९ | ર્પ | ,, | " | | अपू० | |
| ९'२×४'३ | ९ | ર્પ | ,, | " | | " | |
| ७:१×४:२ | १४ | ર્પ | " | ,, | | . ,, | |
| १ ४ °६×३°३ | ų | ३६ | বঙ্গ | " | | ,; | अलुक्पादान्ता ? अन्तिमपत्रद्वये- च्याकरणसम्बन्धिविचारः धर्मशास्त्रीय- वचनानिच । |
| १२.ग×८.£ | १४ | ६४ | ,, | ינ | | 53 | सूत्रप्रयोगपरिभाषादीनाम् । |
| ११ . ४×४.४ | ९ | પ્રશ | ,, | " | | " | |
| ११प्×४७ | ९ | ३६ | ,, | " | | " | सुवन्तप्रकरणम् । वै०सि०को०टी०टी० । |
| १०.८× <i>६.</i> ० | ९ | ४९ | ,, | 22 | | 33 | वै० सि० को० टीका। |
| ११ [.] ३×४ [.] ९ | १३ | ४६ | ,, | 37 | | 23 | j, |
| ८.₫×8.& | ९ | ३६ | ,, | ננ | | પૂ૦ | |
| १०°≒×५.त | १४ | જુપ | " | 33 | | श्रपू० | |
| १२·९×५·१ | શ્ પ્ | प्र | ;; | " | | 73 | दै० सि० कौ० टीका। |
| १० .८×४.८ | १० | પૂરુ | ,, | ;; | | 3) | |

| क्र मसंख् या | प्रन्थनाम् | ग्रन्थकारनाम | पः.संख्याबिवरणम् |
|---------------------|----------------------------|---------------------|----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| ३ ⊏२ ७२ | शब्दरत्नम् | | १–३७ । |
| ३द्म२७३ | तत्त्वबोधिनी | | १-५,प्त-१३,१६-१७, २१, २४-२प्त, ३१-३२, ३५-३प्त, १-२, ५-७, ५४-१५, १प्त-२०, २२- २३, २९-३०, ३३-३४, ३९-४४, १, ५-७ । |
| ३८२७४ | अप्टाध्यायी | पाणिनिः | १–५०। |
| ३८२७५ | सिद्धान्तचन्द्रिका | | १-२, ४+१, ५-२३। |
| ३⊏२७६ | कातन्त्रविस्त ः | वर्द्धमानमिश्रः | १, ३-२४, २४-१९७। |
| ३⊏२७७ | कातन्त्रवृत्तिः | दुर्गासंहः | २-५४। |
| ३८२७८ | कातन्त्रगृत्तिविवरणपञ्जिका | त्रिलोचनदासः | ३-१५, १८-३१ (=३२), ३३-५७, ७०-७६, ७६-८१, २६-३६, ३८-६७, ६९-७५ । |
| ३ ८२७ ९ | लघुसिद्धान्तकौ मुदी | वरदराजः | १- <u>५</u> , ३-૪૫, ૪૫-४९ (=४६-५०), ૫१-६४ (=१२०-१३४) । |
| ३८२८० | सिद्धान्तचन्द्रिका | | १-११, १४-३६, ३६-३७, ३९-५४, ५६-५७, ५९-६३, ६३-६५ । |
| ३८२८१ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | भट्टोजिदीक्षितः | १-३०, ४४-९८, १११-१४७। |
| ३८२८२ | प्रौढमनोरमा | | ३०-९८, १००-१०७,२००-२५०,२५२-२५८। |
| ३८२८३ | >77 | | २-४, ४-७४। |
| ३८२८४ | प्रवोधचन्द्रिका | वैजलभूपतिः | २-३, १९-२३। . |
| ३८२८५ | काशिकाविवरणप अ का | जिनेन्द्रघुद्धिपादः | र-४, १४-२७, २९-३५, ३७-३९, ४४-५२, ५४-७४, ७७-७८, ८१-६६, ९०, २०-२५, ३३-४५, ५१-५८, ६०। |
| ३म२⊏६ | काशिका | वामनः | १-७१, १-६९, ७२, ७२-१०३, ७०-११६, ११⊏-१५२, १-३⊏, ४०-५३, ५५ ६०, ६⊏- ७१, ७३-७५, ७५-६२,⊏२-⊏३,१६१-१६७। |
| ३मरप् | स्फोटरत्नम् | शेषकृष्णः | १-१३। |
| ३मरमम | वैयाकरणभूषणसारदर्पणः | हरिवल्लभः | १-२३,२५-३३,१-५१, १-४,४, ५-४०,१-१६। |
| ३द्भ२द्भ९ | वैयाकरणभूषणसारच्याख्या | हरिः | १-१६, १-७-। |
| ३५२९० | प्रवोधचन्द्रिका | वैजलदेव: | १-१३ + १ । |

| श्राकारः | पंकि- सं ख्या | श्रद्धर- संख्या | लिपि: | त्राधारः | लिपिकालः | पूर्णी रूपी- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------------------------------|-------------------------|--------------------|--------|----------|----------|------------------------|---------------------------|
| 60.6×8.8 | ११ | ३६ | वङ्ग | का. | | अपृ्० | वै० सि० कौ० टीका । |
| १०. ८ × ८.८ | १२- | ४० | >5 | " | 1 | | वै०-सि० को० टी०। |
| | | | | | | | |
| ९ [.] ९×४ [.] ३ | ९ | રૂપ | ,, | ,, | | पू० | 1 |
| ११ [.] ३×४ [.] ६ | 9 | ३८ | | ;; | | अपू० | पूर्वेकृदन्तभागः । |
| १०×३ | ६ | So | 37 | ••• | | ·•• | आख्यातविष्टतिर्या । |
| ९ [.] १×३ [.] ८ | १० | ૪૭ | ;; | ,, | | " | आख्यातप्रकरणस्य । |
| ९·૫×૨·६ | ६ | ४३ | 5; | , ,, | | 55 | |
| १० . =×८.त | १३ | 80 | दे. ना | ,,, | १८९३ | ,, | , |
| १० ∙३ ×४'५ | १७ | ३७ | " | ,,, | • | ,, | |
| ९ .८×८.५ | 9 | 80 | ,, | ,, | | ,, | द्विरुक्तप्रक्रियान्ता। : |
| ४०.त × ४. <i>ई</i> | ९ | ३⊏ | " | ,, | - | ,,, | - वै० सि० कौ० टीका I |
| 80.1 × 8.1 | १३ | ४६ | " | 55 | | ,, | |
| ९ [,] ९×४ [,] ३ | ,9, | . રુપ્ | | " | | ,, | N 7 25 |
| १ १ ∙३×४ | ٩ | કહ | -,, | 777 | | 37 | |
| | | | | | | | 7, m ms |
| 6.17×8.8 | ९ | ४२ | ,,, | 93 | १८५२ | " | अष्टाध्यायीटीका |
| 6.6×8.8 | 9 | ų,o | ,,, | : | | पूरु | The second second second |
| 6.2×8.8 | 1 28 | | | ,,, | | अपू० | |
| 6.0×8.3 | १० | ४३ | | | | | व्याख्या-काशिका । |
| | | | | 99 | | 1 | ञ्जाख्यान्यमासाम्। । |
| ६. ५×४.८ | १० | १९ | " | ; ; | | " " | . , , |

| | क्रमसंख्या | प्रन्थनाम | मन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|-----|------------|-------------------------------------|----------------------|------------------------------------------------------|
| - ' | ३⊏२९१ | वैयाकरणभूपणसारः | | १–२६+१। |
| i | ३⊏२९२ | चैयाकरणसिद्धान्तक <u>ों</u> मुदी | | १-१९, २६-२९, ३२-५५, १-१८, २३-५०, ६०-७९ (=१), ३। |
| | ३⊏२९३ | कातन्त्रसूत्रम् | | १-१३ । |
| | ३⊏२९४ | कविकस्पद्रुमः | योपदेवः | १, ११, १४-६५, १⊏-२२ । |
| | ३८२९५ | धातुरूपावली | | १-३ । |
| | ३≒२९६ | <u>धातुपाठः</u> | | १–३० । |
| | ३=२९७ | धातुरूपाव ली | | १ -1 78 । |
| | ३८२९८ | समासचक्रम् | | १–१० । |
| | | , | : | |
| | ३८२९९ | वैयाकरणभूपणसारः | कौण्डभट्टः | १–२४ । |
| | ३⊏३०० | वैयाकरणसिद्धान्तल <u>घु</u> मञ्जूपा | ; | <i>3</i> − <i>5</i> 8 I |
| | ३८३०१ | समासचक्रम् | | १–१४ । |
| | ३=३०२ | वैयाफरणद्धान्तकौमुदी | भट्टोजिदीक्षितः ' | १-१५९। |
| | ३⊏३०३ | शन्दरूपावली | | १, ३–३४। |
| | ३⊏३०४ | शब्दकौस्तुभः | | प्-१३, १ ५ -२⊏, ३० । |
| | ३८३०५ | वैयाकरणभूपणसारः | ! | १–२१, ३६–६४। |
| | ३८३०६ | प्रौढमनोरमा | † : | १–६२। |
| | ३⊏३०७ | ; ; | | १–१०, १२,१२-१९,२१-५९,१७-४७,१-१२, १-१२, १-१६। |
| | देदह०द | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी सटीका | | १५८ । |
| | ३⊏३०९ | लघुशब्द्रस्लम्" | | १–१२ । |
| | ३⊏३१० | धातुरूपावली - | | १–२८। |
| | ३=३११ | परिभापेन्दुशेखरः | नागेशः | १–६७ । |
| | 1 | 1 | | |

| श्राकार: | पंक्ति- संख्या | ग्रच्र- संख्या | लिपि: | त्राधारः | लिपिकाल: | पूर्णीपूर्ण- विवेक: | विशेषविवरणम् |
|------------------------------------|-------------------|-------------------|---------|----------|----------|------------------------|---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| १० १×४°३ | १० | ३४ | दे. नाः | . का• | | अपृ० | |
| ९:९×४ : न | ,3 | 38 | ,, | ,, | | ,,, | प्रारम्भाच्छैपिकांशा । |
| १२°३×°२ | 3 | ३० | वङ्ग | -19 | | £ ., | आख्याते ३ पादः ! |
| १६४×३•२ | ų | ६४ | " | ,,, | | ,,, | धातुपाठो घा । टिप्पण्यपि कचित् । |
| ۶.4×8.8 | v | ३४ | दे. ना | " | | पृ० | |
| १० [.] १×५.८ | v | ३० | 99 | 22 | | अपृ० | |
| ४.८×=.त | १६ | १२ | " | " | | ,, | |
| ९ ⁻ ३×३ ⁻ ९ | 5 | হ্@ | " | ;; | |) | पद्धमपत्रस्य निरङ्के पृष्ठे मन्यः समाप्तः, तस्येव साङ्के पृष्ठे समास- विपयको प्रन्थः पूर्वभिन्नस्त्वसमाप्तः । |
| ११:५×४:२ | १२ | ४९ | ,, | ,, | |) } | विषयपा अप्यः दूषामञ्जलपातः । |
| ११.८×८.५ | १० | પ્રશ | ,, | ,, | | ,, | |
| પૂં'ર×સપૂ | v | १० | ,, | ,, | | ,, | , |
| ફક. ફ×તૅ.ઠ | ९ | પૂર | ,, | ,, | | पू० | पूर्वाद्धं मात्रम् । |
| ९.±×8.ई | 9 | ঽ৸ | ,, | " | | अपृ० | |
| ११×४ . ७] | १२ | ક્ષ્ય | ,, | " | | , ! ?? | अष्टाध्यायीटीका । |
| १२°२×५ | १० | ४९ | ,, | ,, | | , ,, | नामार्थनिर्णयप्रकरणस्य । |
| 60. 0 × 8.3 | = | 33 | ,, | " | | 27 | वै० सि० कौ० टीका। |
| १२×५•७ | ११ | ų,o | ,, | " | | " | ,, |
| ११ [.] ७×४ [.] २ | १३ | પૂર | ,, | ,, | | 3 2 | |
| १०×८.८ | ११ | 84 | ,, | " | | ,, | बै० सि० कौ० टी० टीका। |
| ₹० 'ॸ×४'६ | ٩ | ३६ | ,, | ,, | सं० १९०९ | पृ० | - |
| ૧૧૫ ×૪૫ | v | 88 | ,, | ,, | | अपृ ० | |

| | | क्रम टंख्या | ः ग्रन्थनाम | ! ्रग्रन्थका र नाम ¦ | पत्रसंख्यात्रिवरणम् |
|---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-----|------------------------|------------------------|-----------------------------------|-----------------------------------------------------|
| इच्दश्थ वैयाकरणसिद्धान्तको सुदी १-५ । इच्दश्थ तत्ववोधिनी १-५, ०-११, १३, १००५, ०००९६ । इच्दश्थ काशिका १, ४-२४, ३१, ६५-६५, १००५ । इच्दश्य परिमापेन्दुकोखरः नागेशः १-१६, २१-५७, ६१-६२, ९२-१२९ । इच्दश्य परिमापेन्दुकोखरः नागेशः १,४,१०,१०-१८-२२,२८-२३,२८,३१,३२-३० इच्दश्य कातन्त्रसूत्रम् १८-४५, ६-१२ । १८-४५, ६-१२ । इच्दश्य कातन्त्रसूत्रम् १८-१००००००००००००००००००००००००००००००००००० | | ३⊏३१२ | शब्दकोस्तुभः | भट्टो जिभट्टः | १–२, २ (=३), ४–१५ । |
| इच्दश्य वैवाकरणसिद्धान्तकोमुदी १५, ७-११, १३, १७-७५, ७०-९६ । इच्दश्व काशिका जयादित्यः १, ४-२४, ३१, ६५-च्५, १०-१९ । इच्दश्व परिभापेन्दुशेखरः नागेशः १-१६, २१-५७, ६१-च-२, ९२-१२९ । इच्दश्व कातन्त्रसूत्रम् २८-४४, ४०-६४ । १८-४५, ६-१२ । इच्दश्व कातन्त्रसूत्रम् १-१५, +३१ (=क-प) । १-३, ६-१० १६-१० । इच्दश्व भातुपाठः १८-११ - १० । १८-११ - १० । इच्दश्व कातन्त्रयुत्तिपश्चिका त्रिलोचनदासः १-४१ + ४० । इच्दश्व कातन्त्रयुत्तिपश्चिका १८-१०, ११-१०, १३-१४, १८-१० । इच्दश्व कातन्त्रयुत्तम् १८-९, ११-१०, १३-१४, १८-१० । इच्दश्व कातन्त्रयुत्तम् १८-९, ११-१२, ११-१२, १४-२०, २३-३० । इच्दश्व कातन्त्रयुत्तम् १८-१३, १५-२३, १५-२०, २३-३० । इच्दश्व कातन्त्रयुत्तम् १८-१३ । इच्दश्व कातन्त्रयुत्तम् १८-१३ । इच्दश्व कातन्त्रयुत्तम् १८-१३ । इच्दश्व कातन्त्रयुत्तम् १८-१३ । इच्दश्व कातन्त्रयुत्तम् १८-१३ । इच्दश्व कातन्त्रयुत्तम् १८-१३ । १८-१३ । १८-१३ ।< | | इ =३१३ | मध्यसिद्धान्तकौसुदी | | १-१४, १- ३ ९, १-१५ 1 |
| इन्दश्ह तत्त्वविधिनी इन्दश्ह काशिका जयादित्यः १, ४-२४, ३१, ६६-६५, १-७+१। इन्दश्ह परिभापेन्दुशेखरः नागेशः १,४,१०,१०-१८,२२-२३,२८,३१,३३-३६ इन्दश्ह कातन्त्रस्त्रम् संक्षिप्तसारटीका १-१५, +३१ (=क-प)। इन्दश्ह धातुपाठः १८-१०। इन्दश्ह कातन्त्रस्त्रम् १८-१०। इन्दश्ह कातन्त्रस्त्रम् १८-१०। इन्दश्ह कातन्त्रस्त्रम् १८-१०। इन्दश्ह कातन्त्रस्त्रम् १८-१०। इन्दश्ह कातन्त्रस्त्रम् १८-१०। इन्दश्ह कातन्त्रस्त्रम् १८-१०। इन्दश्ह कातन्त्रस्त्रम् १८-१०, ११-१०, ११-१०, ११-१०। इन्दश्ह कातन्त्रस्त्रम् १८-१०, ११-१०, ११-१०, ११-१०। इन्दश्ह कातन्त्रस्त्रम् १८-१०, ११-१३, १५-२०, २३-३०। इन्दश्ह कातन्त्रस्त्रम् १८-१३। इन्दश्ह कातन्त्रस्त्रम् १८-१३। इन्दश्ह कातन्त्रस्त्रम् १८-१३। | | ३⊏३१४ | वैयाकरणभूपणसार: | कौण्डभट्टः | १–५. । |
| इद्दश्७ काशिका जयादित्यः १, ४-२४, ३१, ६५-६५, १०-११। इद्दश्६ प्रीडमनोरमा १-१६, २१-५७, ६१-६२, ९८-१२९। इद्दश्६ परिभापेन्दुशेखरः नागेशः १,४,१०,१०-१८,२२-२३,२८,३१,३३-३० इद्दश्६ कातन्त्रस्त्रम् २८-४४, ६-१२। २८-४४, ६-१२। इद्दश्द अ १-१५, +३१ (=क-प)। १८-१५, ६-१० १६-१७। इद्दश्क अत्रातन्त्रयुक्तिपश्चिका १८-११ । १८-११ । इद्दश्क कातन्त्रयुक्तिपश्चिका १८-५१ । १८-५, ११-३०, ३२-४०, ४२-४८, ५८-१। इद्दश्क कातन्त्रयुक्तिपश्चिका त्रिलोचनदासः १८-५, ११-११, ११-११ इद्दश्क मापाश्चर्यर्थविष्ठतिः १८-१३, १५-२०, २३-३०। इद्दश्क कातन्त्रसूत्रम् १८-१३। इद्दश्क भापाष्टक्तिः १९-१३। इद्दश्क भापाष्टक्तिः १९-१३। | ٠, | ३ं≒३१५ | वैयाकरणसिद्धान्तकोमुदी | | १–५, ७-११, १३, १७-७५, ७७-९६। |
| ३ = ३ १ | | ३⊏३१६ | तत्ववोधिनी | | प। |
| इस्३१९ परिभापेन्दुकोखरः नागेशः १,४,१०,१०-१८,२२-२३,२८,३१,३३-३८ ४९-४४, ४०-६४। इस्३२० कातन्त्रस्त्रम् २८-४१,६-१२। २८५,+३१ (=क-प)। इस्३२२ ,, १८-३,६-१० १६-१०। १८-३,६-१० १६-१०। इस३२३ धातुपाठः १८-१० १६-१०। १८-१०। इस३२५ कातन्त्रतृत्तपखिका त्रिळोचनदासः १८-४१ ४०। इस३२० कातन्त्रसूत्रम् १८-५०,१३-२४,१८-११। १८-५०,१३-१४,१८-११। इस३२० कातन्त्रतृत्तपखिका त्रिळोचनदासः १८-५३,१४-२०,२३-३०। ३८३२० कातन्त्रसूत्रम् १८-१३,१५-२०,२३-३०। १८-१३। ३८३२० भापाष्टक्तः पुरुषोत्तमदेवः २८५,६६-६९। | | ३⊏३१७ | काशिका | जयादित्यः | १, ४-२४, ३१, ६५-५५, १-७+१। |
| ३=३२० कातन्त्रस्त्रम् | | ३८३१८ | प्रौढम नो रमा | | १-१६, २१-५७, ६१-५२, ९२-१२९। |
| ३=३२० कातन्त्रस्त्रम् २४-४१, ६-१२ । ३=३२२ ;; १-१५, +३१ (=क-प) । ३=३२२ ;; १-३, ६-१० १६-१७ । ३=३२४ ;; १-९+१० । ३=३२५ कातन्त्रवृत्तिपिखका त्रिलोचनदासः १-४१ + ४० । ३=३२५ कातन्त्रवृत्तिपिखका १-५१ + ४० । १-५, ११-३०, ३२-४०, ४२-४=, ५० । ३=३२० कातन्त्रस्त्रम् १८०-९=, १११-११ । १-५, ६-१३, १५-२०, २३-३० । ३=३२० कातन्त्रस्त्रम् १-१३ । १-१३ । ३=३३१ भापावृत्तिः पुरुषोत्तमदेवः २-६४, ६६-६९ । | • | ३ ५३१ ९ | परिभापेन्दुशेखरः | नागेशः | १,४, १०, १७-१⊏,२२-२३,२⊏,३१,३३-३⊏, ४१-४४, ४७-६४ । |
| १–३, ६–१० १६–१७ । १८३२३ धातुपाठः १८८२ ११ १८ । १८८२ ११ १८ । १८८२ ११ १८ । १८८२ ११ १८ । १८८२ ११ १८ । १८८२ ११ १८ । १८८२ ११ १८ । १८८२ ११ १८ । १८८२ ११ १८ । १८८२ ११ १८ । १८८२ ११ १८ । १८८२ ११ १८ । १८८२ ११ १८ । १८८२ ११ १८ । १८८२ ११ १८ । १८८२ ११ १८ । १८८२ ११ १८ १८ १८ १८ । १८८२ ११ १८ १८ १८ १८ । १८८२ ११ १८ १८ १८ १८ । १८८३ १८ १८ १८ १८ १८ । १८८३ १८ १८ १८ १८ १८ । १८८३ १८ १८ १८ १८ १८ । १८८३ १८ १८ १८ १८ १८ १८ । | • • | ३८३२० | कातन्त्रसृत्रम् | | २४-४१, ६-१२। |
| इस्३२३ धातुपाठः १८ । (गणनया) इस्३२४ ११ ३८३२५ कातन्त्रवृत्तिपिष्ठिका त्रिलोचनदासः १८४ + ४० । ३८३२६ कातन्त्रवृत्तिपिष्ठिम् १८५, ११-३०, ३२-४०, ४२-४८, ५० । ३८३२० कातन्त्रस्त्रम् १८५-९६, ११८-११५ । ३८३२९ भापावृत्त्रयर्थविवृतिः १८५, ६८-१३, १५-२०, २३-३० । ३८३३० कातन्त्रस्त्रम् १८२३ । ३८३२१ भापावृत्तिः १५२३ । ३८३२१ भापावृत्तिः १५२० । | | ३⊏३२≀ | संक्षिप्तसारटीका | | १-१५,+३१ (=क-प)। |
| ३ = ३ २ १ भाषावृत्तिः पुरुषोत्तमदेवः २ - ६४, ६६ - ६९। | | ३⊏३२२ | " | | १–३, ६–१० १६–१७। |
| ३ द्वरुष कातन्त्रवृत्तिपश्चिका त्रिष्टोचनदासः १-४१ + ४० । ३ द्वरुष कातन्त्रविरिष्टिम् १-९, ११-३०, ३२-४०, ४२-४८, ५० । ३ द्वरुष कातन्त्रसूत्रम् १-५, द-१०, १३-१४, १८ + १ । ३ द्वरुष कातन्त्रवृत्तिपश्चिका त्रिष्टोचनदासः १-५, ६-१३, १५-२०, २३-३० । ३ द्वरुष भाषावृत्त्रयर्थविवृतिः १-१३ । ३ द्वरुष भाषावृत्तिः पुरुषोत्तमदेवः २-६४, ६६-६९ । | | ३⊏३२३ | धातुपाठः | | १८। (गणनया) |
| ३८३२६ कातन्त्रपरिशिष्टम् १-९, ११-३०, ३२-४०, ४२-४८, ५०। ३८३२७ कातन्त्रसूत्रम् १-५, ५-१०, १३-१४, १८+१। ३८३२८ कातन्त्रशृक्तिपक्षिका त्रिष्टोचनदासः १७-९८, १११-११५। ३८३२९ भापाधृत्त्यर्थविष्टतिः १-४, ६-१३, १५-२०, २३-३०। ३८३२० कातन्त्रसूत्रम् १५२३। ३८३२१ भापावृक्तिः १५०००००००००००००००००००००००००००००००००००० | | ३⊏३२४ | ,, | | १-9+901 |
| ३=३२० कातन्त्रसूत्रम् १-५, =-१०, १३-१४, १=+१। ३=३२० कातन्त्रशृत्तिपक्षिका त्रिल्लोचनदासः ६७-९=, १११-११५। ३=३२९ भापाधृत्त्यर्थविष्टतिः १-४, ६-१३, १५-२०, २३-३०। ३=३३० कातन्त्रसूत्रम् १-१३। ३=३३१ भापाष्टृत्तिः पुरुषोत्तमदेवः २-६४, ६६-६९। | | ३८३२५ | कातन्त्रवृत्तिपख्जिका | त्रि लो चनदासः | १ - ४१ + ४० । |
| ३८३२८ कातन्त्रवृत्तिपश्चिका त्रिलोचनदासः ६७-९८, १११-११५ । ३८३२९ भाषावृत्त्र्यर्थेविवृतिः १-४, ६-१३, १५-२०, २३-३० । ३८३३० कातन्त्रसूत्रम् १-१३ । ३८३३१ भाषावृत्तिः पुरुषोत्तमदेवः २-६४, ६६-६९ । | | ३ ८३२६ | कातन्त्रपरिशिष्टम् | | १-९, ११-३०, ३२-४०, ४२-४८, ५०। |
| ३=३२९ भाषाधृत्त्यर्थविष्ठतिः १-४, ६-१३, १५-२०, २३-३० । ३=३३० कातन्त्रसूत्रम् १-१३ । ३=३३१ भाषाष्ट्रितः पुरुषोत्तमदेवः २-६४, ६६-६९ । | | ३⊏३२७ ॑ | कातन्त्रसूत्रम् | , | १-५, ज्ञ-१०, १३-१४, १५+१। |
| ३=३३० कातन्त्रसूत्रम् ३=३३१ भाषावृत्तिः पुरुषोत्तमदेवः २–६४, ६६–६९ । | | ३८३२८ | कातन्त्रवृत्तिपश्चिका | त्रिलोचनदासः | <i>६७</i> –९≒, १११–११५ । |
| ३=३३१ भाषावृत्तिः पुरुषोत्तमदेवः २-६४, ६६-६९। | | ३८३२९ ¦ | भापायुत्त्यर्थवियृतिः | | १-४, ६-१३, १५-२०, २३-३०। |
| | | ३८३३० | कातन्त्रसूत्रम् | | १–१३ । |
| | | ÷=३३१ ॄ | भाषावृत्तिः | पुरुषोत्तमदेवः | २–६४, ६६–६९ । |
| ३५३२ प्रक्रियाकामुदी ५-१४+४, २४,२९-३३+२, १-१३। | | ३८३३२ | प्रक्रियाकोमुदी | | च-१४+४, २४,२९- ३३+ २, १-१३। |
| ३=३३३ गणपाठः १-५। | | ३⊏३३३ | गणपाठ: | | 8-4 I |
| ३=३३४ कविकल्पद्रुमः १–२६। | | ३=३३४ | कविकल्पद्रुमः | | १–२६। |

| श्राकारः | पंक्तिः हंख्या | ग्रदःरः संख्या | लिपि: | त्राधारः | लिपिकाला | दृणीरूणे- विवेकः | विशेष [्] वरणम् |
|------------------------------------|-------------------|-------------------|---------|----------|----------|---------------------|-----------------------------------------------|
| १०°५.×४°७ | ११ | ક્ષ | दे. ना. | का. | | अपू० | अ०१, पा०१, आ० १। अष्टाध्या- यीटीका। |
| ११.०×त.्व | १० | ४० | ,, | ;; | | " | समासतिङन्तऋद्नतभागः। |
| ११.ग× ३. ० | = | ६१ | मै, | ** | | ,, | |
| 88.A×8 | ٩ | ४९ | 27 | ;; | | . 27 | |
| १०'२×४'४ | १० | જપ્ર. | दे. ना. | :; | | " | वै० सि० फौ० टीका। |
| १०प्×४प | ९ | ४२ | ,, | 27 | | ,, | अष्टाध्यायीटीका अ० ४, पा० ३। |
| ૧.ત ×ઠ.ક | ٩ | ३३ | ,, | 37 | | " | वै० सि० कौ० टीका। |
| ९ [.] ६×४ [.] १ | 5 | ३४ | ,, | " | | " | |
| ૧ •૧×૨ · ૫ | 0 | રુ | ٫, | ;; | _ | • 55 | |
| ११'४×२'२ | Ų | ४१ | वङ्ग | ,, | | ,, | |
| १० [.] ९×२ [.] ७ | 8 | ४१ | ,, | ,, | | ,, | |
| ૧ ३.૫ × ર .૨ | v | ४३ | ,, | ,, | | ••• | चुरादि्गणः। |
| १६ [.] ६×३ [.] ३ | = | ૭૭ | ,,, | ,, | | पू० क्ष | भ्वादिगणमारभ्यक्रयादिपर्धन्तः। |
| १ ५ ,२×४, ५ | 5 | ৩২ | " | 77 | | अपू० | |
| <i>१७</i> ५ × ३∙७ | Ę | 48 | ,, | ,, | | ,, | |
| १२'९×३'५ | 8 | ३२ | ,, | 27 | | ,, | तद्धितपादान्तम् । |
| १६ [.] ६×२ [.] = | ی | ९१ | " | " | १७४३ | ,,, | आख्यातेऽष्टमः पादः । |
| १२:६×३ | 5 | ५ूद | 25 | " | | ,, | अद्याध्यायी टी० टी० । |
| १३'≒×२'६ | ų | 88 | 22 | 33 | | पू० | तद्धितपादान्तम् । |
| દ •૫× ર •१ | و | ४१ | दे. ना. | ,, | | अपू० | अष्टाध्यायीटीका । |
| न'४×३ | ی | ३३ | मै० | ,, | | ,, | |
| न'६×४'१ | ९ | ३६ | दे. ना. | ,, | | ,, | पाणिनीयः । |
| <u>९'४×४'२</u> | Ę | ३० | ٠, و | ,, | | ,,, | |

| | | [४२] . | • |
|--------------------------------|-----------------------------|-----------------------------------------|---------------------------------------------------|
| क.मर्ख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारना म | पत्रसंख्याविवरणम् |
| ३८३३५ | शब्दकौस्तुभः | | १–३२ । |
| ३⊏३३६ | उणादिसूत्रम ् | | १–११ । |
| ३⊏३३७ | सारस्थतम् | | ६-१२, १९-३६, ४४। |
| ३८३३८ | अनिट्फारिका सटीका | | १–३ । |
| ३⊏३३९ | शब्द्रूपावली | | १–२४, २६–४४। |
| ३८३४० | मध्यसिद्धान्तकौमुदी | घरदराजः | १-२, ४-७०, । |
| ३५३४१ | ·** | | ११-६= । |
| ३≒३४२ | 'सारस्वतम् . | | १-१५ । |
| ३=३४३ | कारकनिर्णयः | | १, १–३। |
| ३⊏३४४ | काशिकावृत्तिः | İ | १–१६। |
| ३⊏३४५ | • धातुपाठः | | १९। गणनया) |
| ३ =३४६ | कलापचन्द्रः | विद्याभूपणान्चार्य- कविराजः | २७-६४ । |
| ३८३४७ | सारस्वतम् | | १-३, १-११, १-१४। |
| ३८३४८ | भापावृत्तिः | पुरुषोत्तमः ः | ३-९, ११-५७, ५९-११०, ११०-१११। |
| ३८३४९ | शन्दार्थसारमञ्जरी | जगऋष्णभट्टाचार्यः | १०-२१। |
| इस्ह्यू० | मुग्धवोधटीका | द्यारामवाचस्पतिः | १–२, ५-३९, ३९-५६,६१-९९,१०१-१०४ १०६–११४। |
| ३⊏३५१ | कातन्त्रष्टत्तिः सटीका | दुर्गसिंहः टी०का० काशीश्वरमृहाचार्यः | १४-२६, ९२-१३६ । |
| ३ ८३ ५२ | मुग्धवोधटीका | ो रामानन्दः | ७। (गणनया) |
| ३ ८३ ५३ | कलापचन्द्रः | विद्याभूषणसुषेण- कविराजः । | <u>1</u> 4 4 8 8 1 |
| [।] ३ ८३५ ४ | कात्न्त्रवृत्तिः | दुर्गेसिंहः | २९-५६, ५५-६१ + १, ६३-६५, ६७ । |
| ર⊏રપૂપ | कातन्त्रवृत्तिपञ्जिका | त्रिलोचनदासः | १–११, १-४६, ४८-७३, ७५,७८-९१, ९३ १००, १०२-१५० । |
| ३८३५६ | कातन्त्रसूत्रं सष्टृत्तिकम् | पृ• दुर्गसिंहः | १-३, ३-२९, १-१४, १-१३, १-२०। |

| -1- | | | | | | | |
|------------------------------------|-----------------|------------------|------------|---------------------|----------------------------------------|--------------------------|----------------------------------------|
| आकारः | पंकि- संख्या | अन्तर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकाल ः | . पूर्णीपूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
| ९°५×४°२ | 5 | २४ | दे.ना. | का. | | अपृ० | - |
| द'३×३'५ | 5 | રૂપૂ | | לכ | १७०९ | पू० | |
| प:२ ×३ : ६ | ११ | ३४ | 55 | ,, | • | अपू० | |
| द:६×४:२ | १२ | २३ | 33 | יָּיִנ | १७७३ श. १६३= | र्वे० | |
| ६ं॰=×३°४ | = | . २६ | 35 | . 22 | \(\)\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\ | अपू० | |
| ९ [,] २×३ [,] ९ | १२ | ३७ | נכ | 39 | | 35 | |
| ९ . ४×८.८ | 9 | २९ | " | , ,, | | 77 | |
| १५ ×३°६ | Ę | પુર્ | वङ्ग | > > | | पू० | कारकसमासतद्धितप्रकरणारिः |
| १६×३५ | , ড | ६૪ | ,, | ; ; | | अपूर | |
| १४×३•५ | ¥ | પૂ૦ | ,, | 7,7 | | पू० | सप्तमाध्यायः । अष्टाध्यायीटीका । |
| १३·३×३ | v | ६० | ,,, | 23 | | "* . | , |
| १७'२×३' = | v | 58 | " | 33 | | अपू० | कृत्पादः । कलापटीका । |
| १७°द'× ३'९ · ` | · ų. | .६३ | 33 | 39 3.* | | - 55 | सारस्वतदीपिका च। |
| १६'≒×४ | ६ | 8= | 37 | ?? | | ,, | अष्टाध्यायीटीका । |
| {ų.ο× 3. π | & . | ওহ | ,, | 22 | श. १७५६ | .,,, | |
| १३ . ८× ३.त | v | પૂર | 2: | ,,, | 1 | 33 | • |
| १४ [.] ६×२ [.] ⊏ | Ę | 48 | ,, | 33 | | | ें टी०-शन्द्रस्ताकराख्या । |
| | | | | - · | | | . • |
| १४.त×इ.ड | 5 | पू९ | 27 | 37 | | " | -: |
| १५. ५×३ ,३ | ६ | ६२ | " : | 27 | | . 19 | आस्वातेऽष्टमपादः |
| १४'४×३ . ५ | 8 | 8= | 33 | ,, | - | . 17 | |
| १५.८×३ | 8 | 80 | ,, | ,,, | श. १७५८ | ,, | आख्यातेऽप्टमणद्ः। |
| <u>१३'२×२'५</u> | 8 | 85 | ,, | 1 | ज्ञ. १६६२ | <u> </u> | अन्ते कातन्त्रपरिशिष्टं धातुपाठश्र । - |

| कम र्श स्य | प्रन्थनाम | प्रस्थकारनाम | पत्रसंख्याविदर्णम् |
|-------------------|------------------------------------|---------------------------------------|-----------------------------------------------|
| इस३५७ | कातन्त्रवृत्तिपश्चिका | त्रिलोचनदासः | १–४= । |
| ३८३५८ | कातन्त्रपरिशिष्टम् | भीपतिदत्तः | १-१३, १-३, १-२, ४-५४। |
| ्द⊏३५९ | कातन्त्रवृत्तिः | दुर्गसिंहः | १-४०। |
| ३⊏३६० | सभासवादः | | १–३, ६, ७.९, ५ । |
| ३⊏३६१ | प्रक्रियाकौमुदी | | २८-८०, ८२-११६। |
| ३८३६२ | क।तन्त्रम् | | १-७। |
| ३८३६३ | म त्रमने रमा | | ९७। (गणनया) |
| ३८३६४ | अप्टाध्यायी | | १-३०, १-३३। |
| ३८३६५ | काव्यकामधेतुषृत्तिः | बोपदेवः | ९-२०+९, ३२-५२। |
| ३८३६६ | परिभाषापाठः | | १–३ । |
| ्३⊏३६५ | भा तुपाठः | भीमसेनः । " | १–११ । |
| ३८२६ | ,, | | १–२० । |
| ।३ म३६ ९ | प्रौढमनोरमा | भट्टोजिदीक्षितः | १-१५४,१५६-२३९,१-=३, =६-९१, १-३५, २०७-२१७ । |
| ৢঽঢ়ঽ৽ | अ ाक् यातविवे कः | कृष्णभट्टः | १–१२ । |
| ৾ঽঢ়ঽ৽ | उणादिवृत्तिः | डज्ज्ज्वद्तसः (जाज छीत्यपरनामधेयः) | |
| ३ ८ ३७ | षपसाहित्यम् | रामः | १-८। |
| ३⊏३७ | कारकतत्त्वम् | शेषचक्रपाणिः | १२। (गणनया) |
| ३ ⊏३७ | अ कारकनिर्णयः | | १–१४ । |
| ३८३७ | ł , , | लघुरामः | १–४ । |
| ३⊏३७ | इ इसारकविवेचनम् | भगनन्द्सिद्धान्त वागीशः | - १–१९ । |
| ३⊏३७ | ० कोडपत्रम् | | १–५१। |
| ३⊏३७ | न तर्कचन्द्रिका | श्रीकृष्णभट्टमौनी | १-४४। |

| | | | | | | | 1 |
|--------------------------|------------------|-------------------|--------|------------|--------------------------|-------------------------|-----------------------------------------------------------|
| ग्राकारः | वंकि • संस्था | ग्रच्र- संख्या | लिपि | द्माथारः | लिपिकालः | पूर्णीपूर्ण - विवेक: | विशेषविवरणम् |
| <i>१५.</i> ⊏×३. <i>५</i> | 4 | ६२ | वङ्ग | का. | | पू० | सन्धो पञ्चमः पादः। |
| १३%×२ . ६ | 8 | ३७ | 23 | " | श. १७५⊏ | अपू० | |
| १६.5×3.8 | 8 | ४३ | ,, | ,, | | 77 | |
| 88. ≇×3.8 | ६ | પૂક્ | ,, | 93 | | 33 | अन्तिमपत्रचतुष्ट्यं कातन्त्रटीकायाः। |
| ११.म×१.८ | 9 | ३६ | दे नाः | 73 | | 5 5 | 1 |
| ۳×۶٠۶ | . ६ | ६ ३ | " | ,, | 1 | 72 | |
| १०.८ × ८.८ | १० | ३≒ | " | ļ ,. | | 35 | |
| म'३×४ | १० | २६ | >> | " | } | पु० | |
| द:९×४:१ | १२ | ३१ | 25 | , , | १६६९ | अपु० | |
| ९ . ७×३.८ | ११ | ३३ | 33 | ,, | | पुरु | |
| 80.€×8 | = | ३९ | >> |) }, | 1 | 33 | |
| ८.८×८.इ | 8 | 33 | ,, | 33 | १७४२ | 22 | |
| 80.6×11.8 | २० | २४ | " | " | | अपू० | वै० सि० को० टीका। |
| 80.8×3.E | v | २९ | 95 | 55 | | ₫o | |
| १०.३×४.८ | 15 | ३८ | , ,; | 95 | | अपूरु | |
| १०.८×११.८ | १२ | ३२ | ,, | 37 | . १९४६ श. १८११ | पू० | रुठोकयोजनिकोपायभूतवैयाकरणपद् प्रयोगनियामकोऽयं प्रन्थः। |
| १०×४४ | १५ | 88 | ננ | 33 | | " * | अतिजीर्णम् |
| <i>6.6</i> × 8.3 | 9 | २इ | נכ | " | | अ पृ० | |
| ९°६×४•३ | .80 | 88 | 77 | " | | q o | रलोकयोजनिकोपायरच । |
| १२.७×ग्र.६ | 9 | ३८ | ,, | " | १६०९ (१) | " | |
| ११ [.] ३×४ | १२ | ८५ | " | ,, | | ,, | |
| ४०.५×४.० | १२ | યૂર | . | :: | | अपू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थना म | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---------------------------------------|-----------------------------|---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| ३⊏३७९ | परिभापागणिमाला | चन्द्रद्त्तः | १–९ |
| ३८३८० | परिभापेन्दुशेखरटीका . | व्य ङ्कदेशात्मजः | १,=-२१=२२,२३-६०=६१,६२-२२३्। |
| ३८३८१ | परिभापाविद्यतिच्याख्या | भैरवः | १-३,५-७, ७, ७-२३,२५-६३। |
| ३८३८२ | 33 | | १–६= । |
| ३८३८३ | परिभाषेन्दुचन्द्रिका | विश्वनाथः | ४७। (गणनया) |
| ३न३न४ | वादमुधाकरः | कृ ष्णाचार्यः | १-१६। |
| ३८३८५ | 23 | ; - - | १–१६ । |
| ३८३८६ | काशिकावृत्तिः | वामनः | १-४२, ≒, ३२, ४०-४२, ४२-४३, ४३-४४, ४४-४६=४७,४९-५०,५३-५४, ५९,५९-६४ । |
| ३८३८७ | श्रीडमनोरमा - | -भट्टोजिदीक्षितः | १०१-१८६, १८८-२१७, १-३८, १-१९, १९-५२, १-६२,१-२२,२-३१। |
| ३म३मम | 27 | ,, | २,४-३५,३५-५२,५४-१०२। |
| ३८३८९ | , , , , , , , , , , , , , , , , , , , | , , | 81 |
| ३८३९० | मध्यमनोरमा | • | १-१७ । |
| ३≒३९१ | महाभाष्यं सप्रदीपम् | . प्तञ्जलिः टी०का० केयटः | १-२ॅप॒,१-६३,१-१९,२१-२५(=३५),२६-४५, १-२३,१-२१,९०-१०१,३४-२६,१-३मं,४१- ५२,५५-७०,१-२३,६⊏-०३,७५-१०६,१-१४१, १-६म,१-५३,५५-म१। |
| ३⊏३९२ | .,,, ,, | .,. · | 8-88=1 - ::5 |
| ३८३९३ | लघुसिद्धान्तकौ मुदी | ٠ | ५०,५२-७० । |
| ३८३९४ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी 👵 | भट्टोजिंदीक्षितः | १५४। (गणनया)। |
| ३८३९५ | . ,, ,• | | १-११,१६,१८-१९९,२-३८,२३५७८ । |
| ३८३९६ | वैयाकरणशब्द्रस्तिमाला | सोमयाजी · · · | १-२३। |
| ३≒३९७ | शब्दकौग्तुस्त्रभा | वैद्यनाथपायगुण्डः | ३ ३-५१। |
| ३=३९= | शब्दकोम्तुभः सटीकः | | १-४८,४८-८४, ९६-२०७+१, २०८-२५७, १-४९। |

| ९ | आकारः | पंकि- | अन्तर- | लिपि: | आयार: | लिपिकाल: | पूर्णीदूर्ण- | विशेषविदरणम् |
|----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|------------------------------------|---------------|---------|---------|------------|-----------------|--------------|---------------------------------------------------------------|
| ९.९ ४४ ॥ ॥ अपू० टीका जिय्या १६४ एए पर्वेन्तम्, ततः पर हमवि टीका च । ९.५ ४४ ॥ ॥ ॥ परिमापेन्दुशेखरटीका । ९.५ ४४ ॥ ॥ ॥ ॥ ९.४ ४४ ॥ ॥ ॥ ॥ ९.४ ४४ ॥ ॥ ॥ ॥ ९० ४४ ११ १४ ॥ ॥ १८ ५४ ॥ ॥ १० ५४ ४४ ॥ ॥ १८ ५४ ॥ ॥ ० १० ५४ ४४ ॥ ॥ १८ ५४ ॥ ॥ ॥ ॥ १० ५४ ४४ ॥ ॥ १८ ५४ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ | 211 14 44 | उ ख्या | 'संख्या | | स्र | | विवे हः | • |
| ९'\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\ | ९ [.] ५×४.३ | ९ | ३३ | दे.∙ना. | का. | | पृ्० | |
| ९.५.४.४.५ .११.४.५ | ९ . ८×४.त | ٩,, | ३६ | " | ?> ** | . • | अपू० | टीका त्रिप्थगा १६४ पृष्ट पर्यन्तम्, ततः परं हमवती टीका च । |
| = ३×४'२ ६ २२ " " " " " " " " " " " " " " " " " | ९ [.] ५.×४ [.] २ | .११- | ક્ષ | 77 | - ,, | , | ** | |
| ९७० ४४३ ११ १४ ,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,, | ९'५×३ '५ ः- | . १० | . ३२ | ٠,٥٠٠ | " | • | " | ,, |
| १०'६×४'४ ११ ४७ ;; ; ; ; ; ; ; ; ; ; ; ; ; ; ; ; ; ; | ५ ३×४ [.] २ | ફ | २२ | " | " | • | " | 55 |
| १०-६×४-५ | ९ . ०×८.३ | ११ | ३४ | ,,, | 57 | ' | पू० | |
| १०'६×४'४ ११ ४४ " " १८६३ " वै० सि० को० टीका । १०'७×४ १० ५१ " " " " " " " " " " " " " " " " " " | ४०.8×8.8 | ११ | 80 | 7, | ,, | | " | |
| १०'७×४ १० ५१ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ | १० ⁻ ६×४ ⁻ ५ | 9 | ષ્ટર | ,, | ,, | <u>,</u> | अपू० | |
| १०'७×४ १० ५१ , , , , , , , , , , , , , , , , , , | १० ∙≒×४ . 8 | ११ | 88 | ,, | | १पप३ | " | वै० सि० कौ० टीका । |
| द्राप्त अ १ द्रा अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ | १० . ० × ४ | | પૂર | 35 | ,, | | ,, | 22 |
| १२.८×६.त १४ ४२ " " " व्य० ४-२। १८.६×१.० १३ १८ " " " व्य० ३ पा० १-४। १०.८×१.५ २० १० " " व्याह्मि। १०.८×१.८ १४ ३० " " व्याह्मि। १०.४×१.८ १४ ३४ " " व्याह्मि। १०.४×१.४ १४ १४ " " व्याह्मि। १४.४४.४ १४ १४ " " व्याह्मि। | १०.८×६.८ | 5 | ३१ | " | 35 | | *9 | " |
| १२'६×५'७ १३ ५९ ,, ,, आ० ३ पा० १-४। १०'२×४'५ २० ५० ,, ,, आपू० पुस्तकेऽस्मिन्मुद्रितपुस्तकात्पाठ- भेदोऽस्ति। १०'९×४'न १२ ३७ ,, ,, पूर्वार्डम्। ९'३×४'१ ९ ३३ ,, ,, १८५१ पू० ,, प्रत्याहाराहिकम्। १३×५'४ ११ ५७ ,, ,, १९२६ ,, | ५ '५×४'१ | ११ | ३२ | ,, | 77 | | " | ्र सध्यसिद्धान्तकोमुदीट का । |
| १०.४ x 8.त | १२ [.] ९×६ [.] ५ | ११ | ४= | ,, | 5 7 | | पृ्० | अ० १–५। |
| १०.४ x 8.त | | | | | | | | |
| १०'९×४'न १२ ३७ " " पूर्वार्टम्। १०'७×४'न ' ५ ३४ " " " पूर्वार्टम्। ९'३×४'१ ९ ३३ " " १८८१ पू० १'२×४'४ १६ ५३ " " १८८१ अपू० प्रत्याहाराहिकम्। १३×५'४ ११ ५७ " " १९२६ " | १ २[.]६ × ५.७ | १३ | પૂર | ,, | 77 | | 97 | अ०३पा०१–४। . |
| १०'९×४'द १२ ३७ ,, ,, पूर्वार्ट्टम्। १०'७×४'द : ५ ३४ ,, ,, १८८१ पू० ,, उत्तरार्द्धम्। ९'३×४'४ १६ ५३ ,, ,, १८८१ यू० ,, ग्रत्याहाराहिकम्। १३×५'४ ११ ५७ ,, ,, १९२६ ,, | १०°२×४७५ | २० | પૂ૦ | ,, | ,, | | अपू० | पुस्तकेऽस्मिन्मुद्रितपुस्तकात्पाठ- भेदोऽस्ति । |
| ९.३×४.४ | १०°९×४५ | १२ | ३७ | ,, | .,,, | | 37 | |
| ९° म × ४° ४ १६ ५३ ,, ,, श. १७४६ अपू० प्रत्याहाराहिकम्। | १०.०×४.≃ · · | : भू: | ३४ | " | ,, | | 5) | उ त्तराईम् ! |
| १६ ५३ ,, ,, अपूर् अपूर् प्रत्याहाराहिकम्। १३×५.४ ११ ५७ ,, ,, १९२६ ,, | ९:३×४:१ | 9 | ३३ | >> | " | १मम१ | पू० | ,, |
| 1 ' 1 - 1 27 27 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 | ९ : न×४:४ | १६ | पू३ | " | ,, | राः १७४६ | अपू० | ्र प्रत्याहाराहिकम् । |
| | १३×५.८ | ११ | पूर | ,, | " | १९२६ श. १७९१ | 22 | |

| आकार: | पंचि- संस्था | अवर- वंष्या | जिपि ः | आधारः | लिपि यालः | पूर्णीपूर्ण- विचेकः | निरोगिनर ल म् |
|------------------------------------|-----------------|----------------|----------------|----------|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|---------------------------------------|------------------------------------------------------|
| ११×8'8 | 9 | રફ | दे.ना. | पत. | | अपृ० | |
| १ ० ×४.8 | ११ | ŝo | " | ,, | १⊏१५ | 54 | ः वैत्यट्यियग्णमिति । |
| ११ . ४ × ४.५ | १० | ४६ | ٠, | ** | • | •, | |
| १०'२×४'५ | 8 | ३२ | •• | ,• | १६४४ | * | |
| १२ :१×४:१ | १२ | ६५ | ,. | ** | ET ALLANDON COMPANIEN | ş } •• | |
| १० × ४.त | 93 | प्रव | ,, | ., | | 33 | वै० मि० फी० टीफा |
| १०.८×८.⊭ | ११ | ३३ | ,, | ,, | | q. | |
| १३ [.] २×३ [.] ९ | ų | 38 | वह | ,, | ! इ. १७६६ | अर्पे० | |
| १२७×३ [,] ६ | Ę | प्रश् | ,, | | : | , , , , , , , , , , , , , , , , , , , | |
| १३×३°४ | 18 | 3.0 | ,. | •• | 1 | 17 | शब्दमपाउत्तिमदितः |
| १३ ⁻ ३×४ ⁻ १ | Ę | ३९ | ., | | | · Áô | |
| १३×३ | 8 | ३६ | ,, | | Section 1 | . अपृ० | धीपविद्याविरचितं कातन्त्रपरिशिष्ट- सूत्रद्धाः। |
| १३' -× २'- | Ę | ६७ | ,, | ,, | *************************************** | 3* | |
| १२'=× ३ '३ | 8 | ષ્ટર | ,. | 97 | | do | सन्धी ५-॥ पादाः । |
| १५.१×३.३ | Ę | 8= | दि. ना | ·., | ! | अपृ० | धानुपाठी या |
| १५.४×३.५ | 8 | %= | च क | 1 :- | | •• | त्यादिपादः |
| १५.×३ | ६ | पृद् | ,,, | 2, | | ,• | |
| \$0.8×8.8 | . 22 | 80 | मिथित | A ,, | 1 | , ;• | अजन्तपुँ न्निरुद्धप्रकरणम् । |
| \$0.8×8.A | , i = | 110 | • | 4, | V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V-ma - V- | 4+ | वै० सि० फी० टी० टीका । आदी दशपत्राणि अङ्गरिहतानि। |
| \$0.2×8.₫ | è: | i do | , ,, | ,, | niggenericanism A. n. | •• | वै० सि० कॉ० टीका |
| ₹%×2.0\$ | ९ | ‡u | े दि. न | راً ,, | 1 | ;· | |
| #4.×३°३ | 19 | ३१ | <u>. ., </u> | <u> </u> | i | ! | मध्यमिद्धान्तकां सुदीविष्टतिः |

| _ | | | | |
|---|---------------|--------------------------------|---------------------------|---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| | क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | प्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
| | ३८४२१ | वैयाकरणभूपणसारः | | ४०-१०१। |
| | ३८४२२ | प्रबोधचन्द्रिका | वैजलभूपालः | १-१=। |
| | ३=४२३ | प्रत्याख्यानस ङ्महः | नागोजिभट्टः | १-३७ । |
| | ३≒४२४ | प्रक्रियाकौ मुदीप्रसादः | विद्वलः | ३-४,६,⊏-३१,३४-३९,४१,४४-६३, ६५-६ ७, ९३,१०१,१०३-१०९,१११-११७,१२४-१४⊏, १ ५१-१ ५३,१ ५५-१५६,१ ६२ । |
| | ર≕૪રષ | पाणिनीयवादनक्षत्रमाला | उमामहेश्वरदीक्षितः | ३८,४०-९४। |
| | ३८४२६ | सिद्धान्तपद्माकरः | सदाशिवः | १-४,४-४४,४४-४८,४८,४८,६८-६७,६७-६३,८३, ८३-८६,८६,८६,८६,८६-११४,११४,११५- १३७,१३७-१४४,१४४,१४४,१४४-२३४,२३४ २४८,२४८-२६३,२६३,२६३-२६०। |
| | ३८४२७ | श्रभिनवार्भेतरिङ्गणी | सदाशिवभट्टः | १-४७। |
| | ३८४२८ | परिभाषेन्दुशेखरटीका | | १-४६ = ४७,४⊏-९५ । |
| | ३=४२९ | शब्दविनायकः | | ३-५ । |
| | ३८४३० | शब्दरत्नप्रकाशिका | मै रवभिश्रः | <i>चप</i> -१४७ । |
| | ३ =४३१ | 37 | ,5 | १- ५१, ५३-१२०,९१ -३६ ५ |
| | ३=४३२ | शब्दरत्नटीका | | १-२६ । |
| | ३=४३३ | शब्दरत्नभावप्रकशिका | वै ग्यनाथपायगुण्डे | १-९७,९९,१=-४७,४७-५५। |
| | ३=४३४ | शब्दरत्नटीका | | १-१०,१०-५७। |
| | ३८४३५ | सारसिद्धान्तकौमुदी | वरदराजः | १-५०। |
| | ३५४३६ | शब्देन्दुशेखरटीका | भैरविमभः | १-२१, २१-२२, २२-२३, २३-६४,६म-म्प |
| | ३८४३७ | 13 | | १-६४ । |
| | ३८४३८ | 19 | भैरवमिश्रः | १-३४=३५-३६-१११। |
| | ३=४३९ | | >,, | १-१००,११०-२७२। |
| | ३८४४० | 27 | ,,, | १-२७३,२७७-३्३७,३३७-३४२। |
| | ३५४४१ | शब्देन्दुशेखरः | | १-१ ८,२०-४४,५४-५९,६२-१४३,१४०-१६६ । |

| श्राकारः | पैकि- संख्या | श्रद्धर- संख्या | लिपि: | आधारः | लिपिका ल ः | पूर्णापूर्ण विवे कः | विशेषधिवरणम |
|------------------------------------|-----------------|--------------------|---------|-------|-------------------|-------------------------------|-------------------------------------------|
| ९ . ग×३.ह | Ę | ३२ | दे. ना. | का. | | अपू० | |
| ९ . ८×८.इ | હ | ३७ | ננ | " | | 33 | |
| ९ .୩×8.8 | ११ | ४२ | ,, | 33 | | पू० | |
| १० [.] ४×४ [.] ४ | १७ | ६३ | " | " | | अपू० | |
| | | | | | | | |
| ९ : ≒×४:२ | १० | 80 | ננ | " | | 37 | |
| \$0.6×8.0 | v | ३३ | 23 | " | श. १७६८ | पू० क्ष | परिभापेन्दुशेखरित्रपथगाव्याख्या। |
| | | | | | | | |
| ११ [.] ९×४ [.] = | ११ | પ્ર | 33 | 33 | | 33 | परिभाषेन्दुशेखरगदाटीकासारांश टीकेयम् । |
| १२४×४ | १४ | ૪૪ | " | ,, | | अपू० | |
| १०:९×४:४ | ११ | ४६ | " | 53 | श. १७२३ | ,, | |
| &.exs.s | १३ | પુર | 77 | ,, | | ,, | नै० सि० कौ० टी० टी० टी०। |
| १०°३×४°६ | १० | ४६ | ,, | ,, | श्चन्ध | प्० 🎕 | 27 22 |
| १०•६×४•६ | ११ | 8= | ,, | 23 | | अपू० | |
| ९' = ×४'४ | १६ | धूद | ,, | " | | ,, | वै० सि० कौ० टी० टी० टो० । |
| १२ ×४°⊏ | ११ | पश | 33 | ,, | | 27 | ,, |
| ९ [.] ३×४ [.] ३ | 5 | ३१ | ,, | ,, | १९०६ | पू० | |
| १२.०×त | ११ | ६६ | 93 | ,, | १मम१ | श्रपू० | चन्द्रकसाख्या । |
| <i>११.</i> ०×৪.≃ | १० | ३४ | ,, | ,, | | 5, | |
| १२.८×४.४ | ११ | ६१ | ,, | · ., | | पू० क्ष | ,, तिङन्तप्रकरणमात्रम् |
| ११. ८×৪.৫ | १० | ३८ | ,, | ,, | | ,, & | समासतो द्विरुक्तप्रक्रियान्ता। |
| .१ १६ ×४'म | १० | ३६ | 33 | ,, | | अपू• | स्त्रीप्रत्ययान्ता । |
| ₹ ₹ ×8.८ | 80 | No | 1 33 | ,, | १७६१ | ,, | पूर्विद्धम् । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारना म | पत्रसंख्याविवरणम् ¦ |
|------------|-----------------------------------------|----------------------|---------------------------------------------------------------|
| ३⊏४४२ | वैयाकरणसिद्धान्तरत्नाकरः | रामकृष्णभट्टः | १-२७,१-२७,२९-३१। |
| ३५४४३ | प्रकियाकोमुदी | रामचन्द्राचार्यः | १न-६९ । |
| ३८४४४ | 99 | | १,३-६४ । |
| ३८४४५ | वैयाकरणभूषणसारः | कृष्णभट्टः | ६१। |
| ३८४४६ | विभक्तयर्थविचारः | | १-५। |
| ३८४४७ | अप्राध्यायी | | १-५४। |
| ३८४४८ | अन्ययार्थः | | १-४ । |
| ३८४४९ | सर्वेमङ्गला | शेपशर्मसृरिः | १-३०,३०-१३६,१३६=१३७,१३७-१७५, १७५-१७६,१,१७७-२२०। |
| ३⊏४५० | रत्नार्णवः | | १-११७,११९-१२३,१-७५,१,१-५५। |
| ३८४५१ | अर्थवत्त्वपरिष्कारः | | १-१२ । |
| ३८४५२ | अप्राध्यायी | पाणिनिमुनिः | १-५४। |
| ર≒૪૫ૂર | सिद्धान्तकोंमुदीटीका | | १। |
| ३८५५४ | धातु पाठः | | १-२१ । |
| इद्धात | परिभाषेन्दुज्ञेखरहेंभवती | यागेश्वरः | १-५,५-१= । |
| ३⊏४५६ | शिरोमणिः | शंपऋण्णपण्डित | १-१=। |
| ঽ≒ৡ৸ৢ৹ | भापावृत्त्यर्थविवृतिः | | १-३। |
| ३८४३८ | " | | २५-२७+१। |
| ३⊏४५९ | ,, | सृष्ट्रिधरशर्मा | २२-३३ + १ । |
| ३८४६० | " | 3 3 | १-२०,२३-३०,४,६-द्द-१द्द-२३,१-३,६,६-७, १-९,११-१४,१-१३,१-१२। |
| ३⊏४६१ | अनिट्कारिका सटिप्पणा | | १-४। |
| ३८४६२ | ''अनेकमन्यपदार्थे'' सूत्रार्थ विचारः | | १-१४। |
| ३≒४६३ | उणादिसूत्रं सपृत्तिकम् | i | १–३३ । |

| श्राकार: | विक्त- संख्या | श्रद्धर- संख्या | लिपि: | श्राधारः | लिपिकालः | पूर्णापृर्ण- विवेक: | विशेषविवरणम् |
|------------------------------------|------------------|--------------------|---------|----------|----------|------------------------|----------------------------|
| १० [.] १×३ [.] ४ | ११ | ७२ | दे. ना. | का. | | अपू० | वै० सि० को० व्याख्या। |
| १२ [.] १×४ [.] ३ | ११ | त्रप्र | " | ,, | | " | |
| १ १.1₹×გ₹ | ६ | ३१ | 33 | 77 | | 77 | |
| ९ . द×६.त | १२ | 33 | ,, | 33 | | 37 | |
| 5'5×8 | १० | ४१ | " | 57 | | 33 | कारकवादो वा। |
| म'म×३ ' ५ | 9 | ३७ | " | " | | पूर | |
| ९'४×४'२ | ٩ | રપ્ર | 57 | 25 | | अपू० | |
| ७ [.] ६×४ [.] १ | १३ | ३२ | " | " | | पू० 🏶 | परिभापेन्दुशेखरटीका। |
| ₹.8×8 | ٩ | રૂપ. | ,, | ,, | १६२० (१) | अपू० | वै० सि० को० व्याख्या। |
| ९ . ६×३ . न | રપૂ | प्रश | " | " | | 7 7 | |
| ६·६×५·१ | ९ | ३०ं | " | " | १९०५ | पू० | |
| १०.४ × ग४ | 3,0 | રપ્ | ,, | ,, | श. १७७३ | अपू० | अकथितञ्चेत्यादिसृत्राणामः। |
| १ ०[.]१ ×५.८ | ११ | २५ | 33 | >> | श. १७७६ | Ãо | |
| ९ . ≃×ક્ર.ત | १२ | 80 | ,, | 33 | | अपू० | · |
| द'द×४'२ | ११ | ४२ | 33 | " | | पु० | प्रक्रियाकोमुदीच्याख्या । |
| १३.४× ३. ६ | ی | પ્રય | वङ्ग | ,, | | अपूः | अष्टाध्यायीटी०टीका । |
| १8 ५ × ₹.४ | 5 | ६३ | " | 73 | | " | ,, |
| १8.1 × ३. \$ | v | પ્રય | ,, | " | | " | 13 |
| १ ६ •६×३•५ | ફ | ७४ | ,, | 27 | | " | अ०१—२। |
| ⊏ '¤Х8'፞፞፞፞፞፞፞ | 9 | २९ | 35 | ", | १६९९ | पू० | |
| ९ : २×३:5 | 9 | ३२ | . 22 | 55 | | अपू० | |
| ९×४ | १३ | ३३ | दे. ना | 37 | | 33 | |

| क्रम संख्या | प्रस्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पश्संख्याविवरणम् |
|--------------------|-------------------------------------------|-------------------------------|-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| ३८४६४ | एवकारार्थविद्यतिः | माधवः | १-५। |
| ३⊏४६५ | कारक महः | मदनशर्मा | १-७+१। |
| ३⊏४६६ | कारकतत्त्वम् | वी रेह वरः | १–२ । |
| ३⊏४६७ | कारकवर्णनं सटीकम् | ययातिः | १५ । |
| ३८४६८ | स्वरसिद्धान्तचन्द्रिका | श्रीनिवासः | १-१९७ । |
| ३५४६९ | शिरोमणिः | | ५१–६२ । |
| ३≒४७० | 33 | | १–२४ । |
| ३≕४७१ | परिभाषेन्दुशेखरः सटीकः | नागेशः टी० का० भवदेवात्मजः | १-१५६, १५९-१६१,१-३१+१। |
| ३⊏४७२ | परिभाषाप्रदीपार्चिः | उद्यङ्करः | १-=१। |
| ३⊏४७३ | सारस्वतम् | | १–१२। |
| ३८४७४ | प्रदीपच्याख्या | | १–२ । |
| ३≒४७५ | महाभाष्यप्रदीपोद्योतनम् | अन्नम्भट्टः | १–६५ । |
| ३८४७६ | महाभाष्यप्रदीपोद्योतः | नागेशभट्टः | १–३४, ३७-६९। |
| ३८४०० | " | 33 | १-३४६, १-१५,३९-५३, ५३-५७,५९-१२४, १-५९, ६१-१३१, १-६२, ६२-१००, १-५७, ५७-६४, ९६-९९, १-१०२, १०२-१६०, १- ६४, १-७० । |
| ३८४०८ | मध्यसिद्धान्तकोमुदी | वरदराजभट्टः | १–१९३ । |
| ३⊏४७९ | विषमा | | १–२८६ । |
| ३८४८० | लघुराव्देन्दुशेखरविपमपद्- वाक्यविवृतिः | राघवेन्द्राचार्यः | १-५५,१-२१। |
| ३=४=१ | लघुशब्देन्दुशेखरविष्टति- सड्यहः | | १–=९, १–२१ । |
| ३म४⊏२ | लघुशव्देन्दुशेखरभावार्थे- दीपिका | गोविन्दः | ११२–१२७,१२९-१५६,१-६। |
| ३८४८३ | लघुश ब्देन्दु शेखस्त्रभा | शेषः ! | १-२०। |

| l | | | | | | | |
|----------------------------------|-----------------|------------------|---------|-------|------------------------|----------------------|---------------------------------------------------------|
| आकार: | पंकि- संख्या | अच्हर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकाल: | दृणीपुर्ण- विवेक: | विशेषविवरणम् |
| ९.७× გ. .ક | १३ | ४१ | दे.ना. | का. | | अपू० | |
| १३ [.] ३×४ | १० | પ્ર.१ | वङ्ग | 57 | बङ्गाच्दः १२८७ | पू० | |
| ११'९×४'६ | १४ | પૂ૦ | दे ना. | " | 1,40 | अपू० | |
| १४ [.] १ × ३ . = | 3 | ४९ | वङ्ग | " | | पू० १ | नीतिशिक्षणव्याजेन । |
| ९•६×४ | १० | ३९ | दे. ना. | 23 | १८७१ | " | |
| १०•=×४•६ | १४ | ४७ | ,, | " | श. १७३५ | अपू० | परिभाषेन्दुशेखरटीका । |
| १०:६×४:६ | ११ | , So | 39 | " | | 33 | किरीटनामिका वा |
| ११ [.] ४×५.१ | ९ | 84 | ,, | ,, | टी. रचना- कालः १८५२ | 93 | टीका-भैरवी । |
| ९.०× <i>६.</i> ई | ११ | ४३ | 33 | 25 | | पू० | |
| ९'२×४'३ | 9 | २३ | " | ,, | } | अपू० | |
| ११×४ | 5 | .88 | " | ,27 | | >> | महाभाष्य टी०टीका । |
| १०.८ × ৪.2 | १० | ३६ | ,, | 37 | | 33 | ,, ,, |
| 8.±×8.₽ | १६ | 88 | ,, | ,, | | 3 7 | अ०१. पा०४ आ०४। |
| ११×४'न | ११ | ų.o | " | ,, | १८२० १८४४ १८४५ | ,, | १-८ अध्यायाः। |
| ६०.० × ८.त | 9 | ३२ | 9> | ,, | | पू० | |
| ९ . ७×±.0 | १२ | ३४ | " | ,, | | अपू० | लघुराव्देन्दुशेखरच्याख्या । स्त्रीप्रत्ययमकरणान्ता । |
| લપ્ ×ક્ષપ્ | १० | ३६ | ,, - | " | १९२० | ,, | पञ्चसन्धिप्रकरणम् हलन्तपु ल्लिक् |
| १०प्×४प् | 9 | ३२ | ,, | ,, | | ,, | सञ्ज्ञाप्रकरणांशाद्जन्तपु हिङ्गांशः। |
| ९ . ६×८.५ | १७ | 88 | 93 | " | | " | स्वीत्रत्ययकारकसमासप्रकरणानि । |
| 9.5×3.0 | 9 | ४१ | ,, | 9, | | ,,, | सञ्ज्ञाप्रकरणम् । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|--------------|-----------------------------------------------|----------------------|---------------------------------------------------|
| ३८४८४ | लघुशब्देन्दु शेखरव्या ख् या | शेपसृरिः | १–१३, १३, १३-३९। |
| ३८४८५ | " | | १-१०, १-११,१-२+३। |
| ३८४८६ | ,, | | २७-५४ । |
| ३८४८७ | शब्दरूपावली | रङ्गदेवः | १-१९ । |
| ३८४८८ | 35 | गोविन्दः | १–६। |
| ३८४८९ | भापावृत्तिः (?) | | १९-२० । |
| ३८४९० | मु ग्धवोधः | | १९-२६ +७, ३४-३५ । |
| ३८४९१ | मध्यसिद्धान्तकौमुदी | | १-३ । |
| ३८४९२ | ,, | यरद् राजमट्टः | १-४⊏=४९, ५०−१४५,१४५-१५५,१५७- १५९=१६०,१६१-२६२ । |
| ३८४९३ | समासचृडामणिः | | १–२, ४-६ । |
| ३८४८४ | कातन्त्रवृत्तिः | दुर्गसिंह: | १–३७ । |
| हन४९५ | गणरत्नमहोदधिः | | 8−3# I |
| ३८४९६ | प्राकृतकौ मुदी | वररुचिः | १–३ । |
| ३८४९७ | कारकतत्त्वम् | शेपचक्रपाणिपण्डितः | १–१५ । |
| ३८४९८ | लघुशब्देन्दुशेखरविवृतिः | | ९९। |
| ३≒४९९ | सारस्वतप्रक्रिया | अनुभूतिस्वरूपा- | १–ग्रू । |
| ३⊏५०० | कारकनिर्णयः | चार्यः | ३ । |
| ३८५०१ | प्रयोगविवेकसङ्ग्रहः | | १-२०। |
| ३८५०२ | कातन्त्रकोसुदी | गङ्गे शशर्मा | १-३ । |
| ३द्भु०३ | परिभापासणिमाला | | ११। (गणनया) |
| ३८५.०४ | परिभापावली | | १–३ । |
| इन्द्र्यू०पू | वैयाकरणभूपणं सटीकम् | | १–२, ६-१६, १⊏-२५ । |
| ३८५०६ | प्रवोधचन्द्रिका | वैजलभूपतिः | २-२१, २३-२६, २६-३०। |

| ९×१.७ ४ २० वङ्ग , श. १७८३ पृ० सम्धौ पश्चमपादाःता । १०.६×३.६ ७ ३३ दे. ना. , | | | | | | | | |
|----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|------------------------------------|----|------|------------|------------|----------|------------------------|-------------------------------------------------------------|
| ९.३ × १ = १० ४१ रे. ता. का. प० % सक्ताशकरणाप् । ९.६ × १४ ४ १३ १० " " " " ए० सक्ततप्रित्तिकङ्गतः स्त्रीप्रत्ययांशा । " १० १० १० १० १० १० १० १० १० १० १० १० १० १० १० १० १० १० १० १० १० १० १० १० १० १० १० १० १० १० १० १० १० १० १० १० १० १० १० १० १० १० १० १० १० १० १० १० १० १० १० १० १० १० १० १० १० १० १० १० १० १० १० १० १० १० १० १० १० १० १० १० १० १० १० १० १० १० १० १० १० १० १० १० १० १० १० १० १० १० १० | आकारः | | | निपि: | आयार: | लिपिकाल: | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
| ९:=x8'8 १३ ,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,, | ९•३×३ <i>=</i> | १७ | ४१ | दे. ना. | का. | 1 | पृ० क्षः | सञ्ज्ञाशकरणम् । |
| ९.२.४.४.४ १० २५ ,, ,, १९२५ पू० अष्टाण्यायः टीका । १२.२.४.२.५ ५०.०.४.४.५ ५०.०.४.४.५ ५०.०.४.४.५ ५०.०.४.५ १०.०.४.५ १०.०.४.५ १०.०.४.५ १०.०.४.५ १०.०.४.५ १०.०.४.५ १०.०.४.५ १०.०.४.५ १०.०.४.५ १०.०.४.५ १०.०.४.५ १०.०.४.५ १०.०.४.५ १०.०.४.५ १०.०.४.५ १०.०.४.५ १०.०.४.५ १०.०.४.५ १०.०.४.५ १०.०.४.५ १०.०.४.५ १०.०.४.५ १०.०.४.५ १०.००००००००००००००००००००००००००००००००००० | ९ . ६×४.४ | 5 | ३७ | ,, | ,, | 1 | अपृ० | हलन्तपुंल्लिङ्गतः स्त्रीप्रत्ययांशा । |
| ९:= x8'4 ७ ३= " १९३५ पृ० १२:२x२'९ = ५६ " " " १२:३x२'= १८ ३४ " " " १०:७x४'4 = २९ " " " मापाप्रयोगविधिसहितः । । आदी-पञ्चणं शन्दस्पान्वितम् । १:१x४'- ६ २१ " " " मापाप्रयोगविधिसहितः । । आदी-पञ्चणं शन्दस्पान्वितम् । १:१x१० १० वङ्ग " ११.१७=१ पृ० सन्धो पञ्चमपादा-ता । १०:५x१' १३ १३ " " अपृ० प्राञ्चतन्याकरणम् । १९:५x१' १३ १५ " " अपृ० पृविद्धम । १९:५x१' १४ १४ " " अपृ० पृविद्धम । ११:४x१' १४ १४ " " अपृ० तिवायक चावन । १६ ११:४x१' १४ १४ " " अपृ० पिमापेन्दुशेखराद् गृहीता । १०:२x४' १२ १२ १२ " " अपृ० टीका-वैवाकरणमतोन्यजन । | ९' ५ ×४'४ | १३ | ३९ | ,, | ,, | | ,, | |
| १३:२×२:० | ९ [.] २×४ [.] ४ | १० | રપૂ | ,, | " | f | " | |
| १२.३×२. ४ ३४ ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, | ९'≒×୫ሤ | v | 3= | ,, | " | १९३५ | पू० | |
| १०'७×४'५ | १३°२×२°९ | 5 | હફ | वङ्ग | 59 | | अपू० | अष्टाध्यार्यःटीका । |
| ९१६ ४ । प्र. प्र. प्र. प्र. भाषाप्रयोगिविधिसहितः । । आर्दी-प्रद्वयं शास्त्रस्पान्वितम् । ९४१७ । ४ २० वङ्ग , श. १०५३ पृ० सम्यो पञ्चमपादा-ता । सम्यो पञ्चमपादा-ता । १०१४ २६ । ५३ दे. ना. ,, अपू० प्राक्वतञ्याकरणम् । १९४४ १ । १३ ४८ ,, ,, १८०० पृ० पृत्विधिम । १९४४ १ । १८० ,, ,, १९०० पृ० पृत्विधिम । १८४४ १ । १८० ,, ,, १९०० पृ० पृत्विधिम । १८४४ १ । १८० १० ,, ,, १९०० पृ० पृत्विधिम । १८४४ १ । १८० १० ,, ,, १९०० पृ० पृत्विययट त्वं यावन । १८४४ १ । १८० १० ,, ,, १०० १० । १०० १० । १०० १० । १८४४ १ । १८० १० ,, ,, १०० १० । १०० १० । १०० १० । १०० १० । १०० १० । १०० १० । १०० १० । १०० १० । १०० १० । १०० १० । १०० १० । १०० १० । १०० १० । १०० १० । १०० १० । १०० १० । १०० १० । १०० १० । १०० १० । १०० १० ०० । १०० १० ०० । १०० १० ०० । १०० ०० ०० । १०० १० ०० ०० ०० । १०० ०० ०० ०० ०० ०० ०० ०० ०० ०० ०० ०० ०० | १२ [.] ३×२ [.] ⊏ | 8 | ३४ | ,, | " | | ,, | |
| म्१४ २२ ६ २१ " " भाषाप्रयोगविधिसहितः । । आदौ-पत्रद्वयं शब्दस्पान्वितम् । १४१७ ४ २० वङ्ग ", स. १०८३ पू० सम्धौ पद्धमपादा-ता । " सम्धौ पद्धमपादा-ता । १००४ ४९ ५ १३ ३८ ता ", " अपू० प्राक्तव्याकरणम् । १९०४ ४९ ३ १३ ४८ ", " अपू० प्रविदेंम । ११०४ ४९ ५ १० अपू० प्रविदेंम । ११४ ४१ ५ १४ ४४ ", " अपू० मृतियपट लं यावत । १२४ ४१ ५ ५१ ३१ भ१ अपू० मृतियपट लं यावत । ११४ ४१ ५ ५१ ५१ ५१ ५० ५० ५० ११४ ४१ ५ ५० ५४ ५० ५० ५० ५० ५० ५० ५० ५० ५० ५० ५० ५० ५० ५० ५० ५० ५० ५० ५० ५० ५० ५० ५० ५० ५० ५० ५० ५० ५० ५० ५० ५० ५० ५० ५० ५० ५० ५० ५० ५० ५० ५० ५० ५० ५० <td>१०[.]७×४.त</td> <td>9</td> <td>३२</td> <td>दे. ना.</td> <td>,,</td> <td></td> <td>,,</td> <td></td> | १० [.] ७×४.त | 9 | ३२ | दे. ना. | ,, | | ,, | |
| ९×१.७ ४ २० वङ्ग , श. १०८३ पृ० सम्धौ पश्चमपादाःता । १०.६×३.६ ७ ३३ दे. ना. , , अपू० प्राक्ठतच्याकरणम् । प्राक्ठतच्याकरणम् । १०.७×४.५ १३ ४८ , , , १८०७ पृ० प्राक्ठतच्याकरणम् । १०.७×४.५ १० , , १८०७ पृ० प्राक्ठतच्याकरणम् । १०.०×४.५ १० , , १८०७ पृ० प्राक्ठतच्याकरणम् । १०.०० १० , , १८०७ पृ० प्राक्ठिम । १४ ४४ , , , , १८०७ पृ० प्राक्ठिम । १४ ४४ , , , , , , , , , , , , , , , , , | ९ [.] ६×५ | 두 | २९ | ,, | " | 1 | ,, | |
| १०'६×३'६ ७ ३३ दे. ना. ,, अपू० प्राक्तिक्याकरणम्। १०'७×४'५ १३ ४= ,, ,, १=१७ पृ० १०'७×४'६ १ ४० ,, ,, १९०७ पृ० पृर्वार्द्धम्। १४×६'६ १४ ४४ ,, ,, १९०७ पृ० पृर्वार्द्धम्। ९'४×४'६ १४ ४४ ,, ,, पृ० तृतीयपटलं यावन। १३'=×२'६ १६ १६ ,, ,, अपू० ११×४'६ ७ ६६ मेथिली ,, पृ० क्ष पिरमापेन्दुशेखराद् गृहीता। १०'६×४'४ १० ४४ ,, ,, ,, अपू० टीका—वैयाकरणमतोन्मज्ञनम्। | म'१×३ ' २ | Ę | २१ | 95 | " | | ,, | भाषाप्रयोगविधिसहितः । i आदौ- पत्रद्वयं शब्दरूपान्वितम् । |
| १०.७ × ४.५ १३ ३८ ,, अपू० प्राकृतक्याकरणम्। ९०.७ × ४.५ १३ ४८ ,, १८०० पृ० पृविद्धम । १४ × ४.५ १८०० ,, १८०० पृ० पृविद्धम । ९.४ × ४.५ १४ ४४ ,, अपू० नृतीयपट लं यावन । १३ × ४.५ ५१ ३६ मेथिली ,, पृ० क्ष पिमापेन्छुशेखराद गृहीता । १०.६ × ४.४ १० ४४ ,, ,, १०.६ × ४.४ १० ४४ ,, ,, १०.६ × ४.४ १० ४४ ,, ,, १०.६ × ४.४ १० १० १० १० १० १०.५ ४.४ १० १० १० १० १० १० १० | ९×१ [.] ७ | 8 | ঽ৻৽ | वङ्ग | 99 | श. १७८३ | ďο | सन्धौ पञ्चमपादा ता । |
| ९'९×४'३ १३ ४= " % १=१७ पृ० १०'७×४'॥ १० " % अपृ० पृविष्ठेम । ११×५'॥ १० २७ " अपृ० पृविष्ठेम । ९'४×४'॥ १४ ४४ " अपृ० गृतीयपटलं यावन । १२'=×२'६ १ ५१ वङ्ग " अपृ० गृतीयपटलं यावन । १२'=×२'६ १ ५१ वङ्ग " अपृ० पिभापेन्दुशेखराद् गृहीता । १०'६×४'६ १० ५४ " " अपृ० टीका-वैयाकरणमतोन्मज्ञनम् । | १० [.] ६×३ [.] ६ | 9 | ३३ | दे. ना | " | | ,, | |
| १०'७×४'॥ १ १० " १९०७ पू० पूर्वार्डम । ११ ४४ ॥ १४ ४४ ॥ " अपू० पूर्वार्डम । ११ ४४ ॥ " " अपू० तृतीयपट लं यावन । ११ ४४ ॥ " " अपू० प्रिभापेन्दुशेखराद् गृहीता । १०'६×४'४ १० ४४ ॥ " " " १०'२×४'६ १२ ५२ ५२ ॥ " अपू० टीका-वैयाकरणमतोन्मज्ञनम । | ફ ∘. ∞×8.đ | १३ | ३= | ,,, | 9 1 | | अपू० | प्राकृतव्याकरणम् । |
| ११ × ५ ५ १० ५० ५० पृर्वार्द्धम । ९ ४ ४ ४ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ | ९.८×८.इ | १३ | 8= | 99 | " | १=१७ | पृ० | |
| ९'४ x ४' १४ १४ ॥ अपृ० नृतीयपट लं यावत । १२ = x २'६ ५ ३१ ॥ ५ नृतीयपट लं यावत । १२ = x २'६ ५ ५ ५ अपृ० प्रिभाषेन्दुशेखराद् गृहीता । १२ x ४'४ १० ५४ ॥ ॥ भ १० ६ x ४'४ १० ५४ ॥ ॥ भ १० २ x ४'६ १२ ५२ ५२ ५२ ५० ५० ५० ५० ५० ५० ५० ५० ५० ५० ५० ५० ५० ५० ५० ५० ५० ५० ५० ५० ५० ५० ५० ५० ५० ५० ५० ५० ५० ५० ५० ५० ५० ५० ५० ५० ५० ५० ५० ५० ५० ५० ५० ५० ५० ५० ५० ५० ५० ५० ५० ५० ५० ५० ५० ५० ५० ५० ५० ५० ५० ५० ५० ५० ५० ५० ५० | १० . ०×৪.₫ | 9 | ૪૦ | " | " | | अपू० | |
| = २२ २१ दे | ११×५५ | १० | २७ | ,, | " | १९०७ | ďο | पृर्वार्द्धम् । |
| १३°=×२°६ | ૬. .ક×ક.ત | १४ | 88 | " | " | 1 | अपृ० | |
| ११×४'५ ७ ३६ मैथिली ,, पू० क्ष परिभाषेन्दुशेखराद् गृहीता । १०'६×४'४ १० ५४ ,, ,, ,, ,, १०'२×४'६ १२ ५२ दे.ना. ,, अपू० टीका-वैद्याकरणमतोन्मज्ञनम् । | द्रः२×२ [.] ६ | ११ | , ३१ | ,, | 22 | | पू० | नृतीयपट लं यावन् । |
| १० ६ × ४ ४ १० ४४ , , , , , , , , , , , , , , , , , , | १३°=×२°६ | A | प्रश | वङ्ग | ٠, | | अपू० | |
| १०'२×४'६ १२ प.२ दे.ना. ,, अपू० टीका-वैयाकरणमतोन्मज्ञनम् । | ११×८.त | 9 | ३६ | मैथिली | ,, | | र्यू० ई | परिभाषेन्दुज्ञेखराद् गृहीता । |
| | १०:६×४:४ | १० | 88 |) ; | ,, | | ;; | |
| -11 Veria 00 30 1 | १०'२×४'६ | १२ | પૂર | दे.ना. | 37 | , | अपृ० | टीका-वैयाकरणमतोन्मज्ञनम् । |
| 1 = 4 × 8, 5 60 ±6, 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 | =:५×४:३ | १० | ३९ | ,, | ;: | · | | |

| _ | | | | |
|---|--------------------|-----------------------------------------|-------------------------|----------------------------------------------------------|
| | क्रम संख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारना म | पत्रसंख्यानिवरणम् |
| | ३८५०७ | तत्त्वबोधिनी | | १ २८ । |
| • | ३८५०८ | सारस्वतम् | अनुभूतिस्वरूपा- चायः | १-४⊏, પ્∘-६૫, + १=५६ । |
| | ३८५०९ | मुग्धवोधटीका | रामतर्कवागीशः | १-७। |
| , | ३८५१० | मुग्धबोधः | | १, । |
| | ३८५११ | समासचक्रम् | | १न्स। |
| | ३८५१२ | 55 | • | १-४। |
| | ३⊏५१३ | वैयाकरणसिद्धान्तकोमुदी | į | १–२६। |
| | ३द्ध१४ | " | | १–९,११-२५:२५-४२ । |
| | ર⊏પ્રશ્ય | ,, | भट्टोजिदीक्षितः | २१–४५,१०-१०७, १-१-५७,६४-द२≔(द३) द४-दद,१-२२,१-६,द-२१ । |
| | ३म्५१६ | 3 1 | | १-३८। |
| | ३८५१७ | मुग्धवोधटीका | • | २०–२७। |
| | ३८५१८ | ,, | दुर्गादासः | पू–३४ । |
| | ३८५१९ | वैयाकरणसिद्धान्त कौमुदी व्याख्या | | १-९। |
| | ३८५२० | 97 | | २-५। |
| | ३८५२१ | छिता | रामभद्राध्यरीन्द्रः | १–२४,१–१८। |
| | ३८५२२ | कातन्त्रम् | | ३८। गणनया |
| | ३५५२३ | धातोस्तन् निमत्तस्यैवेतिसूत्र विचारः | | ६१ " |
| | ३म्प्र२४ | परिभापेन्दुशेखरहीका | | १ - १४, १ ६-१ - |
| | ३८५२५ | मध्यसिद्धान्तकौमुदी | वरदराजः | ૧–૪૫,૬૫-૨૧૫ |
| | ३म्प्र२६ | धातुरूपावली | | १५. । |
| | ३८५२७ | लघुसिद्धन्तकौ मुदी | | १–२१। |

| श्राकारः | | श्रच् संख्या | लिपि: | ग्राधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------------------------------|----|-----------------|---------|----------|----------|------------------------|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| १२:२×४ | ११ | ३९ | दे. ना. | का. | | अपू० | वै० सि० कौ० टीका । |
| ۲°७×४ | v | ર્ય | ,, | " | | र्पे० क्ष | तद्धितान्तम् , ४८, ५०, पत्रयोर्मध्ये पत्राङ्कविच्छेदेऽपि न पाठश्रुदिः,अन्तिय- पत्रस्र प्रन्थान्तरस्य । |
| <i>₹</i> ₹ <i>₩</i> × <i>₩</i> *₹ | १० | Йo | बङ्ग | " | | अपू० | समासप्रकरणम् । |
| १२ . ७×३.त | 8 | ₹≒ | ננ | 55 | १९०९ | " | ` |
| ९·९×૫·१ | 9 | ४३ | दे. ना. | 33 | श. १७७४ | पू० | |
| ९ . ४×४.४ | ११ | રૂપ | ,, | ,, | | ,, | |
| १० · १×५.म | ه | २७ | " | " | | अपू० | |
| ९•६×५•१ | 9 | ३४ | " | " | | ,, | |
| १२ [.] २×४.२ | 9 | ક્રય | " | " | | ,, | सुवन्तादारभ्य स्वरप्रकरणान्ताः |
| ११ [.] ९×५ | १४ | ३५ | ,, | " | | ,, | कृदन्तमात्रम् । |
| १४°२×३१ | v | ६७ | वङ्ग | " | | ,, | कारकस्य |
| १३ [.] ९×२ [.] ९ | ६ | પૂક્ | ,, | " | | " | |
| १३•३ × ३•३ | ફ | પૂપૂ | 37 | " | | ,,, | हलन्तस्य । |
| १३:८×३:४ | v | ų. | ,, | ,, | | ,, | |
| १२ [.] १×४'२ | १३ | પૂર | दे. ना | ,, | | ,, | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदीव्याख्या |
| પુ.ત.×ત.ક | १२ | १२ | 3, | ,, | | " | |
| ५ °३×४°३ | ३९ | २६ | ,, | ,, | | 33 | आमि सर्वनाम्नः सुट, किमाः क इत्यावि सूत्राणां विचारख्य । |
| १० ⁻ ६×४ ⁻ ७ | १४ | ४९ | 95 | ,, | | " | |
| ५. ५×४.३ | = | २१ | " | ,, | | " | |
| દ•७×૫ | १० | ३२ | ", | 57 | | 5> | मध्यकोमुद्याः । |
| ९ . ई×ई.७ | ६ | २९ | ,, | " | | 33 | |

| क्रमसंख्या | अन्थनाम | प्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् . |
|-------------------|--------------------------------|-------------------|------------------------------------------|
| ३८५२८ | लघुसिद्धान्तकोमुदी | | ३८-३९, ४२-४८, ५३-६३। |
| ३≒५२९ | वाद्सुधाकरः | कृष्णमित्राचार्यः | १–२२ । |
| ३⊏५३० | वैयाकरणभूषणसारत्र्याख्या | | २-११, ११-१२५ । |
| ३⊏५३१ | वृत्तिदीपिका | कृष्णभट्टमौनी | १–६, १३। |
| ३⊏५३२ | शब्दकौस्तुभः | _ | १-५३ । |
| ३८५३३ | महाभाष्यविवरणम् | | १–१= । |
| ३८५३४ | वाक्यपदीयम् | भर्चृ हरिः | १–४७ । |
| ર⊏પ્રય | विभक्तयर्थविचारः | | १–९ । |
| ३⊏५३६ | वैयाकरणभूषणसारः | | ४-१ । |
| ३८५३७ | च्याकरणक्रो डपत्रा णि | | १०७। (गणनया) |
| ३८५३८ | क्रोडगत्रम् | | १-७। |
| ३ न्प्३९ | शब्दकोस्तुभप्रभा | वैद्यनाथपायगुण्डे | १–५५ । |
| ३द्मपू४० | रत्नाणंवः | | १-३२ । |
| ३च्य४१ | लघुशव्देन्दुशेखरः | नागेशः | १-३०, ३०-५४+१,५५-२०९, २२०+१, २२१-३३२। |
| ३८५४२ | ,, | _ | १-५=। |
| ३८५४३ | चिद्स्थिमाला | वैद्यनाथपायगुण्डे | १-५४, ५५-१६० । |
| इ द्धार 88 | वाक्यपदीयम् | भर्चू हरिः | १-== । |
| ३८५४५ | , ,,, | | १-२,१ ५- ४१ + १ । |
| ३≒५४६ | ,, | | १-९। |
| ३८५४७ | वाक्यपदीयटीका | पुण्यराजः | १-१२७। |
| ३८५४८ | 27 | | १-≒० । |
| ३⊏५४९ | विभ त्त यर्थनिर्णयः | | १-१७०। |

| आकार: | पंकि- संख्या | अच्रर- संख्या | लिपि ः | आधारः | लिपिकाल: | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---------------------------|-----------------|------------------|---------------|-------|----------|------------------------|-------------------------------------------------------------------------------------|
| 6.6×8.6 | , is | ३१ | दे. ना. | का. | | अपू० | |
| १० . ∉ × ८.त | 5 | ક્ષ્ટ | 99 | " | १९०१ | पू० | |
| ९७×४°२ | १० | ३९ | " | " | | अपू० | |
| दप्×४'२ | ११ | ३० | 3 3 | 27 | | " | |
| \$0 × 8.5 · | ११ | ३≒ | >> | 35 | | पृ् | १ अ. १पा. २-३ आ० । |
| 80×8.0 | १४ | ४७ | ,, | 35 | | अपू० | |
| \$0×8.8 | ११ | ४२ | " | 37 | | 95 | |
| \$@×8.\$ | ९ | ६८ | वङ्ग | 35 | | ,, | |
| १२'६×३'= | १० | त्रप्र | 35 | ננ | | पू० | सुवर्थनिर्णयमात्रम् । |
| ११×४ [.] ६ | ११ | ३६ | दे. ना. | " | | अपू० | विविधाकारपत्राणि सन्ति । |
| ११.७×८.८ | १२ | ४३ | 93 | 37 | | पू० | |
| '&.त×8.४ | १० | पूर | ,, | 33 | | अपू० | शब्दकौस्तुभटीका । |
| ९.७×६.5 | १० | ३५ | " | 35 | | पू० | सिद्धान्तकौमुदीच्याख्या । कारकप्रक- रणस्य । |
| \$0.£×8.ñ | ९ | ४३ | 33 | 33 | 1 | अपू० | सिद्धान्तकौमुदीटीका । |
| १० . ४×४. <i>ई</i> | ९ | ४६ | 99 | " | | ,,, | |
| १०.०×8.8 | ११ | SA | 55 | " | | 77 | लघुशब्देन्दुशेखरदीका। स्वादिसन्धि पर्या न्तस्य,१५०पत्रे १०पक्तिः द्विरुक्षिखिता। |
| ९×३ ° ७ | ዓ | ४१ | 75 | 33 | | " | |
| ११'१×४'२ | १४ | યજ | ,, | 37 | | " | |
| ११'२×३'९ | v | હર | 77 | 33 | | 13 | , |
| ९•३×४•१ | १० | ક્ષ્ | 55 | 27 } | | पू० | बहुशः पशणि कीटमक्षितानि सन्ति । |
| द'७×३ ' ध् | १३ | ૪૦ | 33 | 33 | | अपू० | |
| १ ० ⁴५ × ४′९ | १० | ३६ | 53 - | ,, | | >> | |
| - | | • | | | | | 1 |

| क्र मसंख् या | ग्रन्थना म् | ग्र न्थकारना म | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---------------------|-------------------------------------|----------------------------|-------------------|
| ३८५५० | विभक्तयथैनिर्णयः | कृष्णसट्टः | १-५१,५११ । |
| ३द्धपूर | वृत्तिदीपिका | ,; | १-२२ । |
| ३८५५२ | वैयाकरणभूषणसारः | | २-२३,२५,२५ -७५ । |
| ३५५५३ | 37 | कौण्डभट्टः | १–५४ । |
| ર ≒પ્રપ્રજ | 27 | 55 | १–३७ । |
| ३८५५५ | 33 | 11 | १–५७ । |
| ३म्प्रपृद | ,, | | ३२-५५ । |
| इद्धपूर् | ** | कौण्डभट्टः | १-५१ । |
| ३८५५८ | समासपादः सटीकः | | १-३५, ३७-४८। |
| ३म्पूप्९ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी- व्याख्या | | १-३ । |
| ३८५६० | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | भट्टोजिदीक्षितः | १-६९ । |
| ३म्प्र६१ | कातन्त्रं सवृत्तिकम् | वृ ० का० दुर्गसिंहः | १–६३ । |
| ३८५६२ | 37 | ,,, | १–२७ । |
| ३८५६३ | 79 | 35 | १-१९ । |
| રવ્યક્ષ | ,, | 97 | १-७२ । |
| રવ્યદ્ | कविकल्पद्र मः | बोपदेवः | १-१४ । |
| ३द्ध६६ | थातुदीपिका - | दुर्गादासः | १-५। |
| ३८५६७ | गणपाठः | | १-३७। |
| ३८५६८ | <u>धातुपाठः</u> | | १-६। |
| ३न्पू६९ | परिभापावृत्तिः | दुर्गसिंह: | १-२७ |
| ঽৼ৾৾ঀৢ৻৻ | शब्दे-दुशेखरटीका | | १-७,९-१३२। |
| ३म्पू७१ | | 1 | १–३। |
| ३ म्पू७२ | सारसिद्धान्तकौमुदी | वरदराजः | ३-१५ । |

eğiğkezk es

| श्राकारः | वंकि- संख्या | श्रच्र- संख्या | लिपि. | भाषारः | लिपि का लः | पूर्णापूर्ण - विवेकः | वि रोष विवरणम् |
|------------------------------------|-----------------|-------------------|-------------|--------|-------------------|-------------------------|------------------------------------|
| ९.९×४ [.] २ | १० | ३९ | दे.ना | का. | १न४६ | पृ० | |
| १० -१ × ४-१ | ११ | ६० | 93 | " | १५४९ | ,, | |
| १२×४°७ | ११ | ६१ | 3 7 | ,, | श.१७(१) | श्चपू० | |
| ९.८× इ.ह | پ | ३९ | 37 | 33 | | Чo | स्फोटवादः । |
| १०'३×४' ३ | १० | 81 | " | " | | ষ্মपୃত | |
| १ ३ °१×४.३ | 5 | ४५ | ,, | ,,, | १ न्द०(१) | ď٥ | |
| ₹० ×४'५ | ९ | જુ | } ,, | ,, | | श्चपू० | |
| ११•६×४५ | १० | 84 | ,, | ,, | | पु० | स्फोटवादः। |
| १४·१ × ३·७ | 8. | पूर | वङ्ग | ,, | | ,, & | ययात्युपदिष्टरीवनाटयवर्णनव्याजेन । |
| ११.७×४ [.] ६ | ९ | ३७ | दे.ना | ,, | | अ पृ् | मुनित्रयंनमस्कृत्येत्यस्यैव । |
| १ ० .८ × ৪.৪ | १० | ३७ | ,, | ,, | श.१५०३ | पृ० | कृद्न्तप्रकरणम् । |
| १२·१×३ | 9 | ३७ | वङ्ग | " | | अपू० | आख्यातवृत्तिः । |
| ११ ⁻ ३×१ ⁻ ४ | 3 | ३८ |) ,, | ,, | | ,, | सन्धिवृत्तिः। |
| १६.२×३% | ų | ४९ | 57 | 37 | | do | कृत्सु पष्टपादः । |
| १ ६ •६×३· | 8 | ų, | 97 | ,, | १७२६श० | 39 | चतुष्ट्रयवृत्तिः । |
| ₹0°€×8°€ | ११ | ४६ | दे-ना | ,,, | | ,, | धातुपाठः । |
| १२.८×६.० | 5 | પ્રશ | " | " | | अपू० | कविकल्पद्रमटीका। |
| १६•६×३ | ३ | ३७ | वङ्ग | ,, | | पू० | कलापस्य । |
| ११ [.] १×१ [.] 4 | 8 | 8 | ,, | ,, | | अपू० | " |
| १४:३×३:१ | Ę | યુદ્ | " | ,, | | पू० | |
| ११×४ .४ | ९ | . ૪૨ | दे.ना | ,, | | ञ्जपू० | 33 |
| १०५ 🗙 ४५६ | १२ | . ४९ | 99 | ,, | | पृ् | समानविभक्तिकत्वमात्रविचारः |
| ६ ·६× ३·४ | v | २१ | " | 3; | श०१६९३ | अपू० | |

| क्रमसंख्या | प्रन्थनाम | प्र न्थकारनाम | पश्संख्याविवरणम् |
|------------|----------------------------------|----------------------|--------------------------------------------|
| ३८५७३ | लघुसिद्धान्तकौ मु दी | , | २३-२९, ३१-४२। |
| ३८५७४ | कातन्त्रवृत्तिविवरणपञ्जिका | त्रिलोचनदासः | १-१७३ । |
| ३८५७५ | सारस्यतम् | | २३-२९। |
| ३म्पू७६ | ,, | अनुभूतिस्यरूपा- | १६-६७। |
| ३द्धपुष्प | ,, | चार्यः | १-१६। ः ः ः ः |
| ঽৼ৾৾ঀৢ৻৻ৼ | ,, | | १३-३०, ३२, ४७-६०। |
| ३८५७९ | तत्त्वदीपिका | | १४-३२ । |
| ३८५८० | अष्टाध्यायी | पाणिनिः | १–५२। |
| ३८५८१ | उणादिसूत्रस ड्म हः | | १-१० । |
| ३८५८२ | उणादिवृ त्तिः | | १–६=। |
| ३८५८३ | उपसर्गबोधकत्वखण्डनम् | | १–४ । |
| ३८५८४ | धातुष्ट् तिः | सायणः | १–४० । |
| ३८५८५ | 92 | 23 | ३-५, ७-१७७, १७९-२५०। |
| ३८५८६ | काशिकाविवरणपश्चिका | जिनेन्द्रबुद्धिः | २-६३ । |
| ३८५८० | काशिकावृत्तिः | | १४२–१६०, १–५०,१-५१, १-९५, १-६०, १–५४। |
| ३८५८८ | त्वतल्वादार्थः | | १–६। |
| ३८५८९ | नन्दिकेश्वरकारिका सटीका | | १-५ । |
| ३८५९० | नपदान्त सूत्रकोडपत्रम् | | १-४ । |
| ३८५९१ | पद्मञ्जरी | | १–३० । |
| ३८५९२ | परमलघुमञ्जूपा | नागेशः | १–३१। |
| ३म्प्प९३ | परिभापाप्रदीपाचिः | | १–२२। |
| ३८५९४ | परिभापाभारकरः | भास्क रः | १-५०। |
| ३≒५९५ | 99 . | ,, | १-४५। |

| श्राकारः | पंकि- संख्या | अच् <i>र</i> संख्या | लिपिः | श्राधारः | लिपिकाल: | पूर्णापूर्ण - विवेक: | ं विशेषविवरणम् ं |
|------------------------------------|-----------------|------------------------|--------|------------|-------------------------|-------------------------|----------------------------------------------------------|
| १०.४४.४ | १० | ३० | दे. ना | का. | - | अ पृ्० | |
| ९•६×३ | ६ | ४६ | " | " | ं १६१६ | पू० | आख्यातान्ता । |
| १० [.] २×४ | 5 | 80 | " | ,, | | अपू० | |
| ९ :५ ×४:२ | 4 | ২৩ | 37 | " | १ ८ ४६ श.१७११ | " | |
| ९ . ०×८.ई | ی | २९ | ,, | 5 5 | <i>₹1., ₹0₹ ₹</i> | " | |
| १०'२×३'म | v | ३० | ,, - | " | | " | |
| ९ [.] ५×४ [.] २ | ९ | ३२ | ,, | " | | ,, | सिद्धान्तचन्द्रिकाव्याख्या । |
| ७४×३ | 3 | ২৩ | " | 99 | | 33 | |
| न ' ६×३'२ | ફ | २६ | " | 39 | १६६१ | पू० | |
| १०°२×३°७ | હ | ३६ | " | " | १६४९ | ,, | |
| ९×३५ | £ | २९ | " | " | | ,, | |
| १२७×४७ | ११ | પુર | 77 | " | | अपू० | माधवीया । |
| १६×४ [.] ३ | १२ | પુર | ,, | ,, | | " | 27 |
| ११ [.] २×३ [.] ४ | १० | पुत्र | ,, | ,, | | " | न्यासङ्तिनामान्तरम्,षष्ठाध्यायस्य चतुर्थन पादं यावत्। |
| १ं१•×४•६ | १२ | ४२ | ,, | " | | " | तृ तीयोऽध्यायः |
| १० [.] १×४ [.] ग | ११ | ४० | ,, | ,, | | पू० | • |
| ९ . =×८.३ | ११ | ४१ | ,, | ,, | | | |
| ११ . ४×8 | ९ | ३७ | " | ,, - | १९११ | " | |
| १०:३×४:४ | ११ | 88 | ,, | ., | | अपू० | काशिकाव्याख्या अ० १ पा० २ । |
| १०°२×४°३ | २० | પૂ૦ | ,, | ,, | | पू० | |
| 88.8×8.8 | १० | ४९. | ,, | " | | अपृ० | • |
| ९७×४२ | १० | ४९ | " | ,, | १८९० | पू० | |
| १०७×४ | ११ | ४७ | ,, | ,, | १९१६ | .,, | |
| \$. | | | | • | | | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारना म | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---------------------------------|------------------------|-------------------------|
| ३⊏५९६ | परिभापेन्दुचन्द्रिका | विश्वनाथः - | १-३०, ३७-४९+=४ |
| ३⊏५९७ | परिभापार्थमञ्जरी | भीमः | १-९, ७-६१ । |
| ३८५९८ | अर्थवत्सृत्रविचारः | | १-५। |
| ३८५९९ | शब्देन्दुशेखरच्याख्या | | पृ. सं. १-५ । |
| ३८६०० | शब्देन्दुशेखरटीका | | १६। (गणनया) |
| ३⊏६०१ | सिद्धान्तकौमुदीटीका ? | | 8.1 " |
| ३८६०२ | महाभाष्यप्रदीपोद्योतः | नागोजीभट्टः | १-=९, ९१। |
| ३८६०३ | चारूचारणचातुरी | शिवशर्मा | १–३५ । |
| ३८६०४ | नामि सूत्रादिक्रोडपत्रम् | | 8-81 - |
| ३८६०५ | पद्मञ्जरी | हरदत्तमिश्रः | १–४६, ४६-७३। |
| ३८६०६ | परिभापाशिरोमणिः | लालमणित्रि पाठी | १–३३। |
| ३८६०७ | शङ्करी | | २९-३०, ३२-३७। |
| ३५६०५ | गदा | वैद्यनाथपायगुण्डे | १–२३। |
| ३८६०९ | परिभापेन्दुशेखरटीका | | ३३। (गणनग्रा) |
| ३८६१० | परिभाषेन्दुशेखरदोषोद्धारः | मन्तुदेवः | १-२४, १-७। |
| ३⊏६११ | । प्रिक्तयाकौमुदी | रामचन्द्राचार्यः | १२-१७, ७२-७३, ७५-९० । |
| ३८६१२ | ,, | | १-७४, १०३-११३, १२०-१२४। |
| ३⊏६१३ | ,,, | रामचन्द्राचार्यः | १-२६, २९-३७, ४०-८१। |
| ३⊏६१४ | 33 | | १-७५ । |
| ३⊏६१५ | प्रक्रियाच्याकृतिः | कृष्णरोपः | ३९-६०, ६३-९२। |
| ३८६१६ | व्याकरणग्रन्थविशेषः ? | | १–५, ३२। |
| ३⊏६१७ | प्रयोधचन्द्रिका | जयसिंहभूपतिः | १–९ । |
| ३८६१८ | प्रातिपदिकान्तेतिसूत्रविचार | ः यागेश्वरशर्मा | १–३, ५ । |

| आकार: | पंकि- संख्या | अच्तर संख्या | लिपि: | , आधार: | लिपिकाल: | पूर्णीपूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|-------------------------------------|-----------------|-----------------|---------|---------|----------|------------------------|-------------------------------------------------------|
| १ २'४×३'९ | ફ | પૂહ | दे.ना | का. | | अपू० | परिभाषेन्दुशेखरटीका । |
| ९.8 × 8 | १३ | ४९ | ,, | " | | ,, | " |
| ११'५×४'९ | १४ | ४३ | ,, | ,, | | पू० | |
| ९ . ८४४.५ | १३ | પૂધ | ,, |) >> | | ,, | अर्थवत्सूत्रस्य । |
| ११ .४×४ ४ | ९ | 8त | " | " | | अपू० | कारकप्रकरणस्य । |
| १२'६×४'२ | १३ | ४७ | 55 | 99 | | ,, | . 55 |
| १०७×४७ | १३ | ४६ | " | 23 | | ,, | अ०१पा०२आ०३।, |
| ९ [,] ४×४.४ | ९ | ३७ | 37 | " | | पू० | सामान्यशब्दसङ्घहः। |
| ११ ×४७५ | ३२ | २२ | 33 | 37 | | ,, | |
| ११ . ६×८.त | ९ | ४३ | ,, | " | | " | काशिकाच्याख्या वा । |
| ९ •६×४५ | 5 | ३६ | " | ,, | | 3 7 | |
| ९ : न×४:१ | ९ | ४१ | ינו | " | | अपू० | परिभापेन्दुज्ञेखर टी० । |
| ९'न×४ | 8 | ૪ર | ינ | ,, | | " | 27 |
| १२ '४ × ४ | १४ | ६૦ | तेलगू | 39 | | " | |
| १२७×४°२ | १३ | ६७ | दे. ना. | 27 | | पू० क्ष | |
| ૧ ^{ૄે} 8 [°] ×ેરપ | 5 | ४१ | 53 | ,, | | अपू० | |
| ሪ. α × غ .ሸ~ | १० | ३९ | 27 | ,, | | 55 | सुवन्तप्रकरणम् । |
| ५×३ •३; | १० | २६ | " | ,, | | " | तिङन्तप्रकरणम् । |
| ५ .८×३ <i>६</i> | १४ | ३२ | ,, | " | | " | सुवन्तप्रकरणम् । |
| ११ [.] ४×३ [.] ९ | ९ | પુર | ,, | ,, | | " | तिङन्तप्रकरणम् । |
| ९ [.] ४×२ [.] ३ | 8 | ३० | वङ्ग | ,, | | ,, | प्रक्रियाकौसुदी टी०, सन्धिप्रकरणम् । |
| १३·५×५·६ | १३ | ०० | दे.ना | " | | पू० | प्रतापविनोद्इति प्राचीनसूचीपत्रे । सम्।स- विचारः । |
| ४ [.] १×२ [.] २ | યુ | १६ | " | 33 | | अपू० | |

| | मसंख्या | य न ्थनाम | ग्रन्थकारना म | पत्रसंख्याविवरणम् |
|-----|------------------|-------------------------------------|----------------------|-------------------------------------------------------------------------------------|
| 31 | | · · | | ा प्रवासिन <u>स्</u> रम् |
| 1, | म्ह १९ | काशिका | हरिः | १–१९४। |
| ३ः | =६२० | महाभाष्यम् | पतञ्जलिः | १-३,५-१३,१५-१९,२१,२१-३१,३४-५०,५२- ६४,६६-१०५,१०९-१२५,१२९,१३१,१३३- १३⊏,३⊏,४०–४१ |
| ३व | म्ह २१ | 33 | " | 8-88 1 |
| ३ः | ८६२२ | वाद्सुधाकरः | कृष्णाचार्य्यः | १–२०। |
| ३ः | ⊏६ २३ | विभक्तयर्थनिर्णयः | कृष्णभट्टः | ४१–ग्र१। |
| ३ः | -६२४ | वैयाकरणभूषणम् | कौण्डभट्टः | १–२०२ ' |
| ३ः | ⊏६२५ | शब्दकौस्तुभटिप्पणी | | १-२१,२१-३९ । |
| ३ः | ⊏६२६ | शब्दकौस्तुभतत्त्वम् | • | १–१७। |
| ३ः | न्द <u>्</u> रु७ | रूपमालिका | रङ्गदेवः | १–२१। |
| ३ः | द६२८ | स्थानेन्तरतमइति सूत्रकोड- पत्रम् | | १–२। |
| ३ः | ८ ६२९ | व्याकरणयन्थविशेपः | | १–५। |
| ३ः | म्ह ३० | लघुशन्देन्दु शेखरटीका | 1 | १–३। |
| ३ः | =६३१ | 77 | Δ. | १ १–२५ । |
| ३ः | ¤६३२ | सारस्वतम् | | १–५। |
| ३ः | म्द३३ | > > | | १-१६,५३-५९,६२-६६,६९-७९,९०। |
| રૂ: | न६३४ | 33 | | २४-२७,२९-३७,३९-४६ + १ । |
| ३ः | न६३५ | " | | ६०–६१, ६७–६५ । |
| ३ः | न्द३६ | 33 | | २०-४९,५१-७३,७५-५४,५६-११७,११९-१४२ |
| ३ः | द्ध द | सुपद्मच्याकरणम् ' | पद्मनाभः | १-६,१६-३४,४२-४४,४६-६⊏,७५-⊏१. ⊏३- १६४, १६⊏-२०३+१,२०५-२१०+२१। |
| ३ः | म६३म | सिद्धान्तचन्द्रिका | रामभद्राश्रमः | १-१०,१२-६३ । |
| 3: | ८ ६३९ | 23 | " | १-७४। |

| आकार: | पंकि- संख्या | अचर- संख्या | लिपि ः | आधार: | लिपिकाल: | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------------------------------|-----------------|----------------|----------------------------------------|-------|--------------------------|------------------------|----------------------------------|
| १२ [.] ९×४ [.] २ | v | પુરૂ | दे ना' | का | | अपू० | वैयाकरणभूचणसार टी० । |
| १० ६ × ४ [.] १ | १० | ४० | ,, | •• | | " | अ॰ १ पा० १ । |
| | | | | | | | |
| १०.८×८.स | 5 | ३३ | ,, | ,, | | पू० | अ०१ पा० २ आ०३। |
| १२'३×३७ | 5 | प्र१ | 77 | :: | | ,, | |
| ११'२×५'२ | १२ | રૂપૂ | ,, | :> | १=९९ | अपू० | कारकप्रकरणमधिकृत्य विचारोऽंयम् । |
| १०७×४६ | १० | ४३ | ננ | ,,, | १७५१ | पू० | |
| १०°३ 🗙 ३ [.] ५ | १० | রম | 77 | 33 | | ,, & | अ०१पा०१। |
| १०५×३५ | १३ | ४३ | ,, | •• | | " | पदस्फोटान्तम् । |
| ९ [,] ६×४ [,] म | १२ | २६ | 77 | | | अपू० | |
| १२.ग.×३.८ | ९ | ५४ | तेलगू | " | | " | |
| ९९ × ४:३ | 9 | २३ | \\ \\ \\ \\ \\ \\ \\ \\ \\ \\ \\ \\ \\ | | | 70 | सन्धिकडचामात्रम् |
| 137.5 × 8 9 | २० | ४६ | दे नाः | | | ano do | सान्यफडमान्सात्र म् |
| | | | 7,7 | '' | | अपू० | |
| | 80 | 88 | " | 37 | | 93 | |
| 8.8×3.≃ | 5 | २४ | ,, | '' | | " | |
| 5.6×8 | 5 | २६ | ,, | ,, | | 27 | |
| ९'≒×४'३ | 5 | २६ | 27 | 37 | | 55 | |
| F8×8 | 4 | २४ | " | ٠,٠ | | >7 | |
| 5.3×3.0 | 4 | २६ | 33 | ,, | | ,,, | |
| १ ५' × ३ ∙३ | ६ | ६१ | वङ्ग | 33 | | ,,, | |
| १० [.] ३×४'= | १० | ३९ | " | " | १५५० | " | |
| | ११ | ३२ | 77 | 53 | श.१७४५ १८९४ श.१७५७ | पू० | े अख्यातकृद्न्तप्रकरणम् । |

|] | क्रमसंख्या | ग्र न्थना म | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|--------|------------|---------------------------------------------|-------------------------------|---------------------------------|
| | ३८६४० | सिद्धान्तचन्द्रिका | रामाचार्यः | १–३४। |
| | ३८६४१ | 7, | रामभद्राश्रमः | १–५०=४५, ४७-५०=५१ –७ ० । |
| | ३८६४२ | सारस्वतम् | अनुभूतिस्वरूपा- चार्यः | १–१०७ । |
| | ३⊏६४३ | राजादिवृत्तिः | रत्नेश्वरचक्रवर्ती | १–६ । |
| Ì | ३≒६४४ | परिभाषेन्दुज्ञेखरः | नागोजीभट्टः | १–३२, ३२–५४। |
| | ३८६४५ | परिभाषेन्दु शेखरटिप्पणी | | १–५, ५–२९, २९-४५ । |
| | ३⊏६४६ | परिभापेन्दुज्ञेखरटीका | | १-१८, १-३७। |
| ļ | ३⊏६४७ | गद्ा | वैद्यनाथपायगुण्डे | १–१२ । |
| | ३८६४८ | परिभापेन्दुशेखरदोपोद्घारः | सन्युदेवः (मन्तु- देवः ?) | १-३, ५-६६ । |
| | ३८६४९ | गद्ा | वैद्यनाथपायगुण्डे | १-३=(४ -६०,६५, ८१-८३, ८५-९७। |
| i i | ३⊏६५० | त्रिपथगा | , | ५० (गणनया) |
| i | ३⊏६५१ | परिभाषापाठः | | १–३। |
| | ३⊏६५२ | वाक्यपदीयटीका | हेलाराजः . | १-१२८। |
| | ३⊏६५३ | प्रत्ययलोपेप्रत्ययलक्षणमिति- सूत्रविचारः | | १–९ । |
| | ३⊏६५४ | धातुवृत्तिच्याख्या | सायणः (मायणा- त्मजः) | १-५० । |
| | ३⊏६५५ | घ्रौ ढमनोरमा | भट्टोजिदीचितः | १-६८, ६८-३४२, ३४२-३४७। |
| | ३⊏६५६ | प्रक्रियादोपसङ्ग्रहः | | १-१३+४। |
| | ३⊏६५्७ | सारस्वतम् | | ११-३१ । |
| | ३८६५८ | 27 | | १–६३। |
| | ३८६५९ | कविकल्पद्रुमः | वोपदेवः | १-१७। |
| | ३८६६० | श्री ढमनोरमा | | ३९-११३। |
| | ३८६६१ | ,, | भट्टोजिदीक्षितः | १-४९। |

| आकार: | पंकि- संख्या | अच्चर- संख्या | लिपिः | आधार: | लिपिकाल: | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|-----------------------------------|-----------------|------------------|---------|-------|-----------------|------------------------|----------------------------------------|
| ११ [.] २×७ . | १ ४. | ३४ | दे• ना. | का• | १६४३ | पू० | पूर्वार्द्धम् । |
| ११७×५ . ९ | ११ | રૂપૂ | 95 | " | १९०४ | ,, \$ | उत्तरार्द्धम् । |
| १०:५×४:२ | ه | ३२ | ,, | " | श. १७६९ १⊏२५ | " | |
| १६•२×३ <i>७</i> | ધ | पूज | वङ्ग | ,, | | ,, . | राजादिगणपठितशच्दसाधुत्वविचार रूपा । |
| ९ [.] ६×४ | १० | ३७ | दे.ना. | " | | " | |
| ९'=×8'१ | १० | ३७ | " | ,, | | 79 | |
| ९' ५ ×४'१ . | १० | ४२ | ,, | 77 | | ,, & | |
| १र [.] ३×४५ | १२ | ধুদ | " | ,, | | अपु० | परिभापेन्दुशेखरटी० । |
| ९' ५ ×४ | 8 | ३८ | 77 | " | | ,, | |
| १०•६×३= | १० | ४२ | 57 | ,, | | 79 | परिभापेन्दुशेखर टी०। |
| \$0.π ×8.8 | 9 | રુપૂ | ,, | 77 | | " | 27 27 |
| ९ [.] ९×४ [.] ३ | १० | ३९ | ,, | ,, | १८१७ | पृ्० | पाणिनिमता नुगामी । |
| १० [.] ९×४७ | 5 | ই ০ | ,, | " | | अपू० | प्रकीर्णप्रकाशइति नामान्तरम्। |
| ९५×४२ | १० | ३२ | ,, | " | | ^{पू} ० | |
| १ ११×४°९ | ११ | ३४ | ,, | " | | " | • |
| ५. ८×३.स | 9 | २५ | 23 | " | १५३२ | ** | सिद्धान्तकौमुदीव्याख्या । |
| १०'३×३'¤ | १५ | ઘુલ | " | ,,, | | अपू० | 0. |
| δο Χ δ.δ | १५ | 4.8 | ,, | ,, | | ,, | |
| ९.७ X 8.0 | 5 | २७ | ,, | 53 | | " | आख्यातप्रक्रियानिरूपणम् । |
| \$0.\$ × 8.₫ | ११ | ४२ | " | ,, | १७५९ | पू० | |
| 88×8 | ্ | પૂર | 33. | ;; | | अपू० | सिद्धान्तकौमुदीव्याख्या। |
| ६९×३५ | ९ | ३२ | ,, | 5,9 | १=३२ | पू० | .,, वैदिकस्वरप्रकरणमात्रम् । |

| | कम संख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|------------------|--------------------------------|-----------------|---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| | ३⊏६६२ | प्रौढमनोरमा | भट्टोजिदीक्ष्तः | १-११०, ११२-१२३, १२५-१४६। |
| | ३⊏६६३ | 57 | ;; | १–१६६ । |
| | ३⊏६६४ | महाभाष्यप्रदीपोद्योतः | नागेशभट्टः | १–१५१ । |
| | ३⊏६६५ | सहाभाष्यप्रदीप श्रकांशः | नीलकण्ठदी क्षतः | १–४३ । |
| | ३⊏६६६ | महाभाष्यप्रदीपः | कैयट: | १–१० । |
| | ३⊏६६७ | ,, | " | २–४= । |
| | ३८६६८ | 53 | " | १–६१ । |
| | ३न्६६९ | 5 5 | 37 | १-२ ४-१०५ । |
| | ३८६७० | | | १–७१ । |
| | ३⊏६७१ | ,, | 93 | १–२६। |
| | ३⊏६७२ | 23 | 17 | १-११५, ११७-१२०। |
| | ३८६७३ | 77 | , | १-९, ३-६० । |
| | ३८६७४ | महाभाष्य दि <u>ीपोद्यो</u> तः | नागोजीभट्टः | १-१४५, १-१०५। |
| | ३⊏६७५ | . 39 | नागेशः | १–११६। |
| | ३८६७६ | काशिकावृत्तिः | | २९-४८,६०,१-२०,३४-४७,११८-१३३,१४८ २०३, २०६-३०६,१-३३,=(३४) ३५-३९, ३९-७०,७४-९५ । |
| 3 | ३⊏६७७ | 37 | | १-३६,४१-६४ । |
| | ३८६७८ | कारकचन्द्रिका | | १–२५ । |
| • | ३८६७९ | ग्रष्टाध्यायी | | १६-५२। |
| | ३८६८० | ,, | पाणिनिः | १-९,११-पूर । |
| | ३⊏६⊏१ | बृहच्छव्दरत्नम् | हरि: | १-१०५, १-५७, १-५(=९), १०- २३, १- २३, १-४३,१-२४,१-१९,१-२६,२ _, ८,१ - ३६ । |
| | ३८६८२ | प्राकृतवृत्तिः | कृष्णदासः । | १–११ । |

| आकार: | पंकि- संख्या | अच्तर- संख्या | लिपि: | श्राधारः | लिपिकाल: | पूर्णापूर्ण- विवेक: | विशेषविवरणम् |
|------------------------------------|-----------------|------------------|--------|-----------|----------|------------------------|--------------------------------------------------------------------------|
| ५ °७×३°५ | 9 | ३३ | दे.ना. | का. | १८३२ | अपू० | सि० को० व्याख्या, कृदन्तमात्रम्। |
| ५.८४३७ | 9 | ; ३ 0 | ,, | ,, | | पू० | सि० कौ० व्याख्या, तिङन्तमात्रम् । |
| 80. €×8.π | 9 | ጸጸ | ,, | ,, | | ,, | महाभाष्यदी०दी०! ३ अ० ४ पा० १ आ०। |
| ११·२×५·१ | १६ | ४६ | ,, | " | | अपृ० | प्रथमाध्यायस्य चतुर्थपादे, आदितः सुप्तिङन्तसूत्रपर्यन्तः। |
| १० ॱ ≒×३•६ | १० | ४९ | ,, | ,, | | पू० | प्रथमपादे ५थमाहिकमात्रम् । |
| १०:६×४:४ | १२ | ३९ | " | ,, | | अपू० | ३ अ०१ पा०६ आ०। |
| १०'५×४'५ | १३ | 88 | " | ,, | | યુ૦ | पद्यायस्य तृतीयपादः । |
| १॰ॱ३×४'४ | ११ | ३६ | ,, | " | | अपू० | हितीयाध्यायः । |
| 80.3×8.8 | १२ | 8त | 27 | " | | पू० | पञ्चमाध्यायमात्रम् । |
| ११ [.] ग×४. <i>६</i> | १० | प्रश | 33 | 27 | | ,, | पष्टाध्यायस्य तृतीयपादे तृतीयमाहिकम् |
| ११ . ८×८.० | 9 | 84 | " | ,, | १८५५ | अपू० | सप्तमाध्यायस्य चतुर्थपादे प्रथमाह्निकम् |
| ११ [.] २×४ [.] ६ | ११ | પ્રશ | " | 33 | | ,, | सप्तमाध्यायस्यप्रथमपादे प्रथमाहिकम् |
| १० . ६×৪.⊏ | १० | ૪ર | " | " | | ,, | अ० ३–४। |
| ११ [.] २×४ [.] ६ | १० | So | ,, | " | | ,, | द्वितीयाध्यायस्य २।३:६० सूत्रं यावत् |
| १२४×४५ | १०ं | ४४ | 27 | ,, | | " | |
| • | (! | | | 1 | | | 1 |
| १० ' ५×३'५ | 4 | ३८ | 27 | ,, | |) ? | प्रथमाध्यायः,अन्ते जैमिनिविरचितायां काशिकावृत्ती, इतिलिखितं विद्यते । |
| १०×४ [.] ७ | ९ | ३१ | " | ,,. | | पू० | सप्तम्यन्ता । |
| ९×४:२ | b | २५ | >> | ,, | १८७० | अपू० | |
| न'१×३·९ | १० | २५ | ,, | ,, | १८३९ | ,, | |
| ११×५ | ٩ | ३८ | ,, | ,, | | " | भौढमनोरमाटीका । |
| १२×४४ | ٩ | 80 | ,, | ,, | १७५३ | पू० | आस्यातभेदान्ता। |

| क्रमसं€या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थ कारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|----------------|--------------------------|--------------------------------|------------------------------------------------------|
| ३८६८३ | प्राकृतवृत्ति ः | | १-१२। |
| ३८६८४ | प्राकृतचन्द्रिक <u>ा</u> | कृष्णपण्डितः | १-६= । |
| ३८६८५ | शब्दकौस्तुभः | મદૃોजિમદૃઃ | १-२३२ । |
| ३८६८६ | प्रौ ढमनोरमा | भट्टोजिदीक्षितः | १-१५७, १-७५,१-१७,१-१४,१-२९। |
| ३८६८७ | महाभाष्यप्रदीपोद्योतः | नागोजीभट्टः | १–३३। |
| ३८६८८ | " | 27 | १-३६ । |
| ३८६८९ | " | " | १-४८, १–९५। |
| ३⊏६९० | " | 33 | १-२०७, ४२-४४। |
| ३८६९१ | महाभाष्यप्रदीपोद्योतनम् | अन्नम्भट्टः | १–३१ । |
| ३ म्६९२ | महाभाष्यप्रदीपोद्योतः | नागेशः | १-पूर्ष । |
| ३=६९३ | ,, | कृष्णसट्टः | १-५०। |
| ३८६९४ | परिभाषेन्द्रशेखरःसटीकः | नागेशः टी० का० ब्रह्मानन्दः | १-२, २–३९, ३९-५१, ५३–६६, ६६– ९⊏ ९७=९९-२३७। |
| ३≒६९५ | परिभाषाभास्करः | हरिभट्टभास्करः | ર-૪૫ |
| ३⊏६९६ | परिभाषाप्रदीपार्चिः | उद्यङ्करः | १-११८। |
| ३८६९७ | द्शगणकारिकामतम् | | १-३। |
| ३८६९८ | तर्कचन्द्रिका | कृष्णभट्टमौनी | १-९,५४-०३, ७३-७७,७६-८८। |
| ३म्६९९ | ज्ञापकसमुच्चयः | पुरुपोत्तसदेवः | १-२१ । |
| ३८७०० | गणपाठः | रामकृष्णः | १-१६। |
| इ च्छ०१ | अर्थवत्सूत्रकोडपत्रम् | | १-५। |
| ३८७०२ | शन्दकोस्तुभः | भट्टोजिदीक्षितः | १-२४ । |
| ३८७०३ | | >> | १–२३० । |
| ३८७०४ | 27 | " | १–५७, ५९ । |

| | | <u>, ———</u> | | | 1 | | 1 |
|------------------------------|-------------------|--------------------|---------|-----------|---------------|------------------------|----------------------------------------|
| श्राकार: | पंक्ति- संख्या | श्रद्धर- संख्या | लिपि: | आधारः | लिपिकालः | पूर्णीपूर्ण- विवेक: | विशेषविवरणम् |
| ११•२×५•५ | 9 | ३२ | दे. ना. | का. | | अपू० | |
| ९ . ९ . च×७ | १३ | ३१ | ,, | " | १९२५ | पृ० | |
| ११७×४४ | 9 | ४९ | " | ,, | १५५१ | " | अ०१पा०१आ०९। |
| १० . ० × ई.स | ९ | So | ,, | " | १७५७ | अपू० | |
| १० · ३×४·३ | ११ | ४१ | ,, | 33 | • | " | १ अ०, १ पा०, २ आ०। |
| \$0.1 × 8.8 | 9 | રૂપૂ | 39 | " | | पू० | १ अ०१ पा०१ आ०। |
| ξο. 8×8.8 | ११ | ३९ | " | ,, | | ,, | पशध्यायस्यच्तुर्थापादः, सप्तमाध्यायश्च |
| १० <i>५</i> × ४.६ | ११ | ૪ર | " | " | | अपू० . | प्रथमाध्यायस्यप्रथमपादे नवमाहिकम्। |
| १ १. ६×त.५ | १४ | 88 | 97 | " | | , | महाभाप्यटीकाटीका । |
| १० ·६ ×४ ·६ | ११ | . ३६ | " | 33 | | पू० | १, २ श्रध्यायौ । |
| ९२×३ . ७ | ११ | ३८ | 17 | " | | अपू० | |
| १२ [.] १×४.० | ११ | १४ | " | " | | पू० क्ष | टीका-चित्प्रभा । |
| १०°२×४°४ | १० | ४९ | 77 | ,, | | अपू० | परिभापेन्दुशेखरटीका । |
| ૧૫ ×૪.ડ | 9 | ४२ | ,,, | " | • | पू० | ,, |
| १२ [.] ३×५ | ११ | ૪૪ | " | ,, | | | |
| ९ [.] ५×४·६ | ११ | ४९ | ,, | יננ | | अपू० | |
| ९.७× <i>8.</i> ४ | १० | ३८ | ,, | ,, | | पू० | |
| ઠ∘.₫ ≻ ₫.ઠ | રય | 88 | ,, | ,, | | " | r |
| १३•५×५•१ | १२ | પૂપ | ננ | ,, | १८७५ | 3 3 | |
| 8.8×5.5 | १० | ર ૪ | , 99 | ,, | | לנ | अष्टाध्यायीटीका, अ . १,पा. १, आ. १ |
| ९ . ८×४.३ | ११ | ४२ | 77 | 99 | | :, | अष्टाध्यायीटीका, अ. १,पा. १,आ. ९। |
| ११ . ४× <i>६</i> .४ | ११ | પુક | 77 | " | ६ ०त ८ | अपू० | अप्टाध्यायीटीका,अ० ४,५१० ४,आ० १ |

| कमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | प ^६ संख्याबिवरणम् |
|---------------|----------------------------|-------------------------|----------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| ३८७०५ | शब्दकौस्तुभः | | १–३३ । |
| ३८७०६ | ;• | | १–३४,१– = ३ _। |
| ३ ८७०७ | ,,, | भट्टोजिदीक्षितः | १–७२ । |
| ३८७०५ |) ; | 12 | १-५१, १-३२। |
| ३८७०९ | " | ,, | १-४०, १-७५, ५५-१३७,१०५-१२९ । |
| ३८७१० | वैयाकरणसिद्धान्तलघुमञ्जूषा | नागेशः | २-⊏,⊏,९-३५,३५-४१,४१-४५,४५,४५,४५,४५ ४⊏,४⊏-५५, ५५–६३,६३–७१, ७१–१४५, १४५–१५४ । |
| ३८७११ | 3 1 | नागेशभट्टः | १-५९,५९-२२२,२२४-२३९ । |
| ३८७१२ | ٠, | 77 | १–१०, १०-२९, २९-३१,३१-३९,३०-३५, ३५-३६, ३६-६९,६९-७०, ७०-१२ ८, १२ ८, १२८-२३३, २४२-२८७। |
| ३८७१३ | शब्दकोस्तुभः | મદ્રોजિમદૃઃ | १–६, ६-२८७। |
| ३८७१४ | ;; | | १–२२ । |
| ३८७१५ | , | | |
| ३म्७१६ | " | भट्टोजिदीक्षित <u>ः</u> | १-३२, १-३९, १-३०, १-३३ ,१- ३६, १ , १- ३३.१-१७,१-५९, १-४५ । |
| ३८७१७ | शब्दकौ स्तुभटीका | कृष्णाचार्यः | १–१८ । |
| ३८७१८ | ,, | ,,, | ३-५, १४-३६ । |
| ३⊏७१९ | ,, | | १–२५, २७। |
| ३८७२० | ,, | | १–३७। |
| ३८७२१ | शब्दकौंस्तुभविपमव्याख्या | | १–११,२३-४१। |
| ३⊏७२२ | षोडशकारिका सटीका | | १–९। |
| ३८७२३ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | भट्टोजिदीक्षितः | १–११४, ११४-१७३। |
| ३८७२४ | " | 27 | १–१३३ । |

| श्राकारः | वंकि- संख्या | श्रद्धार- संख्या | लिपि: | | त्राधाः | लिपिकाल: | पूर्णांपूर्ण विवेकः | विशेष[बवरगन |
|------------------------------------|-----------------|---------------------|-----------------|-----|---------|-------------------------|------------------------|-------------------------------------------------|
| ११°३×३°९ | १२ | ६१ | दे. न | τ. | का. | | अपू० | अटाध्यायीटीका,अ० ४,पा० १,आ० ४ । |
| ११ . ८×৪ | 9 | પૂર | ,, | | " | १७५२ | पू० | अष्टाध्यायीटीका, अ० ३, पा० १-२, आ० १-३, १-६। |
| ११ [.] ३×४ | १२ | યુપ્ | " | | ,, | | 37 | अष्टाध्यायीटीका, अ०२, पा०४, आ०२। |
| ११•३×४ | ११ | ४७ | , ,, | | " | | ,, | अ०१ पा० २-४। |
| 84. 2 ×8 | ११ | યૂહ | , ,, | | ,, | | ,, & | अ०१, पा०१ आ०१-९। |
| १०'९×४'म | ११ | 85 | ; ,, | | 33 | | अपू० | |
| | | | | | | | | |
| ૬૫.×૪૧ | १५ | | بر ا | , | " | | ,, | |
| १०°≒×४°= | १० | 81 | Ę, | , | ,, | १७ ५० श. १६४५ | ,,, | |
| ९ . ८×४.३ | ११ | ર ક | ₿, | 5 | 35 | | पू० | अ०१ पा०१ आ० १-९। |
| 80.8×8.8- | १ | o y | ١ ٢ | 1,7 | " | | ,, | अ०१पा०-१आ०१। |
| १०×४.४ | १ | ર∤ષ | ,0 | ,, | 55 | | अपू० | अ०१पा०१। |
| \$0.8 × 8.1 | | न | 38 | ,, | " | १९१५ | पू० | अ०१, पा०१, आ०१-९। |
| ११ [.] १×४ [.] ६ | | ९ । | 35 | ,, | ,, | | 33 | अ०१ पा०१ श्रा०४ मात्रम । |
| द े > ४ ३ | १ | .१ । | ४२ | ,, | ,, | | श्रपू० | |
| ₹8.8 × 8.8 | 8 | 2 | 88 | ,, | ,, | | 27 | • |
| ११ [.] ५×४ [.] ३ | | 9 | ३६ | ,, | ,, | | पू० | अ०१पा०१ आ०३। |
| ९.८×8.8 | 1 | ११ | 80 | ,, | 17 | · | अपू० | अ०१ पा०१। |
| 59×8 | | १२ | ४३ | 23 | 99 | , <u> </u> | पू० | |
| . ९ . ७×४.५ | | 9 | ३५ | ,, | ,, | | " | पूर्वोद्ध मात्रम्। |
| ९.८×८.४ | | १० | રપૂ | " | ,, | | " | तिङन्तमाश्रम् । |

| क्रमसंख्य | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारना म | पत्रसंख्याविवरणम् |
|-----------------------|-------------------------------------|-------------------------------------|-----------------------------------------------------------------------------|
| ३८७२५ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | भट्टोजिदीक्षितः | १–१४० । |
| ३८०२६ | , ,, | ,, | १-५०, १-५१ । |
| ३ ८७२ ७ | प्रौढमनोरमा | 7; | १२५-१७२। (=४-४५) |
| ३ ८७२ ८ | सुवोधिनी | जयकृप्गः | १-१९,२२-३०,३२-३५,३९ । |
| ३८०२० | स्फोटचन्द्रिका | श्रीकृष्णः | १–१३ । |
| ३८७३० | , ,, | 77 | १–१म । |
| ३=७३१ | लघुसिद्धान्तको <u>म</u> ुदी | | १-३,६–१४ । |
| ३८०३ | र लघुशञ्देन्दुशेखरटीका | | ७५। (गणनया) |
| ३म७३३ | ,, | | १-२८ |
| ३ =७३ ১ | प्रक्रियाकौमुदी | रामचन्द्राचार्यः | १–50,50-१४५ । |
| ३८०३५ | , ,, | " | र्-१६३। |
| ३८०३६ | परिभाषेन्द्वशेखरःसटीकः | नागेशः, टी. का वैद्यनाथपायगुण्डे | १–५१। |
| ३८०३७ | परिभाषेन्दुशेखरटीका | " | १-५०। |
| ३८७३८ | निन्दकेश्वरकारिका सव्याख्या | व्या.का.उपमन्युः | १-४ । |
| ३८७३९ | कारिकाविवेचनं सच्या- ख्योदाहरणम् | | १ ११ । |
| ३८०४० | अव्ययार्थः | ;] | १-५। |
| १८०४१ | सारस्वतम् | अनुभू क्स्वरूपा- चार्यः | १-७१,१-१९ । |
| ३८०८ | र सिद्धान्तचिद्रका | रामाश्रमाचार्यः | १-५६,१-६५,१-२५ । |
| ३८०४: | वैयाकरणभूपणसारः | कौण्डभट्टः | 8-98 1 |
| ३ =७४१ | ४ घातुपाठः | | १–२५ । |
| इद्यक्ष | ५ अधन्यायी | | १-मम । |
| 3 <i>508</i> 1 | इ वैयाकरणसिद्धान्तकोमुदी | भट्टोजिदीक्षितः | १-१९२,१९२-२१४=२१५-२७०,२७०-३१६, १-१२५,१-६०,१-११७,१- - -९,१-१३। |

| भाकारः | पंकि- संख्या | अत्तर- संख्या | लिपिঃ | आधारः | लिपिकाल: | पूर्णापूर्ण- विवेक: | विशेषविवरणम् |
|------------------------------------|-----------------|------------------|-------------|-------|----------|------------------------|-----------------------------------------|
| १० - ५×४-६ | ११ | 80 | दे.ना. | का. | | पू० | उत्तराद्व [°] म्। |
| ९ [,] ९×४ [,] २ | १० | ४२ | 77 | ניני | | अपृ० | कृद्न्तप्रकरणम्, लिङ्गानुशासनप्रकरणञ्च। |
| १० °३ ×४'प | १७ | ६० | " | 27 | १७७० | 33 | नै० सि० कौ० टीका। |
| १० : ६×४:६ | १३ | પૂર | ,, | 33 | १८१७ | ,, | वै० सि० को॰व्याख्या, स्वरप्रकरणम्। |
| ૧પ ×૪ [.] ૨ | १२ | 88 | ,, . | 77 | | पू० | |
| ९ [.] ४×३ [.] ९ | १० | ४३ | ,, | ,, | १द्ध्य | 31 | |
| ९ •३×४ [.] २ | १३ | ३४ | " | " | | अपू० | |
| ११°३×४ | b | २म | 33 | ,, | | " | |
| १० . ८×८.त | 9 | ३३ | ,, | 59 | | ,,, | |
| ९・९×४२ | 10 | २६ | " | ,, | १६ (१) | पू० | |
| १० :२ ×४:७ | 9 | ३१ | " | ,, | १६११ | ,, | सुवन्तानता । |
| १३ [.] ३×५ [.] ४ | 5 | ६९ | ,, | 33 | | अपू० | टी०-गदा । |
| १३.ग×त. | १२ | ६६ | ,, | ,, | १८७४ | ,, | 32 |
| ९ . ४×४.७ | १७ | ३३ | ,, | ,, | | पू० | व्याख्या-तत्त्वविमशिनी । |
| १०°५×४°५ | 9 | ३६ | ,, | ,, | | 7.7 | तिड्कृत्तद्धितसमासाथंनिरूपणरूपम् । |
| १० [,] ६×४,४ | 5 | ४१ | ,, | " | | " | |
| ९પ્ ×પ્પ | १२ | २४ | " | 77 | १९०५ | ,, | अाख्यातऋन्प्रक्रिये । |
| ९ [.] ६×५.६ | १२ | રપૂ | " | " | १९०५ | " | |
| १०°५×४'६ | v | ३६ | " | ,, | १९२१ | 37 | · |
| ११७×४ [.] ९ | 9 | ३७ | " | " | १९२३ | " | |
| १ १°६×४°९ | v | ३५ | ,, | ,, | १९२२ | ,, | |
| ११७×५७ | v | ३७ | ,, | " | १९२२ | ,, | |

| | | | | |
|---|-------------------------|--------------------------------------------------|--------------------------|---------------------------------|
| i | क्र मस् ख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
| | ই দ ৩ ४ ७ | प्रक्रियाकौमुदी | रामचन्द्रः | ४५-६३,६६-७२। |
| | ३म७४म | वैयाकरणभूपणसारटीका | | ऱ-४६,४६-५४,५४-१०६। |
| | ३⊏७४९ | 97 | | ६ तम् । |
| | ३⊏७५० | वैयाकरणभूषणसारतत्व- विदृतिः | रुद्र नाथः | १–३६ .। |
| | ३८७५१ | वैयाकरणभूपणसारलघु- दपणः | हरिवल्छभः | १-३ ५,४४-९६ । |
| | ३८७५२ | " | " | १–६३=६४,६५-१०= । |
| | ३८७५३ | वैयाकरणभूषणसारः | कौण्डभट्टः | १-५२.५२-६५ । |
| | ३≒७५४ | ,, | " | १–६८ । |
| | ર⊏હયુપ્ | ;; | 72 | १–२१-२१-३१। |
| | ३८७५६ | वैयाकरणसिद्धान्तलघु म ञ्जूपा- कुञ्जिका | | १ ५ + १-४,७-३ ५ । |
| | ঽ৸৻ঀ৻৻ | मनोरमाखण्डनम् | | ३–२७। |
| | ३८७५८ | >> | | १–३२,२५ । |
| | ३८७५९ | महाभाष्यम् | पतञ्जितः | १–३७। |
| | ३८७६० | ,, | ,, | १–२१,१३०६४। |
| | ३८७६ १ | ,, | " | १-२९,४०-६४ । |
| | ३८७६२ | | " | २०-६ <u>५=(६६३ ६</u> ८-७४ । |
| | ३८७६३ |) 7 | " | १-१९,+१ । |
| | ३८७६४ | " | " | १२-७२.७२-६४,१-११ । |
| | ই দত ६ ৸ | महाभाष्यदीका | टी.कानारायणः | ४२। गणनया |
| | ३८०६६ | ं महाभाष्यसिद्धान्तरत्न- प्रकाशः | शिवरामेन्द्रसरस्वती • | १–४९,४६-५०। |
| | ই দ্ৰুছে | यङ्तुगन्तप्रक्रियाप्रकाशिका | नारायणः । | १, ३-२५, २७। |

| त्राकारः | पंक्ति- सं ख् या | श्रच् र- संख्या | लिपिः | श्राधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण - विवेक: | विशेषविवरणम् |
|------------------------------------|----------------------------|---------------------------|--------|----------|----------|-------------------------|-----------------------------------------|
| ११.1 × 8.0 | १३ | તજ | दे. ना | का. | | श्चर्यू0 | |
| ९ [.] २×३ [.] ९ | 3 | ३६ | ,, | " | | 3 7 | |
| €• ३ ×४°१ | १२ | રૂપૂ | " | " | | " | |
| १२ [.] २×४ [.] ६ | १४ | ६२ | 37 | " | | " | |
| १०'१×४'२ | 5 | ४२ | " | " | १९०९ | 2, | |
| १० × ४° २ | 9 | ३९ | ,, | ,, | | do | आदितो नामार्थनिर्णयान्तः। |
| ९' ५ ×४ | \ 5 | ३२ | 97 | ,, | | ,, | स्फोटवादः । |
| १०°म×४२ | ၑ | ३४ | 33 | " | | ,, | " |
| 80.17×8.17 | १४ | ४३ | " | " | | श्चपू० | |
| १०•३×४°४ | ११ | ३७ | ,, | ,,, | | " | |
| | _ | 3 | | | | | |
| 80.8×3.0 | 5 | | " | " | | ,, | |
| १०:२×३५ | 5 | | " | " | (| ,, | 6 0. |
| १०'=×४'३ | १४ | 85 | " | 53 | | 71 | अ०६ पा०१। |
| १०.६×४.३ | ११ | 80 | ,, | ,, | | 27 | अ०२पा०१-३। |
| १०•५×४•६ | १३ | Йo | ,,, | ;; | | ;, | अ०६ पा०१ अ०६ तः अ०६- पा०४ आ०४ यावत्। |
| १० .8×8.∌ | 9 | ४९ | " | ,, | | ,, | तृतीयाध्यायः । |
| १०.त × ८.३ | १० | પૂર | ,, | ,, | | >> | , ,, |
| १०.९×४.६ | । १० | ४९ | ,, | ,, | | ,• | अ० २पा० १-४, अ• ४पा० १आ०१। |
| ६ × ३ % | ११ | ४१ | ,, | 95 | | " | अ०१ पा० २ आ० ३। |
| ११ [.] ४×४ [.] ६ | १२ | ४५ | ٠, | ,, | | 5 7 | |
| E**×8"₹ | ११ | ४न | 7. | ,, | १८३३ | ,, | |
| ११ | | | | | | | |

| क्रमसंख्या | ग्र न्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्र सं ख्याविव र णम् |
|------------------|---------------------------------|---------------------------|----------------------------------------------------------|
| ३म७६म | रप्रत्याहारखण्डनम् | वैद्यनाथपायगुण्डे: | १–२२ । |
| ३ म्फ६९ | परिभापेन्दुशेखरटीका | | १-२४ । |
| ३८००० | परिभापेन्दुशेखरचन्द्रिका | विश्वनाथः | १-म्फ, १-२म, १-३म। |
| ३८००१ | 3 5 | " | १-२३ + १ । |
| ३ न्फ्फर | परिभापाप्रदीपाचिः | | १, १–९, १-७+१ । |
| ই দ্য েহ | पद्मञ्जरी | ह्रद्त्त्तिभः | १-१४३, १४५-१४६। |
| इम्ब्ब्बर | 25 | 77 | १-२५० । |
| ঽয়৽৽৽ঀ | 77 | " | १–४५, १–७३। |
| ३८००६ | 37 | " | १-१५६ । |
| ই দ্ৰু তত | परिभाषार्थसङ्ग्रहः | वैद्यनाथः | १८। (गणनया) |
| ই দ্রু ড় | श्रौढमनोरमा | | १४। " |
| ३८००९ | तत्त्ववोधिनी | | १०, १२–१४+१,२५.। |
| ३८७८० | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी सटीका | | ४५। (गणनया) |
| - ইনতন্ | ,, | | ξι · " |
| ३म्०प्तर | <i>छ</i> घुशब्देन्दुशेखरः | नागेशः | १-१९८, १–२७, १-३७, १-४४, १-४८, १-४३, ४३–५४, ५४-१०८। |
| ३म्फ्प् | " | 95 | १–१२९। |
| ३म्ण्य४ | छघुश ब्दरत्नम् | हरिदीक्षितः | १-६४, ७१-१०२, १२०-१३८, १४४-२२९। |
| ं ३८०८५ | 9, | 25 | (१=२)-६०, १-२१ । |
| ३म७म६ | " | ,,, | १-१३८। |
| ইনতনত | ,, | 97 | १–१५१। |
| ३मर्ज्यम | ,, . | ,, | १–९४, (=९५-९९) १००–१०१+१, १०२-११२ (=१), २-५०, ५०-६५ । |
| ३८७ ८९ | प्राकृतप्रकाशः सवृत्तिकः | बररुचिः । वृ.का. भामहः | १-३६ । |

| आकार ः | पंकि- संख्या | अन्तर- संख्या | लिपि: | आधार: | लिपिकाल: | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|-------------------------------------|-----------------|------------------|---------|-------|-------------------------------|------------------------|-------------------------------------|
| ११·२×४ | ११ | પૂર | दे. ना. | का. | १८३३ | पू० | |
| १३ •२ ×५ - | १० | ४९ | ,, | " | | अपू० | |
| ९ . ९×४.० | १० | 80 | " | " | | " | |
| १8× ५ •३ | ११ | तर | " | " | | " | |
| ११·२×५·१ | १२ | पूर् | ,, | " | | " | |
| १०'२×४ | . १० | ४१ | ,, | " | १६१७ | " | काशिकावृत्तिटीका । पछ्चमोऽध्यायः । |
| १० [.] ९×३ [.] ९ | ی | ३१ | 97 | " | | पू० | काशिकावृत्तिटीका अ०४.पा०४. पर्यन्ता |
| १०'९×४'१ | ९ | 88 | 55 | " | | 73 - | काशिकावृत्तिटीका । अ० ३. पा०२-४ । |
| ११ [.] ६×४ [.] ४ | 5 | ४२ | 27 | 23 | १५्द | 7 3 | अ-२. चरणाः १-४ । |
| १२ [.] ७×५ | २०. | 88 | " | ,, | | अपू० | · |
| १२ [.] ६×५ | १७ | 88 | " | •• | | ٠,, | |
| १र•६×५ | १७ | ४३ | ,, | " | | " | वै० सि० कौ० टी०। |
| १२ [.] ६×५ [.] २ | २० | ųо | " | 23 | | " | - |
| १२×५ [.] २ | २५ | प्तर | " | " | | 37 | |
| ९ . ६×३.६ | 9 | ३६ | " | " | | " | आदितस्तिङन्तान्तः । |
| \$0.\$ × 8.8 | 9 | ३७ | ,, | " | | पू० | तिङन्तप्रकरणमात्रम् । |
| ९.८× <i>६.</i> ५ | 9 | 80 | 33 | " | ं १७≒४ | अपू० | वै० सि० कौ० टी० टीका। |
| ९६×४ [.] ६ | ११ | 80 | " | ,, | १७=४ | पू०% | ., भ्वादितो वैदिकप्रक्रियान्तम् । |
| ११.8×8 , ८ | १२ | 80 | 37 | ,, | १८१२ | " | ,, सुवन्तान्तम्। |
| ९ [.] ५.% ३ [.] ६ | ९ | 88 | >> | ,, | | 37 | ,, आदितः कारकान्तम्। |
| 9.8×3.6 | ११ | Sď | " | ,, | १८०५ | . 33 | ,, सुवन्तान्तम्। |
| ९ [.] ९×४°२ | 9 | ३८ | 25 | ,, | गन्धवाह्युरा- णाब्द्धशन्४९ | · • | वृत्तिः मनोरमा । |

| | कम संख् या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारना म | पत्रसंख्याविवरणम् |
|-------|-------------------|-----------------------------------------|-----------------------------|--------------------------------------------------------|
| | ३८७९० | प्राक् <u>र</u> तप्रकाशः सवृत्तिकः | वररुचिः, वृ०का० भामहः | १-१०, (=११-१४), १५-४२ । |
| | ३८७९१ | पट्कारकं सटीकम् | श्रीवल्लभानन्दः | १–५। |
| | ३⊏७९२ | पाणिनिसूत्रवृत्यर्थसङ्ग्रहः | | ३६। (गणनया) |
| | ३ ८ ०८३ | उ पसर्गेद् टित िः | | १–२४। |
| | ३८७९४ | छ घुश =देन दुशेखरटीका | | १-५=। |
| | ३८७९५ | लघुराव्देन्दुच न्द्रिका | विश्वनाथः | 8-101 I |
| ŀ | ३८७९६ | छ घुशब्द रत्नम् | इरिदीक्षितः | १–४२, ९१-९४, १०१-१२१, १२५-२२०। |
| | ३८७९७ | वैयाकरणसिद्धान्तलघुमज्जूपा | नागेशः | ३५, ४०-८०, ८२-११२, (=११३), ११४- ३८६,=(३८७) ३८८-४६१। |
| | ३८७९८ | महाभाष्यप्रदीपप्रकाशः | नीलकण्ठदीक्षितः | १-६९=(७०), ७१-७= । |
| | ३द्र७९९ | महाभाष्यं सप्रदीपम | पुतञ्जलिः, प्र०का. कैयटः | १–६६, ६६-१४०, १४२-२८९, २८९-२९४, २९४-४४५ । |
| ŀ | ३८५०० | मध्यसिद्धाःतकौमुदी | वरदराजः | १६९–२२४। |
| | ३८८०१ | शब्दरत्नभावप्रकाशिका | वैद्यनाथपायगुण्डेः | १-४२ । |
|] | ३८८०२ | प्रयोगमुखम् | | १-२७, २७-२८, ३०-३४। |
| | ३८५०३ | प्रक्रियाकौ मुदीप्रसादः | विद्वलाचार्यः | ३०२-५३७, २-१६३, १६३-१८०, १-१९८। |
| | ३८८०४ | प्रवोधचन्द्रिका | वैजल्भूपतिः | १-१३, १३-१९ । |
| | | 2 | | 0 00 00 00 0 |
| } | ३८८०५ | पूर्वपक्षसमाधिसङ्ग्रहः | हारिलशर्मा | १-१५, १५-१७ । |
| | ३८८०६ | लघुसिद्धान्तक <u>ौ</u> मुदी | वरदराजः | १–४०। |
| | ३८८०७ | प्रौढमनोरम <u>ा</u> | भट्टोजिदीक्षितः | १-२३३, १-५४, १, ५५-७०, ७०-१०९। |
| t | ३८८०८ | योगविभागसूत्रसङ्ग्रहः | | १। |
| | ३८५०९ | टीकामन्थविशेपः | | ५।(गणनया) |
| . | ३८८१० | अनिट्कारिका सटीका | | १–३ । |

| +-= | | | | | | | |
|------------------------------------|-----------------|--------------|---------|-----------|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|------------------------|------------------------------------------------------------------|
| अक्ष ं | पंठि- चंख्या | अदर- रुखा | त्रिपिः | अगियार: | तिनिकातः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विरेत्रविवरणम् |
| १ंत्र×४५. | १० | રૂપ્ટ | दे.ना. | फा. | | अपृ०्रे | ष्टिः मनोरमा । |
| ९७×४२ | १७ | ४= | 12 | 23 | | र्वेठ | z . |
| १०.०×६. <i>६</i> | १० | ४२ | ,, | 37 | | अपू० | अ०३। |
| १३.५×त.६ | ६४ | ४८ | 27 | 75 | श १२५६ | do | रभसनन्दीकृतसम्बन्धोधोत, रुचादिगण- वृत्तिः, परिभाषावृत्तिम्ब । |
| १०'२×४'७ | ٩ | ३= | ,, | >5 | | अपृ० | श्रजन्त्पु हिन्नप्रकरणम् । |
| ያ' ። ×ያ' ତ | 9 | ३९ | ,, | ,, | | ,,, | ल्चुसन्देन्दुशेखरटीका। |
| ११'२×४'२ | ٩ | 88 | ,, | ,, | १=११ | 23 | वै० सि० फौ० टी० टीफा । |
| ९ .⊏×ጹ.ቋ | 9 | ₹8 | 27 | 27 | १८४७ | ,, | |
| ૧૧૫×૫૪ | १४ | ४१ | | | | पृ० क्ष | अ० १, पा० ३, आ० १-२। |
| ₹₹ ₹ °७ | १ _५ | | " | " | | अपू० | |
| 14745 | | 60 | 33 | 533 | | 0,50 | |
| 5.e×3.e | ٩ | २६ | " | ,, | | ,, | |
| १०'५×४'२ | १० | पू६ | ,, | 2,5 | | ,, | वै० सि० को० टी० टी० टीका। |
| ≒ ' ¼ × ¼ ' ₹ | १३ | २६ | 77 | ,, | • | ,, | |
| १०'३×४'२ | = | : ३४ | ,, | 37 | १६५९ | 27 | सुवन्तलकारार्थेहत्न्तभागः। |
| ₹₹'8×4'¥ | १० | ્રિપ્ટ | . 2, | " | | र्वे० | रामचन्द्राचार्यवृतेयमित्यन्तिमपुष्पिका- याम् लिखितमस्ति । |
| १०×४५ | 9 | , 3 3 | | 32 | 1 | अपू० | पाणिनीयसूत्रोपरि। |
| 6.3×8.8 | १० | , 3 १ | ,,, | ,, | T. Valencia de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la companya de la com | पृ० | उत्तरार्द्धमाद्रम् । |
| 60.6×8.8 | 9 | | *** | ,, | १७४२ १ ७४४ | ,,E | वै० सि० की० टीका । तिहन्तान्ता । |
| १२°२×५ | १७ | ६ | . ,, | 11 | १मन्ध | ** | नागोजिभट्टपर्यालोचितो भाष्यसम्मवश्च। |
| ८. ३ × ३ .६ | • | 88 | ,,, | ,, | | अपृ० | |
| 15.5×5.0 | ६० | , । १२ उ | ,, | 1,, | | पू० | |

| | क्रमसं ख्या | ग्रन्थनाम | प्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---------------------|---------------------------------------------|---------------------------------------|-----------------------------------------------------------|
| I | ३८५११ | श्रौढस नोरसाटीका | इरिदीक्षितः | १-२७। |
| | ३ ८८१२ | महाभाष्यं सप्रदीपोद्योतम् | ्पतञ्जलिः प्र०का० कैयटःच.का.नागेशः | ४९७-७५६, ७५५-५४५। |
| | ३ ⊏ ⊏१३ | शब्दकौस्तुभः | भट्टोजिदीक्षितः | १-२२, १-२७, १-२०, १-२३, १-२४, १-२२, १-१२, १-३९, १-३२। |
| | ३८८१४ | वाक्यपदीयं सटीकम् | टी.का.हरिवृपभः | २-१९=(२०), २१ । |
| | ३८५ ५ | . 99 | टी.का.पुण्यराजः | १–१३२ । |
| • | ३८८१६ | वाक्यपदीयम् | भन्तृ हरिः | १–६४। |
| | ३८८१७ | अधीगर्थद्येशां कर्मणीति- सूत्रार्थविचारः | | 81 |
| | ३८८१८ | लघुशव् देन् दुशेखरः | नागेश: | १-१०, १⊏-२ंप, (=२६), २७-६ंप, ७१-९९, ९९-२०३ । |
| | ३८५१९ | वाक्यपदीयं सटीकम् | टी.का. हरिश्रपभः | १-५२ । |
| | ३८८२० | लघुशव्दे न् दुशेखरः | | १-९, ११, १३-२२, २६-६७, ८६-११४। |
| | ३==२१ | लघुश व्देन्दु शेखरटीका | | १-४, ६-३२। |
| | ३८८२२ | लघुशब्देन्दुशेखर ज्योत्स्ना | उदयङ्कर: | १-१७५ । |
| | ३८८२३ | वैयाकरणभूपणसारदर्पणः | हरवल्लभः | १-१९४। |
| | ३८८२४ | वाक्यपदीयं सटीकम् | टी०का०हेलाराजः | १-२६२ । |
| | ३८८२५ | वाक्यपदीयं सटीकम् | टे .का. पुण्यराजः | १-१९१। |
| | ३८८२६ | च्याकरणदीपिका - | ओरम्भट्टः | १-७८, १-३८, १-८४, १-६४, १-५४, १-१२२, १-७५, १-६४, १-२२। |
| | ३ददर७ | प्रा कृतसञ्जीवनी | वसन्तराजः | १-७५। |
| | ३८८२८ | प्रा ऋतचन्द्रिका | शेपकुष्गः | १–४९ । |
| | ३८८२९ | स्वरितविवृत्तिः | इन्द्रदत्तोपाध्यायः | ₹-81 |
| | ३८५३० | स्थानिवत्सूत्रार्थविचारः | | १–ं३। |
| | | 1 | | <u> </u> |

| त्राकारः | पंकि- संख्या | ग्रचर- संख्या | लिपि: | श्राधारः | लिपिकाल: | पूर्णीपूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|-------------------------------|-----------------|------------------|--------|-----------|---------------|------------------------|--------------------------------------------------------------------------|
| १० [.] ९×४.स | 4 | ३३ | दे.ना. | का. | | पू० | नै० सि० कौ० टी० टी० ''णेरणी'' इति सूत्रव्याख्यानरूपा । |
| १३ . ⊏×स.्स | ११ | ড3 | " | 33 | | अपू० | अ०१ पा०२-अ०२ पा० १ पर्यन्तम् |
| १रफ्४४४६ | १० | પૂપૂ | 17 | " | १=६=- १=६९ | पू० | अष्टाध्यायीटीका, अ०१पा०१ आ०१-९ |
| १३ .४×४ | શ્પ. | પૂહ | ,, | " | | अपू० | टीका प्रकाशास्या। |
| १० ⁻ ४×३् | ی ا | पूर | 55 | 33 | | " | द्वितीयकाण्डम् । |
| १२'म×६'५ | १४ | ३६ | " | 39 | | पू० | |
| ११•३×५ | 5 | ३८ | ,, | 77 | | अपू० | |
| ११ . ३×ग | १० | 80 | ,, | " | | ,, | वै० सि० कौ० टीका । |
| ११°६×४'९ | ى و | ४२ | ,, | ,, | | पू० | टीका प्रकाशाख्या, ब्रह्मकाण्डम्। |
| १०. ६ ×८.८ | હ | ४६ | 33 | 57 | | अपू० | वै० सि० कौ० टीका। |
| ९ . ६× <i>६</i> .० | १० | રૂપૂ | ,, | " | | " | |
| ९ •५.×४ [•] ३ | ९ | ३२ | 27 | " | | पू० | हलन्तपुपु हिङ्गान्ता । |
| १२ [.] ३×४.० | ११ | 80 | " | " | १८५४ | " | स्फोर्टवादान्तः। |
| १ ० •६×४ <u>.</u> त | ٩ | ४५ | " | " | | ,, | टीका प्रकीर्णप्रकाशाख्या, तृतीयकाण्डम् त्रम्, क्रियासमुद्दे शान्तम् । |
| ११ . ७×४.८ | b | ३४ | " | ,, | | " | द्वितीयकाण्डमात्रम् । |
| ९५×४२ | ९ | રય | " | " | | " | पाणिनिसूत्रवृत्तिर्वा । व्याकरणटीका- प्रन्थरच । |
| १० [.] १×ं४ | १३ | 80 | ,, | " | | " | प्राकृतव्याकरणवृत्तिः। |
| ९ . ८×४.५ | 9 | ४० | " | ,, | १८६० | " | |
| १० [.] ६×४ | \ \ | ३४ | " | :9 | | 5> | |
| ११°६×६ॱ३ | . २२ | ક્ષ્ | " | 23 | | 23 | |

| | क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्यकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् | |
|-----------------|------------|-------------------------------------------|---------------------|-------------------------|---|
| _ ` | ३८५३१ | सुवोधिनी | जयकृष्णभट्टः | १-२२ । | |
| | ३८५३२ | प्रयोगविधिः | | १–३ । | |
| | ३८५३३ | परिभाषेन्दुशेखरटीका | | १–३४ । | |
| | ३८८३४ | परिभापेन्दुशेखरः | नागेशः | १–५७। | |
| | ३मम३५ | " | " | १–५०। | |
| | ३८८३६ | परिभापावृत्तिः | | १–२४ । | |
| | ३मम३७ | परिभाषार्थीं तंसः | | १-५, ४-९, ११-१७, २०-३४। | |
| | ३८८३८ | परिभापापाठः | | १ - ४ । | |
| | ३८५३९ | ,, | | १-४। | ĺ |
| | ३८८४० | ,, | | १-५। | |
| | ३मम्४१ | क्रोडपत्रम् | | १–१२। | |
| | ३मम४२ | धातुकोशः | वोपदेवः | १-१६ । | |
| | ३८८४३ | प्रौढमनोरमा सशब्दरत्ना | | ३०। | |
| | ३८८४४ | धातुरुपावली | | ३–६। | |
| | ३८८४५ | " | | ३ (गणनया) | |
| | ३नन४६ | " | | १,३-१०। | |
| | ३८८४७ | धातुपाठः | | १-२७। | |
| | ३८८४८ | " | - | १–१७ । | |
| | ३८८४९ | तृतीयादिषुभाषितेतिसूत्रार्थः विचारः | | १ 1 . | |
| | ३८८५० | णेरणौ यत्कर्मेत्यादिसूत्रार्थ- सिद्धिः | नारायणः | १-२, २-४=५-१९ । | |
| | इस्स्पूर | टिङ्गाणिचतिस्त्रशङ्कासमाध नम् | т- | १ (छम्बमानम्) | |
| | ३मनप्र | र गणरत्नमहोद्धिः | | १-१४। | , |

| | | | - | | | | |
|------------------------------------|-----------------|------------|---------|-------|------------------|------------------------|------------------------------------------------------------------------|
| श्राकारः | पंकि- संख्या | | लिपि: | आधारः | लिपिकाल ः | पूर्णापूर्ण- विवेक: | विशेषविवरणम् |
| ९ [.] ૨×૫ | १३ | ४८ | दे. ना. | का• | १८६६ | पू० | वै०सि०को०टीका । वैदिकप्रकरणमात्रम् |
| ९ . ८×8.8 | १० | ४३ | " | " | | " | समासचक्रञ्ज। |
| १२ [.] ३×४ [.] ९ | 4 | ४९ | 77 | ,, | | अपू० | |
| १२·१×५·१ | ११ | ४९ | 77 | " | • | पू० | |
| ११•३×४७ | v | ३३ | ,, | " | | ষ্ম <mark>পূ</mark> ০ | |
| १० ° ४×४ | v | ३७ | .,, | ,, | १८४० | पू० | |
| १० . ० × ३.८ | ११ | પૂર | " | " | • | अपू० | पत्रवामपार्श्वे परिभापेन्दुशेखरक्रो ड- पत्रमिति लिखितमस्ति । |
| ५ .८ ४ ३.८ | ११ | ३८ | " | 35 | | पु० | |
| ९ . स×३.स | ९ | २९ | 55 | 55 | १७७९ | 99 | |
| ९'२×२'४ | યુ | ४३ | " | 77 | | " | |
| १०×५ . १ | १६ | ४७ | ,, | " | | अपू० | सूत्रपरिभापार्थविचारात्मकम् । |
| ११×४:६ | १२ | ३ ९ | " | " | | पू० | |
| ९ . ६×४.= | १९ | ३= | ,, | " | | अपृ० | कारकप्रकरणम् । |
| ૭ . ક × ઠે.તે | ९ | १६ | ,, | 33 | | " | |
| ९ . ३× ३ .६ | १= | ३७ | " | ,, | १९३७ | " | |
| ९ ॱ ३×३ [.] ६ | ११ | ३० | " | 77 | | " | |
| म ' ६×४'१ | ९ | રદ | 97 | " | | पू० | • |
| ५. ५×३.८ | १० | ३५ | ,, | 33 | १५०३ | " | |
| ९ . ९×४. ६ | १३ | ३७ | ,, | ٠, | • | " | |
| १० [•] न×४ | ११ | ४५ | " | " | | 9 9 | • |
| ર શપ્ય | ४७ | २२ | " | " | • | म्रपू० | |
| ९°७×३°७ | 5 | ३३ | ,, | 99 | | | |
| १२ | | | , | · | , | | + |

| ३ म ५१ अर्थवत्त्वविचारः १ २-३, ६ । १ । (गणनया) १ । (गणनया) १ । (गणनया) १ । १ । १ । १ । १ । १ । १ । १ । १ । १ | | क्रमसंख्या | प्रन्थनाम | ग्रन्थका रना म | पत्रसंख्याविवरणम् |
|-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|---|------------|-----------------------------------------------|-----------------------|--------------------------|
| श् (गणनया) श् (गणनया) श् (गणनया) श् (गणनया) श (गणनया) श (गणनया) श (गणनया) श (गणनया) श (गणनया) श (गणनया) श (गणनया) श (गणनया) श (गणनया) श (गणनया) श (गणनया) श (गणनया) श (गणनया) श (गणनया) श (गणनया) श (गणनया) श (गणनया) श (गणनया) श (गणनया) श (गणनया) श (गणनया) श (गणनया) श (गणनया) श (गणनया) श (गणनया) श (गणनया) श (गणनया) श (गणनया) श (गणनया) श (गणनया) श (गणनया) श (गणनया) श (गणनया) श (गणनया) श (गणनया) श (गणनया) श (गणनया) श (गणनया) श (गणनया) श (गणनया) श (गणनया) श (गणनया) श (गणनया) श (गणनया) श (गणनया) श (गणनया) श (गणनया) श (गणनया) श (गणनया) श (गणनया) श (गणनया) श (गणनया) श (गणनया) श (गणनया) श (गणनया) श (गणनया) श (गणनया) श (गणनया) श (गणनया) श (गणनया) श (गणनया) श (गणनया) श (गणनया) श (गणनया) श (गणनया) | | ३८८५३ | कविकल्पद्रुमः | | १-२=३-१२, १५ । |
| ३त्तम्प६ एकाचडपदेशेऽनुदात्तादिति- सूत्रं सञ्चलिकम् ३त्तम्पः उत्तरपदले चेति वार्तिक- कोह्रपत्रम् ३त्तम्पः इकोगुणवृद्धीइतिसृत्रार्थः यमेश्वरः १-९१। ३त्तम्पः अष्टाध्यायी पाणिनः १-९२। ३त्तम्पः शेवपकरणभूपणसारः ५-९२। ३त्तम्पः कोह्रपत्रम् भाव्यस्ति । ११ (गणनया) ३त्तम्पः शव्यस्ति । ११ (गणनया) ३त्तम्पः शव्यस्ति । ११ (गणनया) ३त्तम्पः शव्यस्ति । १८ । ३त्तम्पः शव्यस्ति । १८ । ३त्तम्पः शव्यस्ति । १८ । ३त्तम्पः शव्यस्ति । १८ । ३त्तम्पः शव्यस्ति । १८ । ३त्तम्पः शव्यस्ति । १८ । ३त्तम्पः शव्यस्ति । १८ । ३त्तम्पः शव्यस्ति । १८ । ३त्तम्पः शव्यस्ति । १८ । ३त्तम्पः शव्यस्ति । १८ । ३त्तम्पः शव्यस्ति । १८ । ३त्तम्पः शव्यस्ति । १८ । ३त्तम्पः शव्यस्ति । १८ । ३त्तम्पः शव्यस्ति । १८ । ३त्तम्पः शव्यस्ति । १८ । ३त्तम्पः शव्यस्ति । १८ । ३त्तम्पः शव्यस्ति । १८ । ३त्तम्पः शव्यस्ति । १८ । ३त्तम्पः शव्यस्ति । १८ । ३त्तम्पः शव्यस्ति । १८ । ३त्तम्पः शव्यस्ति । १८ । ३त्तम्पः शव्यस्ति । १८ । ३त्तम्पः शव्यस्ति । १८ । ३त्तम्पः शव्यस्ति । ३त्तम्पः शव्यस्ति । ३त्तम्पः शव्यस्ति । ३त्तम्पः शव्यस्ति । ३त्तम्पः शव्यस्ति । ३त्तम्पः शव्यस्ति । ३त्तम्पः शव्यस्ति । ३त्तम्पः शव्यस्ति । ३त्तम्पः शव्यस्ति । ३त्तम्पः शव्यस्ति । ३त्तम्पः शव्यस्ति । ३त्तम्पः शव्यस्ति । ३त्तम्पः शव्यस्ति । ३त्तम्पः शव्यस्ति । ३त्तम्पः शव्यस्ति । ३त्तम्पः शव्यस्ति । ३त्तम्पः शव्यस्ति । | | ३८ ५४ | अर्थवत्त्वविचारः | | २−३, ५ । |
| स्वं सबृत्तिकम् रामध्यः रामध्यः रामध्यः रामध्यः रामध्यः रामध्यः रामध्यः रामध्यः राणितिः र-९२। रम्मधः रम्मधः रम्मधः रम्मधः रम्मधः रम्मधः रम्मधः रम्मधः रम्मधः रम्मधः रम्मधः रम्मधः रम्मधः रम्मधः रम्मधः रम्मधः रम्मधः रम्मधः रम्मधः रम्मधः रम्मधः रम्मधः रम्मधः रम्मधः रम्मधः रम्मधः रम्मधः रम्मधः रम्मधः रम्मधः रम्मधः रम्मधः रम्मधः रम्मधः रम्मधः रम्मधः रम्मधः रम्मधः रम्मधः रम्मधः रम्मधः रम्मधः रम्भः रम्मधः रम्मधः रम्मधः रम्मधः रम्मधः रम्मधः रम्मधः रम्मधः रम्भः रम्मधः रम्भः रम्मधः रम्मधः रम्मधः रम्मधः रम्भः रम्मधः रम्भः रम्मधः रम्भः | ३८८५५ | काशिकाविवरणपञ्जिका | | प्ट। (गणनया) |
| क्रोडपत्रम् इकोगुणवृद्धीइतिसृत्रार्थः रामेश्वरः १-९१। ३८८६० अध्रियदितिसृत्रार्थनिर्णयः मत्रामः १-९२। ३८८६० अर्थवितिसृत्रार्थनिर्णयः मत्रामः १-१२। ३८८६२ क्रेडपत्रम् १८६६२ क्रोडपत्रम् १८६६२ ह्राड्यत्रेमः महोजिदीश्चितः १-९१। ३८८६२ शाव्यत्रेमः महोजिदीश्चितः १-२१४। ३८८६६ शाव्यत्रेमश्चितः १-४। ३८८६६ शाव्यत्रेमश्चितः १-४। ३८८६६ ह्राड्यत्रेस्तुराक्षया १८८। ३८८६० प्राव्यत्रेस्तुराक्षया १८८। ३८८५० प्राव्यत्रेस्तुराक्षया १८८। ३८८५० प्राव्यत्रेस्तुराक्षया १८८। ३८८५० प्राव्यत्रेस्तुराक्षया १८८। ३८८५० प्राव्यत्रिक्षया १८८। ३८८५० प्राव्यत्रिक्षया १८४, ६८५, १८५, १८५, १८५, १८५। ३८८०२ अध्राध्यायीयात्तिकम् कात्यायनः १८६। | | ३८८५६ | एकाचडपदेशेऽनुदात्तादिति- सूत्रं सवृत्तिकम् | | १–२ । |
| श्राम्पर अष्ठाध्यायी पाणितिः १-९२। श्राम्पर अर्थवितिस्त्रार्थिनिणयः मत्रामः १-१२। श्रम्मपर वैयाकरणभूपणसारः धृमः । १। (गणनया) श्रम्मपर शव्दरत्तिका श्रम्मपर शव्दरत्तिका श्रम्मपर । १८-९१। श्रम्मपर । १८-९१। श्रम्मपर । १८-१४। श्रम्मपर । १८-१४। श्रम्मपर । १८-१४। श्रम्मपर । १८-१०। श्रम्मपर । १८-१०। श्रम्मपर । १८-९०। श्रम्मपर । १८-९०। श्रम्मपर । १८-१०। | | ३८८५७ | उत्तरपद्त्वे चेति वार्तिक- (क्रोडपत्रम् | | १-४, ६-७ । |
| ३ स्म ६० व्यर्थवितिस्त्रार्थनिर्णयः सत्रामः १-१२। ३ स्म ६२ कोडपत्रम् १। (गणनया) ३ स्म ६३ शब्दरत्तटीका १-९। ३ स्म ६४ शब्दरत्तटीका १-२१४। ३ स्म ६५ शाब्दकोस्तुमः महोजिदीक्षितः १-२१४। ३ स्म ६५ शाब्दकोस्त्रमः सहोजिदीक्षितः १-४। ३ स्म ६५ शाब्दकोधप्रक्रिया १-४। ३ स्म ६५ समासचक्रम् १-४। ३ स्म ६५ कातन्त्रवृत्तिविवरणपिक्षका विल्लेभानन्दः १०। (गणनया) ३ स्म ६० पट्कारकविरचनम् वल्लेभानन्दः १-४०। ३ स्म ६० अष्टाच्यायीवार्त्तिकम् कात्यायनः १-३ । ३ स्म ६० वाक्यपदीयं सटीकम् टी.का. हिर्युपमः १-६, १-४९। | | ३८५५५ | इकोगुणवृद्धीइतिसृत्रार्थः | रामेश्वरः | १-98 1 |
| ३८८६१ वैयाकरणभूपणसारः ५८०० ३८८६२ क्रोडपत्रम् ४। (गणनया) ३८८६२ शव्दरत्तटीका १८००। ३८८६५ शव्दरतेत्वतीका १८००। ३८८६५ शाव्दवोधप्रक्रिया १८००। ३८८६० समासचक्रम् १८००० ३८८६० कातन्त्रवृत्तिविवरणपञ्जिका १८००० ३८८०० पट्कारकविरचनम् वल्ल्सानन्दः १८००। ३८८०० स्यादिप्रक्रिया १८००। १८००। ३८८०० अष्टाध्यायीवार्त्तिकम् कात्यायनः १८००। ३८८०० वाक्यपदीयं सटीकम् टी.का. हरिवृपमः १८००। | | ३८८५९ | अशध्यायी | पाणिनिः | १-९२। |
| इन्हर्स क्रीडपत्रम् स्वन्दरः स | | ३८८६० | अर्थवदितिस् त्रार्थनिर्णयः | मत् रामः | १–१२ । |
| इस्म् ६३ शब्द्रस्तिवीका १-९। इस्म् ६४ शब्द्रकोस्तुभः १५-५४। इस्म् ६६ शाब्द्रवोधप्रकिया १-४। इस्म् ६७ समासचक्रम् १-५। इस्म् ६० कात्त्त्रवृत्तिविवरणपञ्जिका १८-५,९। ३८५० पट्कारकविरचनम् ४०।(गणनया) ३८५० स्यादिप्रक्रिया १८-४०। ३८५० अष्टाध्यायीवार्त्तिकम् कात्यायनः ३८५० अष्टाध्यायीवार्त्तिकम् कात्यायनः ३८५० वाक्यपदीयं सटीकम् टी.का. हिर्णुपभः | | ३८५६१ | वैयाकरणभूपणसारः | | धूद्र । |
| ३ स्मिद्ध शान्दकौस्तुभः भट्टोजिदीक्षितः १-२१४। ३ स्मिद्ध शान्दबोधप्रक्रिया ३ स्मिद्ध समासचक्रम् १-५, ९। ३ स्मिद्ध समासचक्रम् १-५, ९। ३ स्मिद्ध समासचक्रम् १-५, ९। ३ स्मिद्ध समासचक्रम् १-५, ९। ३ स्मिद्ध समासचक्रम् १-९, ९। ३ स्मिद्ध समासचक्रम् १०। (गणनया) ३ स्मिद्ध पट्कारकविरचनम् वल्छभानन्दः १-४०। ३ स्मिद्ध स्यादिव्रक्रिया १-४, ६-१५, २६-४१, ४३-६३। ३ स्मिद्ध सम्बद्ध सटीकम् वित्यायनः १-६, १-४९। | | ३८८६२ | क्रोडपत्रम् | | ४। (गणनया) |
| ३ मम् ६ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ | | ३८५६३ | शब्द्रत्तटीका | | १–९ । |
| ३८८६६ शान्दबोधप्रकिया १-४। ३८८६७ समासचक्रम् १-८,९। ३८८६९ कातन्त्रवृत्तिविवरणपञ्जिका १८०,९। ३८८०० पट्कारकविरचनम् वल्ळभानन्दः १-४०। ३८८०० स्यादिप्रक्रिया १८४,६-१५,२६-४१,४३-६३। ३८८०२ अष्टाध्यायीवार्त्तिकम् कात्यायनः १-३८। ३८८०३ वाक्यपदीयं सटीकम् टी.का. हिर्णुपमः १-६,१-४९। | | ३८८६४ | शव्दकौस्तुभः | भट्टोजिदीक्षितः | १–२१४। |
| ३८८६७ समासचक्रम् १८८, ९ । ३८८६८ कातन्त्रवृत्तिविवरणपञ्जिका १८०, ९ । ३८८० पट्कारकविरचनम् वल्ल्ल्भानन्दः १८० । ३८८० स्यादिप्रक्रिया १८४, ६-१५, २६-४१, ४३-६३ । ३८८० अष्टाध्यायीवार्त्तिकम् कात्यायनः १८५ । ३८८० वाक्यपदीयं सटीकम् टी.का. हिर्णुपमः १८५ । | | ३८८६५ | 37 | | १५-५१। |
| ३८८६८ छघुशाव्देन्दुशेखरटीका ३८८६९ कातन्त्रवृत्तिविवरणपञ्जिका त्रिलोचनदासः ४०।(गणनया) ३८८० पट्कारकविरचनम् वल्लभानन्दः १-४०। ३८८०१ स्यादिशक्रिया १-४,६-१५,२६-४१,४३-६३। ३८८०२ अष्टाध्यायीवार्त्तिकम् कात्यायनः १-३८। | | ३८८६६ | शाब्दबोधप्रक्रिया | | १–४। |
| ३६६९ कातन्त्रवृत्तिविवरणपञ्जिका त्रिलोचनदासः ४०।(गणनया) ३६६७ पट्कारकविरचनम् वल्लभानन्दः १-४०। ३६६७१ स्यादिप्रक्रिया १-४, ६-१५, २६-४१, ४३-६३। ३६६७२ अष्टाध्यायीवार्त्तिकम् कात्यायनः १-३६। ३६६७३ वाक्यपदीयं सटीकम् टी.का. हरिवृपमः १-६, १-४९। | | ३८८६७ | समासचकम् | | १–५। |
| ३८८० पट्कारकविरचनम् वल्छभानन्दः १-४०। ३८८०१ स्यादिप्रक्रिया १-४, ६-१५, २६-४१, ४३-६३। ३८८०२ अष्टाध्यायीवार्त्तिकम् कात्यायनः १-३८। ३८८०३ वाक्यपदीयं सटीकम् टी.का. हरिवृपभः १-६, १-४९। | | ३८८६८ | <u>छघुशन्देन्दुशेखरटीका</u> | | १–९, ९ । |
| ३८८०१ स्यादिशक्रिया १-४, ६-१५, २६-४१, ४३-६३। ३८८०२ अष्टाध्यायीवार्त्तिकम् कात्यायनः १–३८। ३८८०३ वाक्यपदीयं सटीकम् टी.का. हरिवृपमः १-६, १-४९। | | ३८८६९ | कातन्त्रवृत्तिविवरणपञ्जिका | त्रिलोचनदासः | ४०। (गणनया) |
| ३८८२ अष्टाध्यायीवार्त्तिकम् कात्यायनः १–३८। ३८८७३ वाक्यपदीयं सटीकम् टी.का. हरिवृपमः १-६, १-४९। | | ३८८७० | पट्कारकविरचनम् | वल्लभानन्दः | १–४० । |
| ३⊏न्०३ वाक्यपदीयं सटीकम् टी.का. हरिवृपभः १-६, १–४९। | | ३८५७१ | स्यादिप्रक्रिया | | १-४, ६-१५, २६-४१, ४३-६३। |
| | | ३८८७२ | अप्टाध्यायीवार्त्तिकम् | कात्यायनः | १–३८ । |
| ३६५७४ वैयाकरणभूषणम् कोण्डभट्टः १ ४०१। | | ३८८७३ | वाक्यपदीयं सटीकम् | टी.का. हरिवृपभः | १-६, १-४९। |
| | • | ३८५७४ | वैयाकरणभूषणम् | कोण्डभट्टः | ४ ४०४। |

| थाकार: | पंकि- संख्या | अच्चर- संख्या | लिपिः | आधार: | लिपिकाल: | पूर्णापूर्ण- विवेक: | विशेषविदरणम् |
|-------------------------------|-----------------|------------------|--------|-------|----------|------------------------|--------------------------------------------------------------|
| १०×३ : न | १३ | ४३ | दे.ना. | का. | | अपू० | |
| ९ ५ × ३ [.] ६ | ς. | ४२ | " | ,, | | 35 | |
| १०×३ [.] ५ | ९ | ४६ | 77 | " | | 35 | "मिश्रञ्चातुपसर्गमसन्धौ"इतिसूत्रस्य। न्यास इति नामान्तरम् |
| १३•६×५•२ | १० | ั นั้นี | ,, | " | | पू० | काशिकात उद्धृतोंऽशः। |
| ११४×४५६ | १२ | પૂહ | " | ,, | | अपू० | |
| ११ . गॅ× त.८ | . १० | 80 | " | " | | पू० | |
| द:३×३ : ७ | b | २६ | ,, | 77 | | ,, | |
| ११ . 8×8.0 | १० | 3,0 | " | " | | ,, | |
| ९. غ ×8.8 | 9 | ४३ | 77 | ,, | | अपू० | |
| १२'४×४'६ | १२ | ત્રજ | " | ,, | | ; ; | |
| १२°३×४७ | १६ | ६७ | 33 | ,, | | " | वं० सि० कौ० टो० टी० टीका। |
| १०%×४ : = | १० | ३५ | 37 | ,, | | पू० | अष्टाध्यायीटीका ।अ.१पा.१आ.७पयेन्त |
| 8.2×8.8 | ११ | २९ | " | ,, | | अपू० | ,, अ. १पा १आ. =। |
| ११७×४°२ | ११ | ४३ | 23 | ,, | | ,,, | |
| €.≃×8.8 | १० | २२ | " | " | १८९३ | पू० | |
| ९ . ६×८.८ | १० | ४३ | ,, | ,, | | अपू० | अभिनवचन्द्रिका । हरुन्तपुहिङ्ग५करणः, |
| ११.३×८.त | २१ | ৩৩ | 22 | ,, | | ,, | |
| ११.8× ३. ₽ | ६ | ३२ | " | 77 | | पू० | |
| म%×३•५ | \ = | ३० | ,, | ,, | | अपू० | |
| १०×४°३ | 9 | पूर | " | 33 | | पू० | |
| १० × ४ . ४ | १ २ | 84 | ,, | 53 | १८८४ | ,,% | ब्रह्मकाण्डमात्रम् । |
| ९४४४५ | 0 | ર૪ | , ,, | ", | १८४८ | " | |

| | , | | |
|----------------|--------------------------|-----------------|-----------------------------------------------------------|
| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् · > |
| इस्तर्भ | स्वरप्रक्रिया | रामचन्द्रशेपः | १-६, ५-१४०। |
| ३८८७६ | स्वरप्रक्रियात्र्याख्या | " | १ ७९ । |
| ३८८७७ | प्रक्रियाक <u>ौ</u> मुदी | रामचन्द्रः | १–१०३ । |
| ३८८७८ | पाणिनिसूत्रव्याख्या | | १-४४, ४६-७८, ८०-८२ । |
| ३८८७९ | परिभापेन्दुशेखरटीका | | ३–१६ । |
| ३८५८० | >> | | १-१०, १०-३४, ३६-४१। |
| ३८८५१ | " | | ५५। (गणनया) |
| ३८८५२ | 51 | | २–२६। |
| ३⊏ ८ ⊏३ | ,, | | १–ग्रंग । |
| ३८८८४ | " | | १–४१। |
| ३८८६५ | त्रिपथगा | राघवेन्द्राचायः | ६-मॅ ८ । |
| ३प∹प६ | अप्टाध्यायी | | १-५३। |
| ३८८५७ | " | | १–१७ । |
| ३दददद | आख्यातमादः | श्रीकृष्णभट्टः | १–६। |
| ३ ==५९ | उ णादिवृत्तिः | उज्ज्वलद्त्तः | १। |
| ३८८९० | अनिट्कारिका | | १-५ । |
| ३ म्म९१ | अप्राध्यायी | | म्०-१११ I |
| ३⊏८९२ | " | | १-१६०। |
| ३ न्द९३ | ,,, | | १-१८, २०-५०। |
| ३⊏६९४ | " | | १–४१। |
| ३८८९५ | धातुवृत्तिः | सायणः | १-१८३, १८३-२५१, १-८३। |
| ३पद९६ | काशिका | | १-३१, १-२२, १-३४, १-४ □, १-४०, १-५९ १-३६, १-३०। |
| ३८८९७ | ळिङ्गवृत्तिः | वररुचिः | १–१२ । |

| आकार: | पंक्ति- संख्या | अच्छर- संख्या | लिपि: | आधार: | लिपिकाल: | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------------------------------|-------------------|------------------|---------|------------|----------|------------------------|----------------------------------|
| ११'३× ग .४ | ९ | २= | दे. ना. | काः | | पू०क्ष | |
| ११ [.] ४×५.२ | १० | રૂપૂ | ,, | " | | 22 | |
| १०.८×८.त | 9 | २८ | 77 | ,, | १६६४ | अपू० | |
| ९•६×४ [.] १ | ی | ₹4 | 55 | , 27 | | >5 | अधाध्यायीटीका । |
| १२ ५ ×४ [.] १ | y | ६१ | " | ,, | | ,, | |
| १०×३ | v | ३५ | 22 | 33 | | 22 | |
| १०७×४५५ | 9 | Sr | " | 93 | | 93 | ३७ परिभापातः ५६ परिभापां यावत् । |
| १०'न×४'५ | ११ | ३९ | " | 33 | | " | |
| ९५×४ | १० | રુષ્ટ | 12 | 33 | | पूर | |
| १०५×४६ | ११ | ३९ | 22 | 37 | | " | |
| १०' ५ ×४'६ | ११ | ४९ | 27 | 77 | | " | परिभाषेन्दुज्ञेखरव्याख्या। |
| \$0.8×8.8 | 8 | ४१ | " | לנ | | 27 | |
| ९ [.] २×३५ | 3 | १७ | ינ | ננ | | अपु० | |
| ९.६×४८ | १४ | ४२ | 27 | ננ | | पू० | |
| ९६×४°२ | १० | २७ | 32 | " | | अपू० | |
| ७ ° ∓ ×३·६ | १० | २३ | ינ | 33 | १७२७ | पृ० | |
| ९५ ४४७२ | છ | २६ | 37 | 27 | १८६८ | अपू० | |
| ६५×४७ | १० | १४ | ,, | 25 | | " | |
| ⊏६×३·५ | ធ | ર૪ | 93 | 22 | | 57 | ~ |
| ९९×४४२ | १० | ३४ | وزو | 3 3 | ∙१≒२७ | पू० | |
| 88×8# | ९ | ३ं९ | 23 | " | | अपू० | |
| १३ [.] २×४ [.] ६ | ધ્ય | ६० | 33 | 33 | | · , | अष्टाध्यायीटीका । |
| १०.४ <i>×</i> ४.८ | શ્ પ્ | SA | 25 | 33 | | पू० | |

| हम र्स च्य | । प्रत्यनाम | प्रन्यकारनाम | पत्र रंख्यातिवरणम् |
|-------------------|--------------------------------|--------------------------------------------|----------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| इदद९द | व्या ख्यानप्रक्रिया | राशिदेव: | 8-=1 |
| ३दद९९ | कल्पलताटीका | भवनाधः | १–४८ । |
| ३⊏९०० | स्फोटतत्त्वम् | कृ प्णद्विवेद्ः | १-१५ । |
| ३८९०१ | शाच्द्वोधप्रक्रिया | रामऋप्यः | १-९1 |
| ३८९०२ | ्राट्दरत्नभ वप्रकाशिका | वैद्यनाथः | १-१५२, १५२-१८३=१८४-२१८, २२० २३१, २३१-२३६, २३८-२४८। |
| ३८९०३ | शच्दकौस्तुभतात्पर्यम् | | १-२१, २१-२२, २२-३=। |
| ३८९०४ | सारस्यतल्रघुभाष्यम् | रघुनाथः | १-५३, ५५-१०२, १-५६। |
| ३द्ध९०५ | सृक्तिरत्नाकरः | शेपनारायणः | १-१३९, १३९-१६३, १-५२, ५२-१७२, १-४०, १-३५, ३५-४५, ४५-१८८ = १८९-३४२, १-४१, १ ११९, १,३-३३, १-२०┼४। |
| ३८९०६ | धातुरूपावली | | २४–४३ । |
| ३८९०५ | कोडपत्रम | | ३।(गणनया) |
| ३द९०ः | नन्दिकेश्वरकारिका सटीका | नन्दिकेश्वरः । टी० का० उपमन्युः | १–४। |
| ३६९०९ | धातुपाठः | | १–१०, १२–२८, ३४-४४, ४८-५१, ५३-७६। |
| ३८९१ | ,, | | १-११। |
| ३८९१ | १ धातुरत्नमञ्जरी | रामसिंहवर्मा | ३-४, ६-२०, २५-४०, ४२-४७। |
| ३⊏९१ | ર્ ,, | 111 | १-२८ । |
| ३=९१ | ३ धातुरूपावली | | १-१२। |
| ३=९१ | ,, y | | ६ i (गणनया) |
| ३८९ | (y ,, | | ३-३९ । |
| ३=९१ | १६ परिभाषेन्दुशेन्त्ररशिरोमणिः | | १-५५ । |

| आकार: | पंकि- संख्या | अद्धर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकाल: | पूर्णोपूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|-----------------------------------|-----------------|------------------|--------|-------|-----------------|------------------------|----------------------------------------------------------------|
| १३ [.] २×५२ | ११ | 88 | दे.ना. | का. | | पू० | |
| ११७×४७ | ९ | ર ુ | 35 | " | १६५० | ** | पह्नत्राख्या । श्रीनगरकोटाधिपतिमहाराज माणिक्यचन्द्रकारिता । |
| ९ [.] १×३ [.] ९ | ९ | ३२ | ,, | " | १७२५ | " | |
| १० [.] ६×५ | १९ | ४१ | ,, | ,, | | ,, | |
| १३.ग×त.८ | १५ | ६९ | " | ,, | १८७५ | अपू० | वै० सि० कौ० टी० टी० टीका ! |
| १०∙३×४ः⊏ | 88 | ३२ | " | ,, | १नन४ | पू० | अष्टाध्यायी टी० टी०। प्रथमपाद्स्य सप्तमाह्निकान्तम् । |
| १०"५ × ४ [.] ३ | 5 | ३९ | 77 | ,, | | अपू० | |
| १०×४ [.] ३ | १६ | ४६ | ,, | ,, | १७७३ | " | महाभाष्यटीका । |
| | | | | | | • | |
| ९.त×8.8 | ی | ३१ | 77 | " | | " | |
| ९ [.] ६×४= | શ્ પૂ | प्१ | 3, | ,, | | पू० | "ननिद्धीरणे" इतिसूत्रस्य । नवर्थवि- चारश्च । |
| ६०.८×त६ | १६ | રૂપૂ | ,, | ,, | | " | टीका तत्त्वविवरणी । प्रत्याहारसूत्रान्ता, |
| १० : ५ × ३ : ७ | 5 | २९ | ,, | ,,, | | अपू० | |
| ९'न×४'२ | १० | ४२ | ,, | ,, | | ,,, | |
| =७×३५ | 5 | १३ | " | 77 | | " | |
| १०:१×४:म | १२ | ३१ | " | " | १९०१ | पृ् | |
| ९ [,] ३×४ [,] ३ | فِ | २४ | ,, | ,, | | अपू० | |
| ९ . २×४.३ | 9 | રપૂ | 77 | " | | 23 | |
| ७.8× ५. ट | ی ا | રપૂ | ,, | " | | 77 | |
| ₹0°≒×8°≒ | <i>v</i> | 38 | 27 | ,, | १९१५ श. १७५० | पू० | किरीट इतिना मान्तरम्। |

| क्रमर | ं ख्या | प्रन्थनाम | प्रन्थकारनाम | पत्रसंस्यादिवरपम् |
|----------|------------------|--------------------------------|--------------------------|---------------------------------------------------------|
| ३८९ | १६७ | वैयाकरणभूपणसारदर्पणः | हरिबह्नभः | १–१९३ । |
| ३८० | ११≔ | प्राकृतस <u>्</u> त्रम् | | १–३ । |
| ३८० | २ १९ | प्राकृतप्रकाशः सवृत्तिकः | वररुचिः । वृ०का०भामहः | १-१८ । |
| ३८९ | १२० | कातन्त्रसूत्रम् | | २-५२ । |
| ३⊏⁰ | ३ २१ | सारस्वतप्रक्रिया | | १-पृप् । |
| ३८५ | १२२ | स्वरितवृत्तिः | इन्द्रदत्तोपाध्यायः | १–२। |
| ३८० | २२३ | पाणिनिसृत्रव्याख्या | | ३–५३। |
| ३८५ | १२४ | अष्टाध्यायी | | १–=६। |
| ३८९ | १ २५ | 33 | | १–२१ । |
| <u> </u> | ९२६ | तत्त्ववोधिनी | ज्ञानेन्द्रसरस्वती | १–२८०, २८०–२९४, २९४ <i>-२९७</i> = २९ <i>८–३</i> ४३ । |
| ३८५ | ९२७ | 53 | " | १–१२३, १२५–२२५ । |
| ३८ | ९२५ | प्रयोधचन्द्रिका | | १–२०। |
| ३८ | ९२९ | प्रयोगविवेकसङ्महः | । वररुचिः | १–२३। |
| ३८ | ९३० | 55 | ,, | १–२४ । |
| ३८ | ९३१ | लघुरा व्देन्दु शेखरटीका | | ७२–११०। |
| ३८ | ९३२ | प्रौडमनोरमा | | १-२०ं, २२, २४-३९। |
| ३८ | ९३३ | ,, | | २७-३७, ४४, ४८, ५०-५१, ५३-१०१ । |
| ३८ | ९३४ | 33 | | १-५१, ५१-६४, ६४-७०, २५-४९ । |
| ३८ | ९३५ | 33 | | १–२३। |
| ३= | :९३६ | तत्त्वयोधिनी | | १–१६। |
| ३= | - ९३७ | प्रौडमनो रमा | • | १-७, ७-२७ । |
| ३व | - ९३= | ,, | भट्टोजिदीक्षितः | १–२६। |

| आकार ः | पङ्कि- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपि: | भायार: | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेदः | विशेपविवरणम् |
|------------------------------------|------------------|------------------|-------|--------|--------------------------|------------------------|----------------------------------------|
| १२ [.] ३×४ [.] ८ | ११ | ५६ | दे.ना | का. | १८५८ | पू० | |
| દઃ६×૪ઃ૪ | ११ | ४६ | >> | " | | अपू० | |
| १३·५×५·८ | १२ | ধ্ত | ,, | " | १ ८७६ হা০ १७४१ | पू० | वृत्तिर्मनोरमा । |
| ⊏• ξ× ३ •⊏ | 3 | ३५ | " | 20 | १५२१ | अपू० | |
| દ.ભ×ત્ર.ડ | હ | २६ | 33 | " | | " | |
| ११.8×8.0 | 3 | ३७ | ,, | ,, | | पू० | |
| १०.१×ई.र | હ | ४० | " | ,, | | अपू० | · |
| ٤ ٠ ६×۶ ٠ ٤ | 3 | ২৩ | " | 33 | | पू० | |
| १०•५×४ • ४ | 3 | ३७ | ,, | ,, | | अपू० | |
| १२-५×५ | ११ | ४४ | ,, | ٠, | <u> </u> | पू०* | सिद्धान्तकौमुदीटीका । पूर्वार्द्धम् । |
| &.ex8.e | ११ | 3.5 | " | ,, | १७३६ | अपू० | सिद्धान्तकौमुदीटीका । |
| १०:२×४:४ | 5 | ३३ | ,, | ,, | १८६२ | पू० | |
| १२.8×8.8 | 3 | 38 | ,, | " | १६०४ | 39 | । ृ तृतीयपटलान्तः । |
| ٤٠¤×٤٠٤ | १० | ४७ | >> | ,, | १७६५ | " . | द्वितीयपटलान्तः । |
| १२ : ६×४:⊏ | १० | 48 | >> | ,, | | अपू० | |
| ११.१×8.≃ | ११ | ४२ | >> | Ж | | 37 | वै० सिः कौ० टीका । तिङन्तप्रकरणम् । |
| १०'१x४'२ | ११ | ३७ | ,, | 79 | | ,, | " |
| १०•१×४•४ | 5 | ३३ | ,, | " | | " | वै० सि० कौ० टीका। श्रव्ययान्ता। |
| દ•ધ×૪·૨ | 3 | २१ | ,, | " | | ,, | वै० सि० कौ० टीका। कारकप्रकरणम्। |
| 3.8 × 3.0 | १२ | 88 | ,, | " | | 29 | । सिद्धान्तकौमुदीटीका । |
| €.¤x8.\$ | १० | ७६. | ,, | 33 | | " | वै॰ सि॰ कौ॰ टीका । |
| ११•४×४•६ | ११ | ४७ | ,, | >> | | पू० | वै० सि० कौ॰ टीका । वैदिकप्रक्रिया। |

| | क्रमसंख्या | प्रन्थनाम | श न्थक्तारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---------------|------------------------------------|------------------------------------|------------------------------------------------------------|
| | ३⊏६३६ | प्रौढमनोरमाकुचमद <u>्</u> देनम् | जगन्नाथः (पण्डितराजः) | १-४४ । |
| i | ३⊏६४० | शौढमनोरमाटीका | | १-५, ५-२१, २३-२८ । |
| | ३⊏६४१ | श्रौढमनोरमा सटीका | | १३-१४। |
| ı | ३८६४२ | प्रौढमनोरमाटीका | | १-१२। |
| | ३⊏६४३ | ** | | १, २-११+१। |
| | ३≂६४४ | वृह च ्छच्दरत्नम् | हरिदीक्षित: | १-२४५, २४५-२=४+१ । |
| , | ३ ⊏६४५ | प्रौढमनोरमा च्याख्यानम् | | १-२, ४-२७। |
| | ३८८४६ | श्रौढमनोरमा सटीका | | १-१०, १२ । |
| | ३=६४७ | शब् द्रत्नम् | | १-३५+१, ३७-६३। |
| | 32682 | मध्यसिद्धान्तकौमुदी | | १-७। |
| | 383≂\$ | " | वरदराजः | १३-३४। |
| | ३८६५० | प्रौढमनोरमाखण्डनम <u>्</u> | चक्रपाणिः | १-७, ६-१५ । |
| i | ३८६५१ | प्रौढमनोरमा सशब्दरला | | १-४, १-१६+१, १६४-१६५+१। |
| | ३८६५२ | ,, | | २६-७५ । |
| | ३८६५३ | महाभाष्यं सप्रदीपम् | पतञ्जितिः । प्रव्का०-कैयटः | १-३५, १-११, १-१७, १-२ ^० , १-२४, १-११, १३-१८। |
| | ३८१४ | " | ,, | १-४७। |
| İ | ३८६५५ | ,, | 99 | १-१८, २३-५५ । |
| | ३८६५६ | महाभाष्यम् | | १-७, १-३ + १ । |
| | ३⊏३५७ | " | पतञ्जितः | १-६१ । |
| | ३≂६४⊏ | यदागमपरिभापाविचारः | | १-५ । |
| | 3⊁3≂६ | येननाप्राप्तइति परिभापा- विचारः | | १-६ । |
|] | ३=६६० | "हलन्त्यम्" स्त्रविचारः | | १। |

| आकार: | पङ्कि- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | भाघारः | लिपि <u>क</u> ाल: | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|-----------------------------------|------------------|------------------|--------|--------|-------------------|------------------------|-----------------------------------------------|
| 8.8x8.8 | ११ | ४२ | दे.ना. | का. | १≒५३ | अपू० | वै० सि० कौ० टी० टीका । |
| १०×४ . ३ | १२ | ४८ | 33 | 31 | | 33 | • वै० सि० कौ० टी० टीका । कारकप्रकरणम् । |
| €.€×₹. | १४ | ३⊏ | ٠, | " | | ,, | |
| €'8×2°3 | १२ | ५७ | ,, | " | | 35 | वै० सि० कौ० टी० टीका। |
| € . ¤x8. 3 | ११ | ५० | ,, | ,, | | " | 11 |
| १२.५×८.ः | ११ | ५० | ,, | " | | पूञ | प्रौढमनोरमाटीका। विभक्त्यर्थान्तम्। |
| <i>દ•७</i> x४•३ | १० | ३७ | ,, | " | | अपू० | वै० सि० कौ० टी० टी० । |
| १०×५ | १६ | 88 | ,, | ,, | | " | |
| ٤.¤×ҳ٠٤ | ११ | ২৩ | 74 | ,, | | ,, | वै० सि० कौ० टी० टीका I |
| €. {×\$.≃ | १० | ३३ | ,, | ,, | | पू० | कारकप्रकरणम् । |
| ७ [.] ४×३ [.] १ | १० | ইদ | 57 | >> | | अपू० | |
| १० <i>-</i> ७x8.र | 3 | ४८ | ,, | " | | ** | |
| ११.4×8.≃ | ; ३ | ५० | ,, | " | | 79 | |
| ११•४×४•६ | 3 | ५० | ,, | " | | " | |
| १२ · ३×४ [,] ६ | १२ | ६२ | ,, | 23 | | ,, | अ०१ पा०१ आ०१-७। |
| 03.0.444 | 0.5 | ৬৪ | >> | 53 | 0000 | | 070 0 770 0 777 0 1 |
| 83.8×4.4 | १३ | | | | १९२२ | पू० | अ०१पा०१आ० द-६। |
| १३·६×५·३ | १० | ७२ | " | " | | अपू० | अ०१पा०२-३। |
| १३.८×६.८ | १३ | ६⊏ | " | 79 | | . पू० | अ०१ पा० ४ आ० १-२। |
| ફ• ≔ ×ધ∙૪ | १० | ४० | " | " | १९२४ | n | चतुर्थाध्यायः। |
| १०'७x४४१३ | ११ | ५ १ | ,, | 39 | | अपू० | |
| 3.ex3.e | 5 | ४६ | " | ,, | | 27 | |
| 8.4×8.8 | ११ | 38 | " | ,, | | पू० | |
| • | | | | | | | |

| | क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|------------------|----------------------------|---------------------------------------------|------------------------------|
| | ३८६१ | स्फोटचन्द्रिका | कृष्णभट्टः | १-१४ । |
| • | ३८६६२ | स्फोटनिरूपणम् | | १-७ । |
| | ३⊏६६३ | सुबोधिनी | जयकृष्णः | १-५०, १-२७। |
| | ३≂६६४ | तत्त्ववोधिनी | ज्ञानेन्द्रसरस्वती | ५७-६ =, ६१-६७ । |
| | ३८६५ | वै० सि० कौमुदीविलासः | भास्करः | १। |
| | ३⊏९६६ | मनोहरा | | ३-३७ । |
| | ३⊏६६७ | तत्त्वबोधिनी | ज्ञानेन्द्रसरस्वती | १७०-२३३ = २३४-२७६ । |
| | ३८६६८ | " | | १-१४० । |
| | ३८६६ | " | | ५३-१ ८८ । |
| | ३८६७० | महाभाष्यप्रदीपोद्योतः | नागेशः | १-७१, १-१३, ९-५३, १-४४ । |
| | ३८७१ | महाभाष्यं सप्रदीपोद्योतम् | पतञ्जलिः। प्र० का० केयटः उ०का० नागेशः | १-१६६, १-१६६, १-१५२, १-१३६ । |
| | ३८६७२ | महाभाष्यप्रदीपोद्योतः - | नागेशः | १-२७४ |
| | ३≂६७३ | महाभाष्यं सप्रदीपम् | पतञ्जलिः। प्र० का० केयटः | १-१७७, १-१६७, १-१०२ । |
| | ३८६७४ | क्रोडपत्रम् | | २-३ । |
| | ३८६७५ | शब्दकौस्तुभटीका | कृष्णभित्रः | १-८, १०-२५, २५-३५ । |
| | ३द्रह७६ | 22 | " | १-=, १०-१६, १६-३४ । |
| | ७७३≂६ | 1) | कृष्णाचार्यः | १-२= । |
| | , ३ ८ ६७८ | ,, | | १-३, २-४। |
| | 3¤3≈\$ | शब्दकौस्तुभवृत्तिः | | २। (गणनया) |
| | 3=8=0 | वैयाकरणभूषणसारटीका | | 81 |

| | | | | | | 1 | |
|------------------------------------|-------------------|------------------|-----------|-------|----------------------|--------------------------|-----------------------------------------------------|
| भाकार: | पङ्क्षि संख्या | अक्षर- संख्या | लिपि: | आधार: | लिपिकाल: | पूर्णापूर्ण- . विवेक: | विशेषविवरणम् |
| १२·४×५ | १० | ४१ | दे.ना. | का. | १⊏(?) | पू० | |
| 8.8xn.3 | १२ | ४१ | " | " | | अपू० | , |
| १२'२×४' <i>६</i> | ११ | ५३ | 33 | " | | पू० | सिद्धान्तकोमुदीटीका । स्वरवैदिक- प्रकरणमात्रम् । |
| १३×१•= | १४ | ५ १ | " | 9.9 | l • | अपू० | " |
| દ'ဖx૪'ર | १० | ३६ | " | ,, | 1 | " | " |
| १२.८४४.६ | ११ | ५२ | ,, | >> | | " | " |
| १०×५·२ | १३ | ३६ | " | ,, | १८३८ | ,, | सिद्धान्तकौमुदीटीका।तद्धितप्रकरणम्। |
| ह•७ × ५•१ | १० | २८ | ,, | ,, | | 99 | सिद्धान्तकौमुदीटीका। कारकसमास- प्रकरणे। |
| १०×५ [.] १ | १२ | ४६ | ,, | ,, | | ,, | सिद्धान्तकौमुदीटीका। सुवन्तप्रकरणम्। |
| १ ३° ४×५ ° १ . | १२ | ६६ | " | ,, | १८६४ | >> | ६-५ अध्यायाः । |
| १३•३×५•२ | १२ | ५६ | ,, | " | १८६६ १८६७ १८६६ | पू० | २-५, अध्यायाः । |
| १३ [.] २×५ | १२ | ४८ | 2, | ,, | १८६६ | ,, | प्रथमाध्यायः । |
| १२ : द×४'७ | १२ | 38 | ۰, | 23 | १८६३ | अपू० | अ०१,६,७। |
| €.¤×8.غ | ११ | ४३ | ,, | ,, | | 39 | सर्वादीनिसर्वनामानीतिस्त्रस्य । |
| १० [.] १×४ [.] ३ | 5 | ३२ | ,, | ,, | | ,, | टीका भावप्रदीपः (= आ०)। |
| ₹°×8.8 | ११ | 80 | ٠, | ,, | १८४४ | 33 | टीका भावप्रदीपः । अ०१, पा०१, आ०९ |
| 1 60×8.8 | ११ | ३४ | " | ,, | | " | (आ० ५)। |
| €.8×8.3 | १३ | ४५ | 20 | ,, | | " | अप्राध्यायी टी॰ टीका । |
| €.¤x8.\$ | 3 | ३३ | ,, | 33 | | ,, | |
| हः¤x४:२ | ११ | ३⊏ | " | >> | | ** | |
| | | • | | | | · | |

| क्र मसं ख्या | प्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---------------------|-------------------------------------|-----------------|-------------------------------------------|
| ३८६८१ | क्रोडपत्रम् | | १। |
| ३८६८२ | शब्दकौस्तुभटीका | कृष्णाचार्यः | १-२१, २३-३५, ३५-४०। |
| ३८६५ | ;, | | १-२१ । |
| ३८६८४ | विपमा | | १-५ । |
| इप्टर्पर | शब्दकौस्तुभः | | २७, २६-३४, ३६-३७+१। |
| ३८८८६ | " | | १-२१ । |
| ಶಿವಾತಿ | " | भट्टोजिदीक्षितः | १-२२ । |
| ಕ್ಷಿಕ್ಕ | " | | १-१०, ६-१०, १४-१७, २-३५। |
| . ३८८८ | " | • | १-२+१। |
| ०३३३६ | 27 | | १-२६ । |
| ३८६१ | 7) | | १-१२ । |
| ३८८२ | वेयाकरणसिद्धा न्त कौमुदी | | (१-२) १३-१४, १७-४०, ४०-४२, ४६, ४६-४⊏ 1 |
| \$33 ≈\$ | " | भट्टोजिदीच्चितः | १-११७, १-५, ७-६, ६-२६, २८-६६। |
| ₹588 | " | | १-१२१ । |
| ३८६६४ | 11 | | १-=३ । |
| ३७३३३ | ,, | | १। (गणनया) |
| ७३३≂६ | ; ; | | १-३, ५-२५, ३०-४५, ५६-११४। |
| 33325 | ,, | भट्टोजिदीचितः | १-१४० । |
| 333≈\$ | 33 | 37 | १-१५६। |
| 0003\$ | प्रबोधचन्द्रिका | वैजलभूपतिः | १-४, ७-१६। |
| ३६००३ | प्रातिपदिकार्थसूत्रविचारः | | १। |
|] | | | |

| | , | | , | | | 1 | |
|-----------------------|-----------------|------------------|------------|------------|-----------------------|------------------------|---------------------------------|
| भागरः | पह्य- गंस्या | धक्षर- संस्या | लिपि: | अप्रसद् | लिपिकाल: | पूर्णायूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
| €.≃×გ.≾ | १० | 38 | दे.ना. | का. | | अपू० | दादेर्घातोर्ध इति सूत्रस्य । |
| १०'१×४'३ | १० | ३७ | " | ** | | ,, | अष्टाध्यायी टी० टीका । |
| E'EXY'Z | 5 | ३⊏ | и. | ,, | | 27 | 23 |
| १०×४'४ | १३ | 38 | >> | " | | ,, | शब्दकौत्तुभन्याख्या । |
| १०×४ [.] २ | ११ | 38 | ". | ,, | | ,, | अष्टाध्यायीटीका । |
| ביבxצי2 | १० | ३⊏ | " | " | | 51 | " १अ०,१पा०, ६आ०। |
| £'8×3'3 | १० | ₹8 | " | ,, | | ,, | " १अ०, १ पा०। |
| १०×४·२ | 3 | ₹१ |) ; | 27 | | ,, | 33 |
| १०७४४४६ | १२ | ₹७ | " | " | ı | 33 | " १ अ०, १ पा०, १ आ०। |
| १२•३×४•६ | ११ | ४१ | ,, | 23 | | ,, | " १ अ०, १ पा०, ८ आ० । |
| १२·१×५ | ११ | ४१ | " | 3 3 | | पूरु | " १अ०, १ पा०, ७ आ० मात्रम् । |
| ११·५×४·२ | ११ | ४४ | ,, | " | | अपूट | |
| १२·२×४·४ | 5 | दर | ,, | ,, | १६०२ १ ६ ०६ | पूटः | उत्तरार्द्धम् । |
| १=×५.५ | 3 | રહ | ,, | ,, | | ,, | तिडन्तप्रकरणम् । |
| १०•६×४ [.] ६ | ११ | ३२ | " | ,, | | ,, | ,, |
| १०x४:७ | ४४ | ४४ | 37 | " | | अपू० | |
| ११.६×८.६ | १० | ४१ | " | ,, | | " | उत्तरा हेंम् । |
| १=•३×४•६ | १० | 3,€ | 37 | ,, | १==६ | पृ० | पूर्वार्द्धम् । |
| १२·५×४·४ | 3 | ૪હ | •• | ,, | १६०६ | " | >> |
| ૄ દ: રે ×૪:૨ | १० | २६ | ,, | 33 | . १८५३ | अपृ ० | |
| E'8x8'3 | १६ | ४१ | " | " | | " | |
| | | | | | | | |

|] F | कमसं ख्या | प्रन्थन(म | • प्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|----------|------------------|----------------------------------|---------------------------------|-----------------------------------------------------------------|
| | ३६००२ | प्रौढमनोरमा | भट्टोजिदीक्षितः | १-६७, १-६६, १-२८ । |
| | \$003 <i>\$</i> |) 1 | " | १-२५, २५-४६, ४६-≒४ । |
| | ४००३६ | ,, | 51 | १-२३, २५-६⊏ । |
| | ३६००५ | " | " | १-६२, ६६-१८७, १८७-२३६। |
| | ३६००६ | बहुवचनेभल्येदितिसृत्र- विचारः | | 81 |
| | ३६००७ | लघुशब्देन्दुशेखरः | नागोजिभट्टः | १-१४७, १५२। |
| ļ | ३ ००⊏ | ,, . | | १-२, १-५७+१। |
| | 30038 | 33 | | ७६-१०६ । |
| | ०१०३६ | " | | १-२१ । |
| | ३६०११ | "; | | ५२-७५। |
| | ३६०१२ | ,, | | १-७ । |
| | ३६०१३ | वाक्यविचारः | | १-३ । |
| | ३६०१४ | वाद्सुधाकरः | कृष्णाचार्यः | १-१७ । |
| | ३६०१५ | विभक्त्यर्थविवेचनम् | कृष्णभट्टः | १-३१ । |
| | ३६०१६ | वैयाक रणभू पणसा रः | कोण्डभट्टः | १-४७। |
| | ७१०३६ | ,, | , | ५० । |
| ĵ | ३६०१⊏ | 39 | कोण्डभट्टः | 8-401 |
| | ३६०१६ | वै॰मतोन्मज्जनं सटीकम् | भट्टोजिभट्टः । टी॰का०-वनमाली | १-२२ । |
| | ३६०२० | प्रक्रियाकौमुदी - | रामचन्द्रः | (१-२)५-१२, १६, १८-२५,+१, २८-५१+ १, ५३-५५, ५७-५६, ६१-६४+ १-२। |
| | ३६०२१ | शब्दकौस्तुभटीका | | १-४, १। |
| | ३६०२२ | प्रक्रियाकौमुदी | रामचन्द्रः | १-१३२, १३४-१५६। |
| | ३६०२३ | 25 | " | १-१०३, १०५-१५४, १-१३६ । |

| शास्त्ररः | पङ्कि संख्य | - अक्षर- गर्संख्या | लिपिः | शायारः | ्रिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|--------------------------------------|----------------|-----------------------|-------|--------|---------------|------------------------|----------------------------------------------------------------------|
| ११-१×४-५ | १० | 88 | देना | का | १७१६ | पू० | सिद्धान्तकौमुदीव्याख्या । तिङ्न्ता- दारभ्य स्वरवेदिकप्रकरणान्ता । |
| ११ [.] ३ × ४ [.] २ | १२ | ४३ | " | ,: | | ,, | वै॰ सि॰ कौ॰ न्याख्या। कुदन्तमात्रम्। |
| १०.६×८.५ | १२ | ₹⊏ | ,, | ,, | - | ,, | " तिङन्तमात्रम्। |
| १०•४ × 8•8 | 5 | ३४ | ,, | ,, | १७२३ | अपू० | " पूर्वार्डम्। |
| १०•६× ४ [.] ५ | २८ | २५ | " | ,, | | पू० | |
| €.¤×%.∮ | 3 | 35 | | ,, | | अपू० | दै०सि०कौ०टीका। तिङन्तप्रकरणम्। |
| ξ ο×8. ؤ | १० | ४१ | 99 | 37 | | 77 | " |
| €.¤x8.\$ | १० | 38 | " | " | | 75 | " |
| €.⊏xß,8 | १० | રૂ⊏ | ,, | ,, | | 25 | , |
| €*5×8*3 | ६.३ | ३३ | ., | ,, | | *1 | " |
| € 8×& 3 | 3 | ३४ | ,, | ,, | | ,, | ,, |
| € ' €×8'₹ | 3 | ३≒ | ,, | ,, | १८१८ | पू० | |
| ς. ξ×8.غ | 3 | રૂંધ | ,, | ,, | | 2) | |
| 8.8×8.5 | १३ | 84 | " | ,, | | अपृ् | पञ्चमीकारकांशं यावत् । |
| १०•५×४·५ | ११ | 8३ | ,, | ,, | | पू० | स्फोटवादान्तः। |
| १०'⊏x४'४ | 3 | 38 | ,, | ,, | | अपू० | |
| १२ . ३×8.8 | 3 | ५३ | ,, | ,, | १६०४ | पू० | स्फोटवादान्तः । |
| 3.4×3.5 | १२ | ४२ | " | ,, | | , , | कियद्भूपणकारिकाविवेचनात्मकम्। |
| १०७x४७२ | १२ | 84 | ,, | ,, | १५६२ | अपू० | · |
| £.8x8.3 | १२ | ४४ | ,, | ,, | | 75 | |
| દ•७×૪·૨ | 6 | ३१ | ,, | ,,, | | ,, | |
| \$•\$×3•8 | L. | ३३ | ,, | ,, | | पृ० | |
| १४ | | | | | | | |

| Tagging and Charles | कम सं ख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पृत्रसंख्याविवरणम् |
|---------------------|-------------------|----------------------------------------|-------------------------------|-----------------------|
| | ३६०३४ | ,पृत्भापेन्द्रशेख्यविवृतिः | बैद्यन् ।थप्रायगुण्डेः | १-१२, १-६, १-२०, १-=। |
| , | ३६०२५ | परिभापार्थमञ्जरी | भीमः | १-३६ । |
| ; | ३३०२६ | परिभाषेन्दुशेखरदीका | | 81 |
| | ३६०२७ | परिभाषेन्दुशेखरविवृतिः | वैद्यनाथपायगुण्डेः | १+१ । |
| | ३६०२८ | परिभाषार्थमञ्जरी | भीमः | १-४१ । |
| | ३६०२६ | परिभाषेन्दुशेखरः | नागेशः | १-७७ । |
| | 38030 | | 11 | १-५१ । |
| | ३६०३१ | परिभाषापाठः | | १-३, ४ । |
| | ३६०३२ | , | | १ -४ । |
| | ३६०३३ | वै० सि० परमत्तघुमञ्जूपा | नागेशः | १-३४ । |
| | ३६०३४ | ,, | " | १-३७ । |
| | ३६०३५ | लघुशब्देन्दुशेखरदोपोद्धा र ः | मन्नूदेव: | १-३८ = ३६, ४० - ७० । |
| • | ३६०३६ | चिदस्थिमाला | | १-७१ । |
| | 3003.0 | ====================================== | | 0.20.1 |
| | 1 | लघुशब्देन्दुशेखरज्योत्सना | उदयङ्कर. | १-३६ । |
| | | शब्दरूपावली | | २-५ । |
| | ३६०३६ | > > | | १-२१, २३-४४, ४३-५२ । |
| | ३६०४० | ,, | | २-८। |
| | ३६०४१ | " | | २-८, १०-१२। |
| | ३६०४२ | ** | | १-१०। |
| | ३६०४३ | " | | १-२० । |
| | ३६०४४ | शब्दरत्नम् | हरिदीचित: | १-७४ । |
| | ३६०४५ | ,, | | १-२४ । |
| | ३६०४६ | वैयाकरणसिद्धान्त्कौसुदी- विलासः | भास्करः | १-२६, १-५४। |
| | | | | |

| क्षावारः | पङ्कि- संस्था | शक्षर- संस्था | लिप <u>िः</u> | अस्यार्: | लिपिकॉल: | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेपविवरणम् |
|-----------------|------------------|------------------|---------------|----------|------------------------|------------------------|-------------------------------------------------|
| દ.ભ×ત | १३ | Sc | दे.ना | का. | | अपूञ | गंदां ।' |
| 3.8×3.9 | १० | રહ | " | 37 | | " | |
| 5.8x5.3 | १३ | ફદ | " | " | | ,, | |
| १०-१×४-६ | 3 | ३६ | " | 17 | | ,, | गदा । |
| ε·ͼϫϤ | ११ | ३५ | , , | " | | ,, | |
| १० x ८.ऱ | 3 | 38 | ,, | •• | 0-0- | पू॰ | |
| 2.6×8.≃ | ११ | ३६ | " | 31 | १८६०, | ,,, | |
| ७°२x३•२ | १० | રધ | " | 97 | १⊏५२ | अपू० | |
| ८•८×३·४ | १० | ३६ | ,, | ** | | पू० | |
| १२.४×८.६ | १० | ५१ | ,, | •• | 2-10- | *> | |
| १२·५×४·४ | 3 | 8 ⊏ | ,, | " | ₹ ≈ \$ > | 72 | • |
| १२:७x४:E | 3 | 38 | " | 73 | १६०४ | अपृ० | |
| १२.€×8.≃ | १० | ५० | " | " | | ,, | लघुराव्देन्दुरोखरटीका। परिभाषा- प्रकरणान्ता। |
| €.¤x8.3 | 5 | ३४ | ۰,, | " | | " | विश्वपान्ता । |
| €.£×8.€ | 3 | ₹8 | ,, | 1, | | " | |
| ⊏x8.3 | 3 | २२ | ,, | ,, | | ,, | |
| \$*8×v | १३ | २६ | " | ,, | | ٠, | • |
| ت.8×غ.≃ | હ | २१ | 33 | " | | ,, | , |
| Ex8.5 | = | ર૪ | 72 | " | | ,,, | |
| £.£×3.3 | v | २२ | " | " | | पू० | |
| €'=×¥ | १२ | 88 | ,, | ,, | | अपूर् | वै० सि० कौ० टी० टीका। |
| £xv·3 | ११ | ३≂ | ,, | 7, | | 33 | ,, |
| १०×४°३ | ११ | ३⊏ | ", | ,, | | ,, | |
| | | 1 | | | | | |

| क्रमसंख्या | श्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---------------|-------------------------------------------------|--------------|-------------------|
| ३६०४७ | शब्दकोस्तुभटीका | | १-४ । |
| ३६०४८ | लघुशब्देन्दुशेख रः | नागेशः | १-६७, १-६६। |
| 38∘3₿ | प्रक्रियाकौमुदी | रामचन्द्रः | १-१०१ । |
| ३८०५० | वैयाकरणभूपणसारदर्पणः | | १-२२ । |
| ३६०५१ | वैयाकरणभूपणसारविवृतिः | रुद्रनाथः | १-५ । |
| ३६०५२ | मध्यसिद्धान्तकौमुदी | वरद्राजः | १-४० । |
| ३६०५३ | " | " | १-२४ । |
| ३६०५४ | ,, | >> | १, ४१-४६ । |
| ३६०५५ | , , | " | १६५-३०६ । |
| ३८०५६ | लघुशब्देन्दुशेखरटीका | ' | ३३०-३३६, १-१८ । |
| ३८०५७ | लघुसिद्धान्तकौमुदी | | १-१७ । |
| ३६०५⊏ | " | वरदराजः | १-३५, ३८-७६। |
| ३ ६०५६ | " | ,, | १-⊏२ । |
| ३६०६० | 9.9 | | १-२६ । |
| ३८०६१ | ,, | | १-२ । |
| ३६०६२ | " | | १८-२८ । |
| ३६०६३ | ,, | | १-३७ । |
| ३६०६४ | ,, | | १५। (गणनया) |
| ३६०६५ | ,, | | १-६६, १-२३। |
| ३८०६६ | "जनपदश्रब्दात्क्षत्रियादञ्' इतिसूत्राथविचारः | | १-३ । |
| ु३०३६ | महाभाष्यप्रदीपः | कैयटः | १-१४। |
| ३६०६ | , | ,, | १-३। |

| E'8x8'7 १४ ४१ व.ना. का. अपू० वि० सि० की० टीका । अजग्तनपुंसकिलङ्गान्त: । अजग्तनपुंसकिलङ्गान्त: । अजग्तनपुंसकिलङ्गान्त: । अजग्तनपुंसकिलङ्गान्त: । अजग्तनपुंसकिलङ्गान्त: । अजग्तनपुंसकिलङ्गान्त: । अजग्तनपुंसकिलङ्गान्त: । अजग्तनपुंसकिलङ्गान्त: । अजग्तनपुंसकिलङ्गान्त: । अव्ववतान्ता । इस्ट्रिक्ष' ११ ११ थ थ थ थ थ थ थ थ थ थ थ थ थ थ थ थ | भाकारः | पङ्कि- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपि: | भाघारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेयविवरणम् |
|----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|------------------------------|------------------|------------------|---------|--------|----------|------------------------|-------------------------------------------------|
| १०'४४४'४ १० २६ " " १६६४ " सुवन्तान्ता । १०'४४४'४ ११ ३१ " " " सुवन्तान्ता । १०'४४'४ ११ ३१ " " " हल्सन्ध्यन्ता । १०'४४'४ १० २८ " " " हल्सन्ध्यन्ता । १०'४४'४ १० ४८ " " " हल्सन्ध्यन्ता । १०'४४'४ १४ ४८ " " " कारकसमासी । १०'४४'४ १४ १० " " कारकसमासी । १०'४४'४ १४ १० " " हल्सन्ध्यन्ता । १०'४४'४ १४ १८ " " " कारकसमासी । १०'४४'४ १४ १० " " हल्सन्ध्यन्ता । १०'४४'४ १४ १० " " हल्सन्ध्यन्ता । १०'४४'४ १४ १० " " हल्सन्ध्यन्ता । १०'४४'४ १४ १४ " " हल्सन्ध्यन्ता । १०'४४'४ १४ १० " " हल्सन्ध्यन्ता । १०'४४'४ १४ १० " " हल्सन्ध्यन्ता । १०'४४'४ १४ १४ " " " हल्सन्ध्यन्ता । १०'४४'४ १४ १४ " " " हल्सन्ध्यन्ता । १०'४४'४ १४ १४ " " " हल्सन्ध्यन्ता । १०'४४'४ १४ १४ " " " हल्सन्ध्यन्ता । १०'४४'४ १४ १४ " " " हल्सन्ध्यन्ता । १०'४४'४ १४ १४ " " " हल्सन्ध्यन्ता । १०'४४'४ १४ १४ " " " हल्सन्ध्यन्ता । १०'४४'४ १४ १४ " " " हल्सन्ध्यन्ता । १०'४४'४ १४ १४ " " " हल्सन्ध्यन्ता । १०'४४'४ १४ १४ " " " हल्सन्ध्यन्ता । १०'४४'४ १४ १४ " " " हल्सन्ध्यन्ता । १०'४४'४ १४ १४ " " " हल्सन्ध्यन्ता । १०'४४'४ १४ १४ " " " हल्सन्ध्यन्ता । १०'४४'४ १४ १४ " " " हल्सन्ध्यन्ता । १०'४४'४ १४ १४ " " " हल्सन्ध्यन्ता । १०'४४'४ १४ १४ " " " हल्सन्ध्यन्ता । १०'४४'४ १४ १४ " " " हल्सन्ध्यन्ता । | દ•૪x૪'ર | १४ | 8र्र | दे. ना. | का. | | अपू० | |
| E:EXX'8 ११ ३१ " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " | . €' 8×3 ' 3 . | B | ge | ,, | ٠, | | पू० | वै० सि० कौ० टीका । अजन्तनपुंसकत्तिङ्गान्तः । |
| ट. ८०० ४ १८ १८ १८ १८ १८ १८ १८ १८ १८ १८ १८ १८ १८ १ | ४०.८×८.८ | १० | २६ | ,, | " | १६६४ | 73 | सुवन्तान्ता । |
| E'\chixx\strict{x\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix\strict{\chix | £.6x8.8 | ११ | ३५ | 33 | 53 | | अपू० | |
| E'\to x 8'8 | ۲.8×۶.٤ | 5 | २७ | " | " | | 72 | |
| E'WX8'\$ | €.8×8.₹ | ११ | ३१ | 25 | >> | | 33 | |
| E'Ex4'6 ७ २४ " " " " कारकसमासी ! १२x५५'३ १४ ४६ " " " कारकसमासी ! १०'Ex8'0 १० ४२ " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " | €.≃×8.8 | १० | २८ | " | ,, | | ,, | हल्सन्ध्यन्ता । |
| १२x ५ १३ ४६ " " कारकसमासी । १० १ ६ १ " " १८६८ पृ० १० १० १४ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ | €•@x8.₹ | 5 | २३ | ,, | ,, | | " | |
| १०-१८ १० १२ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ | 3.6×3.5 | ی | ર૪ | " | " | | ,, | _ |
| १०-१८४५ १० ४२ " " १८६८ पृ० १०-४४४-८ ११ ३२ " " १८६८ पृ० १०-८४४-७ ६ ३७ " " अपृ० तिङन्तभागः। १-१३-४४-२ ६ ३१ " " " ह्लन्तपुंल्लिङ्गान्ता। १-१४-४२-६ ११ १२ ॥ " म्वादिभागः। १२-१४-११ ६ ४१ " " मृ० ११४-१४-१ ६ ४१ " " मृ० ११४-१४-१ १२ ३६ " " मृ० ११४-१४-१ १२ ३६ " " मृ० | १२×५·३ | १४ | 86 | ,, | | | >> | कारकसमासौ । |
| १० ० ० ० ४ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ | १० . ६x৪.७ | १० | ४२ | | | | 39 | |
| १०'द्र×४'७ | १०×४·५ | 3 | २१ | | " | | " | |
| ६ २१ " " " " १० ६ ४४ " " " " ६ ४१ " " " हलन्तपुंल्लिङ्गान्ता । ६ ४४ " " " म्वादिभागः । ७ ५ ४ ३ " " " म्वादिभागः । ४२ १४ " " " म्वादिभागः । १२ १४ " " " मृ० ६ ११ " " मृ० १२ १४ १ १३ ४८ " " " मृ० १२ ० १० १ १ १० १० १ १ १० १० १ १ १० १० १ १ १० १० | १०'७x४'⊏ | ११ | ३२ | ,, | ,, | १८६८ | पृ० | |
| १० १८ ४३ " " हलन्तपुंल्लिङ्गान्ता । ६ ४४ " " हलन्तपुंल्लिङ्गान्ता । ६ ४४ " " म्वादिभागः । ७ ५४३ ६ १६ " " म्वादिभागः । १२ ६४१ " " पू० ६ १४ " " मू० ६ १४ " " मू० १२ ४६ " " " मू० अ०२ पा० १ । १२ ७४४ १३ ४८ " " " | १०:⊏×४•७ | 3 | ३७ | " | 24 | | अपृ० | तिङन्तभागः । |
| ६'४४४२ ६ २६ " " " इलन्तपुंल्लिङ्गान्ता । ६'८४४२ ८ २३ " " " भवादिभागः । ७'५x३-६ ६ १६ " " " अन्ययान्तभागः ति ढ न्तभागञ्च । १२-६x४-१ ६ ४१ " " पू० ६'१x३-१ १२ ३६ " " " अपृ० अ०२ पा० १ । १२-७x५ १३ ४८ " " " " " | દ•રૂ×૪·૨ | 3 | ३१ | " | 5.9 | | ,, | |
| ६ - २३ " " " म्वादिभागः । ७.५×३.६ ६ १६ " " " अञ्ययान्तभागः तिबन्तभागञ्च । १२.६×५.१ ६ ४१ " " पू० ६.१×३.१ १२ ३६ " " " अगु० अ०२ पा० १ । १२.७x५ १३ ४८ " " " " | १०•६×४७ | ११ | ४३ | " | 77 | | " | |
| ७.५×३.६ ६ १६ " " अन्ययान्तभागः ति ब न्तभागश्च । १२.६×५.१ ६ ४१ " " पू० ६.१×३.१ १२ ३६ " " अपु० अ०२ पा० १ । १२.७×५ १३ ४≔ " " " | દ.ጸ×გ.ડ | 3 | २६ | " | " | | 23 | हलन्तपुंल्लिङ्गान्ता । |
| १२·६×५·१ | £.¤×8.\$ | 5 | २३ | " | 29 | | ,, | भ्वादिभागः। |
| ह [.] १४३ [.] १ १२ ३६ " " अपु० अ०२ पा०१। १२ [.] ७x५ १३ ४≔ " " " | ७.४×५.६ | Ę | 38 | " | ;; | | ,, | अञ्ययान्तभागः ति रु न्तभागश्च । |
| ६.४×३.४ | १२·६×५·१ | 3 | 88 | " | ,, | | पू० | |
| १२.७४५ १३ ४= " " " | 6.02.0 | 0.5 | 20 | " | N | | | |
| | 1 | | | >9 | ,, | | 1 | |
| | \ | १३ | 84 | ,, | 93 | | ,, | 77 |

| | कमसंख्या | ग्रन्थनाम | : प्रन्थकार्नाग | पनसंख्यादिवरणम् |
|---|------------------------|----------------------------------------|----------------------------------------------|---------------------------------------|
| | 3 ३ ०३ ६ | महाभाष्यं सप्रदीपम् | पतञ्जलिः । प्र ः का ॰ कैयटः | १-६१ (= ६२%,) ६३-६४ । |
| | ငေစဒန | 3. | 99 | १-१०३, १६-४३, १३२-१४१, १४१। |
| | १७०३६ | महाभाष्यम् | | १-२ । |
| | ३६०७२ | वैयाकरणभूषणसारः | कोण्डभट्टः | १-३, २ं-३७, ३६-४३ । |
| | ६००३६ | " | ,, | १-२१७ । |
| | ४००३६ | विविधकोडपत्रस ङ् ग्रहः | | ५४। (गणनया) ५ |
| 2 | १८०७४ | वादनम्रत्रमाला [,] | | १-३ । . |
| | ३७०३६ | 79 | 1 | १-३ । ′ |
| Ì | ३८०७७ | वाक्यपदीयम् | भर्त्तृहरिः | १-११ । |
| | इह०७५ | लघुश ञ्दे न्दुशेखरचूडामणिः | | ४। (गणनयाः) |
| | ३८०७६ | लघुशब्दे न् दुशेखरटीका | | २-१२, ३४-४० । |
| | ३६०८ः | लघुश ब्देन्दुशेखर व्याख्या | राघवेन्द्राचार्यः | १-७०, ४२-≒१, द्र१•द्रह । |
| | ३६०८१ | 79 | | १-४२ । |
| | ३६०⊏२ | त्तघुश च्देन् दुशेखरज्योत्स्राः | उद् यङ्कर: | १-२६ । |
| | ३६०⊏३ | लघुश व्देन्दु शेखरटीका | | ५१° । ('गणनयाः') |
| | ३८०८४ | 79 | श्रीघरः | १-७६, २७-३४, १-२७+१ । |
| | ३६०८५ | त्तघुशब्देन्दुशेखरविवृत्तिः | | १-६= । |
| | ३६०⊏६ | लघुशब्देन्दुशेखरटीका | | ३०-७४ । ' |
| | ३६०८७ | 59 | राध्रवेन्द्रः | १-६४ । |
| | ३६०८८ | " | . ' | १, ^१ १४-२०ं, २३-२४, २६-३२। |
| | 3≂03€ | 59.~ | · , | च ७-१०२ । ∻ |
| | 0303€ | ,, | | 800-808 1 E |
| | | 1 | | |

| शकार: पिक विद्या विषय विषय विषय विषय विषय विषय विषय विषय | **** | | | | 1 = - | | | |
|----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|----------------------------|----|-----|-------------|-------|--------------|-------------|---------------------------------|
| १३×६°६ १२ ४७ " " " अपू० अ०२ पा०२ आ०५ पर्वत्तम् । ६२×३°६ १२ ३८ " " अपू० अ०२ पा०१ आ०१। ८०४४ १८ ४४ " " १३६४ " १०°४×४°६ १० ३६ " " पू० ६°६×३°५ ६ ४४ " " " पू० ६°६×३°६ १० ३६ " " पू० इवीत्तर्म न स्वानिविदितिविचारः । ११°४×४° १२ ४४ " " अपू० क्वीत्तर्म न स्वानिविदितिविचारः । ११°४×४° १२ ४४ " " अपू० " ११°४×४° १२ १४ " " अजन्तपुं हिङ्गभागः । १०°४×४° १० ३८ " " १६१४ " " अजन्तपुं हिङ्गभागः । १०°४×४° १० ३८ " " १६१४ " " " वै० सि० की० टी० टीका । १०°६×४° ६ ३० " " " वै० सि० की० टी० टीका । १०°६×४° ६ १० " " " वै० सि० की० टी० टीका । १०°६×४° १० १८ " " " वै० सि० की० टी० टीका । १०°६×४° १० १८ " " " वै० सि० की० टी० टीका । १०°६×४° १० १० " " " वै० सि० की० टी० टीका । १०°६×४° १० १० " " " वै० सि० की० टी० टीका । १०°६×४° १० १० " " " वै० सि० की० टी० टीका । १०°६×४° १० १० " " " वै० सि० की० टी० टीका । १०°१४४° १० १० " " " " वे० सि० की० टी० टीका । १०°१४४° १० १० " " " " " वे० सि० की० टी० टीका । १०°१४४° १० १० " " " " " वे० सि० की० टी० टीका । १०°१४४° १० १० " " " " " वे० सि० की० टी० टीका । १०°१४४° १० १० " " " " " " वे० सि० की० टी० टीका । १०°१४४° १० १० " " " " " " " वे० सि० की० टी० टीका । १०°१४४° १० १० " " " " " " " " वे० सि० की० टी० टीका । १०°१४४° १० १० " " " " " " " " " " " " " " " " " | आकार: | | | लिपि: | आयार: | लिपिकालः | 1 | विशेषविहरणम् |
| ह ' | १२•६×६-५ | १७ | 80 | दे.ना | का. | | पूञ | पञ्चमाध्यायः । |
| = ''ox रे '' ' ' ' ' रे रे रि ' ' ' ' ' रे रे रि ' ' ' ' पू० ह ' रे रे रे रे रे रे रे रे रे रे रे रे रे | १३× ६ •६ | १२ | ४७ | ** | " | |)) "※ | अ०१ पा०२ आ०५ पर्यन्तम्। |
| १० १८ ॥ ॥ पू० ६ १४ ॥ ॥ पू० क्वीलुप्तं न स्थानिवदितिविचारः। १० ४४ ॥ ॥ अपू० ॥ १० ४४ ॥ ॥ अपू० ॥ १० ५४ ॥ ॥ ॥ अजन्तपुंहिङ्गभागः। १० ५४ ॥ ॥ ॥ अजन्तपुंहिङ्गभागः। १० ५४ ॥ ॥ ॥ अजन्तपुंहिङ्गभागः। १० ५४ ॥ ॥ ॥ ॥ १० ५४ ॥ ॥ ॥ ॥ १० ५४ ॥ ॥ ॥ ॥ १० ५४ ॥ ॥ ॥ ॥ १० ५० ॥ ॥ ॥ ॥ १० ५० ॥ ॥ ॥ ॥ १० १० ॥ ॥ ॥ ॥ १० १० ॥ ॥ ॥ ॥ १० १० ॥ ॥ ॥ ॥ १० १० ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ १० १० ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ १० १० ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ | 8.4×\$.8 | १२ | ३⊏ | 1) | " | | अपू० | अ०२ पा०१ आ०१। |
| E'\frac{1}{2} E | ≈.6×á.8 | १२ | ५५ | 33 | ,, | १३६५ | 33 | |
| १०×१ २१ ५४ " " पू० क्वीलुप्तं न स्थानिविद्विचिचारः। ११'४×४'= ११ ४७ " " अपू० " ११'६×३'= ११ ७० " " अजन्तपुंद्धिङ्गभागः। १०'६×३'४ १० ४३ " " १६१४ " " अजन्तपुंद्धिङ्गभागः। १०'४×४'४ १० ३= " " १६१४ " " " वै० सि० को०ंटी० टीका। १०'६×४'४ १० १० " " " वै० सि० को०ंटी० टीका। १०'६×४'४ १० १० " " " वै० सि० को०ंटी० टीका। १०'६×४'४ १० १० " " " वै० सि० को०ंटी० टीका। १०'६×४'४ १० १० " " " " वै० सि० को०ंटी० टीका। १०'६×४'४ १० १० " " " " " वै० सि० को०ंटी० टीका। १०'६×४'४ १० १० " " " " " " वे० सि० को०ंटी० टीका। १०'६×४'४ १० १० " " " " " " " " " " " " " " " " " | \$0.8×8.£ | १० | 35 | ,, | ,, | | पू० | |
| ११.४४४:= ११ ४७ " " अजु० " ११.४४:= ११ ७० " " " अजन्तपुंहिङ्गभागः। १०.४४:४ १० ४३ " " १६१४ " १०.४४:४ ६ ४० " " १६१४ " १०.६४४:४ ६ ४० " " " वै० सि० कौ०ंटी० टीका। १०.६४४:४ ६ ३६ " " " वै० सि० कौ०ंटी० टीका। १०.६४४:४ ६ ३६ " " " वै० सि० कौ०ंटी० टीका। १०.६४४:४ ६ ३६ " " " वै० सि० कौ०ंटी० टीका। १०.६४४:४ ६ ३६ " " " वै० सि० कौ०ंटी० टीका। १०.६४४:३ ६ ३६ " " " " वे० सि० कौ०ंटी० टीका। १०.६४४:३ ६ ३६ " " " " वे० सि० कौ०ंटी० टीका। १०.६४४:३ ६ ३६ " " " " " वे० सि० कौ०ंटी० टीका। १०.६४४:३ ६ ३६ " " " " " " " " " " " " " " " " " | દ•६×રૂ•દ્ | 3 | ४४ | 23 | " | 1 | अपृ> | |
| ११'इ.x२'= ११ ७० " " " अजन्तप्रं हिङ्गभागः। १०'इ.x४'* १० ५५ " " " अजन्तप्रं हिङ्गभागः। १०'इ.x४'* १० ६ " " " १६१४ " १०'इ.x४'* ६ ४० " " " वें० सि० कों० टी० टीका। टीका-श्रेधरी । कारकान्ता। १०'इ.x४'* ६ ३६ " " " वें० सि० कों० टी० टीका। टीका-श्रेधरी । कारकान्ता। १०'इ.x४'* ६ ३६ " " " " वें० सि० कों० टी० टीका। टीका-श्रेधरी । कारकान्ता। १०'इ.x४'* ६ ३६ " " " " " वें० सि० कों० टी० टीका। टीका-श्रेधरी । कारकान्ता। | १०×३ | २१ | ५४ | ** | 33 | | पू० | क्वौतुप्तं न स्थानिबद्तिविचारः। |
| १०'द्रx8'8 १० ४५ " " " अजन्तपुंक्किमागः। १०'४x8'8 १० ४३ " " " १६१४ " १०'४x8'4 ६ ४० " " " " " १०'६x8'4 १० ६८ " " " " " " " " " " " " " " " " " " | ११.8×8.≃ | ११ | ১৩ | ,, | 23 | | अपू० | " |
| その・安米安・安 その・安米安・安 の・安米安・安 の・安・安 の・安・安・安 の・安・安・安 の・安・安・安 の・安・安・安 の・安・安・安 の・安・安・安 の・安・安・安・安 の・安・安・安・安 の・安・安・安・安・安・安 の・安・安・安・安・安・安・安・安・安・安・安・安・安・安・安・安・安・安・安 | ११•≅×३•⊏ | ११ | ૭૦ | 23 | ,, | | ,, | ì |
| १०-१×४-१ | १० ° ⊏x३ ° E | १० | ५५ | " | " | | 72 | अजन्तपुंछिङ्गभागः। |
| E-ध्र×ह थ ७ ३८ " " " " वै० सि० की० टी० टीका। टीका-श्रेषरी । कारकान्ता। १०-६×ह ४ १ १ १ १ " " वै० सि० की० टी० टीका। टीका-श्रेषरी । कारकान्ता। १०-६×ह ४ १ १ १ १ " " " वै० सि० की० टी० टीका। टीका-श्रेषरी । कारकान्ता। १०-६×ह ४ १ १ १ १ " " " " " " " " " " " " " " " | १०:8×8.8 | १० | ४३ | ,, | " | | " | • |
| E'8x8'8 १० ३८ " " " " " " " " " " " " " " " " " " | १०•५×४•५ | 3 | 82 | 5 3 | " | १६१४ | " | |
| १०.५×४.५ ६ ३७ " " " वै० सि० कौ०ं टी० टीका । टीका । टीका – श्रेंघरी । कारकान्ता । १०.६×४.४ ६ ३१ " " " " वै० सि० कौ०ं टी० टीका । टीका – श्रेंघरी । कारकान्ता । " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " " <t< td=""><td>٤٠٤×ۼ ٤</td><td>v</td><td>३⊏</td><td>"</td><td>"</td><td></td><td>"</td><td></td></t<> | ٤٠٤×ۼ ٤ | v | ३⊏ | " | " | | " | |
| १२·२×४·३ | £.8×8.8 | १० | ३⊏ | 72 | 1) | | 77 | |
| १०-६×४-३ | १० [.] ६×४•५ | з | ३७ | ٠, | ,, | | >: | |
| \$0.5\times\$ \$6 \$5 " \$0.5\times\$ \$1 \$1 \$2 " \$0.5\times\$ \$2 " " " \$0.5\times\$ \$2 <td>१२∙२×४फ</td> <td>3</td> <td>५५</td> <td>,,</td> <td>,,</td> <td>j</td> <td>"</td> <td>बै॰ सि॰ कौ॰ टी॰ टीका।</td> | १२∙२×४फ | 3 | ५५ | ,, | ,, | j | " | बै॰ सि॰ कौ॰ टी॰ टीका। |
| \$0.5\times \text{R}.3 \$\beta \text{R}.3 " \$0.5\times \text{R}.3 \$\beta \text{R}.3 " \$0.8\times \text{R}.4 \$\beta \text{R}.4 " \$0.8\times \t | 20.5000 | | 20 | ,, | " | | | टाका-श्रधरा । कारकान्ता । |
| \$0.4x8.4 \$85 " \$0.5x8.4 \$85 " \$0.8x8.8 \$85 " \$0.8x8.4 \$85 " \$0.8x8.5 \$8 " \$0.8x8.7 " " | | | . } | | ,, | | | |
| \$0.5x8.3 \$\beta\$ \$\beta\$ " \$0.5x8.3 \$\beta\$ \$\beta\$ " \$0.8x8.8 \$\beta\$ " " \$0.8x8.8 \$\beta\$ " " | | | | ., | ,, | | •• | |
| \$0.5×8.\$ | | 3 | 38 | ,, | ,, | | ,, | |
| ξο.ξx8.3 ε 85 " " " | | | ४३ | ,, | ,, | | " | |
| | | ११ | ४२ | 72 | ,, | | " | |
| | ४०.त×८.३ | 3 | ४२ | 33 ′ | ,, | | " | |
| | | | | | | | | |

| | फ्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | बन्धकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|----------------|---------------------------------|--------------------|-------------------------------------------------|
| | १३०३६ | लघुशव्देन्दुशेखरः. | नागेदाः | १-१७६, =०-११२, ११४-११६+१। |
| | ३६०६२ | " | ,, | ४-२७, २६-३१, ३३, ३८-५७। |
| | ३ ८०६३ | प्रौ ढमनोरमा | | २६ । |
| Ì | ४३०३६ | लघुशब्देन्दुशेखरः | } | १-२२१ । |
| | ३६०६५ | " | नागेशः | १-२४, २४-२६७, १- <u>६</u> ५ । |
| | ३८०६६ | 71 | | २१-२७ । |
| | ७३०३६ | वैयाकरणसिद्धान्तकीमुदी | भट्टोजिदीक्षितः | १३२। |
| | 33 03\$ | लघुशब्दरस्नम् | दृरि दीचितः | १-१२, १२-१८=(१८, १६) २०-१२३, १२३-१३३। |
| | 3303\$ | त्तघुसिद्धान्तकौमुदी | वरद्राजः | १-१८, २५-४४, ४४, ५२-१०४, ६६-११६, ११९-१३७+१ । |
| | ००१३६ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | | १-१०५, २-५३। |
| | ३६१०१ | 99 | भट्टोजिदीक्षितः | - 185 |
| | ३६१०२ | लघुसिद्धा न ्तकौमुदी | | २। (गणन्या) |
| | ३८१०३ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | i | १। |
| | ३८१०४ | " | | ३-४। |
| | ३६१०५ | 91 | | 81. |
| | ३८१०६ | ,, | | ४४-६६ । |
| | ३८१०७ | 99 | भट्टोजिदीक्षितः | १-१६। |
| | ३६१०८ | " | | ३१-६५,७३-१२३,१२३-१७२,१७४-१८७। |
| | ३०१३६ | प्रौढमनोरमा | | १३६, १४६-१६४, १६८-१६६ । |
| | ३६११० | च्याक रणटीकाम्रन्थविशेषः | | १। . |
| | ३६१११ | समासचक्रम | | १-५ । |
| | ३६११३ | प्रयोगविधिः | | १-१० । |

| आकार: | पङ्कि- संख्या | अक्षर• संख्या | लिपिः | आधार: | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेक: | विशेपविवर्णम् |
|------------------|------------------|------------------|--------|------------|-----------------|------------------------|----------------------------------------|
| ह:२×३'६ | 2 | ३५ | दे.ना. | का. | | अपू० | |
| 8.8×8.3 | 28. | ५५ | >> | ,, | | ,, | |
| १२×४'¤ | २३ | ક્ષ્ટ | 24 | 33 | | ** | |
| १२·३×४·६ | 3 | ५२ | 79 | " | १ह२२ | पू० | |
| १२•६×४•५ | 5 | ५= | " | " | | " | पूर्वीर्द्धम् । |
| १०.४×८.५ | १० | ४३ | 77 | " | | अपू० | |
| €'₹×8'₹ | ت | ३७ | 39 | " | | " | |
| १२'४×४:्६ | १० | ४४ | ,, | " | १९१५ | पू०* | वै० सि० कौ० टी० टीका । कारकान्तम् । |
| ६.८×३.५ | ۷ | १९ | 23 | " | १८८३ | अपू० | |
| ९.७×६ | ११ | २६ | ,, | " | | >> | तद्धितान्ता । |
| ११·१×४·४ | ર | ३६ | " | 39 | १८०६ | >> | |
| ९ ·६x४'२ | ۷ | २२ | ,, | H | · | .33 | |
| ९ . ७x8.८ | १२ | ३६ | ,, | " | | 37 | वैदिकप्रकरणम् । |
| १०·३×४·५ | ११ | 80 | 29 | " | | " | |
| E.Cxx | १२ | 38 | ,, | 33 | | 35 | |
| €.0×₹ | १० | ঽ৩ | ,, | " | | ,, | |
| ह.९×र्र.४ | <i>રે</i> .૦ | ३८ | " | N | १८५५ श० १६७४ | ". | तद्धितप्रकरणम् । |
| ८.८×३.४ | و | રહ | ,, | 23 | 1 | 32 | सुवन्तात्तद्धितान्ता । |
| E-£x8.8 | 2 | રદ | ,, | ĸ | | n | ं वै० सि० कौ० टीका । पूर्वार्द्धम् |
| १०x४.त | १० | ३१ | ,, | ,, | | 33 | |
| ८. र×३. ८ | بى | રહ | ,, | 3 3 | | पू ० | |
| દ'६×૪'૮ | Ę | ર૪ | " | " | | " | समासचक्रञ्च । |
| 84 | | | | | | | <u></u> |

| | ज्मसंख्या <u>।</u> | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|-----|--------------------|-----------------------------------------|---------------------------|----------------------------------------|
| | ३९११३ | प्रयोगविधिः | | १-५,। |
| | ३९११४ | शब्दानुशासनं सवृत्तिकम् | हेमचन्द्राचार्यः | १-२४७ । |
| 3 | ३९११५ | सारस्वतप्रक्रिया | अनुभूतिस्वरूपा- चार्यः | १-६४ । |
| 1 | ३९११६ | 57 | | १, ३-१६ । |
| : | ३९११७ | कातन्त्रवृत्तिः | दुर्गसिंह: | १-११३। |
| | ३९११⊏ | कातन्त्ररूपमाला | भावसेनः | १-२३, २५-५९, १-२१ । |
| } ; | ३९११९ | दीपव्याकरणम् | चिद्रूपाश्रमः | १-३३ । |
| | ३९१२० | त्रघुचन्द्रि का | रामाश्रमः | १-२० । |
| | ३९१२१ | त्रघृसिद्धान्तचन्द्रिका | " | १-५ । |
| | ३९१२२ | ,, | " | १-२४ । |
| | ३९१२३ | ,, | ,, | १-७ 1 |
| | ३९१२४ | ,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,, | ,,, | १-३१ । |
| | ३९१२५ | लघुशन्द्रस्नम् | हरिदीक्षितः | १-४९ । |
| | ३९१२६ | चङ्गकारिका | चङ्गदासः | १-३ । |
| | ३९१२७ | सिद्धान्तचन्द्रिका | | १-३९ + १७ ५७-१९५, १५७-२४६+९⊏- ३४३ । |
| | ३९१२⊏ | रप्रत्याहारमण्डनम् | रामचन्द्रपाठकः | १-६। |
| } | ३९१२९ | अप्टाध्यायी | | ४६ । |
| | ३९१३० | सुवोधिनी | जयकृष्णः | १-२७, २८-३१। |
| | ३९१३१ | ; ; ; ; ; ; ; ; ; ; ; ; ; ; ; ; ; ; ; | | १-२ ⊏, १-४ । |
| | ३९१३२ | तत्त्ववोधिनी | | १-4 =+ १ । |
| | ३९१३३ | सिद्धान्तकौमुदी | भट्टोजिदीक्षितः | १-८१ । |

| शकार: | पङ्कि- संख्या | अक्षर- संख्या | 1 16314 • 1 | आयार: | लिपिकाल: | पूर्णापूर्ण- विवेक: | विशेषविवरणम् |
|--------------------------------|------------------|------------------|-------------|------------|----------|------------------------|------------------------------------------------|
| १० . ७x8.७ | હ | २१ | दे ना | का. | १९०८ | पू० | समासचकद्य । |
| ११•७×६•१ | ११ | ३४ | ,, | " | १८९९ | ** | जैनव्याकरणम् । |
| ९·६×४·२ | १० | २९ | ,, | 37 | १७७६ | 19 | आख्यातप्रक्रियामात्रम् । तिवादिवृत्तिर्वो । |
| ९ . ४×३.६ | ی | २७ | " | " | | अपू० | आख्यातप्रक्तियांशा । |
| १०×३ | १२ | ३३ | ,, | ,, | | *, | दौर्गसिंहीति नामान्तरम्। |
| ९ः⊏×३·४ | v | 38 | ,, | >* | १५०४ | 7, | |
| ९·७×३·९ | 5 | ३४ | ,, | " | | पू० | |
| १४ [.] ४×५ . ५ | १० | ३६ | 25 | " | | >, | आख्यातप्रक्रिया कुत्प्रक्रिया च । |
| ९·३×४·४ | १० | २७ | " | ,, | | ,, | कृत्वियामात्रम् । |
| ९·२x४·५ | 9 | २३ | " | " | | 1, | तद्वितप्रक्रियान्ता । |
| ८.स्४८.८ | 5 | 32 | ,, | ,, | | 1; | कृत्प्रक्रियामात्रम् । |
| ς.α×δ.έ | 5 | २३ | ,, | ,, | |); | आख्यातप्रक्रियामात्रम् । |
| ११ [.] ४×५ | १४ | ५४ | ,, | , , | १७ऽ७ | ,, | वै० सि० को० टी० टीका । वेदिकीप्रक्रिया । |
| १२·४×४·३ | 5 | ५३ | ,, | ,, | १९०४ | " | पष्टपटलः । सम्बन्धोपदेश इति नामान्तरम् । |
| ড [্] ৭x৪'দ | Ę | ११ | ,, | ,, | १⊏४६ | अपू० | |
| ९.≃x8.≾ | १३ | ३६ | ٠, | ,, | | पू० | |
| ο.≃× ź. ξ | v | २५ | " | >> | | अपू० | |
| ९.8×8.5 | १० | ५० | 1, | ,, | | ># | वै० सि० को० टीका स्वरप्रकरणस्य। |
| ९.8×8.5 | 3 | ३९ | " | " | | ,, . | |
| ९%४४'२ | ११ | ४५ | ,, | ,, | | ,, | वै॰ सि॰ को॰ टी॰, तिङन्तभागः। |
| १०•५×४•५ | 9 | ३५ | " | " | | पू० | कृदन्तभागः। |
| | | 1 | | | | | |

| | क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|------------|-----------------------------------|-----------------------------------------------|--------------------------------------|
| | ३९१३४ | सिद्धान्तकौमुदी | मट्टोजिदी च्चितः | १-१५७, १-द२ = (द३) द४-१७१, १-५१ । |
| | ३९१३५ | " | ,, | १-१३४। |
| | ३९१३६ |) | " | १-=१ । |
| | ३९१३७ | तत्त्ववोधिनी | | १-५, ५१-१११ । |
| | ३९१३⊏ | सिद्धान्तकौमुदी | | १-१३३ । |
| | ३९१३९ | 33 | ! ! | १-३, ११३-११४। |
| | ३९१४० | संस्कृतमञ्जरी | रघुनाथः | १-३। |
| | ३९१४१ | अष्टाध्या यी | | १-२७, २९-५४+१। |
| | ३९१४२ | लघुशब्देन्दुशेखरटीका - | | १-१८ । |
| i | ३९१४३ | धा तुपाठः | | १-१४ । |
| į | ३९१४४ | 39 | | १-४, ४, + १ । |
| | ३९१४५ | धात्वर्थेनिपातार्थेनि णेयः | 1 | १-२८ । |
| | ३९१४६ | न्यासः | | १-३६ । |
| | ३९१४७ | पदचन्द्रिकावृत्तिः | मृत्यः | १-५०,५५-६३,८३-१००,१०२•१५३,१-१०२। |
| | ३९१४८ | टीकायन्थविशेपः | | २। (गणनया) |
| | ३९१४९ | परिभाषेन्दु शेखरः | नागेशभट्टः | १-६५ । |
| | ३९१५० | " | 99 | १-५९ । |
| | ३९१५१ | परिभाषेन्दुशेखरःसविद्यतिः | नागेशभट्टः वि॰ का॰-वैद्य- नाथपायगुण्डेः | १-३५ । |
| | ३९१५२ | परिभाषेन्दुशेखरटीका | वैद्यनाथपाय- गुण्डे : | १-५७, ५९-१४२ । |
| | ३९१५३ | परिभाषार्थमञ्जरी | भीमः | १-९, ५-७० । |

| १०:२x४१४ ९ ३५ " " पृ० स्रादित:समासाधयविधिपर्य्येन्ता । १०x३:३ ७ ३४ " " स्राद्वत:प्रमामासाधयविधिपर्य्येन्ता । ९'=x४'३ १३ ४५ " " अव० गार्वाजा । आदितोऽष्टमाध्यायस्य सृतीय-पादान्ता । ९'=x४'8 १० ४३ " " यै० सि० की: टी: टीका । कारक प्रकास्य । प्रत्येक्य निर्मा क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष् | श्नवार: | ्यहित मंग्या | शहरू-) संस्या | निः | मिर्मित्र: | विविसनः । | प्नांप्ट- विकः | विशेषिषस्यम् |
|-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|----------------------------|-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|--------------------|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|----------------------------------------|-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| १० १० १८ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ | १०१३×५४ | ६१ | 84 | दे. ना. | দা. | | पृः | संगाप्रस्रगतो तिज्ञानुशासन- पर्त्यन्ता । |
| १०-१८१५ = ३१ " " अपू० चे०सि०की० टीसा स्वादिमाञम् १०-१८४४ ९ १५ " " पू० श्रादितःसमासाधयविधिषर्य्येन्ता १०-१८४१ ९ १८ " " श्रा. १७३० पू० गोर्वाणमञ्जरीति नामान्तरम् अपू० गोर्वाणमञ्जरीति नामान्तरम् अपू० श्रादितोऽष्टमाध्यायस्य तृतीय-पादान्ता श्रा. १७३ " " अपू० श्रादितोऽष्टमाध्यायस्य तृतीय-पादान्ता श्राद्रभ४४४ १० १३ " " १७== पू० प्रत्येक्षप्रति स्वाद्रमाञ्चर्ये । श्राद्रभ४४२ ११ ५७ " " १७== पू० प्रत्येक्षप्रति स्वाद्रमाञ्चर्ये । श्राद्रभ४४२ ११ ५७ " " अपू० मध्ये धातुरुपायतीयमाद्रायेव । श्राद्रभ४४२ ९ ११ " " अन्ते तिकर्यंनिर्णयञ्च प्रत्येक्षप्रत्ये । प्रत्येक्षप्रत्ये ११ ५४ " " गार्विक्ताटीका प्रत्येक्षप्रत्ये । श्राद्रभ४४४ ९ ११ ४५ " " गार्विक्ताटीका गार्विक्ताटीका श्राद्रभ४४५२ ११ ४५ " " गार्विक्ताटीका गार्विक्ताटीका गार्विक्ताटीका श्राद्रभ४५५ ११ ४५ " " गार्विक्ताटीका गार्विक्ताविवेक्ष्य श्राद्रभ४५५ ११ ४५ " " गार्विक्ताविवेक्ष्य गार्विक्ताविवेक्ष्य श्राद्रभ४५५ १० १४ " " गार्विक्ताविवेक्ष्य गार्विक्ताविवेक्ष्य गार्विक्ताविवेक्ष्य गार्विक्ताविवेक्ष्य गार्विक्ताविवेक्ष्य गार्विक्ताविवेक्ष्य गार्विक्ताविवेक्ष्य गार्विक्ताविवेक्ष्य गार्विक्ताविवेक्ष्य गार्विक्ताविवेक्ष्य गार्विक्ताविवेक्ष्य गार्विक्ताविवेक्ष्य गार्विक्ताविवेक्ष्य गार्विक्ताविवेक्ष्य गार्विक्ताविवेक्ष्य गार्विक्ताविवेक्ष्य गार्विक्ताविवेक्ष्य गार्विक्ताविवेक्ष्य गार्विक्ताविवेक्ष्य गार्विक्ताविवेक्ष्य गार्विक्ताविवेक्ष्य गार्विक्ताविवेक्ष्य गार्विक्ताविवेक्ष्य गार्विक्ताविवेक्ष्य गार्विक्ताविवेक्ष्य गार्विक्ताविवेक्ष्य गार्विक्ताविवेक्ष्य गार्विक्ताविवेक्ष्य गार्विक्ताविवेक्ष्य गार्विक्ताविवेक्ष्य गार्विक्ताविवेक्ष्य गार्विक्ताविवेक्ष्य गार्विक्ताविवेक्ष्य गार्विक्ताविवेक्ष्य गार्विक्ताविवेक्ष्य गार्विक्ताविवेक्ष्य गार्विक्ताविवेक्ष्य गार्विक्ताविवेक्ष्य गार्विक्ताविवेक्ष्य गार्विक्ताविवेक्ष्य गार्विक्ताविवेक्ष्य गार्विक्ताविवेक्ष्य गार्विक्ताविवेक्ष्य गार्विक्ताविवेक्ष्य गार्विक्ताविवेक्ष्य गार्विक्ताविवेक्ष्य गार्विक्ताविवेक्ष्य गार्विक्ताविवेक्ष्य गा | १०१४×४१५ | , ?s | 3= | ** | • •• | ************************************** | ; ; > † | तिइन्तभागः। |
| १०:२x४१४ ९ ३५ " " पृ० स्रादित:समासाधयविधिपर्य्येन्ता । १०x३:३ ७ ३४ " " स्राद्वत:प्रमामासाधयविधिपर्य्येन्ता । ९'=x४'३ १३ ४५ " " अव० गार्वाजा । आदितोऽष्टमाध्यायस्य सृतीय-पादान्ता । ९'=x४'8 १० ४३ " " यै० सि० की: टी: टीका । कारक प्रकास्य । प्रत्येक्य निर्मा क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष् | १०१५×४१६ | ; | 83 | ** | 23 | * | ** | तदितमागः । |
| १०x२:३ ७ १७ " " श. १७३० पू० गीर्वाणमञ्जरीति नामान्तरम् । ९'=x४:६ ९ ३४ " " अपू० प्राचिणमञ्जरीति नामान्तरम् । ९'=x४:४ १० ४३ " " " अपू० आदितोऽप्टमाध्यायस्य तृतीय- पादान्ता । ९'=x४:४ १० ४३ " " " वै० सि० की: टी० टीका । कार्क- प्रक्रालस्य । प्रत्येकप्रतीक मादावेत्र ९'२x४:२ ११ ५७ " " १०=६ पू० सध्ये धातुरूपावटी च । ९'१x४२ ९ ३१ " " अन्ते तिक्वीनिर्णयञ्च । ११'4x४: ९ ११ ४७ " " पाशिकाटीका । ११'4x४: ९ ११ ४७ " " गाशिकाटीका । ९'३x४:२ ११ ४७ " " गाशिकाटीका । ९'३x४:२ ११ ४७ " " गाशिकाटीका । ९'३x४:२ ११ ४७ " " गाशिकाटीका । ९'३x४:२ १० ३४ " " गाशिकाटीका । ९'१x४:२ १० ३४ " " गाशिकाटीका । | १=' = ×६'= | = | 32 | ** | ,) 14 | ţ. | अपृः | वंश्मिल्कोः टीजा। भ्वादिमात्रम्। |
| ९'=x8'? १३ १४ " " दा. १७३० पू० गोर्वागमअरीति नामान्तरम् । ८'=x8'% ९ ३४ " " अपू० आदितोऽष्टमाध्यायस्य स्तीय-पादान्ता । ९'=x8'% १० १३ " " " विक सि० की: टी: टी: ठी: ठा । कारक प्रकरणस्य । प्रत्येक्त्रप्रतीक धृत्या नेय व्याख्या कि: तुक पित्रप्रतीक मादायेव ९'२x8' ११ ५७ " " १७== पू० ८'२x8' ६ २५ " " अपू० मध्ये धातुरूपावळी घ । ९'१x8' ९ ३१ " " अपू० मध्ये धातुरूपावळी घ । ११'५x8' ९ ३१ " " पात्रिक्तिक विक विक विक विक विक विक विक विक विक व | ₹c•*₹x%% | } { ९ | 34 | , 1) | r 99 | 1 | पृट | श्रादितःसमासाधयविधिपर्य्यन्ता । |
| ===x3:= | ₹0 x ३°३ | ئ | ३७ | 33 | T 13 | | अपु ० | |
| पादान्ता । पादान्ता । पादान्ता । पादान्ता । पादान्ता । पिट सिठ की॰ टी॰ टीका । कारक- प्रकरणस्य । प्रत्येकप्रतीक धृत्या नेय प्रत्येकप्रया किन्तु किल्लास्य । प्रत्येकप्रतीक धृत्या नेय प्रत्येक्ष्ण ६ २५ " " अकृत तिक्व धिनर्णयम्य । प्रत्येक्षण्य ६ १५ " " अन्ते तिक्व धिनर्णयम्य । प्रत्येक्षण्य ६ १५ " " व्यक्तिक । प्रत्येक्षण्य ६ १५ " " विद्यत्तिक । प्रत्येक्षण्य ६ १५ " " विद्यत्तिक । प्रत्येक्षण्य ६ १६ एउ " " विद्यत्तिक । प्रत्येक्षण्य ६ १६ एउ " " विद्यत्तिक । प्रत्येक्षण्य ६ १६ एउ " " विद्यत्तिक । प्रत्येक्षण्य ६ १६ एउ " " विद्यत्तिक । प्रत्येक्षण्य ६ १६ एउ " " विद्यत्तिक । प्रत्येक्षण्य । प्रत्येक्षण्य ६ १६ एउ " " विद्यत्तिक । प्रत्येक्षण्य । | ८.≈×৪.₫ | १३ | ४४ | <u>.</u> •• | \$ 90 \$ | ्रा. १७३० | ďэ | गीर्वाणमञ्जरीति नामान्तरम् । |
| प्रश्तिक प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प् | =:=xş.= | 3 | इप्ट | 1 | 1 22 | and the second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second s | अपू॰ | |
| = '2xy'2 | 6.=×8.8 | १० | १३ | 23 | \$B | Angenerature des des de propriet des | > | वै॰ सि॰ की॰ टी॰ टीका । कारक- प्रक्राणस्य । प्रत्येकप्रतीकं धृत्या न्यं व्याख्या किन्तु किन्नस्प्रतीकमादायव। |
| ९-१x४२ ९ ३१ " " अन्ते तिङ्ग्धीनर्णयञ्च । ११-५x४= = ४५ " " पाशिनाटीका । ९-३x४-४ ९ ३२ " " तिद्धतान्तिविदेकः ए.दन्तिविदेकः । ९-७x४-२ ११ ४७ " " " " " " " " " " " " " " " " " " | ९•२×४·२ | ११ | 4,6 |) } } | 1 1 7) | १७== | qe. | |
| ११-५xy= = | ביפ×ציפ | ξ | 24 | ; ; ; | 7 99 | rustander og -tre | अवृ० | मध्ये धातुरूपावटी च । |
| ९ ३२ " " तिद्वतान्तविदेकः एदन्तविदेकधा । ९ ७४४ १ १ ४ " " " " " " " " " " " " " " " | ९.१×४२ | 9 | , ३१ | , FT | ** | * | ,, | अन्ते तिङ्येनिर्णयश्च । |
| १ जिस्सेश्व | ₹ १ -५× у -= | = | 84 | . 25 | " | i 2 1 | ,,, | साशिकाटीका। |
| = '4x३% = ३९ " " " " " " " " " " " " " " " " " " | &.3×8.8 | 5 | ं ३२ | ** | 12 | ‡ • | ,, | तद्वितान्तविवेकः गृद्ग्तविवेकश्च । |
| ९.५x५.२ ६० ३४ " " ६==९ " १२.६x५.= ६० ५६ " " विद्विर्तर्गदाख्या। | ९.७x४.२ | 1 28 | ું પૃડ | ** | . ,, | , 1 |)) | |
| इर-६×४८ ६० ५६ " " विद्वितर्भदाख्या। | =:4x३% | = | 39 | ** | } 1 | £ | ,, | |
| | q.8x8.3 | १ 0 | , \$8 | ; ; ; | ** | १द्य | ,, | |
| हरके प्रश्न विकास स्थापन के किया गर्जा के किया गर्जा के किया गर्जा के किया गर्जा के किया गर्जा के किया गर्जा क | १२:५x४:⊏ | ξ: | ે પ દ્ | · · · · · · · · · · · · · · · · · · · | ** | depole a si editores | ** | थिमृतिर्गदास्या । |
| 74.24 | 6.57.25 | Comments of the second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second | . 8 = | And the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of t | The production of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of the last of | | ## ## ## ## ## ## ## ### ### ### ### # | टोस गदा । |
| ९ १२ " " परिभाषेन्दुदोग्रस्टीका। | \$.\$×ñ.≾ | < | ३ २ | *** | ** | Proposition of contrast | 41 | परिभाषेन्द्रदोग्यरटीका । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | प्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-------------------------------|-----------------------------|----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| ३९१५४ | पूर्वेपक्षावितः | | १- ७ +१ । |
| ३९१५५ | प्रक्रियाक <u>ौ</u> मुदीटीका | शेपनारायणः | १-५४ । |
| ३९१५६ | वालकोमुदी | | १-१० । |
| ३९१५७ | शब्दरत्नभावप्रकाशिका | वैद्यनाथ पायगु ण्डेः | १-८० । |
| ३९१५⊏ | ,, | | १-२६ । |
| ३९१५९ | भाषावृत्त्यर्थविवृतिः | सृष्टिधरशर्मा | १-२७, १-२७ (२७ = १), २-३५, १-२६, १-=, १-१७, १-२४ + ६ । |
| ३९१६० | 53 | 23 | १-७, ७-२२, १८-२९, २०-२५, १-२९, १-२७, १-४२, १-३४, १-२३, १-२४, १-६, ८-९, ११-२१, १-२९, १-१०, १२-२६, १६-१७, २०-२३, २०-२४, २३-२९ । |
| ३९१६१ | शब्दकौरतुभः | | १-३१, १-२४, १-१९ । |
| ३९१६२ | शब्दकौस्तुभप्रभा | वैद्यनाथपायगुण्डेः | १-९२ । |
| ३९१६३ | शब्दरत्नम् | हरिदीक्षितः | १-१३६ । |
| 20.05. | | | 24.1 |
| 1 | शब्दरूपावलिः | | २-५ । |
| ३९१६५ | " | | १-५ । |
| ३९१६६ | शब्दसारः | खुशहालद्विवेदः | ६-३२, ३४-३७। |
| ३९१६७ | वैयाकरणभूषणसारदर्पणः | | १-१९७ । |
| ३९१६८ | वैयाकरणभूषणसारकान्त <u>िः</u> | देवगोपालः | १-३३ । |
| ३९१६९ | वैयाकरणभूषणसारः | कोण्डभट्टः | १-६७। |
| ३९१७० | वैयाकरणभूषणसारटीका | रामिकशोरः | १-१२ । |
| ३९१७१ | लघुशब्देन्दु शेखरटीका | राघवेन्द्रः | ⊏६-१६ ⊏ । |
| ३९१७२ | ्विभक्त्यर्थनिरूपणम <u>्</u> | | १-४, ६-१५ । |
| ३९१७३ | शब्द्रूपावितः | | १,६। |
| ३९१७४ | त्रघुसिद्धान्तकौसुदी | | १-३९ । |

| आकारः | पङ्कि- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधार: | लिपिकाल ः | पूर्णापूर्णै- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|-----------------------------------|------------------|------------------|---------|-------|------------------|-------------------------|--------------------------------------------------|
| ९ . ८×८.ई | १० | રૂપ | दे.ना | का. | | अपू० | धातोस्तन्निमित्तस्येस्यादिकतिपय- सूत्राणाम् । |
| ९פ•३·२ | v | ४८ | >> | " | | 33 | |
| १३•७×५•३ | १० | ४३ | N | >> | | 24 | |
| १०-३×४-५ | ११ | ४५ | ,, | 7.7 | | 33 | |
| ९·५×४·३ | १२ | ४३ | ,, | 10 | | ,, | त्र्यर्थवत्सृत्रस्य । |
| १६×३·३ | Ę | ५९ | वङ्ग- | 7> | | ,, | अ०१ पा० २-४, ऋ०२ पा०१-३। |
| १४'५×३·६ | ષ | 84 | >> | 20 | | ,, | अ०५ पा०४, अ०६ पा०१, ३, अ०७पा०१-३, अ०८ पा०२-४। |
| ९x४°२ | ९ | ४९ | दे .ना. | " | | 73 | अष्टाध्यायीटीका । अ०१ पा०१ आ०२। |
| ८. ६ ×८.३ | 3 | ३२ | " | 99 | | ,, | |
| ९ [,] ३x४ [,] २ | 9 | ५१ | ,, | 33 | | पृ० | बैं० सिं० कौं० टीं० टीं०। कारका- न्तम्। |
| 8.8×8.8 | 8 | २१ | >> | » | | अपू० | |
| ⊏.8×8.4 | v | १६ | 29 | " | | ** | |
| १० ° ४×४°⊏ | १० | ३९ | 73 | " | | 79 | |
| १० . ८×८.६ | १० | 80 | " | " | | >> | |
| १०•६×४·५ | 3 | २९ | ,, | ນ | | ,, | 1 |
| १०.४×८.५ | 3 | ३९ | " | n | १८९४ | पू० | स्फोटवादान्तः। |
| १०.४×ई.८ | v | ४१ | ,, | " | | अपू० | · |
| १०.८४८.त | 8 | ३९ | 93 | " | | × | |
| १०४३.७ | 5 | ४६ | 39 | × | | " | |
| ९ [.] ४×४'२ | 3 | २१ | " | 39 | | 29 | |
| ⊏,8×8,5 | Ę | २३ | " | >> | | >> | |

| | | | |
|-------------------|---------------------------------|----------------------------|---------------------------|
| क मसं ख्या | प्रन्थनाम | प्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
| ३९१७५ | लघुशब्देन्दुरोखरटीका | | १-३ । |
| ३९१७६ | " | | १-१८, २१-७०, ७३-७६। |
| ३९१७७ | " | | १-१२+१ । |
| ३९१७≂ | " | | १-१५, १७-३१। |
| ३९१७९ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | भट्टोजिदीक्षितः | १-५५, ९, ५६-६६, ६८-८० । |
| ३९१⊏० | " | 39 | १-९०, १-४५ । |
| ३९१⊏१ | " | | १-४३ । |
| ३९१⊏२ | ,, | • | ? 1 |
| ३९१⊏३ | » . | भट्टोजिदीचितः | १-५६ । |
| ३९१⊏४ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी- टीका | | ₹1 |
| ३९१⊏५ | 33 | | १-२ । |
| ३९१८६ | " . | | १-२, १-२+१। |
| ३९१८७ | 15 | | । १-११ । |
| ३९१८८ | , | | १-२, = । |
| ३९१⊏९ | प्रौढमनोरमा | | १-६। |
| ३९१९० | परिभापेन्दुशेखरटीका | | 81 |
| ३९१९१ | तत्त्वबोधिनी | ज्ञानेन्द्रसरस्वती | ९८-१२०, १-६७, १-४०, १-२८। |
| ३९१९२ | सम्बन्धोपदेशः | शंगादासः (चङ्गदासोवा) | १-=५। |
| ३९१९३ | सारस्वतम् | अनुभूतिस्वरूपा- चार्यः | १-९४ । |
| ३९१९४ | ? | | १-१७ । |
| ३९१९७ | 39 | अनुभूतिस्वरूपा- चार्यः | १-२५ । |
| ३९१९ | Ę " | | ₹-5+१1 |
| ३९१९ | Ę " | 114, | ₹-5+१1 |

| भाकार: | पङ्कि- संख्या | अक्षर- संख्या | 11014 | भाभारः | ं लिपिकाल ঃ | मृण[पूर्ण- विवेदः | विशेपविवरणम् |
|----------------------------|------------------|------------------|------------|--------|-----------------------|----------------------|-------------------------------------|
| \$ο• 3 ×8· ¢ | 9 | ४३ | दे.ना. | का. | | अपूर | बै॰ सि॰ कौ॰ टी॰ टी॰ । |
| ११×३•५ | 9 | ४३ | >> | " | | 23 | 10 |
| ९·५×३·९ | ११ | ४७ | " | 3.5 | | " | ,, |
| १०'४x४'४ | १२ | ४६ | " | ,, | | " | ,, |
| १०×५ [.] १ | १४ | ३१ | " | " | १⊏५६ | पू०% | कृद्न्तप्रकरणम् । |
| ११ . ४×४.० | હ | ૪ર | " | " | १७४९ | ,, | » वैदिकप्रकरणं लिङ्गानुशासनञ्ज । |
| ९ . ७x५.१ | १० | 80 | 3 3 | ,, | | अपृ० | स्वरवैदिकप्रकरणे । |
| ९%x8९ | १२ | ३४ | " | " | | ,, | वैदिकीप्रक्रिया। |
| १२·५×४·३ | १० | ५२ | Ħ | " | १९०६ | पू० | वैदिकप्रक्रियातो लिङ्गानुशासनान्ता। |
| १२ · ६×४ · ९ | १५ | ५९ | ,, | " | | अपू० | |
| 00~2 | 0.0 | • > 2 - 1 | | | | 43 | |
| ११ ×३ ⋅⊏ | २१ | ४५ | ,, | 93 | | " | |
| ९ . ७x५ | ११ | ३३ | " | " | i | 77 | |
| १२.५×४.६ | ११ | ४१ | " | 3-3 | | 77 | |
| १२·९×४ ः ⊏ | १५ | ५९ | ,, | " | | ęą. | |
| ९.७x४.5 | १० | ५१ | ,, | ,, | |) | बै॰ सि॰ कौ॰ टीका । |
| ९.८×. | १३ | 83 | ,, | " | | 93 | |
| ९ . ९×५.५ | १३ | 80 | " | ,, | १⊏३९ | ; ; | वै० सि० कौ० टीका । |
| 8.8X ὲ. ο১ | 5 | ३७ | " | ,, | १७६६ | पूर | पष्टाध्यायान्तः । |
| ۳.4×۶ . 8 | ९ | २३ | ,, | ,, | 000- | 3,7 | afaanasmean) |
| 1 (110 0 | , | 74 | | | १९१= | ,, | तद्धितप्रकरणान्तम् । |
| १०•३×५ | १० | ३७ | ,, | ,, | | अपू० | |
| ९·६×४•३ | ११ | 30 | ,, | ۰,۰ | १७७६ | पूर | कुद्न्तप्रकरणम् । |
| ९'५x४'४ | १३ | ४० | ,, | ,, | | अपू० | |

| | | | | |
|-------------|---------------|----------------------------|---------------------------|---------------------------------|
| | क्रमसंख्या | प्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
| | ३९१९७ | सारस्वतम् | | १९-५= । |
| | ३९१९⊏ | 55 | अनुभूतिस्वरू- पाचार्थः | १-४७ । |
| | ३९१९९ | सिद्धान्तचन्द्रिका | | १२-३ं३ । |
| | ३९२०० | ,, | रामभद्राश्रमः | १-३० । |
| | ३९२०१ | " | ,, | १-१६। |
| | ३९२०२ | 33 | | ŧ١ |
| | ३९२०३ | 79 | रामाश्रयः | १-२०। |
| | ३९२०४ | ,, | | १-१८ । |
| | ३९२०५ | प्राकृतच िद्रका | श्रीकृष्ण: | १-१२ । |
| | ३९२ ०६ | कातन्त्रवृत्तिटीका | | १-१२+१, १-४, २ - ४+६ । |
| | ३९२०७ | सारस्वतं सभाष्यम् | | ४-४५+१२, ५८-८१ । |
| | ३९२०८ | सारस्वतं सटीकम् | | ३-१४ । |
| | ३९२०९ | कात न् त्रवृत्तिः | दुर्गसिंह: | १-⊏३, ⊏३-१४४, १४४-१५⊏, १५⊏-१६७। |
| | ३९२१० | " | 59 | १-१२२ । |
| | ३९२१ १ | ינ | ,,, | १-१३ । |
| | ३९२१२ | सारस्वतम् | <u> </u> | ३०-१ः५ । |
| • | ३९२१३ | कातन्त्रपरिशिष्टवृत्तिः | श्रीपतिदत्तः | १-१२० = (१२१)-१२६+१, १२८-१५०। |
| e | ३९२१४ | कातन्त्रवृत्तिपश्चिका - | त्रिलोचनदासः | १-३, १+२। |
| | ३९२ १५ | ,, | " | १-३२, ३४-१००, १०२-१६३ । |
| | | | | |
| | 30208 | धातुपाठः | | ५-३४+१ । |
| | İ | ्रियोगसारः प्रयोगसारः | वारुडशर्मा | १-११ । |
| | | | | 1 |

| आकार: | पङ्कि- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधार: | लिपिकाल: | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विरोपविचरणम् |
|------------------------------------|------------------|------------------|--------|----------|----------|------------------------|-------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| ९.8×९.ई | ११ | ३२ | दे.ना | का. | १७७७ | अपू० | 1 |
| ς× ફ .⊏ | १० | ३४ | ,, | ,, | | पू० | आख्यातप्रक्रियामात्रम्। |
| ११·१×४.0 | १२ | ४६ | ,, | " | | अपू० | 23 |
| ११•३×४ • ७ | १२ | ४६ | ,, | ,, | | प्० | तद्धितप्रक्रियान्ता । |
| ११•१×४·४ | ११ | ४१ | ,, | `>> | १७११ | ,, | कुद्न्तप्रकरणम् । |
| १० · ६×४·६ | Ę | २६ | ,, | ,, | | अपू० | |
| ९·५×३·९ | १० | ૨હ | " | ,, | १७२७ | पू० | कृद्न्तप्रकरणम् । |
| १४·३×५·४ | 5 | ४३ | ,, | , | | ,, | तद्धितप्रक्रियान्ता । |
| १२.५×४.५ | ९ | ફ્લ | 77 | ,, | १९०४ | ,, | स्याद्यन्तप्रकाशान्ता । प्राकृतकारिके- तिनामान्तरम् । |
| १६.८×३.६ | 8 | 88 | বঙ্গ | " | | अपू० | टीका-पञ्जिकाभिन्ना । |
| \$0.0×3.≃ | v | ४१ | ,, | ,, | | " | |
| ⊏.0×8. ડ | १२ | ३९ | दे.ना | ,, | | ** | पृष्ठैकदेशे 'टी० लघु' इति लिखित- मस्ति । |
| १४•६×३•१ | 8 | ३१ | वङ्गः | ,, | | पू० | कुत्प्रकरणम्। |
| १७×३•६ | 8 | ३६ | ** | " | | 73 | आख्यातप्रकरणम् । |
| १६ [.] ८×३•६ | 8 | ५१ | " | " | | 3 3 | आख्याते रुचादिवृत्तिः। |
| १४°२×३°५ | Ę | 80 | " | " | | अपृ० | सुवन्ततिङन्तभागौ । |
| १६·६×३·२ | 8 | ५४ | ,, | ,, | श० १६४८ | पू०* | समासप्रकरणान्ता । |
| १७×३•७ | 5 | હ્યુ | " | 23 | | अपू0 | आख्यातप्रकरणम् । |
| १७ ⁻ ५×३ ⁻ ५ | Ę | ५२ | ,, | 37 | | पू०* ु | आख्यातप्रकरणस्य ३३, १०१ पत्रा- ङ्कयोरभावेऽपि पूर्वापरपङ्क्त्योरे- कवाक्यत्वात्पुस्तकं पूर्ण ज्ञायते । |
| १३.¤×१.४ | २ | ३४ | ,, | ता.प. | | अपू॰ | (|
| १०४५•२ | १२ | ,\$C | दे.ना. | का. | | do. | |

| | कमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्या _{वि} दर्गम् |
|----------------|-----------|-------------------------------|---------------------------|--------------------------------------------|
| | ३९२१⊏ | मध्यसिद्धान्तकौमुदी | | १-७२+१ । |
| | ३९२१९ | प्रयोगवि वे कसङ्ग्रहः | वररुचि: | १-१२ । |
| | ३९२२० | अनिट्कारिका | • | १-५। |
| | ३९२२१ | वैयाकरणभूषणसारः | कोण्डभट्ट : | १-२४० । |
| | ३९२२२ | महाभाष्यं सटीकम् . | पतञ्जलिः टी० का० कैयटः | १-१६, १६-२० । |
| | ३९२२३ | " |)) | १५६-१६७, १८७-१८८ । |
| | ३९२२४ | शब्दरूपावली सटिप्पणा | | १-११ । |
| | ३९२२५ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | | २४४, २४६-२४७, २४९-२५२, २५४-२५५। |
| | ३९२२६ | • » | | १, ५-५९। |
| | ३९२२७ | वैयाकरणसिद्धान्तलघुमञ्जूषा | नागेशः | १-१०३, १०५, १०५-१६३+१, १६४- २९०+१। |
| | ३९२२८ | लघुशब्द्रत्नम् | | १-१६ = (१७), १८ = (१९)। |
| | ३९२२९ | प्रौ ढमनोरमा | | २। |
| | ३९२३० | वैयाकरणसिद्धान्तलघुमञ्जूषा | | १-६। |
| . ₁ | ३९२३१ | ं वै० सि० लघुमञ्जूषा सटीका | | १-१०४। |
| | ३९२३२ | लघुशब्दरत्नम् | | 8-88 1 |
| | ३९२३३ | लघुशब्देन्दुरोखरः | नागेशः | <u> </u> |
| ,/ | ्री ३९२३४ | ,, | ,,, | १-२८५। |
| | रेश्वर | " , | ,, | १-१३१ = (१३२), १३३-१६७ । |
| | ३९२३६ | " | 77 | १-३२ । |
| | ३९२३७ | " | " | १-९९ । |
| | ३९२३८ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | भट्टोजिदीक्षितः | १-२३९, २३९-२४२, २४५, २५६। |
| | ३९२३९ | ,, | " | २-१२, १४-द९, १०६-११८, १३३-१६४, १६६-१८२। |

| आकार। | पङ्कि- संख्या | ग्रभर- संख्या | िपे: | आयार: | लिपिकाल: | पूर्गीपूर्ण- विवेयः | विशेषविवर ण म् |
|-----------------------------------|------------------|------------------|--------|-------|-----------------|------------------------|---------------------------------------------------------------|
| ९•७×५·९ | ११ | ર૪ | दे.ना. | का. | | अर्० | |
| ९ [.] १×४ [.] २ | 9 | ३१ | " | " | | पू≎ | वररुचिकारिका वा,कारकादितद्धितान्ता। |
| ९×३·९ | v | ३२ | " | 23 | १६८४ | 3 • | |
| ९·९×४·२ | 8 | 80 | ,, | " | १८४८ | ,, | |
| १२' ⊏ ×8'⊏ | १० | ७१ | ,, | ,, | | 7 > | टीका-प्रदीपाख्या, अ० १ पा० ४, आ०२ मात्रमत्रपूर्णम् । |
| १४:२×५:५ | १२ | ६० | " | " | | अपू० | टीका-प्रदीपाख्या, ऋ०१, पा०२ आ०३। |
| ⊏.¤xź.¤ | <u>ت</u> | ३८ | ,, | ,, | १८८८ | पू॰ | टि॰-मराठीभाष्ट्रायाम् ।, |
| ९·३×३·९ | v | २६ | " | " | | अपू० | |
| ९•३×४·१ | v | २३ | ,, | ,, | | >= | |
| ९•९×५•२ | १३ | ४८ | ,, | " | १८८४ श. १७४९ | पू०* | कचित्संश्लिष्टपत्रेषु पत्राङ्काभावः पत्रसङ्ख्याङ्कने दोषः। |
| ९•९×४ २ | १२ | ४५ | ,, | ,; | | अपू॰ | वै० सि॰ कौ॰ टी॰ टीका। |
| १०.≃ × ८.० | ११ | 88 | ,, | 2, | | ** | वै० सिं० कौ० टीका । |
| १३'४×५'२ | 80 | ६७ | ,, | n | | ,,, | |
| १३·६×५·२ | 2 | ५३ | - 97 | 15 | | " | टीका-कुञ्जिकाख्या । |
| १० • ६x४'७ | १० | ३६ | ,, | ,, | | . ,, | वै० सि० कौ० टी० टीका। |
| ९·५x४·२ | १० | 80 | " | " | | पु० | स्वादिसन्ध्यन्तः। |
| ९'¤x४'२ | १० | . ३२ | , ,, | 33 | १८७५ | ,, | श्रजन्तादि द्विरुक्तप्रिक्रयान्तः। |
| १०×४'४ | 2 | ३१ | ,, | ,, | | "* | तिङन्तभागः। |
| ९·२×४·२ | 9 | 80 | , , ,, | " | | " | कृदन्तभागः। |
| १०"४x४"७ | ९ | Sa | , ,, | 77 | | " | उत्तराद्धमात्रम् । |
| ۶×۶•≂ | = | ३० | , ,, | " | | अपू० | तिङन्तकृदन्तभागौ । |
| ८×८ | 5 | ३ः | ۳ ا | . " | | ,, | सुवन्तभागः,।ः |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | - श्रन्थकारना म | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---------------|-----------------------------------|------------------------|-----------------------------------|
| ३९२४० | वैयाकरणसिद्धान्तकोमुदी | भट्टोजिदीक्षितः | २००-२०६ । |
| ३९२४१ | सरूपाणामेकशेष इतिसूत्र- विचारः | | १-६ । |
| ३९२४२ | समासचक्रम् | | १-३ । |
| ३९२४३ | ,, | | ३, ५, ६, ८, ९+१ । |
| ३९२४४ | 9 7 | | १-१२ । |
| ३९२४५ | षट्कारकप्रकिया | | २-=+१ } |
| ३९२ ४६ | शब्दकौरतुभटोका | | २-४५ । |
| ३९२४७ | लघुशब्दे- <u>दु</u> शेखरटीका | | ४ । (गणनया) |
| ३९२४⊏ | शब्दरूपाणि | . | . १-१६ । |
| ३९२४९ | 23 | | २। (गणनया) |
| ३९२५० | ^{प्रहर्} दकींस्तुभः | भट्टोजिदीचितः | २-२० । |
| ३५२५१ | 33 | 13 | २५ । (गणनया) |
| ३९२५२ | ,, | *> | २१-३०। |
| ३९२५३ | ,, | " | ९२ । (गणनया) |
| ३९२५४ | 79 | ,, | १०-२५ । |
| ३९२५५ | " | " | १-५, ७-९, १४-१६, १८-२६, ३८-४३,४३। |
| ३९२५६ | " | ** | २७। (गणनया) |
| ३९२५७ | " | " | ४-३४, ३४-४१, ४३-७१ । |
| ३९२५= | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी टीका | | २। (गणनया) |
| ३९२५९ | लघुश ब्द्रत्नम् | | ११-१०४ । |
| ३९२६० | भाषावृत्त्यर्थेविवृत्तिः | सृष्टिधरशर्मा | ७-३०, १-१⊏, १-२१, १९-२४ । |

| आकारः | पङ्कि- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | भाषारः | लिपिकाल: | पूर्णापूर्ण- विवेकः | - विशेषविवरणम् |
|---------------------------|------------------|------------------|------------|------------|----------|------------------------|------------------------------------------------------------|
| ¤,¤x8,{ | १० | २५ | दे.ना | काः | | अपू० | समासाश्रयप्रकरणम् । |
| ९ ∙ ३ × ३∙१ | ११ | ५३ | " | 22 | | पू० | |
| ૧·૪×૪૧૨ ં | હ | २० | 23 | ນ | | अपू० | |
| ५ <u>•७</u> | 4 | १४ | 1 , | 3:9 | १८९८ | ,, | |
| ट. ई ×ई.ट | Ę | २५ | ,, | . » | | पू० | |
| १०'१×४'२ | 9 | 24 | ,, | N | | अपू० | |
| ९:३×४:२ ् | 9 | ३५ | ** | " | | ,, | अष्टाध्यायी टी॰ टीका । विषमव्या- स्यायां नवममाह्निकम् । |
| १० . ८×४.५ | १० | ३९ | ,, | ,, | | ,, | अद्याध्यायीटीका । |
| ニルメS | 9 | २० | " | 22 | | पू० | |
| ς.⁄ο×ફ.⁄≃ | v | २३ | 32 | >> | | अपू० | |
| ९ <i>′</i> =x8 ° २ | १० | ४२ | ,, | 7,3 | | 23 | अष्टाध्यायीटीका । |
| ९•६×४·२ | و | ২০ | ,, | 77 | } | R / | " |
| ९ . ६×४.४ | १० | ३२ | ,, | 29 | | " | "अ०१पाः १ आ०५। |
| ≃\$×88 | १० | ३० | ,, | ,, | | ,, | अष्टाध्यायीटीका । पत्राणि कीट- मक्षितानि । |
| ९'५×४'२ | १० | ३९ | ,, | ,, | | 34 | अष्टाध्यायीटीका । |
| ७.≃×८.५ | १३ | ५० | ,, | ,, | | ,, | " |
| १० . १×8.₹ | १० | ३५ | ,, | ,, | | ,, | 1: |
| ९:३×३ ९ | 5 | ४२ | ,, | 23 | | ,, | 5* |
| ११•३×४•३ | १३ | ષ્ટર | मै. | ,, | | 24 | संज्ञाप्रकरणम् । |
| १०·६×४:= | ११ | ३२ | दे.ना. | 7 9 | | 73 | मैं० सि॰ कौ॰ टी॰ टी॰ । |
| १४.६×ई.ई | Ę | 40 | वङ्ग | " | | n | |

| क्रमसंख्या | भ्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-------------------------------------------|---------------------|------------------------------------|
| ३९२६१ | शब्दकौस्तुभ: | भट्टोजिभट्टः | १-३, १-५ + १, ६-३०, ३९, ६९-७०+१ । |
| ३९२६२ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | | ८ । (गणनया) |
| ३९२६३ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी टीका | | १-२, ४-५, ३-४, २-३, ५-६+४ । |
| ३९२६४ | शब्दकौस्तुभः | भट्टोजिभट्टः | १-४३+१, १-१⊏, १-२१⊹१। . |
| ३९२६५ | बैयाकरण[सद्धान्तक]मुदी | | १-५, ७-१४, १६। |
| ३९२६६ | शब्दकौस्तुभः | | १-१३+१ । |
| ३९२६७ | " | | ४५। (गणनया) |
| ३९२६⊏ | 39 | भट्टोजिभट्टः | १-२९, १-२९, ३१, १-७३, ७६-⊏३, १-६⊏। |
| ३९२६९ | वाक्यप्रकाशसूचं सटिप्पणम् | हपे: | १-६ । |
| ३९२७० | शब्दशोभा | नीलकण्ठः | १-२७ । |
| ३९२७१ | शब्दलक्षणम् | वररुचिः | १-⊏ 1 |
| ३९२७२ | परिभाषापाठः | | १-७ । |
| ३९२७३ | रुलोकयोजनिकोपायः | | १-६+१, प्१९ । |
| ३९२७४ | वैयाकरणभूषणसार व्या ख्या | | १। |
| ३९२७५ | शन्दकौस्तुभटीका | नारायणदीक्षितः | १-⊏४ । |
| ३९२७६ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी टीका | | २-११। |
| ३९२८७ | शब्दकौस्तुभटीका | | १-१६ । |
| ३९२७= | समासविचारः | हरिः | १-१२ । |
| ३९२७९ | वैयाकरणसिद्धान्तकौ मु दी विलासः | | 80 1 |
| ३९२८ | तकेचन्द्रिका | श्रीकृष्णभट्टः | १-३६। |

| | पङ्गि- | अक्षर- | | F | | पूर्णापूर्ण- | िकोम्मी व्यक्त |
|------------------------------------|--------|------------|---------|------------|------------------------|--------------|-----------------------------------------------------|
| थाकार ः | संख्या | सं ख्या | लिपिः | आयारः | लिपिकालः | विवेकः | विशेषविवर्णम् |
| ९.8×8.4 | ٦ ا | ૪ 4 | दे.ना. | का. | | अपू० | अद्याध्यायीटीका अ० १, पा० १ आ० १, ८-९ । |
| ११•४×४•२ | ९ | ४० | मै॰ | >> | | ,, | तद्धितप्रकरणम् । |
| ११.५×४.३ | १२ | ४१ | " | " | | ,, | कारकप्रकरणस्य । |
| १२·५×५·१ | १० | ५६ | दे. ना. | " | | पू०* | । । । अ॰ १, पा॰ १, आ॰ १–४। |
| १२×४•१ | १० | ३७ | मै॰ | " | • | अपू० | सन्धिप्रकरणम् । |
| ९ •७x४ • ३ | १० | ४१ | दे. ना | 23 | | ,, | प्रथमाध्यायस्य प्रथमपादे पद्याह्निकम्। |
| ९७x४'२ | 9 | ३४ | 23 | ,, | | ٠ ,, | |
| ९·२×४°१ | 5 | 88 | " | 93 | | ,, | अ० १, पा० १, आ० ३-९। |
| १०.४×८.५ | ११ | ३७ | " | 33 | र० का० १५०७ | ,, | |
| ११ [.] ९×४ [.] २ | K | ५० | " | 93 | १¤३¤ र० का० १६२३ | पू॰ | · |
| १०•६×४·५ | 9 | ४१ | " | " | | 77 | तद्धितक्रंदिन्तर्स्वीप्रत्ययेसॅन्धिप्रकर- णानि । |
| ६.७×इ.५ | و | २५ | 23 | ,, | | ,, | |
| ६-६×४-१ | 9 | २१ | " | " | | पू०* | कारकसमासवृत्तिविचारश्च । |
| ९•१×४·६ | २४ | 80 | ,, | 53 | | अपू० | |
| ९•३×४·२ | १४ | २६ | " | 33 | | ,, | अष्टाध्यायी टी० टी०, श्र० ३। |
| १३×४'¤ | १५ | હર | " |)) | | >> | अजन्तपुंतिङ्गग्रकरणस्य । |
| ९ . ०×८.ई | १० | ३ १ | ,, | 93 | | n | अद्याध्यायी टीका,अ०१,पा०१,च्रा०४। |
| १० [.] १×४•६ | १६ | ४७ | ,, | ,, | | पू० | |
| ९.≃×8.४ | १० | ३५ |) >> | "; | | अपू० | |
| <u>९•७x४:२</u> १७ | ११ | ३९ | ,, | " | | ,, | |

| | क मसं ख्या | प्रन्थनाम | अन्थकारनाम | पन्नसं ख्याविवरणम् पन्नसं ख्याविवरणम् |
|---|-------------------|----------------------------|--------------------|----------------------------------------------------------------------------------------|
| | ३९२८१ | तत्त्वबोधिनी | | १-१२ । |
| | ३९२८२ | ·· » | | १४०-१४५ । |
| | ३९२⊏३ | ,,, | | १२८-१२९ । |
| | ३९२⊏४ | गणपाठः | ् रामङ्ख्यः | १-१९ । |
| | ३९२८५ | 2 9 | | २-३ १। |
| | ३९२⊏६ | कौमुदीविलासः | भास्करः | १-३१ । |
| | ३९२८७ | महाभाष्यप्रदीपोद्योतः | नागेशः | १-२८, १-१७, १९-२० । |
| | ३९२८८ | तर्केचन्द्रिका | केश्वीस्त्रदः 🛴 | १-३२ |
| | ३९२८९ | 33 | >> | ३, ५-५१ । |
| | ३९२९० | — स्कृति तरः | | १-११ I |
| | 392.1 | ्वयाकरणसिद्धान्तकोमुदी | भट्टोजिदीक्षितः | १-७६, १-४१, १-४४+१, ४५-≂१, १-१२२, १२२-१५४, १-७९ । |
| | ३९२९२ | सिद्धान्तचन्द्रिका | | १-४२+१ । |
| | ३९२९३ | प्रयोगसार <u>ः</u> | वारुडः | १-१६ । |
| • | ३९२९४ | समासचक्रम् | | ७-११ । |
| | ३९२९५ | 79 | | 2-81 |
| | ३९२९६ | ,, | • | 8-01 |
| | ३९२९७ | सुबोधिनी | जयकृष्णः | १-१८। |
| | ३९२९⊏ | तत्त्ववोधिनी | ज्ञानेन्द्रसरस्वती | १-९२, ९४-१४९, १-११६। |
| | ₹ <i>९२९९</i> | 19 | " | १-५६, ५८-६८(=६९) ७०-७६ (=१), ७६(=२),७६ (=३), ७७-१०३, १०३- १०५, १०५-११४, ११४-१३८। |
| | ३९३०० | 27 | 29 | १-६७, ६७-११९, ११९-१२२। |

| भाकारः | पङ्कि- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | भाभार: | लिपिकालः | पूर्णीपूर्ण- विवेक: | विशेषविवरणम् |
|----------------------------|--------------------|------------------|--------|------------|----------------------|------------------------|------------------------------------------------------------|
| द:६ × ३:५ | v | ३१ | दे.ना. | का. | | अपू० | वै० सि० कौ० टीका । 🥊 |
| ९.4×8.8 | v | २६ | " | ,, | | " | |
| ९ · ४× ४ ·३ | १४ | ३६ | × | " | | " | हत्तन्तपुँहिङ्गस्य सामन्त्रितमित्यादि (५५२) सूत्रटीका । |
| १२·२×४·९ | १० | ४८ | 23 | 23 | • | पू० | अष्टमोऽध्यायः । |
| ९·९×३·१ | 3 | ३६ | 23 | " | | अपू० | अ० ४-५ । |
| <i>ς.ω</i> × <i>8.ς</i> | १२ | ४३ | 20 | " | : | " | चै० सि० कौ० टी० । |
| १२·६×५ | ११ | 88 | ,, | " | | ,, | अ०१, पा०१, आ०२-३। |
| १० <i>-</i> ६x४:७ | ११ | ४३ | ,, | ,, | | ,, | |
| १०-१×४-४ | १० | ४१ | ,, | " | | " | |
| ९ . ४×४.४ | હ | ३६ | ,, | ,, | | पू० | कारिकारूपेण । |
| १०×४'४ | ११ | ३५ | " | 5 3 | १ ⊏९१ १⊏९४ | 37 <u>s</u> e | |
| १० '२ ×४'२ | १० | ३२ | ,, | ٠, | | अर् | आदितस्तद्धितांशा । |
| ९·१×३ ः ⊏ | \ \mathred{\cdots} | ३० | ,, | ,, | | पृ० | कृत्पटत्तः । |
| ९. ३ x५ | १० | २५ | ,, | " | | अपू० | |
| ς <i>`</i> ωχ३' <i>`</i> ω | ९ | ४२ | ,, | " | | पूэ | प्रयोगविचारश्च । |
| ९×४ [.] १ | = | २५ | ,, | ,, | | ,, | , |
| १३·२×·५ | १२ | હુર | ,, | H | | ,, | वै |
| १३ १×५ [.] १ | ११ | ४६ | " | " | | 4* | वै० सि० कौ० टीका । तिङन्त प्रकरणं कृद्न्तप्रकरणञ्ज । |
| १२×४'५ | ११ | 80 | 77 | ;; | १७७३ | अपू० | बै॰ सि॰ कौ॰ टीका । तिङन्तप्रकरणम् । |
| १२×४ [,] ६ | ११ | ४३ | ,, | ,, | १७७७ | पू०÷ | वै०सि०कौ०टी० । कृद्न्तप्रकरणम् । |

| | कमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्ररांख्याविवरणम् |
|---|----------|---------------------------------|------------------|----------------------------------------------------|
| | ३९३०१ | सुवोधिनी | जयकुष्णः | १४-६६ । |
| | ३९३०२ | " | ,, | १-११, १२(=१३), १४-५५ । |
| | ३९३०३ | 13 | , | १-२, १-१⊏। |
| | ३९३०४ | रह्मार्णेवः | कृष्णमित्रः | १-५, ६-६७, १-१४ (=१५), ६२-६५ (= ६६-६७), ६६-९६ । |
| | ३९३०५ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी सटीका | | १२९-१५४। |
| • | ३९३०६ | अन्ययार्थनिरूपणम् | | 181 |
| | ३९३०७ | वैयाकरणसिद्धान्तक <u>ौमु</u> दी | भट्टोजिदीक्षितः | १-७१(= ७२), ७३-१२१(= १२२), १२३-२१६, १-२९६। |
| | ३९३०ट | त्रिपथगा | | २, ३७-४३, ५९-६१। |
| | ३९३०९ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | | १-१० । |
| | ३९३१० | ,, | | ५५-७६, ८७-१२७। |
| | ३९३११ | ,, | भट्टोजिदीच्चितः | २-२९, ३४-४६, ४६-५०, ५३-५६। |
| | ३९३१ | र उणादि पाठः | | १-८ । |
| | ३९३१ | घातुपा ठः | | १-१७ । |
| | ३९३११ | सारस्वतम् | | 2-481 |
| | ३९३१ | सारस्वतटिप्पणम् | क्षेमेन्द्रसूरिः | २-३५, ३९, ४०-६४। |
| | ३९३१ | ६ प्रक्रियाकौसुदी | | २-४९ । |
| | ३९३१ | असारस्वतम् | नरेन्द्रपुरी | ३०-३७, ३९-६७, ६९-७१, ७३-८८-। |
| | ३९३१ | मध्यसिद्धान्तकौमुदी | | १-१४ । |
| | ३९३१ | ९ गणपाठः | | १-२४, २४+१, २५ । |
| | ३९३२ | े सारस्वतसूत्रपाठः | | १-८ । |
| , | ं ३९३२ | .१ घातुपाठः | | २-१८ । |

| आकार: | पङ्कि- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधार: | लिपिकाल: | पूर्णापूर्ण- विवेक: | विशेषविवरणम् |
|-------------------------------------|------------------|------------------|------------|-------|-----------------|------------------------|------------------------------------------------|
| १०•६×४•६ | ९ | ઝ ५ | दे.ना | का. | | अपू० | वै० सि० कौ० व्याख्या । स्वरप्रकरणम् । |
| १०'¤x४'५ | ९ | २६ | ,, | " | | पृ०* | वै० सि० कौ० व्याख्या । वैदिकप्रकरणमात्रम् । |
| १० : ⊏x৪:७ | 9 | ४५ | " | ,, | | अपू0 | स्वरप्रकरणम् । |
| १०:९×४ | 2 | ५१ |) | ,, | | ** | चै० सि० को० टीका I |
| १२•३×५•१ | ११ | ६४ | ,, | ,, | | ,,, | टीका-तत्त्ववोधिनी । कारकसमासप्रकरणे । |
| ११•¤×५·६ | १= | ३२ | ,, | ,, | | ,, | |
| ९ • ५×४ [.] १ | 5 | ३९ | ,, . | ,, | १९३९ | पू०* | |
| ९'⊏x४'५ | १२ | 80 | ,, | ,, | | अपू० | परिभाषेन्दुशेखरटीका । |
| ९·२×४·२ | १२ | ४= | ,, | ., | | पू० | प्रारम्भतस्त्वादिसम्ब्यन्ता । |
| ·११ [.] २×४ [.] २ | ११ | ५४ | | ,, | | अपू० | |
| ९·९×३·९ | १४ | ₹≒ | ,, | ,, | | ,, | उत्तरार्द्धम् । |
| E'EX3'6 | ११ | રૂદ્ | ٠, | ٠, | १७९९ | पूर | |
| ۵۰۶×۹۰۰ | १० | ३० | , ,, | ,, | | " | • |
| ९•२×४ | = | २९ | ,,, | " | | अपू० | त्द्धितप्रक्रियान्तम् । |
| ⊏ .δ×გ. ξ | 0 | २९ | , ,, | ,, | १६९२ श. १५५= | ,, | - |
| ⊏X8 | 5 | २० | , " | 7,3 | 1 | " | सुवन्तभागः । |
| ⊏.α×á.δ | ३ | १९ | , , | ,, | B | ,, | |
| ९.५x४:२ | v | २६ | ,, | ,, | | ,, | तिङन्तभागः । |
| ⊏.6×\$.\$ | Ę | ર્ | , ,, | ,, | | ,, | |
| ७'२x३'२ | १० | 30 | 9 " | ,, | | पू० | |
| ११•२ × ४•५ | 5 | 38 | 3 11- | 23 | १७३५ | अपृ० | · |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-------------------------|------------------------|-------------------------|
| ३९३२२ | मध्यसिद्धान्तकौमुदी | वरदराजः | १८ । (गणनया) |
| ३९३२३ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | | १-१५ । |
| ३९३२४ | " | | १-९ । |
| ३९३२५ | ,, | | १-११ । |
| ३९३२६ | मध्यसिद्धान्तकोमुदी | | १०-७० |
| ३९३२७ | परिभाषापाठः | | १, ३, ४ । |
| ३९३२⊏ | 27 | पाणिनिः | १-३ । |
| ३९३२९ | कातन्त्रवृत्तिटीका | | १-३, ३, +२, १-४। |
| ३९३३० | कलापचन्द्रः | सुषेणाचार्य कविराजः | १-८८, ८८-१४४, १४४-१८० । |
| ३९३३१ | पाद्मव्याकरणम् | पद्मनाभः | १-१७ । |
| ३९३३२ | कातन्त्रवृत्तिः | दुर्गसंहः | १-२० । |
| ३९३३३ | कातन्त्रवृत्तिपश्चिका | त्रिलोचनदासः | १-२५ । |
| ३९३३४ | कातन्त्रवृत्तिविवरणम् | · | १-३४ । |
| ३९३३५ | ,, | | ३०-६८ |
| ३९३३६ | कातन्त्रवृत्तिपश्चिका | | १-४, ७ । |
| ३९३३७ | धातुपाठः | | १-३६ । |
| ३९३३८ | प्रसिद्धपद्बोधः | भरतसेनः | २-=४ । |
| ३९३३९ | वैयाकरणभूषणसा रः | Cse | १-७ ! |
| ३९३४० | मुग्धबोधटीका | | १-९ । |
| 1 | कातन्त्रसूत्रम् | | १-२ । |
| ३९३४ः | सुग्धबोधः | , . | 8-01 |

| माकारः | पङ्कि- संख्या | जहार- संख्या | लिपिः | आवारः | ति पिकालः | पूर्णापूर्ण- चिचेकः | विशेषविवरणम् |
|------------------------------------|------------------|-----------------|--------|-------|--------------------|------------------------|---------------------------------------------|
| ११×४·६ | १२ | ३५ | दे. ना | का. | | अपू० | सुवन्तभागः । |
| ११.५×४.८ | ९' | ३९ | ,, | " | | ,, | तिष्टन्तभागः। |
| १०'द्र×३'९ | હ | 30 | ,, | >> | | " | मुनित्रयमित्य।रभ्य प्रादृहो० इत्यन्ता। |
| ≈.\$×\$.8 | ¤ | २० | 33 | >> | | ** | आदितो होतृकारपर्व्यन्ता । |
| פיקאפים | १० | ४३ | 39 | ,, | | ,, | |
| ='8x3'= | १२ | ३१ | ,, | " | | ,, | तन्मृतभूतसृत्राण्यपि । |
| ९ . ८४% । | १० | ४० | ,, | 35 | १७४४ | đo | शान्तनवाचार्य्यकृतानि फिट्- सृत्राणि च । |
| १४ [.] ३×३ [.] २ | 5 | ५७ | वङ्ग- | ** | | अपृ० | |
| १७४३-= | Ę | ६५ | ,, | " | : | 23 | कातन्त्रयृत्तिटीका । |
| १३×३•= | હ | ધર | " | 1; | | पृ० | प्रथमाध्याय: । |
| १३.0×3.8 | Ę | ४० | " | Ħ | : | " | सन्धी पद्धमपादान्ता । |
| १३.८×३.० | \$ | Ęο | 35 | " | बङ्गाब्दाः १२⊏९ | ,, |) 3 |
| \$\$.¤× \$.€ | 4 | ३९ | ., | 13 | बङ्गान्दाः १२८⊏ | 20 | अन्ययीभावादेः । |
| 48.8×4.0 | = | લલ | 21 | 95 | | अपृ० | कारकसमासप्रकरणे । |
| 3≃× ₹.δ | ધ | ५८ | >> | " | | " | |
| \$4.0x8.4 | 4 | ২৩ | " | " | | पू० | कातन्त्रानुसारी । |
| १३×३·७ | 3 | ३२ | ,, | ,, | चङ्गाच्दाः १२६९ | अपूर | |
| १३×५•१ | १२ | 80 | 33 | " | | " | |
| १३ . ७×३•६ | v | 8= | 24 | " | | ,, | कारकप्रकरणस्य । |
| १४:२×३·१ | Ę | ४९ | " | >> | | पू० | कृदन्ते पष्टपादः। |
| १३•२×३·¤ | Ę | ३४ | 77 | " | - | अपू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्यकारनाम | पत्रसंख्याविवरणस् |
|------------|------------------------------------------|--------------------|----------------------------------------------------------------------------|
| ३९३४३ | मुग्धबोधः | | १-२७। |
| ३९३४४ | तत्त्ववोधिनी | ज्ञानेन्द्रसरस्वती | १-१११, १'११-१९१, १९१-३०१(= २७८) २७९-३२२, ३२४-३२६, ३३२-४५०, ४५१-४५२ । |
| ३९३४५ | सुबोधिनी | जयकृष्ण: | १-३५ । |
| ३९३४६ | धातुपाठः | | १-१६ । |
| ३९३४७ | शब्दरूपावली | | १-३ । |
| ३९३४≂ | सारस्वतरूपमाला | | १-२४ । |
| ३९३४९ | त्तघुशब्देन्दुशेखरव्याख्या | शङ्करः | १-४० । |
| ३९३५० | त्तघुशब्देन्दुशेखरटीका | | १-१७ । |
| ३९३५१ | प्रत्ययप्रहणे यस्मादिति परिभाषाविचारः | | १-१३ । |
| ३९३५२ | त्रिपथगा · | | १-२६। |
| ३९३५३ | गद्ा | वैद्यनाथपायगुण्डेः | १-१४ । |
| ३९३५४ | परिभाषाभास्करः | भास्करः | १-७५ । |
| ३९३५५ | वैयाकरणभूषणसारविवृतिः | रुद्र नाथः | १-१४, १-७५ । |
| ३९३५६ | वैयाकरणभूपणसार टीका | | १-७, १-३ । |
| ३९३५७ | वैयाकरणसिद्धान्तलघुमञ्जूषा | नागेशः | १-९७ । |
| ३९३५= | महाभाष्यप्रदीपोद्योतः | ,, | १-२३, १-२९ । |
| ३९३५९ | 72 | 7.5 | १-१६, १६(= १७), १७-१४२। |
| ३९३६० | प्रवोधचन्द्रिका | वैजलभूपतिः | १-२१ । |
| ३९३६१ | कातन्त्रवृत्तिः | दुर्गसिंहः ृ | १-८० । |

| भाकार । | पङ्कि- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपि: | भाधारः | लिपिकाल: | पूर्णीपूर्ण- विवेक: | विशेषविवरणम् |
|------------------------------------|------------------|------------------|--------|--------|-----------------|------------------------|---------------------------------------------------------|
| १५ . ४×४.५ | Ę | ४७ | दे.ना. | का. | | अपू० | |
| ९ . ८×८.६ | ११ | 38 | ,, | " | | 33 | वै॰ सि॰ कौ॰ टी॰। पूर्वार्द्धमात्रम्। |
| | | | | | | | |
| १३·१×५·१ | १२ | ६६ | 99 | ** | | पू० | वै॰ सि॰ कौ॰ न्याख्या। स्वर- प्रकरणम्। |
| १०•४×४ : ⊏ | १० | ३⊏ | ,, | " | | अपू० | |
| द- ६ ×३•६ | ९ | २२ | ,, | " | | ,, | |
| ⊏'€x३'⊏ | ς | २० | ,, | 39 | | पू० | |
| ९:¤x४•५ | ९ | ४३ | " | >> | १९१४ | 33 | कारकप्रकरणस्य । |
| १०x४'५ | ९ | ३४ | n | 33 | | अपू० | वै० सि० कौ० टी० टीका। |
| ९:२x४:२ | v | ३७ | " | ,, | | पू० | |
| ९·૨×૪·૪ | 9 | ३७ | ,, | >> | | अपू० | परिभाषेन्दुशेखरटीका । अन्तिमपत्रं निरक्षरम् । |
| १०४४'३ | १० | ४० | 99 | 29 | | " | परिभाषेन्दुशेखरटीका । विवृतिः काशिकाचेतिनामान्तरम् । |
| ९•३×३·६ | v | ३९ | >> | 33 | | " | परिभाषाविचारात्मकः । |
| ९•५×४•१ | 9 | 88 | >+ | >> | | ,, | |
| ९. ६ ×४.३ | १० | 88 | ,, | 23 | | 55 | |
| १०.५×८.८ | ११ | 8८ | • | ,, | | ** | |
| १० • ৬x४ : २ | १४ | 40 | ,, | 19 | १⊏४५ श. १७१० | " | अ०१, पा०१, आ०६-८। |
| १० [.] ५×४ [.] ५ | १० | ३५ | 33 | ,, | | पू० | अ०२,पा०१,आ०१-३, ",,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,, |
| १०°२×⊏°१ | १२ | ₹? | " | ,, | १९०४ | ** | |
| १६.5×3.0 | ξ | 80 | ,, | " | १८१६ श. १६८० | 33 | आख्याते १-⊏ पादाः। |
| १८ | | | | | | | |

| | कमसं ए या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्यानिवरणम् |
|---|------------------|-------------------------------|--------------------------|-------------------------------------------------------------------------------------------|
| | ३९३६२ | अष्टाध्यायी | पाणिनिः | १-४७। |
| | ३९३६३ | कातन्त्रविवरणपश्चिका | त्रिलोचनदासः | १-१५५ । |
| | ३९३६४ | शब्दकौस्तुभः सटिप्पणः | भट्टोजिदीक्षितः | १-१४०, १५७-२०२,+२, २०५-२०७, १२८-१५४, १-७, १-९ । |
| i | ३९३६५ | काशिका | वामनः | १-३४,३४-६३,१-४९,१-१४ = (१५,१६) १७-१२०,१-२३,२३-९९,१-२४,२४-७९, १-९७,९७-१४⊏,१-९०,१-७७। |
| | ३९३६६ | प्रौ ढमनोरमा | | २-६=, ७२-७४, ७६-७७। |
| | ३९३६७ | सारसिद्धान्तकौमुदी | वरदराजभट्टः | १-२८ । |
| | ३९३६⊏ | सारस्वतम् | | १-५, ७-२६। |
| | ३९३६९ | शब्दार्थसारमञ्जरी | : | २-१७ । |
| | ३९३७० | सिद्धान्तचन्द्रिका | | १-२५ । |
| | ३९३७१ | अनिट्कारिका | | १-५ । |
| | ३९३७२ | सारस्वतसूत्रपाठः | | २-६। |
| | ३९३७३ | समासचक्रम् | जयरामः | १-६। |
| | ३९३७४ | समासवादः | ,, | १-१३ । |
| | ३९३७५ | महाभाष्यं सप्रदीपम् | पतअतिः प्र॰ का॰-कैयटः | ३९-९४, १-३५, १-३ = (४), ३९, १-५४, ५४, ५६-६४, १-१३५, १-११०, १-१००, १-१५२, १-१७२ । |
| | ३९३७६ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | भट्टोजिदीक्षितः | १-१००, १७९-३४२। |
| | ३९३७७ | परिभापापाठः | पाणिनिः | १-३। |
| | ३९३७= | गणपाठः | | १-२२ । |
| | ३९३७० | परिभाषापाठः | | ४। (गणनया) |
| | ३९३८० | डणादिसूत्रं सवृत्तिकम् | वृ० का० उज्ज्वलद्ताः | १-१२, १७-२६, २८-१०३ । |
| | ३९३८ | । तिङ्गानुशासनं सवृत्तिकम् | | २-२१। |

| आकारः | पङ्कि- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपि: | आधार: | लिपिकाल: | पूर्णापूर्ण- विवेकः | - विशेषविवरणम् |
|---------------------------|------------------|------------------|--------|-------|----------|------------------------|----------------------------|
| ११.१×8.≃ | १० | ३९ | दे. ना | का. | श. १५०४ | पृ० | |
| 80.6×\$.\$ | بة. | ષ્ઠેડ | 79 | " | १५६० | 7> | तद्धितपर्यन्ता । |
| १२·५×५ | 5 | ४१ | ,, | " | १८६४ | अपू० | अप्टाध्यायीटीका । |
| १०१४४४४१ | १० | ३७ | 99 | 33 | १६५० | पू०* | ,, |
| ९'¤×४'२ | r r | ३५ | ,, | ול | | अपूर | बै॰ सि॰ कौ॰ टीका । |
| ११×४-३ | १४ | ४० | 99 | 33 | | पू० | |
| 8.8×5 | 5 | ર્વ | 99 | ,, | | अपू० | |
| ९·६×४·९ | १२ | ४३ | 22 | 23 | • | " | षट्कारकविवेचनम् । |
| ११×४·१ | १० | २९ | ,, | 73 | | " | |
| ९ . १×८.५ | ९ | રૂપ | ,, | ,, | | पु० | |
| ९-३×४-१ | ९ | ३२ | " | >9 | | अपृ० | समासचकञ्च। |
| <.8 ≤×5.8 | १३ | ३५ | 99 | 24 | | 25 | समासतत्त्वमिति नामान्तरम्। |
| ς.exغ.δ | १२ | ૪ર | " | " | १६१४ | पृ० | |
| १२.8×६ | १३ | Ę٥ | ,, | 23 | १८८१ | अपृ० | |
| | | | | | | | |
| ११फ्×३.८ | ९ | ३९ | " | ". | | ** | |
| ११फ×३.८ | .5 | ३९ | " | " | | पृ० | |
| ९'=x३•५ | १० | ૪૦ | >> | >> | | 49 . | |
| ₽,2×\$.≥ | ११ | ३७ | " | " | | ११दुः | तन्मूलभूतसूत्राण्यपि । |
| ९.४×३.५ | 2 | ४० | 53 | " | १६७५ | अपू० | पुस्तके लिपिभेदः। |
| ९ ∙ ३×३ ∙ ≂ | ११ | રષ્ઠ | 33 | " | |)) | |

| क्रमसंख्या | घन्धनाम <mark>ं</mark> | श्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|----------------|--------------------------------|---------------------|-------------------------------------------------------------|
| ३९३८२ | डणादिसुत्रपा ठः | | १-⊏ । |
| ३९३८३ | कविकल्पद्रुमः | वोपदेवः | १२२ । |
| ३९३⊏४ | वैयाकरणसिद्धान्तलघुमञ्जूषा | नागेशः | १-४३, ४३-४४,४४(= १)४४(= २) ४५- ५१, ५१-५६ + २, ५७-३४० । |
| ३९३⊏५ | समासचूडामणिः | | १-२ । |
| ३९३८६ | धातुवृत्तिः | सायणः | १-५६। |
| ३९३८७ | शब्देन्दुशेखरटीका | | १-४६ । |
| ३९३८८ | शब्देन्दुशेखरदोषोद्धारः | मन्युदेवः | १-२७, (= २८), २८-४०, ४१-६१, ६१ । |
| ३९३⊏९ | महाभाष्यप्रदीपोद्योतः | नागोजिभट्टः | ५४-९= । |
| ३९३९० | शब्ददीपः | चिद्रूपः | १-२४+१ । |
| ३९३९१ | धातु पाठः | | १-१९ । |
| ३९३९२ | अद्यायी | | १-२ । |
| ३९३९३ | सभ्याभरणं सटीकम् | रामचन्द्रः | १-५०, =२-१६५, १९७-२०७ । |
| ३९३९४ | गजसूत्रविचारः | | २-६। |
| ३९३९५ | लघुश ब्दरल म् | हरिदीक्षित: | १, ३-२७, ३०-६०, ६२-६४, ६६-६८, ७०, ८८-१३३। |
| ३९३९६ | प्रौढमनोरमा | भट्टोजिदीक्षितः | १-४३, १-६९, १-५। |
| ३९३९७ | ,, | " | १५३-१८७, १९१-३०२, ८-१४६। |
| ३९३९= | वादसुधाकरः | कृष्णाचार्यः | १-२०। |
| ३९३९९ | परिभाषाभास्करः | भास्करः | १-४२। |
| ३९४०० | प्रकियाकौमुदी | | २, ३, ५-६३, ६५-७९। |
| ३९४०१ | धातुपाठः | | १-१० । |
| | मध्यसिद्धान्तकौमुदी | | २,३,५-७,१२-४६,१-३,४०-१२६,१-७। |

| <u>क्षाकारः</u> | पङ्कि- संस्था | अक्षर- संस्या | लिपिः | अपथार: | लिपिदालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|-------------------------------|------------------|------------------|--------|--------|--------------------|------------------------|-------------------------------------------------------------------|
| ९-६×४-२ | ९ | ३ = | दे.ना. | का. | १=५५ | पूर | |
| ९ ४×४ [,] २ | १० | ३९ | " | 22 | १६⊏९ | 33 | धातुपा ठ ञ्च । |
| ११•२×४:⊏ | 9 | 33 | ٠, | ,, | | 27 <u>±</u> | |
| ≅' & × ३' 8 | ९ | ४३ | " | ,, | श. १६== | 59 | |
| 8.ex3.e | १२ | ४= | >2 | >> | | अपू० | |
| ११'५×४७ | 9 | ३९ | ,, | " | | ,, | कारकप्रकरणस्य । |
| १०'७x४'६ | १३ | 33 | 71 | 73 | | 33 | |
| ११·१×४७ | ११ | 84 | н | ,, | | " | अ०१पा०१आ०२-४। |
| ९• ६ ×४•३ | 3 | ३३ | >> | " | | पूर% | |
| ९•६×४•२ | ९ | ইত | 22 | ** | १द्मद्भ स. १७१९ | 22 | |
| १०'२×३'⊏ | ११ | २९ | я | 23 | | 23 | |
| १०:२x४"५ | ९ | 80 | " | >> | | अपू० | |
| ११×४·६ | १२ | ४३ | ,, | " | | 28 | |
| १०.८×८.५ | 5 | ४२ | " | " | | >> | वै॰ सि॰ कौ॰ टी॰ टीका । |
| १२×५·६ | ११ | ३९ | >> | 59 | | Йo | वै॰ सि॰ कौ॰ टीका समर्थाधित इत्यारभ्य यावत्पूर्वाद्धेम्पूर्णा |
| ११.£×८ | = | ३७ | " | " | १७४९ | अपूर | बैं॰ सिं॰ कौं॰ टीका। |
| १०°चx४'३ | = | ३७ | 23 | 33 | | पू० | |
| १०४४५ | १३ | 88 | >> | " | | 33 | |
| ११.4×8.≃ | = | ४२ | " | " | | अपू० | |
| १३•५×५ | १२ | ५१ | " | " c | १८९५ | पू० | पाणिनीयः । |
| १०'१×४'५ | १२ | ३८ | ĸ | " | | अपू ० | |
| | 1 | <u> </u> |] | 1 | | | |

| | | | |
|----------|------------------------------------------|-----------------------------|------------------------------------------------------------|
| कमसंख्या | प्रन्थनाम | प्रन्थकारनाम | पन्नसं स्यानिवरणम् |
| ३९४०३ | अष्टाध्यायी | पाणिनिः | १-४३ । |
| ३९४०४ | घातुवृत्त <u>िः</u> | सायणाचार्यः | २-१८८, १९०-२५० । |
| ३९४०५ | " | " | ३०१-३०७, १-१९७ । |
| ३९४०६ | लघुशच्देन्दुशेखरः | नागेशः | १ + १, २-४१७, १-२४६ । |
| ३९४०७ | त्तिटि धातोरनभ्यासस्येति- सूत्रविचारः | | १। |
| ३९४०८ | न्यायार्थेमञ्जूषा | हेमहंसगणिः | १-५२ । |
| ३९४०९ | शब्दरूपावली | | ३-⊏ |
| ३९४१० | अन्ययपाठः | | १-३ । |
| ३९४११ | शब्द्रूपावली | | १-३१ । |
| ३९४१२ | डणादिसूत्रं स वृत्तिकम् | वृत्तिकारः उज्ज्वलद्त्तः | १-दरे, दर-१०७ । |
| ३९४१३ | विभक्त्यर्थनिर्णयः | कृष्णम्भट्टमौनी | १-२, १-२१+१। |
| ३९४१४ | उणादिसूत्रपाठः | | १-७ । |
| ३९४१५ | कारकवाद: | रत्नपाणिः | १-९ । |
| ३९४१६ | ल्घुश च्देन्दुशे खरः | नागेशभट्टः | ३१-२११, १-१०५, ८७-८९, ६०-६८, ९९-१५३, १-७५, १-३०, १-५९ । |
| ३९४१७ | लघुद्पेण: | हॅरिवहाभ: | ३-१९४ । |
| ३९४१⊏ | रप्रलाहारखण्डनम् | वैद्यनाथपायगुण्डेः | १-४२ । |
| ३९४१९ | स्फोटचन्द्रिका | कृष्णम्भट्टमौनी | १-२, ४-७, ९, ११-१४। |
| ३९४२० | अनिद्कारिका सटीका | · | १-२ । |
| ३९४२१ | च्याकरणग्रन्थविशेष: | | द-१५, १७-३०, ३२-३३ । |
| ३९४२२ | शाब्दिकाभरणम् | | २-५३, ५५-११० । |
| ३९४२३ | अष्टाध्यायी | पाणिनिः | १-२१, २३-⊏३ । |
| 1 | <u> </u> | <u> </u> | |

| भाकारः | पङ्कि- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपि: | आधार: | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|-------------------|------------------|------------------|------------|----------|----------|------------------------|---------------------------------------------------------|
| ११•७×५ | १२ | ५० | दे.ना. | का. | | पू० | |
| १०•७×३•६ | = | ४१ | 99 | " | | अपू० | माधवीया । |
| ११×४•३ | १० | 8= | ,, | ,, | | >> | ,, . |
| १३×५ | ९ | ३७ | ,, | ,, | १९०९ | पू०* | वै० सि० कौ॰ टीका। प्रारम्भे टिप्पनछा। |
| ९·६×४·३ | ११ | ४५ | " | ,, | | अपू० | |
| १०.४×८ | १७ | ५१ | ,, | 79 | १५१५ | पू० | हेमचन्द्रव्याकरणटीका । |
| १०'१×४'१ | 5 | २४ | 27 | >> | | अपू० | |
| १०•१x४•६ | 5. | રષ્ટ | 23 | ,, | | पू० | |
| ९·२×४·२ | v | ३० | ,, | 50 | | ,, | |
| ⊏.exá.e | 9 | ३⊏ | ,, | ,, | | 33.3¢ | |
| १२×४'४ | १० | ४६ | 31 | ,, | | अपू० | |
| ≃. 6×á.á | १० | 88 | n | ,, | १७३१ | पू० | |
| ९•६×३• ⊏ | 9 | ३२ | " " | ,, | | " | पट्कारकपरिच्छेद इति नामान्तरम् । |
| १० ° ६x४′७ | १२ | ४१ | H | " | १८०० | अपू॰ | वै० सि० कौ० टोका । तद्धितप्रकरणा- त्तवरप्रकरणान्तः । |
| ९ . ७×८.३ | ۹. | ३९ | ,, | " | १८९४ | ,,, | वैयाकरणभूषणसारटीका । स्फोटनिरूपणान्तः । |
| ९'७x४'४ | ٩ | ३६ | ,, | " | १०८१ | पू० | |
| १०.5×५.≃ | ٩ | ३५ | ,, | ,, | | अपू० | |
| १३°२×५°१ | १३ | ५४ | ,, | " | | " | |
| १२•६×४•६ | १० | 88 | >> | " | | " | |
| ९·४×३·९ | १० | ४२ | " | 73 | | 33 | |
| ৬·६×৪ | Ę | १६ | " | ,, | | ,,, | |
| · | · | <u>'</u> | ······ | | | 1 | |

| | क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणस् |
|----------|----------------|----------------------------------------------|-------------------------|--------------------------------------------------|
| | ३९४२४ | कातन्त्रयृत्तिः सटीका | | ७। (गणनया) |
| | ३ ९४२५ | गणपाठः | | १-२, ४-३९ । |
| | ३९४२६ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी- व्याख्या | | १-१५ । |
| | ३९४२७ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी- टीका | ı | १-२०६ + १ । |
| | ३९४२⊏ | स्फोटतत्त्वनिरूपणम् | शेपकृष्णः | १-२३ । |
| | ३९४२९ | वैयाकरणसिद्धा न ्तकौ <u>म</u> ुदी | भट्टोजिदीचितः | १-५७ 1 |
| | ३९४३० | त्तघुशब्देन्दुशेखरः | नागोजीभट्टः | ७४-१००, ११२, १-६७। |
| | ३९४३१ | त्र घुशब्दरत्नम् | हरिदीक्षितः | १-९३ । |
| | ३९४३२ | तर्कचन्द्रिका | कुष्णम्भट्टमौन <u>ी</u> | १-२० । |
| | ३९४३३ | शब्दरत्नम् | | १-२१ । |
| : | ३९४३४ | वैयाकरणसिद्धान्तलघुम अू पा | नागेशः | १-४८, ५७-१३६, १५६-२४२, २४६, २६२, ३१०-३५६ । |
| | ३९४३५ | शब्द्रूपावली | | १,९-१०, १५-१=। |
| | ३९४३६ | महाभाष्यप्रदीपोद्योतः | | १-५ । |
| | ३९४३७ | 79 | नागेशः | १-१६, १⊏-२५। |
| | ३९४३८ | वैयाकरणसिद्धान्तकोमुदी | | १-दर, १-१९, १-२१, १-५०, १-३३, १-२६, १-१८। |
| | ३९४३९ | शब्दकौस्तुभः | | २-७, ९-१०, १८-२१, २३-२५, ३०-३२, ३४-३६, ३८-४९। |
| | - ३९४४० | फिट्सूत्राणि सवृत्तिकानि | | ३-७। |
| | \$ 9888 | शब्दरूपावली | | १-३ । |
| <u> </u> |] | <u> </u> | | 4 |

| व्याकार: | पङ्कि संख्या | अक्षर- संख्या | लिपि: | आवार: | लिपिकाल; | पूर्णायूर्ण- विवेक:- | विशेषविवर्णम् |
|------------------------------------|-----------------|------------------|------------|------------|----------|-------------------------|---------------------------------------------------------------------------------------|
| १७ [,] ५×४ [,] १ | 8 | ६१ | বঙ্গ | का. | | अपू० | अत्र सटीकं श्रीकृष्णलीलामृतम् शङ्करकविवरसुक्तम् सुभाषितानि साहित्यदर्पणटीका च । |
| ९'५x४'२ | ت ت | ३⇔ | दे.ना | " | | ** | |
| ९.ह×ह.६ | १्व | ૪ર | 35 | *> | • | ,, | कारकसूत्रप्रयोगमात्रानुसारिशान्द्- वोधप्रदर्शनपरा । |
| 8.8×8.8 | ९ | ३≂ | 47 | 19 | | dos | स्त्रीप्रत्ययान्ता । |
| ≈•8×8•8 | Ę | ૨ ૧ | , , | ,, | | ,, | |
| ११•२×४·१ | = | ५१ | 3-2 | >> | १⊏५३ | 23 | स्वरवैदिकप्रकरणयोः । |
| ११•२×४•१ | 5 | ५१ | ,, | " | | अपू० | पूर्वार्द्धभागः। |
| १२ [.] २×४ [.] १ | E E | ५१ | 33 | 33 | | पू० | वै० सि० कौ० टी० टी० । तिङन्त- प्रकरणतो वैदिकप्रक्रियान्तम् । |
| ११•३×४·१ | ß | ४६ | 33 | ,, | | अपू० | |
| ११•३×४·१ | ९ | ४९ | ,, | ,, | | 77 | वै० सि० कौ० टी० टी० कारक- प्रकरणस्य |
| १०×५ | ११ | ૪૦ | ? } | 33 | | 74 | |
| ७.४×८ | 5 | १९ | ۰, | " | | >> | |
| १=•१×५•२ | १२ | ફ્લ | 33 | " | | >> | स्थानिवदादेशोऽनल्विधावितिसूत्र- विचारः। अ० १, पा० १, सू० ६। |
| १०.४×५.४ | ११ | ३२ | " | " | | ,, | सप्तममाह्निकम्। |
| १०•२×४"५ | v | ३२ | ,, | >> | | ,, | |
| ९•९×४·६ | 15 | 30 | 35 | " | | *** | अष्टाध्यायीटीका । |
| १०•≈×७•७ | ११ | 88 | 23 | ,, | | ,, | |
| १०.४ % .६ | ц | २८ | ,, | 7 7 | | " | |
| | | | [| <u> </u> | <u> </u> | 1 | |

| | | | | |
|----------------|---------------|--------------------------|-----------------------------------|------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| | क्रमसंस्था | प्रस्थनाम • | प्रन्थकारनाम | पत्रसंख्यादिनरणम् |
| | ३९४४२ | महाभाष्यम् | पतञ्जितः | १-४४, १-५०, १ -२१ । |
| | <i>3</i> 9888 | वैयाकरणभूषणसारः | कोण्डसट्टः | १-१७, १७-१८, १८-२०(=२१)२२-१३२, १३२-२०२+१ |
| | ३९४४४ | अष्टाध्यायी | | १-१० । |
| | ३९४४ ५ | सुवोधिनी | जयकृष्णः | १-२२ । |
| | ३९४४६ | महाभाष्यं सद्रीपम् | | ३ । (गणनया) |
| | ३९४४७ | 33 | पतङ्जितः टी॰ का॰-कैयटः | १-२४२, १-७७, १-७२, १-६०, १-४६ । |
| | ३९४४≂ | सभ्याभरणं सटीकम् | रामचन्द्रभट्टः टी०का०-गोविन्दः | १-=४ । |
| | ३९४४९ | वैयाकरणसिद्धान्तकोमुद् | भट्टोजिदीक्षितः | १-३०० |
| ٠. | ३९४५० | रप्र.त्याहारमण्डनम् | रामचन्द्रपाठकः | १-७। |
| | ३९४५१ | महाभाष्यम् | पतअ्जि: | १-७१, १-२२, १-१६, १-२२, १-५१,१-३०, १-३३, १-४५, १-३२,१-३०,१-१५, १-२६, २६, २६-३०, १-३८, १-३२+२ । |
| | ३९४५२ | सुपद्मव्याकरणम् | पद्मनाभद्तः | १-५+२, ६-६७(= ६८-६९)७०-१८८,+१०। |
| | ३९४५३ | सुपद्मसूत्रपाठः | पद्मनाभः | १-४-, १-२०। |
| .` | ३९५५४ | प्राकृतप्रकाशः सवृत्तिकः | वर्रुचि: वृ०का०-भामह: | १-१९ । |
| | ३९४५० | कटापसूत्रपाठः | | १-१३, १६-४५। |
| | ३९४५६ | अन्ययार्थः | | १-२ । |
| | ३९४ ५७ |) कातन्त्रवृत्तिटीका | दुर्गसिंह: | १-११२। |
| | ३९४५० | कातन्त्रवृत्तिः | >5 | १-=९ । |
| | ३९४५९ | प्रौढमनो रमा | भट्टोजिदीचितः | ₹-== 1 |
| -,- | ३९४६ | कविकल्पद्रुमः | वोपदेव: | १-२२ । |

| | | | | | | | |
|------------------------------------|--------------------|------------------|------------|------------|----------------------------|------------------------|--------------------------------------------------|
| भाकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- सँख्या | लिपिः | आश्रारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेपविवरणम् |
| ११ • ३×४•७ | ११ | ५० | देःनाः | काः | | अपू० | ५-६ अध्यायौ । |
| १ ċ •१ × ४ [.] १ | ११ | 88 | " | >7 | | पू०* | |
| इ·६×३·६ | و | २१ | 24 | ,, | | 79 | सप्तमोऽध्यायः । |
| १२ .५ · ४.८ | ११ | ५२ | ,, | 1, | | ** | दै० सि० कौ० टीका । वैदिकप्रकर- णमात्रम्। |
| १० •७x४'⊏ | १४ | ५≒ | " | " | | अपू० | |
| १० : =x8:= | २० | ६४ | \$: | " | | पू० | प्रथमाध्यायात्पञ्चमाध्यायान्तम् । |
| १२ [.] ४×४ [.] ९ | ११ | ५६ | ,, | 3; | | *** | टीका-रश्मिमाला I |
| १२·६×४·६ | . १० | ५३ | ; ; | ,, | হা. १७१७ " १७ १⊏ | " | |
| ११•३×३⁻⊏ | ς | ૪ર | 2) | " | १=४= | 51 | |
| १३°२×५°५ | १३ | ફ્ષ્ટ | ٠,٠ | 3 3 | १६५० | 11 gr | |
| ₹ 8'५×₹'8 | ૭ | ६६ | 3, | ;, | श. १५⊏५ | 11 ₈₈ | |
| १४ ४×२ ४ | 8 | ξą | वङ्ग | ,, | 710 J 100 J | ,, | आदितः पञ्चमाध्यायान्तः । |
| \$0.4×8.8 | १४ | ४९ | 11 | ,, | | 33 | वृत्तिः-मनोरमा । |
| ⊏'२×३ ∙ ३ | જ | ঽঽ | 93 | 3 7 | | अपृ० | |
| १० ° द्र x ४'५ | १२ | | दे.ना | ,, | १८५७ | पू० | |
| १७ · ६×३·९ | Ŋ | ६६ | वङ्ग | 3) | श. १७१३ | " | अख्यातप्रकरणस्य । |
| १६·३×३·६ | પ | ५० | " | ,, | श. १७४४ | ** | 25 |
| १०•४×३•९ | ११ | / 8ે | दे.ना. | ,,, | १७४३ | ,, | वै॰ सि॰ कौ॰ न्याख्या ति ङन्त- भागस्य |
| ⊏.8xá.⊏ | IJ | २८ | " | " | १६६९ श. १५३४ | 33 | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवर्णम् |
|------------|-------------------------------------|-----------------------------|-----------------------------------------------------------------------------------|
| ३९४६१ | वैयाकरणसिद्धान्तलघुमङ्कूपा | नागेराभट्टः | १-७+१, =-१=, १=, २०-५० (=५१) ५२-२३९(=२४०)२४०, २४१(=२४२). २४३-२५३, २५५-२६० । |
| ३९४६ | अन्ययार्थकारिका | | १-४। |
| ३९४६३ | गोपालकारिका सविवृतिः | गोपालद्त्तः | १-४। |
| ३९४६६ | र जणादिवृत्तिः | | १०-५२, ५२-७८। |
| ३९४६० | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | | १-१७, ११-११०, १-३५, ३३(= ३६) ३७- ७६, ७८-९१ । |
| ३९४६६ | प्रौढमनोरमा | | १-७१ । |
| ३९४६७ | रूपमालिका | रङ्गदेवः | १-४, २, १-२ । |
| ३९४े६⊏ | प्राकृतप्रकाशः सवृत्तिकः | वररुचि: वृ०का–भामहः | १-२३ । |
| ३९४६९ | उपस र्गेवृत्तिः | | १- ५ |
| ३९४७० | महाभाष्यं सप्रदीपम् | पतङ्जिः टीः-कैयटः | १-३०, १-५६, ७०-१६२। |
| ३९४७१ | शौ ढसनोर मा | , , | १-२९ । |
| ३९४७२ | उणादिस् त्रटीका | | १-१९ । |
| ३९४७३ | अ ष्टाध्यायी | | १-४० । |
| ३९४७४ | डणादिषुत्रं सबृत्तिकम् | द्यु० का०-उज्ज्वल द्त्तः | १-५४, ५४-१०७ । |
| ३९४७५ | महाभाष्यप्रदीपोद्योतः | नागोजीभट्टः | १-३०७, ३३५-४५४, १-१२३, १-८४, ८४-११६ |
| ३९४७६ | ,,, | ,, | १-१०७, १-९३ । |
| १९४७७ | 77 | ,, | १-१३९, १-१४८, ११४८-१५७, १५९-१८०। |
| | | | |

| आकार: | पङ्कि- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपि: | आधार: | लिपिकाल: | पूर्गीपूर्ण- विवेयः | विशेषविवरणम् • |
|-------------------|------------------|------------------|------------|-------|-------------------------|------------------------|---------------------------------------------------------|
| ९•८×४•५ | १३ | ४८ | दे.ना. | का. | १७६३ | अपू० | |
| १०°६×४'५ | १०ं | ક્રદ | " | 53 | १९२१ | पू० | |
| १०'⊏४४'६ | १३ | ४९ | ,, | " | | 3 > | बहुवचने भल्येदितिसूत्रविचाररूपा। दशकारिकाविवृतिर्वा। |
| १०•५×४•५ | १३ | ૪૨ | ,, | ,, | | अपू० | |
| ११र⊏×४७ | Ę | ३⊏ | " | " | | " | |
| १२·४×४·५ | 5 | ३९ | ,, | " | | >> | |
| १०.४×८.८ | ى و | ३७ | ,, | " | | ,, | सिद्धान्तकौमुदीसिद्धशब्दानाम् । |
| ९'¤x४'२ | ११ | ४८ | ,, | " | १८२९ | पू० | वृत्तिः—मनोरमा । |
| ९•⊏×४·३ | १० | ४१ | ,, | ,, | ७२१= ? | 77 | सं २ १८२७ इति प्रतिभाति । |
| १२•६×५·५ | १५ | ६१ | ,, | " | | अपू॰ | अ०१,पा०१,आ०१-९। अ०२, पा०१, आ०१। |
| ९•६ × ४·५ | v | ३० | ,, | " | | ,, | बै० सि० कौ० टीका। सुबन्त- प्रकरणस्य। |
| ⊏'५×३'६ | હ | ३० | " | 77 | १ ८४१ श० १७०६ | पू० | मध्यक <u>ौ</u> मुंद्याः । |
| १०'१×४'¤ | ११ | . ૪૨ | " | ,, | १८७२ श० १७३५ | | |
| ९·६×४·६ | १० | , | ; " | ,, | | ,,, | |
| १०•२x४'५ | .20 | o 30 | ; ,, | " | | अपू० | अ० १-३। |
| १०•१×४•२ | ९ | 84 | , " | ,, | | पू० | अ० ७-⊏। |
| १० : १×8:8 | ९ | 3 : | - " | ,, | | 16* | अ०६ पा०१ आ०१-६। "२, ",-२। "३, ",-३। "४, ",-४। |

| | क्रमसंख्य। | प्रस्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसं ख्याविवर्णम् |
|-------------|------------|---------------------------------------|----------------------------|-------------------------------------------------------------------|
| • | ३९४७= | णेरणावितिसुत्रव्याख्यानम् | ्र शिवरामेन्द्रयतिः | ५-१२। |
| | ३९४७९ | कारकतत्त्वम् | | १-२,+१। |
| | ३९४८० | प्रतिपिद्धार्थोऽयमितिभा- ष्यविचारः | | १-३, ६-३५(= ३६; । |
| | ३९४⊏१ | क्रियाकलापः | जिनदेवसृरिः | १-६० । |
| | ३९४⊏२ | भावप्रदीपः | कृष्णमित्रभट्टा- चार्यः | १-२६ । |
| | ३९४८३ | त्रघुशब्देन्दुशेखरटीका | वैद्यनाथपायगुण्डे: | १-१५९, १९१, १-१४। |
| | ३९४⊏४ | मध्यसिद्धान्तकौमुदी सटीका | वरदराजः टी०का०−शिवरामः | १-१६४ । • |
| | ३९४⊏५ | अष्टाध्यायी | | २-४, ७-१५, २१-२७, ३०-४४, ७४-७८। |
| | ३९४⊏६ | त्तघुशब् देन्दु शेखरः | नागोजीभट्टः | १-२६४, १-१९, ११-२८, २८-७०, १-८२, १-८३, १-४८, १-२६, ३-४, ४-१६ । |
| | ৾ঽ৻ঽৼ৽ | परिभापेन्दुशेखरः | 23 | १-=० । |
| | ३९४८८ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | ļ | 8-88 I |
| | ३९४⊏९ | समासचकम्_ | | १-६ । |
| | ३९४९० | सारस्वतप्रक्रिया | अनुभूतिस्वरूपा- चार्यः | १-६, १-४२, १-४१, १-१२, । |
| | ३९४९१ | महाभाष्यप्रदीपः | कैयट: | १-७३, १-३९, १-२९, १-६४, १-५३, १-५५, १-६१, १-⊏२, १-५७, १-४० । |
| | ३९४९२ | वैयाकरणसिद्धान्तलघुमञ्जूषा | नागेशभट्ट। | १-१५, १=३-२४२, २४७-२५३ । |
| | ३९४९३ | त्त <u>घुशच्दे</u> न्दुशेखरटीका | उद् यङ्क र ः | १-२५ + १,१ - १५,१-३,१-२,४,१-१७। |
| | ३९४९४ | रत्नप्रकाशिका | भैरवः | १-३६+१, १-२७, १९-३७, १-५, १-७। |
| | ३९४९५ | परिभापेन्दुशेखरःसटिप्पनः | नागेशः | १-४२ । |
| | ३९४९६ | परिभाषापाठः | | १-५ । |

| आकार: | पङ्कि- संख्या | अक्षर- रांख्या | लिपि: | भाषारः | लिपिकाल: | पूर्णापूर्ण- विनेकः | विरोषविवर्णाम् |
|-----------------------|------------------|-------------------|-----------|----------------|--------------------------------|------------------------|-----------------------------------------------|
| १० ° ≒×४∙७ | १५ | ५९ | दे.ना | का. | श. १७०२ | अपू> | भाष्यसम्मतम् । |
| १३ : ६×५:३ | १६ | ₹≒ | 25 | ,, | | " | |
| ⊏.€X\$.₽ | 5 | રષ્ટ | 23 | ינ | | ,, | |
| ११•४×४'५ | १० | ४५ | ,, | 39 | १६०७ र ० का० १४९० | वृट | |
| १०'१x४'२ | = | Ro | 27 | .99 | | ** | त्राब्दक्षीस्तुभटीका । प्रथमाह्निकः । |
| १२×४′⊏ | ११ | ५२ | 22 | u | | अपू० | टीका-सदस्थिमाला । पुस्तके लिपिभेदः। |
| १३°१×४°५ | 9 | ६၁ | " | 33 <u>.</u> | | पृ० | टी०-कुञ्चिका । आदितस्स्वर- प्रक्रियान्ता । |
| १ःदx२'७ | ц | १६ | 93 | p) | | अपू० | |
| ११ [.] १×४.१ | 9 | ૪ર | " | 3) | १८४२ | 27 | दै ० सि० कौ० टीका । |
| ११·२×४·२ | v | ३५ | .se | 90 | | ्पू० | - |
| १२'७x४'⊄ | 9 | 84 | 33 | ,, | | अपु० | |
| ९•२×४ [•] ९ | १० | 28 | 52 | -33 | | 27 | |
| ११'६×५'= | 23 | ३७ | ,, | ,, | १९०६ | पृ० | आदितः कृदन्तान्ता । |
| १३·२×५·५ | १२ | ६९ | *** | ,, | | 33 | अर० १-≃ । |
| १४×५•३ | १० | Ęο | " | *, | | अपूर | |
| १३'७x४'३ | १० | ६४ | 13 | 12 | | ,, | ज्योत्स्ताख्या। |
| १३·६×५·२ | १३ | ५९ | ,, | ,, | | 21 | शब्दरत्नटीका । |
| १२'३×४'≔ | १० | ४६ | ,, | " | | पूर | |
| १० ७ ४५ १ | १० | 38 | 17 | H | | ** | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्र न थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|----------------------------|--------------------------|------------------------------------------------------------------------|
| ३९४९७ | ६ैयाकरणभूपणसार टीका | भैरवः | १-२३ । |
| ३९४९⊏ | वैयाकरणभूपणसारः सटीकः | | १-५, ५, ६-१५, १५-२५, २७-३२ । |
| ३९४९९ | सिद्धान्तचन्द्रिका | } | ३्म-४१ । |
| ३९५०० | परिभाषेन्दुशेखरः सटीकः | | १६-२०, २३-४४, ४४-४५, ५२, ५२-५७, ६०-७९+९ । |
| ३९५०१ | सुवोधिनी | जयकृष्ण: | २५ । (गणनया) |
| ३९५०२ | लघुशब्देन्दुशेखरटीका | | १-१८ । |
| ं ३९५०३ | वाक्यवाद्व्याख्या | | १+१। |
| ३९५०४ | सुवोधिनी * | जयकृष्ण: | १=७, ९-२५+३ । |
| ३९५०५ | तत्त्वबोधिनी | • | १-१६३, ३·७१, ७१-७३, ७३-⊏०+१, १-⊏१ । |
| ३९५२६ | 23 | | १-२७+१ । |
| ३९५०७ | पाणिनिसुत्रस्ची | ह्रपातः | १-६६, ६⊏-६२ । |
| ३९५०८ | लघुशब्देन्दुशेखरटोका | | ६३-१२०, १२ १७३(= ४६)४७ - ५५ । |
| ३९५०९ | छ षुसिद्धान्तकौमुदी | वरद् रा जः | १-११०, ११२-११९ । |
| ३९५१० | उपसर्गवृत्तिः | | १-१० । |
| ३९५११ | पाणिनिसूत्रवृत्तिः | | १-१५ । |
| ३९५१२ | धातुवृत्तिः | सायणः | १-९७ । |
| ३९५१३ | चेयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | भट्टोजिदीक्षित: | १-१६२, १-४९ + १, ५०-१०१, १- = १+१, १-२०, १-३९, १- = । |
| ३९५१४ | त्तघुशब्देन्दुशेखरटीका | | १-५, १-३, १, १-२, २ । |
| ३९५१५ | 59 | | १-१२ । |
| ३९५१६ | " | | १-२, १-६। |
| ३९५१७ | 33 | İ | १-५, २३-२४, ३ <i>ऽ</i> -३८, ६-२०, ५५-७४, १-१४, १०० - १०२ । |

| डाखार \$ | पह्यि- संख्या | शक्षर- रांख्या | लिपि: | अगग्यर: | लिपिकार: | पूर्णापूर्ध- विवेरः | विशेषचिवरणम् |
|------------------------------------|------------------|-------------------|------------|------------|-----------------------|------------------------|---------------------------------|
| १३•६×४°४ | હ | ५१ | दे.नाः | મા. | | अपू० | टीका-परीक्षाख्या । |
| १३.४×६.५ | १५ | ६६ | ,,, | 3 3 | | " | टीका-दर्पणाख्या । |
| १०.५×३.८ | = | ३३ | 93 | 1) | | 17 | |
| १३•१×६·५ | १५ | عرب ا | ,, | " | | ,, | टीका-गदाख्या । |
| १२७४५.१ | १२ | યુવ | ,, | 75 | | ** | वै॰ सि॰ की॰ टीका । |
| १२•७x५-१ | १० | ५६ | 31 | ,, | | " | |
| १२.0x1 र | १२ | 4 રૂ | ,, | ,, | | " | |
| १२र≍×५∙३ | १३ | વવ | 74 | ,, | | ,, | वै० सि॰कौ॰ टीका। वैदिकप्रकरणम्। |
| १२.५×४′⊏ | १= | ६४ | ,, | ,, | |)] | वै० सि० कौ० टीका। |
| १२′¤×′५′२ | ર૪ | ६६ | 5 5 | ,, | | 15 | 13 |
| १३ [.] २×५ | ११ | ४१ | 7, | " | १ ८८ १ १८८२ | >> | |
| १०:५×४:५ | १० | ઇજ | " | " | | 72 | |
| ৬·২×४·३ | ९ | ર≍ | ,, | 33 | | ,, | |
| १० .४ ×४.४ | u)· | २६ | ,, | " | १=९१ | पूर | |
| ζ.έ×λ.غ | ६१ | ३≍ | 33 | " | | 5 ; | |
| ११ ⁻ ३×४ ⁻ ४ | १४ | ५२ | ,, | ,, | | अपू० | |
| 6.≅x8.\$ | હ | धर | " | ٠, | १=४७ | पू०# | |
| १०:२×४°५ | ς | ĝο | 33 | ,, | | अपृ० | |
| ='4x8 4 | १ १ | ३३ | 53 | " | | 37 | |
| १ २ -१×४*५ | १० | २= | 53 | ,, | | 33 | |
| 8.≅×5.8 | ९ | ३६ | >> |)) | | " | |
| 20 | 1 | | | | | | |

| कमसंख्या | ग्रन्यनाम | ग्रन्यकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---------------|-------------------------|------------------------------|--------------------------------------------------|
| ३९५१= | त्तषुराव्देन्दुरोखरटीका | | १-१५, १८-४२, १-१०, १-१९, १-२६; १-१९+१, १-६+६। |
| इ९५१९ | ,, | | १, १-४। |
| , ३९५२० | " | | ?-S I |
| ३९५२१ | " | उद्यद्धरः | १-५= + १-1 |
| ३९५२२ | " | | ⊏-१२ । |
| ३९५२३ | शब्द्कौस्तुभः | | १-५५ । |
| ३९५२५ | महाभाष्यं सप्रदीपम् | पतञ्जितः प्र०दीःकाः-कैयटः | १-१=, १-२४, १-२५, ११६, १=-१९, १-२४। |
| ३९५२५ | राच्द्रक्पावलिः | | १२ । (गणनया) |
| ३९५२६ | 23 | | ३-६+१ । |
| ३९५२७ | 37 | | १-≒ |
| ३९५२⊏ | ,, • | | १-२। |
| ३९५२९ | 11 | | १-२०, २०-३७। |
| ३९५३० | समासचकम् | | १-३। |
| ३९५३६ | ,, | | ३ - ४ ७-१० । |
| ३९५३२ | ,, | | ३-७। |
| ३९५३३ | सगासचकचूडामणिः | | १-२। |
| ३९५ ३४ | समासचकम् | 1 | १-४। |
| ३९५३ ० | समासविधिः | | 9-51 |
| ३९५३ ६ | समासचकम् | | ो १-४ । |
| ३९५३ ७ | समासज्ञापकः | नवाभट्टः | १-६। |
| ३९५३= | वैयाकरणसिद्धान्तकोसुदी | | १-२१, १, २३-२= । |
| ३९५३९ | अप्टाध्यायी | पाणित्नः | १-५५ । |
| ३९५.४३ | ,, | i | १-७६ । |

| थाकार: | पद्धि- संस्या | अक्षर- संख्या | लिपि: | आश्रार: | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेय: | विशेषविवरणम् |
|---------------------------|------------------|------------------|--------|---------|-----------|------------------------|----------------------|
| १०:१×४:४ | ९ | ३९ | दे.ना. | का. | | अपृ० | |
| ९·९×४ | ११ | ૪૪ | ,, | " | | " | |
| ያ·७x੪ · ੪ | १५ | 8ई | ,, | " | | 71 | |
| ९.॰×८ ई | ९ | ४१ | ۱, | " | 1 | ,, | कज्योत्स्नाख्या । |
| १२·२×४ ६ | १२ | 88 | " | ,, | | 23 | |
| १२•६×४•६ | १= | ६३ | >> | ,, | | ٠, | अष्टाध्यायीटीका । |
| १२ [.] ७×४'≍ | ی | ५१ | ,, | ,, | | " | अ० १, पा० १, आ० १-४। |
| १०×४ [.] ३ | २७ | १३ | ,, | " | | " | |
| ⊏'३×३•६ | Ę | २२ | ,, | " | | 73 | |
| ⊏'₹×₹°⊏ | ५ | १९ | ,, | ,,, | | ,, | |
| %×۶ ٠ ٤ | १३ | २४ | ,, | ,, | · | " | |
| ৬•३×৪ | = | २२ | ,, | ,, | | ** | • |
| ="4×8 | 5 | २६ | " | ,, | | ,, | |
| ६·६×४·४ | 4 | १= | ,, | ,, | | " | |
| ۵۰ؤ×ۇ.⊄ | v | २३ | ,, | ,, | | " | |
| ۳.έ×غ.έ | १२ | ३४ | " | 22 | | पृट | |
| ≂∙६x४ ५ | 5 | २३ | ,, | ,, | | ;; | |
| द:१ ४ ४ ° ३ | 9 | २० | ,, | " | | > > | |
| =:३x ४ :२ | १० | २३ | ,, | N | | 33 | |
| ५•६×३ · ⊏ | 2 | १७ | ,, | ,, | | " | |
| ११•१×३•९ | 9 | ४७ | ,, | 17 | | अपू० | स्वरवैदिकप्रकरणम् । |
| ११×४ [.] ६ | v | 80 | " | " | য়া০ १७३४ | पू० | |
| ९·३×४ | 9 | 33 | ۱,, | " | | ,, | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | प्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-------------------------------------|-------------------------------------|---------------------------------------------------------------------|
| ३९५४१ | त्रघुसिद्धान्तकौमुदी | वरद्राजः | १-७, ९-१२ । |
| ३९५४२ | ड त्तर पक्षावली | शिवदत्तमिश्रः | ९-१३, १७-४६, ४⊏-६०, ६३ । |
| ३९५४३ | समासकुसुमावली | मङ्गलेश्वरः | १-२, २, ४-१६ । |
| ३९५४४ | शब्दकौस्तुभप्रभा | वैद्यनाथपायगुण्डे: | १-७, १-१४, २ । |
| ३९५४५ | महाभाष्यप्रदीपविवरणम् | ईश्वरातन्दः राम- चन्द्रसरस्वती च | ३-४०, ४४-५६, ६०-६५ ६७-६ द, ६द-७६, ७ न-८०, ८३, ८६ । |
| ३९५४६ | चन्द्रिकाधातुपाठः | | १-३, ५-१= । |
| ३९५४७ | कविकल्पद्यमः | वोपदेवभट्टः | १-१५ । |
| ३९५४८ | फिट्सृत्राणि | शान्तनवाचार्यः | १-३ । |
| ३९५४९ | पदमञ्जरी | | १-२१ । |
| ३९५५० | प्रिक्रयाकौमुदी | रामचन्द्रः | १-७, ९-२८, ३०, १६-७६। |
| ३९५५१ | डणादिसृत्रपाठः | | १-११ । |
| ३९५५३ | तत्त्वदोपिका | | १-२५ । |
|] ३९५५३ | वैयाकरणसिद्धान्तकोसुदी | भट्टोजिदीक्षितः | १-५(५)६-द्व९, ९१-१द्व०, १-५३, ५५-११५, द-११, १३-५९, १-२५ । |
| ३९५५६ | वैयाकरणशब्दरत्नमाला | सोमयाजी | १-२, ६-११ । |
| ३९५५७ | । बालवोधिनी | वासुदेवमिश्रः | १-१६५, १६७-२३२, २३२-२४९। |
| ३९५५६ | कातन्त्रवृत्तिविवरणपञ्जिका | त्रिलोचनदासः | १-९३, ९३-१०३, १०५-१०=, ११०-११२, ११४-१२०, १२२-१२४, १२६-१२९। |
| ३९५५। | सारस्वतं सटीकम् | टी०का०-पुञ्जराजः | १०-९५, ९६-१५५ । |
| ३९५५ः | वैयाकरणभूषणसारः | कोण्डभट्टः | १-३२। |
| ३९५५ | कारकचक्रम् | | १-९ । |
| ३९५६ | त्रधुभाष्यम् | | २, ४-१४, १६-२० । |
| ३९५६ | शब्दरूपावली | | १-१७ । |
| ३९५६ः | २ प्रवोधचन्द्रिका | वैजलभृपाळः | १-१९ । |

| आकारः | पङ्कि- संख्या | अक्षर- संख्या | હિપિ: | भागारः | लि पिकालः | पृणांपूर्ध- विवेकः | विशेष्विवर्णम् |
|-----------------------------|------------------|------------------|---------------|------------|------------------|-----------------------|------------------------------|
| م.ؤ×غ.۶ | v | ર૪ | दे.ना. | ক্য- | | अपूर | |
| ९' ⊏ x४'६ | १२ | २६ | ,, | " | | ,, | |
| =× २ '९ | વ | २० | 1, | ,, | | पूटक | |
| १०.१×८.5 | १३ | ५६ | >> | ٠, | | अपू० | अप्राध्यायीटीकाटीका । |
| १०'२×४'४ | १४ | ४८ | ,, | " | | 33 | |
| =:५×३·१ | 5 | ३२ | " | 22 | | " | |
| ९.९×४.१ | ११ | , 88 , | " | ,, | १६५० | पू० | |
| १०'⊏४४'६ | v | ३० | ,, | 33 | १९२१ | ,, | |
| १२•६×४५ | ११ | , હફ | > ! | 17 | | अपू० | अष्टाध्यायीटीकाटीका । |
| 8.6×5.6 | 5 | 80 | " | ,, | १४७६ | " | |
| ₽.6×5.± | 9 | ३५ | 23 | " | १६⊏३ | Йo | |
| १०°६×५°५ | १५ | ३≂ | " | " | | अपू० | सिद्धान्तचन्द्रिकान्याख्या । |
| १०'¤x४'५ | v | ३⊏ | ,, | " | | ** | |
| १०'२×४'३ | ११ | ३७ | " | " | | 53 | |
| ११×४·१ | 5 | ે રહ∙ | 37 | ,, | १६३⊏ | पू० | पाणिनीयप्रक्रियाचोधनरूपा । |
| ११.4× ३. ≃ | 9 | ४५ | " | " | १६०९ | अपू० | |
| १०'७x४'५ | 80 | 3 3 | ,, | 5 3 | १६४≍ | " | • |
| ११.£×८.≃ | १२ | Ę⊏ | , | 39 | १६९५ | पूञ | |
| ` ⊏ '₹x8 ' '4 | હ | ર૪ | 23 | 33 | १९४४ | " | |
| 88×4 | १० | 80 | " | 7) | | अपृ० | सारस्वतभाष्यम् । |
| १०.8×५.3 | १० | ३० | 23 | ,, | | पू० | - |
| ९.त×८ | 9 | ३५ | 22 | " | | ٠ 53 | |

| | | | | 1 |
|---|------------|---------------------------------------------|---------------------------|----------------------------------------|
| | क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
| | ३९५६३ | वादिघटमुद्गरभाष्यम् | जयन्तभट्टः | १-१३, १-२। |
| | ३९५६४ | वैयाकरणभूषणसारः | कोण्डभट्टः | १-९१ |
| | ३९५६५ | सिद्धान्तचन्द्रिका | रामाश्रमाचार्यः | १-५५, १-२०, ३३-५७, ९९, १-२४, २८-३८। |
| , | ३९५६६ | सारस्वतम् | अनुभूतिस्वरूपा- चार्यः | १-३२ । |
| | ३९५६७ | अष्टाध्यायी | पाणिनिः | १-१२, १५-२९, ३१-३५, ३८-४८ । |
| | ३९५६⊏ | कातन्त्रसूत्रवृत्तिः | दुगैसिंह: | १-१०, १०-३६, ३६-१०५। |
| | ३९५६९ | कविकल्पट्टुमः | वोपदेवः | १-३१ । |
| | ३९५७० | मुग्धवोधः | | १०, २३-२४+(१) = ४ । |
| | ३९५७१ | धातु पा ठः | : | १-३९+१। |
| | ३९५७२ | कविकल्पद्रुमः | वोपदेवः | १-४२ । |
| | ३९५७३ | मुग्धबोधसूत्रपा ठः | " | १-१५1 |
| | ३९५७४ | मुग्धबोधः | " | १-१०५ । |
| | ३९५७५ | मुग्धबोघटीका | दुर्गादासः | १-१०६, १=३५, १-१६। |
| | ३९५७६ | मुग्धवोधः | | १९-२४ । |
| | ३९५७७ | सङ्क्षिप्तसारः | | १-६ । |
| | ३९५७= | कातन्त्रकोडपत्रसङ्ग्रहः | | १-४, १-२, १-४, १-२, १+१, १-३। |
| | ३९५७९ | विशेष्यत्वविशेषणत्वयोर्द्धे- विष्यविचारः | | १- ४ । |
| | ३९५८० | कर्मण्यणइतिसूत्रटीका | | १। |
| | ३९५=१ | गणवृत्तिः | | १-५ । |
| | ३९५=२ | धातुभेदः सप्रयोगः | | -१। |
| | ३९५⊏३ | धातुपरिच्छेदः | माधवसेनः | १-११ |
| | ३९५⊏४ | पट्कारकम् | | १-१५ 1 |
| | | | | |

| 1 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 | | */ 51 */ 51 | ~~(₁ ; | nil.u. | friter: | enie. | |
|--------------------------------------------|------------|----------------|--------------------|--------|----------------------|-------------|--------------------------|
| इंड्राफ्सइन्स् - | ξĄ | X= | दे ना. | मा. | हण्ड ः | u je | सारम्बनभाषाम् । |
| grang-\$ | 2 | şs | 91 | ** | | पुर | |
| ₹₹°₹×¹\ | e, | 3 १ | | ** | १९०२ १००६ १०५६ | ख <i>ि</i> | |
| १३.५८५५ - | Ę\$ | ફે % | • | ** | | ·[: | आर्यानप्रक्रियागात्रम् । |
| ₹ <i>≈*</i> ₹× <i>**</i> ₹ | 0. | ą٧ | ,, | ,, | १⊏३३ | अपृ० | 1 |
| ६५-३४३-६ | 4 | Y'. | यह . | ** | रा १७२० | पुः | ृ गृत्य उरणम् । |
| ३२९×३•८ | *. ; | 83 | 10 | м | ्श. १७३९ | 1, | |
| १४४×१७ | 4 | ४१ | 11 ; | ** | ž | अ १= | |
| ₹₩-\$ × ₹*₹ | \$ a . | =3 | ** | ** | 1 1 1 | पृष् | ं मोदाहरणः । |
| (२:=x३:२ ः | **. | ŝĉ | 31 | 33 | ्रा. १७१० | 1, | |
| (/xi/q | Ę | 43 | 11 | ** | <u>;</u> | 71 | , |
| \$8.8×\$.5 | į, | 44 |)) | 1) | ्रा. १७२⊏ | 3 71 | |
| १५९१×३९२ | = ' | 3'1 | 1, | 1) | t i | अपृ= | भ्यादिष रहणान्य । |
| १७ × ३०५ (| 4 | ५२ |) + } | ** | ; | 4.6 | |
| १ टपहेन्प | ę, | ۶y | •, 1 | ** | ' | ** | मुबनाप्रकरणम् । |
| taning t | ŧ | 14,14 | ** | ** | : } | ** | |
| \$ 1/2 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 | = | ' '¤ | ## { } | *1 | { | वृः | मोपपत्तिरः । |
| \$4-6×5+5 | Ę | 42 | 17 | ** | | | ; • |
| 1585 | 4, | ₹= | > + | ** | , | 1+ | गगसृत्रदा । |
| इ.स्थाइ | = | £., | ** | 11 | ٤ | अप <u>ृ</u> | यादिनामयः । |
| 14.5×5; | 27 | ** <u>'</u> | *> ' | 13 | | Z= | |
| 22.3X3.5 | 5 | <u> </u> | ** | ** | रा. ६७१= | ** | |

| क मसं ख्या | ग्रन्थेनाम | प्रन्थकार नाम | पत्रसंख्यादिवरणम् |
|-------------------|-----------------------------------|-------------------------------|------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| ३९५⊏५ | कातन्त्रम् | _ | १। |
| ३९५⊏६ | कातन्त्रवृत्तिपश्चिका | त्रिलोचनदासः | १-११० । |
| ३९५८७ | त्तघुशव्दे न् दुशेखरः | नागेशः | १-६, ह्न-११, ५-१२, १४-१९, २१-४५, १४७-६४, ६६, ६९-५४, ७६-ह्न=, ९०, ९०-९२, ९२-१२५, १२७, १२९-२३०, २३४-२३५, २३८, २४०-२४६, २४८, २५०-२८२। |
| ३९५८८ | शब्दकौस्तुभप्रभा | वैद्यनाथपायगुण्डेः | १-१७ । |
| ३९५८९ | 37 | 79 | १-३५ । |
| ३९५९० | शब्दकौस्तुभव्याख्या | | ५-११, ११-९३, ९३-११७ । |
| ३९५ ९१ | शब्दकौस्तुभप्रभा | वैद्यनाथपायगुण्डेः | २३-६१ । |
| ३९५९२ | " | ,, | १-५, ७-१३। |
| ३९५९३ | वैयाकरणभूपणसारटीका | | ९-२१ । |
| ३९५९४ | वाक्यपदीयं सटीकम् | भर्तृहरिः टी॰का०-पुण्यराजः | १-५५, ५७-५८, ६०-१४१। |
| ३९५९५ | सिद्धान्तरत्नाकरः | रामकृष्णभट्टः | ३१-२२९ । |
| ३९५९६ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | भट्टोजिदीचितः | १-६, ६-५२, १-३३, १-३२, १-५। |
| ३९५९७ | महाभाष्यप्रदीपः | कैयटः | १-२५, ४-२९, ५५ । |
| ३९५९⊏ | महाभाष्यप्रदीपोद्योतः | नागेशः | १, १३-२६, २८-३१, ३३-४२। |
| - ३९५९९ | N | " | २६-४०, ७२-११५। |
| ३९६०० | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी- विलासः | भास्करः | २-६१। |
| ३९६०१ | शब्दशोभा | नीलकण्ठः | १, ३-५, १८-३५ । |
| ३९६०२ | महाशाष्यं सप्रदीपम् | प्रदी॰का॰-कैयटः | ६६-७३, ७५-७६, ⊏१-९०, १०४ । |
| ३९६-३ | | पतञ्जितिः प्रदी० का० कैयटः | १-७, चट्ट-३५, १-४२, १-२४. १-४१, १-१२२, १-११५, १-५७, १-७२, १-५६, ६१-१२८, १-९८, १-५३, ५५-८१। |

| आदार: | पद्धि- संस्था | अक्षर- संख्या | लिपि: | अस्पार: | लिपिकालः | पूर्णापूरी- विवेदः | विदीपविवरणम् |
|---------------------------------------|------------------|------------------|--------|------------|----------|-----------------------|-----------------------------|
| १४. ₹× \$. ٤ | u | ४५ | दे.ना. | का. | | पू० | आ़ख्याते १ प्रादः । |
| १४:२×३'१ | 8 | ५७ | ,, | ,, | | * | कृत्प्रकरणम् । |
| ۷٠٤×٤٠٠٥ | १० | ३⊏ | ,, | " | | अपू० | वै॰ सि॰ कौ॰ टीका। |
| | | | | | | | |
| | | | | | | | |
| ૧. ૦x૪.૩ | 3 | ЙÓ | ,, | ,, | | " , | अप्टाप्याचीटीकाटीका । |
| ९.७×८.३ | १० | ३⊏ | " | Ĭэ | | " | " । प्रथमाह्निकम्। |
| १०'७x8'⊏ | २० | 3,5 | ,, | >+ | १⊏५१ | " | अष्टाभ्यासीही०ही० । |
| ९'७x४'२ | १५ | ३६ | 27 | ,, | | " | n |
| ९.७x४:२ | १० | ५१ | 23 | ,, | | " | " |
| ९ . ७x8.३ | १६ | Ęο | " | ; ; | | и | , |
| ۶.۳×غ.≃ | ९ | ३४ | " | 39 |] | " | द्वितीयकापृहम् । |
| _ | | | | | | | |
| १०'५x४'६ | ९ | ३७ | " | 3) | | 31 | , |
| ११×५'४ | १५ | ५० | " | " | ७६? | >> | |
| ११'४×४'७ | १० | ५० | 79 | " | | " | |
| ११ [.] १×४.५ | १० | ४५ | >0 | ,, | | 70 | |
| ११ [.] २×४ [.] ९ | १२ | ४० | וג | " | | 73 | • |
| ⊏· ९ ×३•ঙ | 5 | ३२ | ,, | ,, | | 3 7 | |
| ≈'ξx૪'٩ | ९ | ३१ | " | ,, | १७२१ | 23 | |
| १३·१×६·७ | १२ | પ ધ | ,, | " | ; | 7 2 | र तीयाध्यायमात्रम् । |
| १३·३×६·५ | ९ | ५९ | ,, | " | १७६१ | ; > | |
| , | | | | | १७७० | | |
| • | | | | ļ | १७=२ | | |
| ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ | | | · | | | <u> </u> | |

| क्रमसं ख्या | ग्रन्थन[म · | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंस्यानिवरणम् |
|--------------------|------------------------------------|---------------------------|-------------------------------------------------------------------------------|
| ३९६०४ | षट्कारकिसहपणम् सटिप्पणम् | | १-११ । |
| ३९६०५ | वैयाकरणभूपणकारिका | | १-६। |
| ३९६०६ | परिभाषाभास्करः | भास्करभट्टः | १-३, ५-२२, २२-५२। |
| ३९६०७ | सिद्धान्तसारः सटीकः | | १३, ५, ७-१६, १८-१९, २१-३४, ३६ ५१, ५३-७०, ७२-८५, ८७-८९। |
| ३९६०⊏ | 5 9 | | १-२, ५-६, ५-१५, १८-१८, १५-२०। |
| ३९६०९ | सारस्वतम् | | ξ- □ 1 |
| ३९६१० | वैयाकरणसिद्धान्तलघु- मञ्जूषा | नागेशः | ७१, ७५-७९, =१-=९, ९१-९५, ९७-१६९ १४१-१४५, १४=-१४९, १५३-१६४, १६९-२५३। |
| ३९६११ | महाभाष्यम् | पतअतिः | १२-२६५, २६७-२८७, १-२, ४-९९, १०२-११४,११६,१,११०, १२९-१३२ १३५-१३७,१४२-१४९। |
| ३९६१२ | लघुभाष्यम् | | १, ६-८, ११-१२, १४, १७-३७, ५१। |
| ३९६१३ | सूत्रसप्तशती | | १-४ । |
| ३९६१४ | सारसिद्धान्तकौमुदी | | १-२६ । |
| ३९६१५ | रप्रत्याहारमण्डनम् | लक्ष्मणपाठकः | 8-4 1 |
| ३९६१६ | प्रौढमनोरमा | | १। |
| ३९६१७ | वैयाकरणभूषणसारटीका | कृष्णमित्रः | २-१७ |
| ३९६१⊏ | नन्दिकेश्वरकारिका सटीका | उपमन् युः | 8-w 1 |
| 1 1 | वादचूडामणिः | कृष्णाचार्यः | १, ४-१६। |
| ३९६२० | लघुशब्देन्दुशेखरटीका | वैद्यनाथपायगुण्डे: | |
| ३९६२१ | , | _ | ६०-९४, ९६-१०० । |
| ३९६२२ | लघुशब्देन्दुशेखर च्योत्स्ना | उद् यङ्क रः | १-२१, २३-२४, २६-३४। |
| ३९६२३ | परिभापेन्दुशेखरटी़का | | १-१६, १८-४८ । |

| भादार: | पङ्कि- संख्या | गक्षर- संख्या | लिपि | भायार: | लिपिकाल: | पूर्णापूर्ण- विवेक: | - विशेषविवर्णम् |
|------------------------------------|------------------|------------------|------------|------------|----------|------------------------|---------------------------------------|
| ९ . ई×8:8 | Ę | ३१ | दें. ना | का. | | पू० | |
| ९.0x8.8 | 9 | र⊏ | " | " | १८४९ | ,, | स्फोटवादान्ता । |
| १० [,] ३x४.५ | १० | ५५ | " | " | | अपू० | |
| १०'दx४'७ | ११ | ३६ | , , | " | १९०१ | 13 | |
| १० ° ⊏x४७७ | १२ | ३५ | ,, | ,, | | 14 | |
| ९ ' ८x४'३ | १० | २⊏ | ,, | 39 | | 23 | |
| १० ° ७x४'५ | १० | ४५ | ,, | " | १८३८ | ,, | |
| ९ . ⊏×8 | १० | ४२ | н | 3 7 | १६११ | >> | |
| १०. <u>५</u> ×४.३ | १३ | ५१ | >> | " | १८७२ | ,, | सारस्वतभाष्यमाख्यातविवर्णान्तम्। |
| १०×४ [,] ३ | = | 80 | 29 | 79 | | 33 | |
| १३·२×६•९ | १२ | ३४ | ,, | " | १८७३ | पूरु | |
| १०'७४४'५ | १४ | 88 | " | ,, | | ,, | |
| १० [,] ९x४ [,] ५ | १२ | ३९ | " | ,, | | अपू० | नै० सि॰ कौ॰ टीका वैदिक- प्रकरणम् |
| १०·९×४·५ | १२ | ३९ | 7.7 | 72 | | >> | |
| ९.७x8.ह | 9 | ३१ | " | 25 | १८९५ | पू० | दीका तत्त्वविमर्शिनी । |
| १०.0×৪.৪ | १२ | ४८ | ,, | 27 | | अपू० | युक्तिरताकरो वा। |
| \$0.8×8.£ | १३ | 88 | " | " | | >> | टीका चिदस्थिमाला। |
| १०.4 × ४.६ | १० | 83 | " | >> | | 27 | वै॰ सि॰ कौ॰ ट्री॰ टी॰ टीका । |
| १० ° ५×४·५ | १० | ४९ | 50 | " | | >> | |
| १०७≒४४७५ | १३ | ४८ | 22 | 59 | | н | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ध्र न्थ कोरनाम | पत्रसं ख्याविवरणम् |
|----------------|-------------------------------|---------------------------|-----------------------------------------------------------------|
| ३९६२४ | परिभाषेन्दुशेखरटीका | | १-१५ । |
| ३९६२५ | परिभापेन्दुशेखरगदा | वैद्यनाथपायगुण्डेः | १-२१, ३२-७१ । |
| ३९६२६ | वैयाकरणभूषणसारः | कोण्डभट्टः | २-१९, २१-७८, ५०-५१। |
| ३९६२७ | अष्टाध्यायी . | | १-५, ७, ९-१३+१। |
| ३९६२⊏ | सारसिद्धान्तकौमुदी | वरद्राजः | १-४, २-१०, १०-१४, १७-३२, ३४-४१, ४३-६२ । |
| ३९६२९ | मध्यसिद्धान्तकौमुदी | " | २-२८, ३०-१४० । |
| ३९६३० | मुग्धवोधटीका | दुर्गादासः | १-७५, ७=-१५४। |
| ३९६३१ | लघुशन्द्रतम् | ह्रिदीक्षित: | १-१०२ । |
| ३९६३२ | वेयाकरणसिद्धान्तकोमुदी | भट्टोजिदीक्षितः | १-९७ । |
| ३९६३३ | 99 | 33 | १ -४३(= ४४)-११७, ११९-१२४ । |
| ३९६३४ | ** | 55 | १-३७, ४०-४७, १-४३ +४, ४७-७३ ७५-९९, २-१६, १५-२४, २७-४५, १४५ । |
| ३९६३५ | वैयाकरणभूषणसारः | कोण्डभट्टं: | १-७१ 1 |
| ३९६३६ | परिभाषेन्दुशेखरः | नागेशः | १-६६, (१-३) ४०-६७। |
| ३ ९ ६३७ | मध्यसिद्धान्तंकोमुदी | | १-४६ । |
| ३९६३८ | , | | २-५३ । |
| ३९६६६ | 'वैयोक्रेंजिसिद्धान्तिकीसुदी | | २-१५ + १, १ ≒-४७ । |
| ३९६४० | तस्ववोधिनी | | १-६ । |
| ३९६४१ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | | ३४-७७, =२-९२, ९२-९५, १-६। |
| वं ९६४२ | छघुंशब्देन्दुशेखंरः 'सटिप्पणः | नागेशः | १-६, द-१४ । |
| ३९६४३ | तत्त्ववोधिनी | | ઇ લ-લબ, દ્ લ-ઉંઇ । |
| ३९६४४ | शब्दकौस्तुभः | भट्टोजिभ ट्टः | १-२६, १-३२, १-२५, १-२८, १-३०, १-२५, १-१३, १-४३, १-१९, १९-३६। |

| छाकार ः | पङ्कि:- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आचारः | लिपिकाल: | पूर्णापूर्णं- विवेकः | े विशेषविवरण म् • |
|---------------------------|-------------------|------------------|--------------|---------------|----------------|-------------------------|-----------------------------------------------------------------------------|
| रै०°१×४°५ | १२ | ४७ | दे. ना | . का. | | अपू० | |
| १०'९x४'५ | ११ | ४१ | ,, | " | | " | |
| ९・९×४・५ | 9 | २७ | ,, | ,, | | ,, | |
| १०•७x४·५ | १० | ४३ | 77 | 7, | | ,, | |
| न'१x४'२ | १० | ३२ | 25 | 29 | १८७९ | ,, | |
| ९ . ८४५ . १ | १३ | રૂપ | " | 33 | | ,, | |
| १७.५×४.६ | १० | ওধ | वङ्गः | > > | | " | |
| ϔ · Ϥ× ₹•ʹ≑ | १२ | ४६ | दें.ना. | >> | | पू० | वै० सि० कौ० टी० टीका । कारकान्त्रभागस्य । |
| ९ . ८४४.५ | ९ | ३२ | " | לכ | | 27 | कृत्प्रकरणमात्रम् । |
| १०×८.८ | १० | ४१ | ,, | נל | १८८६ | 13 _% : | विङन्तप्रकरणमात्रम् । |
| ९ . ≃x8.≾ | 9 | २० | 23 | 99 | 1 | अपू० | |
| १०×४.४ | 9 | 30 | " | " | , | पूर | |
| ९ · २×४·२ | १० | ३५ | " | " | | "* | कीटभक्षितः । त्रन्थपूर्णार्थं सम्ये ३६ प्रष्ठतः १-३ पत्राण्यन्यलिखितानि। |
| ⊏.œ× á. æ | v | २३ | 3, | ¥, | | अपू० | |
| ९·२×३·४ | Ę | ३४ | " | ÿ, | | 9 0 | |
| \$* = ×8 . | Ę | 33 | ,, | ,, | | " | |
| ९ . ≃×८.३ | १० | ३८ | " | у, | | ,, | वै० सि० कौ० टीका ने |
| १०.8×8 | १३ | 40 | ·), | 59 | | 27 | |
| १०×४ [.] २ | ११ | 80 | n | ,, | | ,, | |
| ११×४·५ | ११ | ३३ | in | ,, | į | , " | बैं० सिं० कौं० शिका । |
| १०×३ ' ७ | १६ | ४८ | <i>j</i> , | .,, | | 34 | अष्टाध्यायीटीकाने अ०१ पा०१ आ० १-९ । |

| कमसंख्या | ग्रस्थनाम | ग्रन्थकार्नाम | पत्रसंख्याविवर्षाम् |
|----------|-----------------------------------|-------------------------------|-----------------------------------------------------|
| ३९६४५ | । तघुशब्देन्दुशेखरः | नागेशः | १-३४, ४१-४२(= ४३), ४४-४७(= ४⊏), ४९-१९२, १-२१ । |
| ३९६४६ | परिभाषेन्दुशेखरः | ,,, | १-६२ । |
| ३९६४७ | ल <u>घ</u> ुशब्द्रस्नम् | हरिदीक्षित: | १-२६ । |
| ३९६४= | " | " | १-१५० । |
| ३९६४९ | प्रौढमनोरमा | भट्टोजिदीचितः | १-३८ + (३९ = ४९), ४०-३१५, १-१६८, १-७१ । |
| ३९६५० | उपपदमतिङ्-सूत्र-व्याख्या | | १-५। |
| ३९६५१ | परिभापेन्दुशेखरटीका | | ६-१०, १०-१४, १४-३०, ४६-५४, ५४-७२। |
| ३९६५२ | " | टी० का०- राघवेन्द्राचार्यः | १-१६+१, १⊏-१९, १-३४, ३६-४४, ४४-४५। |
| ३९६५३ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | • | १-१२.। |
| ३९६५४ | प्रबोधचन्द्रिका | बैज लभूपतिः | १-११, ११-२९ । |
| ३९६५५ | गणपाठः सटिप्पणः | | १-३२ । |
| ३९६५६ | परिभाषेन्दुशेखरः | नागोजिभट्टः | १-७९ । |
| ३९६५७ | छघुशब्दे न्दुशेखरः | नागेशः | १-४=९, १-२९०+१। |
| ३९६५८ | कविकल्पद्र्मः | | १-१c+१ ì |
| ३९६५९ | मुग्धबोधटीका | | १-१३ । |
| ३९६६० | सापेक्षवादः | | १। |
| ३९६६१ | " | | १-३ । |
| ३९६६२ | प्रक्रियाकौमुदी | | १-२२, १-२२ । |
| ३९६६३ | धातुपाठः | | १-२२ ∤ |
| ३९६६४ | मु ग्घनोधः | वोपदेवः | १-५७ । |
| ३९६६५ | कावन्त्रसूत्रम् | ^ | ५-१५ । |

| भाकारः | पङ्कि- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपि: | भाषारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविदरणम् |
|-----------------------------------|------------------|------------------|---------|--------|--------------|------------------------|---------------------------------------------|
| ९.≅×8.≸ | १० | ३६ | दे. ना. | का. | | अपू० | वै॰ सि॰ कौ॰ टी॰ टीका । |
| ९′२×४'१ | ११ | २⊏ | " | ,, | १९८१ | पू० | |
| ='५x३'¤ | १० | ३४ | >> | ,, | १८७० | " | वै॰ सि॰ कौ॰ टी॰ टीका । वैदिक- प्रकरणम् । |
| द'8×३'¤ | १० | ३६ | 30 | ,, | | अपू० | वै० सि० कौ० टी० टीका । |
| ت.ؤ×غ.ط | ९ | ३९ | " | ,, | १=७० | " | वै० सि० कौ० टीका। |
| ७.५×३•५ | 28 | ३० | 22 | 3-3 | | पू० | |
| १०.५x४.द | १३ | ५५ | " | 23 | | अपू० | टीका गदा। |
| ११.6×8.6 | 88 | ३४ | ,, | 23 | | मृ०* | टीका त्रिपथगा। |
| | | | | | | | |
| ς× ફ ·ς | ११ | ४६ | " | ,, | | अपू॰, | |
| 6.8×8.5 | 5 | ३५ | 25 | 33 | } | पू० | सन्धिचन्द्रिकान्ता । |
| ९ [.] ४×३ [.] ५ | 5 | ३९ | " | " | १⊏≍६ | >2 | |
| ९ • ७x३•२ | 5 | ४२ | " | " | १८८१ | " | |
| ९·५×३·५ | 5 | ₹≒ | 33 | >; | १९६४ १८८७ | ** | वै॰ सि॰ कौ॰ टी॰ टीका। |
| ९•७×३•५ | 8 | ३६ | वङ्ग | 7,9 | श० १७०१ | अपू० | |
| १७°७×३ | v | 44 | ,, | ,, | | पू० | स्त्रीप्रकरणस्य । |
| १७'२x२*= | 5 | 50 | ,, | ,, | | " | समासघटकपद्विचारः । |
| १७°२×२′= | 4 | ७५ | ,, | ,, | | ,, | 2> |
| 9.5×8 | 1 92 | 33 | 45 | 31 | | अपू० | सुवन्ततिङन्तप्रकरणे । |
| १५×३·२ | 4 | 8= | ** | " | | ,, | कातन्त्रानुसारः। |
| १७.० × ३.६ | 4 | ६४ | 33 | " | | पू० | त्यादितः कृदन्तं यावत् । |
| 83.0×8.d | 3 | २९ | 14 | ** | | अपू० | आख्यातप्रकरणस्य । |

| | कमसं ख्या | प्र न्थनाम | प्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|------------------|------------------------------|--------------------------------|-----------------------------------------------------------|
| | ३९६६६ | सापेक्षवादः | परमानन्दः | १-२ । |
| | ३९६६७ | अन्वयोपक्रमोपायफलानि | | 81 |
| | ३९६६⊏ | श•्दरत्नम् | रामशरणः | १-10 |
| | ३९६६९ | कातन्त्रसूत्रवृत्तिटीका | सुपेणकविराजः | १-६७ । |
| 1 | ३९६७० | कातन्त्रसूत्रवृत्तिः | द्धर्भसिंह: | १-७९ । |
| | ३९६७१ | कातन्त्रसूत्रवृत्तिटीका | | १-⊏ । |
| | ३९६७२ | कातन्त्रपरिशिष्टसूत्रम् | | १-११। |
| } | ३९६७३ | मुग्धबोधः | | १-१⊏ । |
| | ं ३९६७४ | धातु वृत्तिः | दुर्गसिंह: | १-५ । |
| | ३९६७५ | कातन्त्रसूत्रवृत्तिः | ,, | १-५२ । |
| | ३९६७६ | कातन्त्रपरिशिष्टसूत्रम् | | १-६। |
| | ३९६७७ | कातन्त्रपरिशिष्टसृत्रवृत्तिः | श्रीपतिदत्तः | १-१३६, १३६-१७० 1 |
| | ३९६७= | कातन्त्रसुत्रवृत्तिः | दुर्गसिंह: | 8-401 |
| | ३९६७९ | सुपद्मव्याकरणम् | पद्मनाभद्तः | १-३४ 1 |
| | ३९६८० | कातन्त्रसूत्रवृत्तिः | काशीश्वरः | १, ४-८०+७३, २९-३२ । |
| | | | | |
| | ३९६⊏१ | मुग्धवोधटीका | दुर्गीदासः | १-२४ । |
| | ३९६⊏२ | 23 | | १-३०, १ । |
| | ३९६⊏३ | सङ्चिप्तसारः सवृत्तिकः | कमदीश्दरः वृ०काः जुमरनन्दिः | १-२३, २४(= १), २-५१, १-३१, १-१५, १-२५, २६(= १), २-३४ । |
| | ३९६८४ | मुग्धबोधः | वोपदेवः | १-९+३, १०-७६। |
| | ३९६८५ | सुग्वबोधटीका | दुर्गादासः | १-६६, १-७५, ७५-११३, १-११, १३-१९, २१-२३, १-४९, १-२७। |
| | ३९६⊏६ | परिभाषासूत्रम् | | १-४ । |

| | | | | | , | | |
|----------------------------|------------------|------------------|---------------|--------|--------------|------------------------|----------------------------------------------------------------------------|
| भाकारः | पङ्कि- संख्या | अक्षर- संस्या | . लिपिः | आधार: | लिपिकालः | पूर्णीपूर्ण- विवेक: | . विशेषविवरणम् |
| १७:२×२•⊏ | 4 | હવ | वङ्गः० | का. | | पू० | |
| १७:२×२ : ⊏ | 5 | 50 | 39 |] ; | | 78 | |
| १७•२×२∙⊏ | 4 | ६५ | ,, | ,, | | ,, | |
| १७:२×२:= | v | 50 | ** | " | | " | कृत्सु १-५ पादाः । |
| १६.८ × ३.६ | ß | 39 | ,, | ,, | | 39 | तद्धितपादान्ता । |
| १५×३·३ | Ę | દ્ધ | " | " | | अपू० | आख्यातपादस्य । |
| १०-६×२-९ | v | ३२ | ,, | ,, | | पू० | |
| १२·९×४·९ | Ę | ३९ | ,, | 73 | | अपृ० | अजन्तपुँहिङ्गान्तः । |
| १३ [.] ७×३•५ | Ę | 8/9 | ,, | " | | ,, | |
| १⊏•२×३•६ | 4 | ४३ | " | 19 | | 39 | ञ्चाख्यातप्रकरणम् । |
| १७:२×२:⊏ | 4 | ४६ | ,, | " | | पू० | स्रीप्रकरणान्तम्। |
| १७:२×२:⊏ | 8 | ५० | ,, | ,, | श. १७२५ | >> | समासप्रकरणान्ता । |
| १३•७×३·४ | 8 | ५४ | " | 39 | | अपू० | चतुष्टयप्रकरणम् । |
| १४′⊏×३·२ | Ę | ৬१ | " | 19 | | ,, | |
| ₹8.8 × \$. € | ξ | ५६ | " | 39 | श. १६१३ | 99 | शब्दरत्नाकरो वा । प्रन्थान्ते का- तन्त्रदौर्गसिंहवृत्तिश्च पत्रचतुष्टये |
| १ ८ . | v | ६≂ | ,, | ,, | | ,, | वर्त्तते । |
| १≂'५×३'४ | Ę | cv | " | ,, | | 79 | |
| १५·६×३·३ | Ę | ५१ | ,, | 37 | | पूट∗ | वृत्तिः रसवती । समासपादान्तः। |
| १३•३×४′५ | ९ | ४२ | दे.ना. | " | १७९७ | 23 | |
| १३.४×४.८ | १२ | ४५ | वङ्ग. | ,, | • 1- | अपू० | • |
| १३ [.] ३×३•१ | ٠ · | ५३ | ,, | ,, | श. १७३६ | पू० | अत्र शिक्षावलावलन्यायसूत्राणि च सन्ति । |
| २२ | | | - | ! | | | |

| | क्रमसंख्या | प्र न्थनाम | प्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------|------------|-------------------------------------|----------------------------------|-------------------------------------------------------------------|
| | ३९६८७ | सुपद्ममकरन्दः | प्राणहरिभिपक् | १-5+१, १, १-१३, १-११, १-११, १-४, १-४, १-२५, १-५(= १), २-४ + ३। |
| | ३९६५५ | सुपद्मव्याकरणम् | पद्मनाभदत्तः | २-१११ । |
| | ३९६⊏९ | सारस्वतटीका | | १-६। |
| | ३९६९० | धातुपाठः | | १-३०। |
| | ३९६९१ | राजादिवृत्तिः | | १-⊏ 1 |
| | ३९६९२ | सङ्चिप्तसारदीपिका | वंशिवदन- भट्टाचार्य्यः | १-१०, ४-७, ९-११, १३-१५, २६-३३, ३५-३७, ४०। |
| | ३९६९३ | कातन्त्रपरिशिष्टसूत्रवृत्तिः | श्रीपतिदत्तः | १-२३, १-७=, ==-९=, १००-११९+१। |
| | ३९६९४ | धातुलक्षणम् | दलोकः | १-२¤+३, १-३। |
| | ३९६९५ | शब्दरस्नाकरः | कामदेवघोप: | १-६, ११-५६+१। |
| | ३९६९६ | कातन्त्रसूत्रवृत्तिः | दुर्गसिंह: | २-⊏, ११-६५, ६७-१०३ |
| | ३९६९७ | भाषावृत्तिः | पुरुपोत्तमः | २९४। (गणनया) |
| | ृ३९६९⊏ | सुग्धवोधटीका | रामानन्दः | १२९ । (गणनया) |
| | ३९६९९ | सड्क्षिप्तसारः सवृत्तिकः | क्रमदीश्दरः चृ०काः जुमरनन्दिः | , |
| | ३९७०० | कारिकावृत्तिः | सरस्वतीराम: | . १-२६ । |
| | ३९७०१ | वैयाकरणसिद्धान्तलघुमञ्जूपा | नागेशभट्टः | १-७०(= ७१), ७१, १-१०३। |
| | ३९७०२ | तर्केचन्द्रिका | कृष्णभट्टमौ नी | १-४२, ४२-१२४, १२ ६-१ ४७ । |
| | ३९७०३ | सङ्क्षिप्तसारवृत्तिविवरण- कौमुदी | , अभिरामः | १-३०, ३०-६० । |
| | ३९७०४ | सङ्क्षिप्तसारवृत्तिविवरणम् ं | गोयीचन्द्रः | १-१०४ । |
| | ३९७०५ | समासज्ञापकावली | हरगोविन्द- विद्यावाचस्पतिः | १-१६। |
| ···· | ३०७०६ | मुग्ध बोधपरिशिष्टम् | काशीश्वर: | १-४१, ४१-५९ । |

| आकार: | पङ्कि- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपि: | आधार: | लिपिकाल: | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------------------------------|------------------|------------------|--------|-------|---------------------|------------------------|-------------------------------------------------|
| ξα.έγ 8.έ | १३ | 50 | वङ्ग. | 事1. | श. १७१२ | अपू० | सुपद्मच्याकरणटीका । |
| १६.8× ३. ७ | ξ | ४६ | ,, | " | | " | |
| ११•४×५•४ | १६ | ૪ર | दे.ना. | " | | " | टीका-चन्द्रकीर्त्तः। |
| १३'४×३•१ | 8 | ३० | बङ्ग. | ,, | श. १७३७ | पू० | |
| १ ३ -६×३-१ | Ę | ५५ | ,, | " | | 33 | कातन्त्रे समासप्रकरणस्य । |
| १३•२×३·७ | ९ | ४८ | 23 | ,, | | अपू० | |
| १६·९×३·१ | ۹ | ६४ | "e | " | श. १५६७ | पू॰ | |
| १३·५×१·९ | Ę | ६८ | ,, | " | श. १६१६ | n* | अन्ते दशवलकारिका च । |
| १३·५×१·९ | Ę | ξ⊏ | " | " | श. १६१६ | अपू० | |
| १ ३ ⋅⊏×१ ・ २ | 3 | ५२ | ,, | ताः | | " | आख्यातप्रकरणस्य । |
| १७·५×३·२ | ९ | ७९ | ,, | का. | वङ्गाब्दाः १२१≔ | " | अष्टाध्यायीटीका । |
| १७.५×३.५ | 9 | 20. | ,, | ,, | | 77 | |
| १४•९×३·१ | ų | ७१ | " | 79 | श. १७१० | पू॰ | सन्धिपादान्तः । |
| १४ [.] २×३ [.] ३ | Ę | ५३ | ,, | ,, | | अपृ० | |
| १२•१×४·४ | १२ | ४० | दे.ना. | ,, | श. १८८० १७४४ | " | |
| ९ [.] ४×४ [.] ३ | | २५ | " | " | | 99 | |
| १५·५×३·५ | ११ | ৩২ | वङ्ग. | " | | पू० | सं॰ सा॰ टी॰ टी॰ टीका समास पादस्य। |
| १५ [.] ६×३ [.] ५ | 8. | 48 | 55 | 59 | वि॰र॰का॰ श. १७५४ | >: | जुमरनन्दिपरिशोधितवृत्तेष्टीकेयं समासपादस्य । |
| १५·६×३·६ | रेश | ६६ | н | " | | ,, | सङ्क्षिप्तसारज्ञापकावल्याम् । |
| १६.५×३.= | v | ७२ | 33 | ,, | হা. १७७१ | " | |

| - कमसंख्या | अ न्थनाम | प्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---------------|-----------------------------------|-----------------------------|-------------------------------------------------------------------------------------------------|
| | | | |
| ३९७०० | मुग्धबोधपरिशिष्टम् | काशीश्वरः | १-२८(= २४) २५-४३ + ५ । |
| ३९७०ः | सिद्धान्तचन्द्रिका | | १-१५, १७-२५। |
| ३९७० | तघुशब्देन्दुशेखरः | | 49-400 1 |
| ३९७१ | , ,, | | १-१७ । |
| ३९७१ | ? | | ५६-६३ । |
| ३९७१ः | ,, | | ७-१२,१४-२२,१९-२९,२९,२९-३९,३९-११३, ११५-१३३, १ - १५, १७-२६, ३०-३५ । |
| ३९७१ | अप्राध्यायी | | १-२०, २२-८२, ८४-८७, ८९ । |
| ३९७१ | ४ कविरहस्यधातुच्याख्या | | १-९ । |
| ३९७१ | अपरिमाणेत्यादि-सूत्र- व्याख्या | | १-२ । |
| ३९७१ | वैयाकरणसिद्धान्तकोमुदी | | ३१५। (गणनया) |
| ३९७१ | े क्रियाकत्तापः | विद्यानन्दः | १६-२१। |
| ३९७१ | अप्राध्यायी | | १- ७ ० |
| ३९७१ | र महाभाष्यप्रदीपोद्योतः | नागोजिभट्टः | १-६९. ७६-१६=, १-६६(=६७),६७-७५, (=७६),७७-१७०,१-९४,१-१०६,१-१०३, १०३-११७, १-१७२, १-९१, १-७९। |
| ३९७२ | - काशिकाविवरणपञ्जिका | जिनेन्द्रबुद्धिपाद <u>ः</u> | १-१७,१-१४,१-४,६-४४,१-३+१,७,९ - ४ = 1 |
| ३९७२ | ् १∣ अनिट्कारिकाटीका | | १-६। |
| | २ महाभाष्यप्रदीपोद्योतः | नागेशः | १-१४, १९-१०० । |
| ३९७२ | ३ प्रकियाकौमुदीटीका | | ६-१९, २१-३४, ३६-४३ । |
| ३९ <i>७</i> २ | ४ प्रक्रियाकौमुदीप्रसादः | विद्वलाचार्यः | ६-९, ९-९९ । |
| ३९७२ | ५ शब्दकौस्तुभटीका | | १-१= 1 |
| ३९७२ | ६ तघुसिद्धान्तकौमुदी | वरदराजः | ११, १३-२९ । |
| ३९७३ | ञ्याकरणटीकाय्रन्थविशेषः | | ३१-४८, ४८-६३ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपि: | आत्रार: | लिपिकाल: | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|--------------------|--------------------|------------------|------------|---------|---------------|------------------------|------------------------------------------|
| १४. १× ३. ६ | Ę | ६५ | वङ्ग. | का. | श. १६१० | अपू० | 1 |
| ८.¤×8.ई | १३ | ४६ | दे.ना. | " | | ,, | अख्यातप्रकिया । |
| १ ० .८×8.८ | ११ | 82 | " | 29 | | ,, | वै० सि० कौ० टी० टीका । |
| ११.£×8.⊏ | ११ | ५५ | ,, | " | | ,, | '' तद्धितप्रकरणम् । |
| ११:७×४:९ | १३ | 43 | 5 2 | " | | 28 | वै० सि० कौ०टी०टीका। समासा- श्रयान्तः। |
| ११•६×४•६ | १३ | ६२ | ,, | " | | 33 | वै० सि० कौ० टी० टीका । |
| ९'२×४'४ | ٩ | २७ | ,, | 33 | | 73 | |
| १०·५x४·५ | १४ | 48 | " | 33 | | पू० | |
| ११.५x४ ७ | ११ | ४१ | ,, | 3-3 | | ** | |
| ११ : ⊏×४:७ | 9 | 88 | 77 | " | | अपू॰ | अतिजीर्णपत्रत्वात्प्रयोगानर्हो । |
| १३:२×६·९ | २ १ | ५५ | 3.5 | " | | पू० | |
| ದ.രל.ದ | 9 | २५ | ,, | " | | अपू० | अष्टमाध्यायस्य प्रथमपादान्ता । |
| ०.०x8.८ | १० | ३६ | 23 | ,, | १७द्भ १८४६ | ,, | १-⊏ अध्यायाः । |
| १ ३. १×8.≃ | १२ | ६२ | >> | ,, | | " | |
| ב.exغ.غ | 5 | ३५ | ,, | " | | पृ० | |
| ११•३×४·१ | १० | ४६ | " | ,, | | अपृ० | |
| १०'⊏x४'५ | १० | ३५ | 39 | ,, | | 33 | |
| ११°⊏×8.0 | 3 | ३९ | 73 | 93 | | 29 | |
| ९ . ≃x8.≾ | १६ | ३७ | 73 | " | | " | अष्टाध्यायी टी० टीकां । |
| १२•५×५ | 3 | ४० | >> | ,, | | × | |
| ९.६×४.५ | १० | ३⊏ | ,, | ,, | | " " | |

| | | | · | |
|---|----------|------------------------|----------------------|-----------------------------------------------------|
| | कमसंख्या | ∖· । ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवस्णम् |
| | ३९७२⊏ | शब्दकौस्तुभः | भट्टोजिभट्टः | १-१७९, १७९-२२८। |
| | ३९७२९ | ,, | | ५-७=, ७=-९१। |
| | ३९७३० | ٠, | भट्टोजिभट्टः | १-९८, ९८-१०८। |
| | ३९७३१ | *2 | | १-९५ । |
| | ३९७३२ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | | २५-३९ । |
| | ३९७३३ | " | | ७-१८, २०-२३, ११८। |
| | ३९७३४ | ,, | | १-५, ६ । |
| | ३९७३५ | 'n | भट्टोजिदीचितः | ३-९१, २-६, ९५-११२, (१३ = १४), ११४-१२६। |
| | ३९७३६ | ,, | | १-५१ । |
| | ३९७३७ | 23 | | १-१६, २२-३८, ४४-२०७, २०७-२०८। |
| | ३९७३⊏ | परिभाषेन्दुशेखरः | नागेशः | १-३७, ४०-५० । |
| | ३९७३९ | प्रौढमनोरमा सटीका | | १-५६ । |
| | ३९७४० | लघुशब्द् रत्नम् | हरिदीचित: | १-९, १२-३३, ५५-६१, १-११, ७९-१११, ११३-११७, १-४४ । |
| | ३९७४१ | वैयाकरणसिद्धान्तकोसुदी | भट्टोजिदीक्षितः | १-१९, २१-२८ । |
| | ३९७४२ | 33 | | १-५९। |
| | ३९७४३ | मध्यसिद्धान्तकौसुदी | | ३२-३३, ३७-६३ । |
| | ३९७४४ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | | ३९-४७ । |
| | ३९७४५ | 39 | | २१-३९ । |
| | ३९७४६ | मध्यसिद्धान्तकौमुदी | | ३-१६, १⊏-३३ । |
| | ३९७४७ | परिभाषेन्दुशेखरः | नागोजिभट्टः | १०-=५। |
|] | ३९७४८ | प्रौढमनोरमा | भट्टोजिदीक्षितः - | ११९-१३८, १४४-२९९ । |
| | | 1 | ·Su allingian | |

| ट्सवार । | पङ्क्ति- संस्या | धक्रर- संख्या | त्दिपि: | काभारः | लिपियाल: | पृणीपूर्ण- दिवेक: | दिशेयविवरणम् |
|----------------------------------------|--------------------|------------------|---------|------------|----------|---------------------------------------|-------------------------------------------|
| १०-९×४-२ | ११ | ४६ | दे.ना. | का. | | पूरु | अष्टाध्यायीटीका । अ०१ पा०१ आ०९। |
| \$0.¤xβ.̈̂̂̂̂̂̂̂̂ | १० | છહ | " | 3 3 | | अपृ० | अष्टाध्यायीटीका अ०१ पा०३ आ०२ |
| १० ⁻ ७x४·३ | १० | ४६ | >, | 31 | | पृ० | अष्टाध्याचीटीका । अ०२ पा० ४ आ०२। |
| १० : ५x४ : ५ | १० | છહ | 25 | ,, | | " | अष्टाध्यायीटीका । अ०३ पा० १ आ०६। |
| ९·५×४'२ | १३ | ३५ | ,, | ,, | | अपू० | |
| ११फx५५ | 3 | ૪૦ | *1 | " | | ,, | |
| ११'७x५' { | १० | . રૂષ્ટ | 23 | ,, | | अपृ० | |
| ५.७x४.५ | १० | ફેપ્ટ | ,, | 12 | १⊏३⊏ | ** | |
| ९ . ≃×८ | १२ | ₹% | ,, | ,, | | Фo | फुट्रन्तप्रकरणम् । |
| ९.७×४.४ | = | ३६ | ** | " | | अगृ० | |
| ≂. ३ ×८.४ | १० | ३१ | ٠, | ,, | | ,, | |
| ९.५×४.५ | १४ | ४३ | ,, | " | | ** | टीका शब्दरस्नाख्या । |
| १२·२×३•≈ | १३ | ५७ | ,, | " | | • • • • • • • • • • • • • • • • • • • | वै॰ सि॰ कौ॰ टी॰ टीका । |
| =*4×₹·Ę | १२ | ३१ | ,, | ,, | | 79 | |
| [}] ९. ३ × ३. ≃ | १० | 20, | ** | 37 | | 33 | |
| ^१ १०×४.४ | 3 | ३६ | ,, | ,, | | *** | |
| , ๘ *७x३*¤ | 9 | २९ | ** | " | 1 | Î ••• • | |
| ='\$x2'\$ | €. | 38 | ,, | ,, | | *** | |
| ું હ'¤x૪''ય | १२ | ३० | " | ,, | | 1 1 22 | , |
| ् १० १६ ४४ १ ६ | o | ३६ | 22 | " | | ; | |
| ₹₹₹₩₩ ₹ | 9 | 84 | 32 | ,, | | 1 11 | वै० सि० कौ० टीका । |

| क्र मसं ख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---------------------|---------------------------------|--------------------|----------------------------------------------|
| ३९७४९ | प्रौ ढमनोरमा | भट्टोजिदीक्षितः | १-१४, १७-५४ (५५ = ५६) ५६-१४०। |
| ३९७५० | ,, | 25 | १-१३२ । |
| ३९७ ५१ | 19 | 59 | १-४५ । |
| ३९७५२ | त्तघुशब्द्रत्नम् | हरिदीचित: | १४४-२५६, २५८-२७४। |
| ३९७५३ | " | ,, | १-१११+२, ११४+१, ११७-११९+१, १२३+१। |
| ३९७५ ४ | समासचक्रम् | | २-११ । |
| ३९७५५ | मध्यसिद्धान्तक <u>ौम</u> ुदी | वरद्शजः | १-२०, १-१०। |
| ३९७५६ | घातुरूपावली _. | | १-२। |
| ३९७५७ | शब्द्रत्नम् | | १-१८, ३९-५६ । |
| ३९७५⊏ | ग्रौ ढमनोरमा | | १-३४ । |
| ३९७५९ | वैयाकरणसिद्धान्तक <u>ौ</u> मुदी | भट्टोजिदीक्षितः | २०-२६, ६३-७०, ७⊏-९⊏, १५१-१६२, · १७१-१७६ । |
| ३९७६० | तत्त्वबोधिनी | ज्ञानेन्द्रसरस्वती | १-२०, २५-४६, ४=-५५, ५८-७० । |
| ३९७६१ | शब्दरूपावली | | २-= । |
| ३९७६२ | कातन्त्रसूत्रं सवृत्तिकम् | | २० । |
| ३१७६३ | तत्त्ववोधिनी | | १-२७, २९, ३१-३८, ४२-४८, ५१-९४। |
| ३९७६४ | परिभाषेन्दुशेखरटीका | | १२-२० <u>,</u> २२ । |
| ३९७६५ | चैयाकरणसिद्धान्तक <u>ौम</u> ुदी | | १-९, ११-१२ + ३, १७-१९ । |
| ३९५६६ | ,, | | ३१-३२, ३४-३७ । |
| ३९७६७ | प्रौ ढमनोरमाटीका | | ५६-६२ । |
| ३९५६८ | चैयाकरणसिद्धान्तक <u>ौम</u> ुदी | | ३७-४०, ४२, ४७-४९, ५१-५५ । |
| -३९७६९ | 58 | | १-७, ११-३६। |
| ३९७७० | सिद्धान्तकौमुदी | | ४ ⊏-५९ । |

| आकारः | पङ्कि- संख्या | धक्षर- संख्या | लिपि: | क्षात्रार: | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेष विवरणम् |
|----------------------------------|------------------|------------------|------------|------------|-----------------|------------------------|-------------------------------|
| ११×४·३ | ९ | ३८ | दे.ना | का. | | अपू० | वै॰ सि॰ कौ॰ टीका । |
| ११•२×४•५ | 5 | ३३ | " | " | | δô | " कृद्न्तप्रकरणम् । |
| ११×४·३ | ९ | ३६ | 79 | 59 | | 5 | " वैदिकप्रकरणमात्रम् । |
| १०°⊏×४°४ | ९ | े इं⊍ | ,, | ,, | : | अपू२ | वै० सि० कौ० टी० टीका। |
| १०'५x४'५ | ٩ | 33 | >> | 33 | | 31 | 33 |
| ডণ্¢x४ [.] ६ | 5 | २० | " | ,, | | 31 | |
| ९•४×४•१ | १० | ३९ | " | 33 | | 54 | · |
| ९ . ६×८.३ | १ँ६ | ५२ | 93 | ,, | | ,, | |
| १०•५×४•१ | ९ | ३६ | " | ** | | 75 | ० सि० कौ० टी० टीका । |
| १०५५४४७ | १० | ३८ | , , | " | | " | वै० सि० कौ० टीका। |
| ९ . ८×८.६ | = | २९ | ,, | " | १७७९ | 31 | |
| १२ °७ × ४'४ | १० | ४५ | 33 | 33 | १७५० श. १६३५ | 7 * | वै० सि॰ कौ० टीका । |
| ⊏×8 | 9 | રષ્ટ | 34 | ,, | १८२८ |)] | धातुरूपावलीसहिता । |
| १७.६×३.० | 8 | 80 | वङ्ग | 23 | | 33 | |
| १०'२x४'२ | 9 | ३४ | दे नाः | 33 | | , 11 | वै॰ सि॰ कौ॰ टीका। |
| ९ [.] ३×४ ° १ | १३ | 8= | 15 | H | | >) | ٠. |
| १०५ × ४५५ | 88 | ૪ર | ,, | " | | ,, | |
| १०'¤ × ४'३ | ધ | ২৩ | " | " | | 55 | |
| १ =* ४ × ४ [,] ५ | ९ | ४१ | " | " | | , | |
| ९.८ × ३.० | 5 | २६ | " | " | | 71 | |
| ९•५×३•७ | १० | ३४ | ,, | " | | " | |
| ⊊:ξ×8 | Ę | १९ | " | " | |)) | |

| | क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | अन्यकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|-------------------------|-------------------------------|-------------------|------------------------------|
| | ३९७७१ ३९७ ७ २ | त्तघुशब्द् रत्नम् " | | १-≈ । ९-१४, १७-२७ । |
| | | सुवोधिनी | जयकृष्णः | ११-६३, ६५-६७, ६८-७२। |
| | | वेयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | भट्टोजिदीक्षितः | द-१०, ४३-४६, ५७.५ न । |
| | 1 | अष्टाध्यायी | | २-४९ । |
| | 1 | चे याकरणसिद्धान्तको मुदी | | ३०-३१ । |
| | ७२७५७ | ,, | | ४। (गणनया) |
| • | ३९७उ⊏ | शब्दकौरतुभटीवा | | १-४ । |
| | ३९७७९ | परिभाषेन्दुशेखरटीका | | ५-४= । |
| | ३९७८: | वैया हरणसिद्धान्तदीपिका | ंकोण्डभट्टः | २९ । |
| | ३९७≒१ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | | ४१, ५०, ५६ । |
| | ३९५⊏२ | अप्टाध्यायी | | ५०-५१ । |
| | ३९७≍३ | वैयाकरणभूपणसारः | | ११-२⊏ । |
| | ३९७⊏४ | ,, | कोण्डभट्टः | १-५१ । |
| | ३९७=५ | छ घुशव्देन्दुशेखरः | नागेशः | ५६६। (गणनया) |
| | ३९७⊏६ | परिभापेन्दुशेखरत्रिपथगा | राघवेन्द्राचार्यः | १-५७ । |
| | ३९७≂७ | लघुशब्देन्दुशेलरशका | | १-४५ । |
| | ३९७== | लघुशब्देन्दुशेखरविवृतिः | | १४-१५ । |
| | ३९७≂९ | लवुशब्देन्दुशेखरदोपोद्धारः | | १७-२२ । |
| | ३९७१- | उपपदमतिङ्इति सूत्रवादः | मन्नुदेवः | १-५। |
| | ३९७९१ | प्रौढमनोरमा | | १-५, ७-९, ३१-३६+१। |
| | ३९७९२ | लघुराव्देग्दुशेखरः | नागेशः | .१-२४, २४-६३ । |
| | ३९७ ९३ | शब्दरूपावितः | | ७-=,११-१४। |
| | } | <u></u> | | |

| | - { | संख्या | लिपिः | भाषारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------------------------------|-------------|--------|--------|--------|----------|------------------------|-------------------------|
| ११"५×४'३ | 9 | ४१ | दे.ना. | का. | | अपूर | वै॰ सि॰ कौ॰ टी॰ टीका। |
| १० [.] ७x४ [.] ५ | २० | ४९ | ,, | >2 | , | 23 | 22 |
| ९x४ [.] ५ | ११ | રૂરૂ | " | ,, | | 11 | बैं= सि= कौ: च्याख्या l |
| ९ . ८×५.८ | १० | ३२ | ** | " | | " | |
| द्र ७x३.£ | ₹≎ . | ३३ | 79 | ,, | • | 13 | |
| ۲٠٤×٤٠۶ | 5 | ४० | " | ,, | | 11 | |
| ९ . २×३.ए | 88 | ३⊏ | ,, | ,, | | 35 | |
| ९·२×४·१ | १० | ३२ | 24 | " | | 77 | अष्टाध्यायी टी० टीका। |
| .8.8×8.5 | १२ | ३५ | 39 | " | |) ; | |
| ۷×٤٠७ | ९ | ३४ | " | 34 | | 14 | |
| ८.≃× ક.≃ | १२ | ४५ | ,, | " | | " | |
| ='९×३'५ | १० | ३० | " | >> | | , | |
| =:५x३·५ | १० | ३९ | 23 | " | | 33 | |
| ડ≎×϶.≈ | 9 | ४३ | ,, | " | | पूट | |
| ८,¤x≨.¤ | 9 | ૪૪ | " | 11 | | अपू0 | वै॰ सि॰ को॰ टी॰ टीका। |
| १ > •६×४'६ | ११ | ४३ | 71 | 11 | १९१६ | पृ० | |
| ξο. αΧ8.£ | 9 | ३४ | 21 | " | | अपू० | |
| १०'७×४'६ | ९ | ३⊏ | " | 77 | | " | |
| १० [.] ९×४ [.] ७ | १० | ५० | " | " | | 5 5 | |
| ₹0•3×8.8 | 9 | રૂદ્ | " | " | | पू० | |
| 88×8.8 | २० | ६५ | 73 | " | | अपू० | वै॰ सि॰ कौ॰ टीका। |
| ९•≈×४ [.] २ | १० | ૪૦ | " | " | | " | 39 |
| ७°२×३°९ | E | १९ | ,, | " | | 37 | |
| | } | | | | | • | , |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्य¦विवरणम् |
|------------|----------------------------------------|--------------------|--------------------------------------------|
| ३९७९४ | ष्ट्रीढमनोरमा | | १-७, १२ (= २२), १३-२५ (= ३५), ५९ + १। |
| ३९७९५ | प्रौढमनोरमा सटीका | | १-५, ५-१० । |
| ३९७९६ | बैयाकरणभूप गसारः | कोण्डभट्टः | १-२= । |
| ३९७९७ | वैयाकरणसिद्धान्त भौमुदी | | १-७९ |
| ३९७९८ | शब्दरूपावितः | | १-१० । |
| ३९७९९ | अष्टाध्यायी | पाणिनिः | १-२, ४-६। |
| ३९८०० | वैयाग्ररण सद्धान्तवरमत्तघु- मञ्जूपा | नागेशः | १-२५ । |
| ३९⊏०१ | शब्दरूपावित. | नारायणभट्टः | १-१५ । |
| ३९८०२ | श्रौढमनो रमा | | १-=+९, १० । |
| ३९⊏०३ | त्तघुशब्दरत्नम् | | ४२-६६ । |
| ३९⊏०४ | परिभाषेन्दुशेखरः | नागेशः | १-१०५ । |
| ३९⊏०५ | त्तघुश व्दर त्नम् | हरिदीचित: | १-५१ । |
| ३९⊏०६ | वैयाकरणसिद्धान्तकौर्द्ध | भट्टोजिदीचितः | १-२०, ४-५, ३२-३७ । |
| ३९⊏०७ | त्तवुशन्देन्दुशेखरः | | १-१०, २१-७० । |
| ३९८०८ | ,, | नागेशः | १-२५ । |
| ३९⊏०९ | अष्टाध्यायी सवार्तिका | | ४-६३, ६३-७२ । |
| ३९८१० | उणादिसूत्रवृत्ति ः | उज्ज्वलद्त्तः | १-१५, १७-२५ । |
| ३९⊏११ | गणपाठ: | | १-२७ । |
| ३९=१२ | गणरत्नम् | वर्द्धमानः | १-३९ । |
| ३९⊏१३ | तत्त्ववोधिनी | ज्ञानेन्द्रसरस्वती | १-२२३(= २२४), २२५-२९५, ६३-≂२ । |
| ३९⊏१४ | ** | n | १-२२, २२-१२२ । |
| ३९⊏१५ | 33 | ,, | १-३६, ३८-९४ । |

| आकार ः | पङ्कि- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आयारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णं- विवेकः | विशेषविवर्णम् |
|------------------------------------|------------------|------------------|--------|-------|----------|-------------------------|------------------------------------------------------------------|
| ९·६×४·३ | ११ | ३३ | दे.ना. | का• | , | अपू॰ | बै० सि० कौ० टीका। |
| ११•४×४•≈ | १० | ५२ | " | " | | 5 7 | टीका शब्दरत्नाख्या । |
| १०•¤×८.€ | १६ | ६७ | ,, | " | • | पू० | |
| ९ [,] २x३ , ७ | Ę | ર૪ | " | 59 | | अपू० | |
| द'२x४'७ | ९ | २५ | >> | 22 | | 73 | |
| ₽, £ ×3,₽ | १० | २८ | " | 7, | | " | , |
| १० . ५४४.५ | ९ | ४२ | " | " | | " | |
| ९·६×४·६ | v | 38 | 7, | 33 | | पू० | अजन्तशब्द्निरूपणान्ता । |
| ९ . ≃×8.ई | 9 | ५० |); | ,, | | अपू० | वै॰ सि॰ कौ॰ टीका। |
| ९ : ⊏x४:३ | ११ | हर | ,, | " | | 73 | वै० सि० कौ० टी० टीका । |
| ۳ ۴4×३ ۰ ९ | 9 | २६ | " | 53 | | Ãо | |
| १३.८×८.६ | v | ४९ | ,, | ,, | | अपू० | वै॰ सि॰ कौ॰ टी॰ टीका । |
| ९'५x४'२ | ११ | 80 | ,; | " | | >> | वैदिकस्वरिङ्गानुशासनप्रकरणानि। |
| ११×४'५ | 9 | 88 | ,, | ,, | | ,, | _वै० सि० कौ० टीं० टीका। |
| ११×४°५ | ११ | 88 | ,, | ,, | | ,, | 13 |
| ⊏' २ ×४'३ | १० | ३० | ,, | 14 | | " | |
| १०-३४४-७ | 2 | 80 | ,, | 33 | | ,, | |
| ₹%×8.8 | १० | ३८ | , | 7.9 | | " | , |
| ९.8×8.4 | १२ | ३५ | ,, | ,, | | पूर | छन्दोवद्धं पुस्तकम् । |
| १० ⁻ ६×४ ⁻ ५ | 33 | ५२ | ,, | . 33 | | अर्वे० | वै० सि० कौ० टीका । पत्राङ्कलेखन- भ्रमेऽपि पूर्वाङ्कमपूर्णम् । |
| ११×४ [.] ५ | १२ | વધ | 55 | " | | " | वै॰ सि॰ कौ॰ टीका। तिङ्ग्तप्रकरण- मात्रम्पूणम् । |
| ११•२×४′७ | 1 88 | ४९ | ,, | >> | | ,, | वै० सि० कौ० टीका । कुदन्तमात्रम् । |

| | कमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|-------|------------------------|-------------------------|--------------------|------------------------------------|
| | ३९⊏१६ | धातुपाठः | | १-३१ । |
| | ३९≂१७ | परिभाषेन्दुशेखरः | नागेशः | १-६२ । |
| | ३९८१८ | " | ,, | १-९४ -। |
| | ३९⊏१९ | पूर्वेपक्षावली | होरिलशर्मा | 18-40 1 |
| | ३९⊏२० | प्रत्याख्यानसङ्ग्रहः | | १-४६ । |
| | ३९⊏२१ | प्रबोधचन्द्रिका | वैजलभूपालः | १-२५ । |
| | ३९⊏२२ | शब्दकौस्तुभप्रभा | वैद्यनाथपायगुण्डे: | १-५९, ६१-६९ । |
| | ३९⊏२३ | प्रौढमनोरमा | | २-१०¤, ११३-१२२ |
| | ३९⊂२४ | " | | १-६१ । |
| | ३९⊏२५ | " | | १-१४०, १४२। |
| | ३९⊏२६ | वालवोधः | नरहरिः | १-१४ । |
| | ३९८२७ | वैयाकरणसिद्धान्तमञ्जूषा | नागेशभट्टः | १-१४२ । |
| | ३९८२८ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | भट्टोजिदीक्षितः | १-२७, १-४५, १-११ । |
| | ३९८२९ | तत्त्वबोधिनी | | १-रृ्द, ३४-५९, ११२-११५, ११७-३३२। |
| i | ३९५३० | ,, | | १-६९, १-(२३ = २४)२५-२९, १-६+१,७-२६ |
| ; | ३९⊏३१ | सुवोधिनी | जयकृष्णभट्टः | ?-01 |
| | ३९⊏३२ | तत्त्वबोधिनी | | १-२३ । |
| i | ३९⊏३३ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | | १-२५ । |
| | ३९⊏३४ | सारस्वतम् | | १, ३-४, ६-२३। |
| | ३९≂३५ | कातन्त्रसृत्रवृत्तिः | दुर्गसिंह: | १- ३ ४+१ । |
| • | ३९⊏३६ | 23 | 3 9 | १-३९+१, २-३ ⁻ ६+२ । |
| | ३९⊏३७ | प्रबोधचन्द्रिका 🕡 | वैजलभृपतिः | ११-३२ । |
| \ | ३ ९ ≈ ३⊏ | " | | १५ । |

| आकार: | पङ्कि- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपि: | आधार: | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेक: | विशेपविवर्णम् |
|--------------------------|------------------|------------------|--------|-----------|----------|------------------------|-------------------------------------------------------------------------------|
| ९•६×२•२ | Ę | 88 | दे.ना. | का. | १८६६ | पू० | |
| १० × ४ ° ४ | 9 | ३३ | ,, | 33 | १८८३ | ,, | |
| ९·५x४·२ | 9 | ३ २' | ,, | 33 | | अपू० | |
| ದ,ದxś,ಡ | ९ | २२ | ,, | 33 | | Ã٥ | शास्त्रार्थविवयको मन्थः। |
| ९·२×४ २ | ११ | ३० | ,, | " | | अपृ० | सङ्ग्रहकर्त्रा पाणिनिएत्रमवलम्ब्य- सूत्रं तद्शप्रत्याख्यानव्रं सङगृहीतम् । |
| ९७x५ | ९ | ३६ | ,, | 93 | | पृ० | सन्धिचन्द्रिकान्ता। पद्यमयोऽयंत्रन्थः। |
| ९·३×४·२ | 9 | २९ | 33 | ,, | | अपू० | |
| ۵·4×8 | Ę | २९ | ,, | " | | 33 | वै० सि० कौ० टीका I |
| ९·५×ध•३ | 5 | २९ | " | ,, | १९२० | " | ,, |
| ९ . ७×८.४ | - | ३३ | ,, | >> | | >> | 33 |
| ९×३•५ | 9 | ४६ | n | ,, | | ** | |
| १ ≈×8.8 | 88 | ५३ | 39 | 33 | | पूरु | स्फोटवादमात्रम् । |
| १ ॰ •२×३•= | v | 88 | ,, | ,, | १=९९ | ,, | वैदिकऽकरणाहिङ्गानुशासनान्ता। |
| १०×8∙३ | १० | ३२ | " • | " | | अपू> | वै० सि० कौ० टीका । |
| ९.५×५.१ | 5 | ३२ | " | ,, | | 19 | 33 |
| ९•४×४•३ | १० | ५१ | ,, | ,, | | " | " देदिकप्रकरणमात्रम् । |
| 9 4x4.8 | १२ | ३९ | ,, | ,, | | ** | " कारकप्रकरणमात्रम् । |
| 9.8×8 | 9 | ३≂ | ,, | ,, | | ,, | स्वरशकरणमात्रम् । |
| ९. ३ ×३.८ | १० | र्देष्ठ | ,, | ננ | १६६:= | " | आख्यातप्रक्रियामात्रम् । |
| १५×३·२ | 3 | ३⊂ | वङ्ग | 23 | | 53 | चतुष्टयप्रकरणम् । |
| १५×३•२ | 3 | ३९ | ,, | 1, | | " | ,, |
| ="4×8"8 | 5 | ३० | देःनाः | >> | १८७७ | ,,, | पद्यमयोऽयं ग्रन्थः । |
| द.€×8.8 | ११ | ३९ | ,, | 33 | | ** | 39 |

| | | | , | <u> </u> |
|---|-------------------|-----------------------------------------|-------------------------|----------------------------------|
| | कम सं ख्या | ग्रन्थनाम | भ न् थकारनाम | पन्नसंख्याविवरण्म् |
| | ३९⊏३९ | च्याकरणग्रन्थविशेप: | | १-६। |
| | ३९⊏४० | सारस्वतम् | | २-३८ । |
| | ३९⊏४१ | 93 | | १०-१९ । |
| | ३९⊏४२ | " | | १-४९ । |
| | ३९⊏४३ | ,, | | ६-१० । |
| | ३९⊏४४ | कातन्त्रसूत्राणि | | ६-१०, १-२९। |
| | ३९≂४५ | धातुरूपाविलः | | ३-४⊏ । |
| | ३९⊏४६ | कातन्त्रस्त्रवृत्तिः | दुर्गसिंह: | २-१८ । |
| | ३९⊏४७ | मुग्घवोधः | | १-४ । |
| | ३९८४८ | कातन्त्रसृत्रवृत्तिः | दुर्गसिंह: | १-६५ । |
| | ३९≂४९ | मुग्धबोधः | | १-५३ । |
| | ३९८५० | प्रौ ढमनोरमा | | १-१० । |
| | ३९⊏५१ | सापेक्षवादः | | १। |
| | ३९८५२ | कातन्त्रसूत्रवृत्तिपञ्जिका- न्याख्या | विश्वेश्वरतर्काचार्यः | १०१ - १०३ । |
| | ३९⊏५३ | कातन्त्रसुत्रवृत्तिपञ्जिका | त्रिलोचनदासः | १४-५५(= ५६),५७-५७,(=७९),७९-१००। |
| | ३९⊏५४ | कातन्त्रसूत्रवृत्तिः | दुर्गसिंहः | १-७६, ७८-७९ । |
| | ३९⊏५५ | संचिप्तसारः | क्रमदीश्वरः | १-७ । |
| | ३९⊏५६ | लघुश च्देन्दुशेखरदोषोद्धारः | मन्तुदेवः | १-२५। |
| | ३९८५७ | तत्त्वप्रकाशिका | | १- १६ । |
| } | ३९५५८ | कातन्त्रसुत्रवृत्तिपश्चिका | त्रिलोचनदासः | १-५, ५-२०, २२-१५८, १५८-१६४। |
| | ३९=५९ | परिभाषेन्दुशेखरटीका | | १-३३ । |
| | ३९⊏६० | लघुशब्देन्दुशेखरटीका | | ३-५ 1 |
| | | | | |

| आकारः | पङ्कि- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णीपूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------------------------------|------------------|------------------|-----------|-------------|------------|------------------------|------------------------------------------------------|
| १३·९×३ | 9 | ४६ | वङ्ग. | का | वङ्गाव्दाः | पू० | सन्धिप्रक्रियामात्रम् । |
| १०'२x४'६ | 2 | 33 | दे. ना | >> | १२५= | अपू० | |
| ९•३×४•४ | 5 | ३४ | ,, | ,, | | 19 | |
| १०×४'५ | ९ | ३७ | 25 | ** | | 75 | |
| १० [.] २×६ [.] ४ | 8 | ર૪ | ,, | ,, | | ,, | |
| १३ . ८ × ३.६ | ធ | .84 | बङ्गः | ,, | | y > | अत्र शिक्षापरिभाषापरिशिष्टसूत्राणि च । |
| ११•६×२·७ | 4 | 80 | ,, | ,, | | 75 | प्रयोगरत्नमालानुसारिणी। |
| १३·५×३•२ | 4 | ૪ર | ,, | 33 | | ,, | सन्धिप्रकरणमात्रम् । |
| १२ . ७×४.≃ | 5 | ४६ | ,, | >> | | पू० | सन्ध्यध्यायः। |
| १४·५×२•७ | Ę | ५२ | ,, | * | | अपृ० | कुत्प्रकरणमात्रम् । |
| १२·६×४·३ | 9 | ३७ | ,, | ** | | पू० | तंद्धितपादान्तः । |
| ११ [.] १×४.≃ | १४ | ४६ | दे.ना | 24 | | अपृ० | वै० सि॰ कौ० टीका । |
| १७९×३ | R | ६६ | वङ्ग. | 17 | | पू० | कारकविशेषणीभूतकारकसापेने वृ- त्तिन भवतीति विचारः। |
| १७•९×३ | 5 | έr | ,, | 24 | | ,, | आख्याते ३–⊏ पादाः । |
| १४·९×३ | ૭ | 5 १ | ,, | ,, | श. १७१= | अपू० | आख्यातप्रकरणमात्रम् । |
| १७•९×३ | 8 | ५६ | 79 | > | | पू <i>०</i> ः | " |
| १३•५x४·२ | Ę | ३३ | " | " | | 3 5 | सन्धिप्रकरणस्य । |
| ९-५४४-१ | ११ | ३७ | दे.ना. | ,, | | अपृ० | |
| १०.५x४.८ | १५ | ३९ | " | " | ٠ | 27 | वै० सि० कौ० टीका । |
| १६·४×३·५ | ષ | ६२ | वङ्ग. | ,, | | पूर् | चतुष्टयप्रकरणम् । |
| ⊂'₹x8'₹ | १२ | ३६ | दे.ना. | " | | अपू० | |
| ₹°8×8.5 | 5 | ३० | " | " | | " | कारकप्रकरणस्य । |

| क्रमसंख्या | श्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|------------------------------------|-----------------|--------------------------------------------------|
| ३९८६१ | निपातत्वविचारः | | १1 |
| . ३९८६२ | नाजानन्तर्येइति-परि- भाषाविचारः | | १-३। |
| ३९⊏६३ | अर्थविदिति-सूत्रविचारः | | १-१४ । |
| ३९⊏६४ | त्तघुशब्देन्दुशेखरदोषोद्धारः | | ३०-५१, १-११ । |
| ३९⊏६५ | परिभाषेन्दुशेखरटीका | | १६-६३ । |
| ३९⊏६६ | त्तघुशब्देन्दुशेखरः | | १-३९, ४१-४५ । |
| ३९⊏६७ | वैयाकरणसिद्धान्तक <u>ौम</u> ुदी | भट्टोजिदीक्षितः | १-१४३ । |
| ३९८६८ | " | 33 | १८-३५, ५३-२७० । |
| ३९८६९ | परिभाषेन्दुशेखरदोषोद्धारः | | २६-१२२ । |
| ३९८७० | प्रौ ढमनोरमाकुचमर्दनम् | जगन्नाथः | १-३४ । |
| ३९=७१ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | भट्टोजिदीक्षितः | १-३, ६-३१ । |
| ३९८७२ | अप्टाध्यायी | पाणिनिः | ३-९,११-५३ । |
| ३९८७३ | , | " | १-६० । |
| ३९⊏७४ | तत्त्वबोधिनी | | ५०-द्भर, द्भर-१४७, १४७-१६८, १६८- १७६,१७६-२११। |
| ३९८७५ | 34 | | १८१-२२५। |
| ३९८७६ | प्रौढमनोरमा | | १-१७, १७-१९, १९-५इ, २६-३१ । |
| ३९८७७ | लघुशब्देन्दुशेखरटीका | | १-९, ११-३०, ३२। |
| ३९८७ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | भट्टोजिदीक्षितः | १५-१८, १८-४६ ो |
| ३९८७९ | प्रक्रियाकोमुदी सच्याख्या | | १-७ । |
| 20- | | | 0.01 |
| 1 | धातुपाठः | | 8-81 |
| į | कातन्त्रसूत्रम् | | १-१० । |
| . ३९८८२ | 11 | | १-१३। |

| शाकार: | पङ्कि- संख्या | अक्षर- रांख्या | लिपि: | आयार: | लिपिकाल: | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेपविवरणम् |
|-----------------------------------|------------------|-------------------|----------|------------|----------|------------------------|-----------------------------------------------------------|
| ९ . ७×৪,≃ | १४ | Х¤ | दे, ना | का. | | अपू० | श्रनुबन्धचतुष्टयविमर्श्य । |
| \$0.£×8.0 | १२ | ३७ | " | ,, | | 99 | |
| ९·९×४ २ | 9 | ४९ | ,, | 99 | | ,, | |
| १०•९×४·५ | १० | ४५ | ,, | " | | " | |
| ९·५×३·९ | ९ | ४१ | ,, | " | | " | |
| ९'५x४'२ | १३ | ४० | " | " | | ,, | वै० सि० कौ० टीका । |
| ९ [,] २x४ [,] ४ | १२ | ३४ | ,, | 11 | १८१० | पू० | तिङन्तशकरणमात्रम् । |
| ९ [,] २×४ [,] २ | v | २० | " | ,, | १८०८ | अपू० | पूर्वार्द्धभागः । |
| ९'२×४'३ | १० | ३२ | ,, | " | | ,, | |
| ९·१×३·५ | १३ | ১ | " | ,, | | " | प्रौढमनोरमाखण्डनं वा । |
| ९·६×४ | १० | 88 | ,, | 22 | | " | स्वरप्रकरणं लिङ्गानुशासनद्ध । |
| ⊏'५×३'५ | ९ | ; ३≂ | ,, | ,, | | 33 | १-≍ अध्यायाः, पाणिनिस्त्रपाठो वा। |
| ૧ ૪૪.૪ | १० | २८ | ,, | ,, | १८६३ | पू० | |
| ९·५×३·७ | 9 | 40 | ,, | 3 1 | | अपू० | वै० सि० को० टीका। |
| १०-५×४-५ | ११ | ३७ | ** | ٠, | | 17 | '' सुवन्तप्रक्षरणस्य । |
| ९'¤×३'६ | १० | .83 | ,, | ,, | | 11 | वै॰सि॰कौ॰टीका।कृद्न्तप्रकरणस्य। |
| १०•६×४·६ | १३ | ३७ | 5, | ,, | | *** | |
| १०×४°३ | ११ | ३७ | " | " | १८१४ | ** | वैदिकप्रकरणं लिङ्गानुशासनछा। |
| १३•¤×३ | Ę | 40 | चङ्ग | " | | ,, | आत्मनेपदप्रकरणम् । अत्र वहुत्र सूत्रवृत्त्योव्यत्ययः । |
| १३.¤×३.£ | Ę | 39 | " | " | | 11 | कातन्त्रीयः । |
| १४×३ * ७ | Ę | ३७ | " | 37 | | " | आख्यातपादपय्यंन्तम् । |
| १६.५×३.८ | 8 | 80 | ,, | ,, | | ** | आख्यातपादान्तम् । |
| | 1 | 1 | <u> </u> | 1 | | 1 | 1 |

| क्रमसंख्या | ं ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारना म | पत्रसंस्याविवरणम् |
|-------------|----------------------------|----------------------|------------------------------------------------------------|
| ३९८८३ | कातन्त्रसूत्रवृत्तिः | दुर्गसिंहः | १-३२ । |
| ३९८८४ | कातन्त्रसूत्रवृत्तिपश्चिका | त्रिलोचनदासः | १-८७,८९-१३१(= ८८-१३०),१३१-१३६, १३७-१६३ (= १२७-१५३) । |
| ३९८८५ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | | १-२३ । |
| ३९८८६ | " | भट्टोजिदीक्षितः | १–१९, १-५६, ३४-३⊏ । |
| ३९८८७ | " | 77 | १-६२ । |
| ३९८८८ | ,, | " | २२-१४०, १५२-१⊏९, १९१-१९३ । |
| ३९८८९ | प्रौढमनोरमा | 99 | २-९९ । |
| ३९८९० | ,, | 93 | ९-११ (= ९९), १००-२४४। |
| ३९⊏९१ | ,, | | १-१०० । |
| ३९८९२ | कातन्त्रसूत्रम् | | 4-9 1 |
| ३९८९३ | वैयाकरणभूपणसारः | कोण्डभट्टः . | १-३१ । |
| ३९⊏९४ | समासविधिवाद: | उमापतिशर्मा | १-२ । |
| . ३९८९७ | प्रकीर्णेपछवः | विद्यानन्दः | × |
| ३९८९६ | अर्थवत्सूत्रकोडपत्रम् | | १-४ । |
| ३९⊏९७ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | भट्टोजिदीक्षित। | १-१५५। |
| ३९८९० | 29 | 99 | १-१५, १-९३। |
| ३९⊏९९ | 3 7 | ,, | १-५३। |
| ३९९०० | , ,,, | ; ; | १-३७ । |
| ३९९० | परिभापेन्दुशेखरदोपोद्धारः | मन्युद्वः | १-६, १३-२५। |
| ३९९०ः | तघुशब्देन्दुशेखरज्योत्स्ना | उद्यङ्करः | १-२४+१, २६, २९-१⊏६। |
| <i>३९९०</i> | र परिभापार्थमञ्जरी | भीमः | १-१२। |

| शाकार: | पहिते. संख्या | शक्षर- संख्या | હિંપિ: | आत्यार: | लिपिकाल: | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवर ण म् |
|--------------------------|------------------|------------------|---------|----------|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|------------------------|--------------------------------------------------------------------------------|
| ११७५२•९ | ą | ३९ | यङ्गः | का. | श. १७२३ | પૃ૦ | रान्धिप्रवर्णे १-५ पादाः। |
| १४·२×२·९ | લ | 88 | ,, | ٠, | १६४≂ | يعو (و | तद्भितपादान्ता । |
| १० - १×४:४ | હ | ३६ | दे. ना. | " | | ** | धेदिकप्रकरणमात्रम् । |
| १०'५×४'= | १३ | ३७ | , ,, | ,, | all the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of t | **** | कृत् प्रकरणमात्रम् । |
| ९ ' ९×४'२ | १२ | ४६ | " | ,, | | *, | तिसन्तप्रकरणमात्रम् । |
| ९•६×४ [.] २ | L L | ૪૦ | ,, | ,, | | अपृ० | पूर्वां हैं भागः । |
| १०×३ ⁻ ६ | १० | ક્ષ્ | ,, | ,, | १⊏३५ | ** | वैं०सि॰की॰टीका । तिष्टन्तभागस्य । |
| ς.≃x 3. ξ | १० | ४३ | " | ,, | | ,, | वि०सि॰की॰टीका। पूर्वार्द्धभागस्य। |
| ९·७x५•६ | ٩ | રૂહ | ,, | ,, | | पृ० | अन्ययान्ता, वै०सि०कौ०टीका । |
| ११:⊏×३:३ | 8 | ३३ | वङ्गः. | " | | अपू० | |
| १०:२×४ : ६ | १५ | ४७ | मै॰ | ,, | | पू० | स्फोटवादान्तः। |
| \$οι¤Χβ.έ | १३ | ४७ | दे.ना. | ,, | | 25 | कृत्तद्धितेतिसृत्रे समासप्रदणस्य निय । मार्थत्वं विध्यर्थत्वं वेति विचारः । |
| ৬·५x३·২ | Ę | ८१ | ** | 1, | | अप्० | भम्रपत्रत्वान प्रयोगानहैः। |
| १३•३×४·९ | = | ८४ | 77 | 10 | | ,, | |
| ९·६×४·२ | ९ | ३४ | ,, | ,, | १⊏५३ | Чo | द्विरुक्तप्रकियान्ता । |
| ९•६×४•२ | ११ | ४१ | ,, | ,, '. | | " | तिङन्तप्रकरणमात्रम् । |
| ९'⊏x४'२ | 22 | ४२ |) " | ,, | | ,, | फुदन्तप्रकरणम् । |
| ९'४ × ४'३ | १२ | 42 | " | ,, | १८७६ | " | स्वरप्रकरणतो लिङ्गानुशासनान्ता । |
| ९* ३×४ ° ३ | १० | ३७ | " | ,, | | अपृ० | • |
| ९ . ८×४.४ | ९ | ३३ | 33 | " | | 73 | इलन्तपुँहिङ्गान्ता । |
| ९.५×४.१ | Ľ | ४१ | 39 | ,, | | . >2 | परिभापेन्दुशेखरटीका । |

| | ī | | | |
|----------|-------------|-----------------------------------|----------------------------|----------------------------------------------------------------|
| क्रमसं | स्या | ग्रन्थनाम | प्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
| ३९० | ८०४ | णेरणाचिति सूत्रव्याख्या | शिवरामेन्द्रयतिः | १-२०। |
| ३९० | ડ ૦લ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | भट्टोजिदीचितः | १-५, ५-६७, ६७, ६७-१२४, १-२२, २३ (=२४)-७५, १-७७, १-८। |
| ३९० | ५० ६ | " | | ७०-८१ |
| ३९९ | ζο७ | मध्यसिद्धान्तकौमुदी | | - ३- ⊏ |
| ३९९ | }०⊏ | " | | 왕-0 |
| ३९० | १० ९ | 39 | | २९-५८ । |
| ३९९ | ११० | 79 | | १-१३, १५-५० । |
| ३९९ | ८ ११ | , | | ४०-४१, ४५, ४७५०, ५२, ५५-११०, ११३-११७, ११९-१२१। |
| ३९९ | १ १२ | सारस्वतम् | · | २०-३०, ३३-६०। |
| ₹९' | २१३ | वैयाकरणसिद्धान्तकौ मुदी | | ११४-१४२, १४२-१४४। |
| ३९९ | र१४ | 99 | भट्टोजिदीक्षितः | १-६६, ७७-९५, ९५-१७०, १-११४। |
| ३९५ | ८१५ | धातुपा ठः | | १-२३ । |
| ३९५ | र१६ | शब्दमाला | | १-४ । |
| ३९ | ११७ | त्तघुशब्दरत्नभावप्रकाशिक <u>ा</u> | वैद्यनाथपायगुण्डे ः | १-१३३, १३३-१५४(=१५५),१५५-१६२, (=१६३), १६४-२५४, १-२५,१-१७० । |
| 399 | ११८ | अष्टाध्यायी | | 8-31. |
| 399 | ५१ ९ | - 11 | İ | ६-९। |
| ₹99 | ∖२० | . " | | १-७, ९-१२ । |
| ३९९ | १ २१ | 3# | | ३-१८, ५५-६७, ६९-७१ । |
| 399 | ₹२२ | 59 | | २-३, ५-१४, १६-५०, ५२-५६। |
| ३९५ | १२ ३ | सिद्धान्तचन्द्रिका | | ५६, ६४, ६६-६९ । |
| <u> </u> | | | | |

| भाषार: | पर्द्धि- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपि: | आचार: | लिपिकाल: | पूर्णापूर्ण- विवेक: | विशेषविवरणम् |
|----------------------------|--------------------|------------------|-------|------------|-------------------------------|------------------------|-----------------------------------|
| १०x४:२ | 9 | ४३ | दे-ना | का. | श. १७०२ र० का० १७६= (?) | yo | |
| 8× 0 ×8 | ११ | ४३ | ,,, | " | १८९५ श. १७६० | 71:4 | |
| ९•६×४·४ | ११ | ३२ | " | ٠, | | अपृ> | तत्पुरुपशकरणम् । |
| ₹0×8′₹ | १० | २७ | " | " | | ,, | |
| ⊏,⊏× <u></u> ∮,⊏ | १० | ३⊏ | " | ,, | | 11 | |
| ⊏•8× 3 .0 | ११ | ३१ | 24 | 33 | | " | तिङन्तप्रकरणम् । |
| с •сх३•с | १० | So | ,, | ,, | | 1) | फुदन्तप्रकरणम् । |
| ⊏'8×₹'५ | હ | રષ્ઠ | 21 | ,, | | *1 | निडन्तप्रकरणम् । |
| =:0v0:3 | ९ | 2 | ,, | ,, | | 1) | |
| 6. 8×8. <i>∮</i> | <i>\$8</i> | 2 9 | 17 | " | |)) | |
| 6.≃x8.5 | 88 | 82 | ,, | ,, | १८६५ | 21 | , , , , |
| αχξ*= | 5 | ₹3 ३ २ | ,, | ,, | 6004.2 | | |
| ६ . ८× ३. .४ | 9 | 20 | ,, | 33 | | ų, aus | शाब्दिकप्रक्रिया वा |
| 9.4x8.5 | 8 | 35 | ., | •, | | अपृ> | सन्धि-रत्नीप्रत्यय-कारकप्रकरणानि। |
| 1 100 \ | , | ** | | | | | साम्बन्धात्रसम्बन्धाः व |
| ७.⊏x ३.⊏ | 9 | ર૬ | " | 11 | | 11 | |
| ⊏'१x३'५ | ११ | ₹≎ | ,, | " | | 11 | 4 |
| ६•⊏x३·५ | १३ | ३१ | 17 | " | | ** | अ० ५-⊏, पा० १-४ । |
| ড•१×३•४ | ی | २० | ,, | " | | 11 | अ०१,२,६,७। |
| ⊏.6×\$.\$ | १० | રઙ | ,, | 1) | | 31 | अः १-८। |
| ८.५ ४३.९ | ९ | ξċ | " | 5 7 | | 17 | तद्धिततिङन्तप्रकरणे । |
| | | | | | | | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पन्नसंख्याविवरणम् |
|------------|-----------------------------|-------------------|-----------------------------------------------|
| ३९९२४ | सारस्वतम् | | २-१० । |
| ३९९२५ | शब्दरूपावलिः | | २-७ 1 |
| ३९९२६ | अप्राध्यायी | | १-५, ५-६, ६-१० । |
| ३९९२७ | " | पाणिनिः | १-६, १३-५९ । |
| ३९९२८ | त्तघुसिद्धान्तकौमुदी | | ५। (गणनया) |
| ३९९२९ | मध्यसिद्धान्तकौमुदी | , | ३२-३९, ४३-४४ । |
| ३९९३३ | ,, | | १२२-१२३, १२५, १२७-१३०, १३२, १३४-१३६, १३९ । |
| ३९९३१ | लघुसिद्धान्तक <u>ौम</u> ुदी | वरदराजः | १-= । |
| ३९९३२ | सारस्वतम् | } | १०-१८, १८-२२, २४, २६-४६ । |
| ३९९३३ | कातन्त्रवृत्तिपश्चिका | | ११८-१३२ । |
| ३९९३४ | शब्दकौस्तुभः | | १.१० । |
| ३९९३५ | सुचोधिनी | | १-१६ । |
| ३९९३६ | वैयाकरणसिद्धान्तकोमुदी | | १६०-१७= = (१-१९) । |
| ३९९३७ | 55 | | १-१८ । |
| ३९९३⊏ | 17 | भट्टोजिदीचितः | १-९३, ६=-६९ (==५-=६), ७०-१५१, १५१-१६५ । |
| ३९९३९ | परिभाषेन्दुशेखरटीका | | १-१२, १५-२८। |
| ३९९४० | लघुशव्देन्दुशेखरटीका | | ११ |
| . ३९९४१ | रप्रत्याहारमण्डनम् | ् लक्ष्मणपाठकः | १-5 |
| ३९९४२ | धातुवृत्तिः | सायणाचार्यः | १-२ । |
| ३९९४३ | 'मध्यसिद्धान्तकौमुदी | | १८७-२२५, २२७-२३० । |
| ३९९४४ | श्रप्टाध्यायी | | १-२८ |

| आकार । | पङ्कि- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपि। | भाषार | लि पिका ल। | पूर्णीपूर्ध- विवेव: | विशेपविवरणम् |
|-------------------------------------|------------------|------------------|--------|-------|-------------------|------------------------|------------------------------------------|
| ७ •α×३•६ | v | २५ | दे.ना. | का | | अपू० | |
| ۶۰8×8۰۶ | 3 | 33 | ,, | 33 | | ,, | |
| ¤x8'3 | १३ | २६ | " | 2) | | ** | |
| ९•५x४ [.] २ | = | રષ્ટ | " | ** | | " | |
| ९.4x8.8 | १० | ३० | ,, | ,, | | 37 | |
| द्र:५x३•५ | १० | २४ | 39 | H | | 29 | |
| द:५ x३ ·५ | १० | ३९ | ,, | " | | " | |
| ९·४×४·२ | १० | રૂષ | ,, | ,, | | ,, | |
| ९•५x३•७ | 9 | २९ | >> | " | | >>> | • |
| १०•२×४ | 9 | 8= | 33 | ,, | | 53 | आख्यातप्रकरणम् । |
| ९ [.] २ × ४ [.] २ | Ę | २३ | ,, | " | | " | अष्टाध्यायीटीका । अ० १, पा० १, आः २ । |
| ९ · ३×४ · २ | १० | 30 | 57 | ,,, | | 33 | वैदिकप्रकरणस्य । वै० सि० कौ० टीका । |
| १०'२×३'९ | 9 | 80 | ,, | 11 | | ,, | उणादिप्रकियांशा । |
| ९ [.] २×४ | ९ | ४६ | ** | 1, | १=९६ | पू० | उत्तरकृद्न्तप्रकरणमात्रम् । |
| १० ' ४×३'⊏ | ی | ३२ | " | 23 | १७०३ | "* | पूर्वार्छमात्रम् । |
| १०.७x४.५ | १० | ५३ | ,, | ,, | | अपू० | |
| ९९५×३·६ | ९ | ४१ | " | 33 | | ** | |
| 80 × 8.8 | ११ | ३६ | >> | >3 | १८३७ | पू० | |
| १२.७ × ५.७ | ११ | ५३ | ,, | n | | अपूञ | माधवीया । चुरादिप्रकरणस्य । |
| १०.0 × 8 | Ę | २५ | >> | ,, | | " | समासप्रकरणम् । |
| ११ × ४'⊏ | १५ | ४६ | ,, | ,, | | 23 | |
| uc uc | | | | | | | |

| कम | संख्या | ग्रन्थनाम | अन्थकारनाम | ्रपत्रसंख्यावविरणम् |
|----|-----------------|------------------------------------------------------------------|-----------------|-------------------------------------------------|
| ३० | ९९४५ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | | १०-३०, ३३। |
| ३० | १९४६ | मध्यसिद्धान्तकौमुदी | | १-२३ , २५-३० । |
| ३० | ९९४७ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | | २५-३७ (= ३८) ३८ । |
| 30 | १९४= | ** | | १-५१ । |
| ३० | १९४९ | मध्यसिद्धान्तकौमुदी | वरद्राजः | ३१-४५ । |
| ३५ | ९ ५० | परिभापेन्दुशेखरटीका | | २-७। |
| ३९ | ९५१ | " | | १-४२ । |
| ३९ | ડ ુલ્પરં | लघुश ट्दरत्नभा वप्रकाशिका | | 81 |
| 3, | ९५३ | " | | प्त•च्छ, प्रव, प्रव-१३२, १३४, १३५ । |
| 30 | :९५४ | " | वैद्यनाथः | १७-६८, १०१-१०२, १४२-२००, २५७- २५८, २५८-४२८ । |
| ३९ | ९५५ | " | | १-२३, १-४३, ४३-५३, १-२९ । |
| ३९ | ∵⁄∖€ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | | १-६४, १-९, ९-=३। |
| ३९ | ९५७ | >> | भट्टोजिदीच्चित: | १-१२, १४-३२। |
| ३९ | ९५८ | शब्दरत्नप्रकाशिका | भैरवः | १- = 1 |
| ३९ | ९५९ | मध्यसिद्धान्तकौमुदी | | २८-७२ । |
| ३९ | ९६० | प्री हम नोरमा | | १-७१ । |
| 30 | 0 5 9 | प्रबोध चन्द्रिका | वैजलदेव: | - -११ 1 |
| | | अप्राध्यायी | વહાલવુવ. | १-२० I |
| | | भ्रातुवृत्त्य तुक्रमणिका | • | 8-321 |
| | - 1 | वातुष्ट्रस्यसुकमाणका वातुष्ट्रस्यसुकमाणका वातुष्ट्रस्यसुकमाणकारः | कोण्डभट्टः | 8-88 1 |
| ì | ५६४ ९६५ | | . (| र-४४ । १-२, ५, ६-२५ २७, २९-३१, ३३-४५, |
| 48 | 79.4 | , | 77 | ४७, ५४, ६०-६५, ६७ । |
| ३९ | ९६६ | आख्यातविवेकः | श्रीकृष्णभट्ट: | १-५ । |

| , ——— | , | | · · · · · · | | | | |
|----------------------|------------------|------------------|-------------|-------------|----------|------------------------|----------------------------------------------------------|
| शाकार: | पङ्कि- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपि: | भाषारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेक: | विशेपविवरणम् |
| १०•५x४;३ | ų | ३० | दे.ना. | का. | | अपू० | सन्धिप्रकरणम् । |
| ९•४×४'⊏ | 9 | २९ | ,, | ٠, | | 12 | तिङन्तप्रक्रिय। । |
| 5.7×8.5 | 9 | ३० | ,, | 33 | | 11 | सुवन्तप्रकरणम् । |
| ९·१×४ | 9 | ३३ | 37 | 22 | | 15 | आदितो हलन्तपुँ हिङ्गांशा । |
| दः4×३'4 | 9 | ३४ | ,, | ,, | | 23 | तिङन्तप्रकरणम् । |
| ९•६×३•४ | v | ४३ | ,, | •• | | 11 | |
| ९·२×३·५ | vo | ર૪ | ,, | " | | ,, | शाङ्करी । |
| १२·५×४·७ | 9 | ३७ | " | " | | 23 | |
| १२·५×४७ | Ę | ५१ | ;; | ,, | | :, | अजन्तपुँहिङ्गप्रकरणस्य । |
| १२'७x४'५ | ११ | ५४ | ,, | " | १८६५ | " | कारकप्रकरणान्ता । |
| | | | | | | | |
| १०-५x४-५ | १० | ४८ | '' | " | | ** | |
| ११°३×५७ | 8 | ३३ | >> | 22 | | , 33 | तिङन्तप्रकरणम् । |
| ११•२×४•३ | १३ | ६२ | " | ** | | 13 | तद्धितप्रकरणम् । |
| 8.ex6.5 | ی | ५७ | " | " | | >> | भैरवी वा । संज्ञाप्रकरणम् । |
| १०:२x४:३ | १० | ४५ | " | ,, | | " | |
| ९•७x३•५ | ی | ₹? | " | ,, | | 11 | वै० सि० कौ० टीका । संज्ञाप्रक- रणादजन्तपुँछिङ्गांशा । |
| 4×8.8 | 5 | २≒ | ,, | ,, | | 5 3 | |
| ११×४·७ | १५ | ५६ | ,, | " | श० १६=६ | ٥ | पाणिनिस्त्रपाठो वा । |
| ९•६× ४ •३ | २५ | १४ | " | ,, | | ,,, | घातुपाठो वा । |
| ९•७×४ | 9 | ३३ | ,, | ٠, | | " | स्फोटवादान्तः । |
| १०•२×४·३ | 9 | ३९ | ,, | 20 | | अपू० | |
| =' & x8'4 | १२ | ₹१ | ,, | " | १८९७ | पू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ध न्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---------------------------------|-----------------------------|----------------------------------|
| ३९९६७ | कारकादिविचारःस न्याख्यः | | १-१० । |
| ३९९६= | वैयाकरणसिद्धान्तक <u>ौमु</u> दी | भट्टोजिदीचितः | १-९ । |
| ३९९६९ | परिभाषेन्दुशेखरगदा | वैद्य नाथपायगुण्डे ः | १-१७= । |
| ३९९७० | वेयाकरणसिद्धान्तक <u>ौम</u> ुदी | | १-१४, १४-५⊏ । |
| ३९९७१ | प्रयोगविवेकसङ्ग्रहः | वररुचिः | १-५६। |
| ३९९७२ | लघुशव्देन्दुशे खरः | | १-५१, ५३-६९ + १ । |
| ३९९७३ | अष्टाध्यायी | | १-६३ । |
| ३९९७४ | शब्दरूपावली | | १-१२। |
| ३९९७५ | परिभाषेन्दु शेखरः | नागेशः | १-१५६, १५८-१६७, १६९-१८१। |
| ३९९७६ | तत्त्वबोधिनी | ज्ञानेन्द्र सर स्वती | १-४९, ४४-२४७, २२२-२७१, २७३-२⊏५ । |
| ३९९७७ | 29 | 71 | १-१३५ । |
| ३९९७= | वैयाकरणभूषणसारः | कोण्डभट्टः | १-२४६। |
| ३९९७९ | तत्त्वबोधिनी | | १०। |
| ३९९⊏० | प्रौढम नोर मा | <u> </u> | ३३-५५ (=५६), (५७-९४)। |
| ३९९⊏१ | प्रौढमनोरमाकुचम ६ नम् | | ७-३२, ३२-४२ । |
| ३९९⊏२ | प्रौढमनोरमा | भट्टोजिदीच्चितः | १-९५ । |
| ३९९⊏३ | ,, | " | १-४६ । |
| ३९९८४ |) 1 | 23 | १-३३ । |
| ३९९⊏५ | परिभापेन्दुशेखरः सटिप्पणः | नागे शः | १-४१ । |
| ३९९⊏६ | " | " | १-३५ |

| थाकारः | पङ्कि- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपि: | आधारः | लिपिकाल: | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------------------------|------------------|------------------|-------|-------|-----------------|------------------------|----------------------------------------------------------------------|
| ९•५×४·१ · | ९ | २९ | दे.ना | का. | | पुट | अत्र कारकसमासलकाराणां प्रयोगम• नुसृत्य विचारः । |
| १०x४:२ | १० | ४१ | " | ,, | | " | लिङ्गानुशासनमात्रम् । |
| १० : ३x ३: ४ | v | 8 | ,, | ,, | १९२७ | ,, | परिभापेन्दुशेखरविवृतिस्तत्काशिका वा । |
| ⊏' २×३ · ९ | ıς. | ३० | ,, | " | | ,, | स्वरप्रकरणमारभ्यवैदिकप्रक्रियान्ता । |
| ९·६×४·२ | Ę | २५ | ,, | ,, | १८७८ श. १७४४ | ,, | अत्र १-३ पटलेपु कारकसमासतद्धि- तप्रयोगप्रणाली प्रदर्शिता । |
| १०४४ | 0 | ३२ | 71 | ,,, | | अपू० | बै॰ सि॰ कौ॰ टी॰ । तिङन्तप्रकर- णम् । |
| ९.५×४.३ | v | 38 | ,, | 23 | | पू० | पाणिनिसूत्रपाठो वा । |
| ९•४×३•५ | 5 | २८ | ,, | ,, | | अपू० | |
| ۵,5×5.8 | ц | २२ | 22 | " | | 3) | |
| ११•७×४•५ | ११ | 88 | ,, | " | श. १६२३ | 57 | बै० सि० कौ० टीका। पूर्वार्द्धम्। |
| १०:७x४:३ | १० | ४५ | " | " | १७७० | पू॰ | " कृद्न्तप्रकरणम् । |
| ९ . ५×४.६ | १३ | ३४ | ,, | " | | " | स्फोटवादान्तः। |
| ११×४°५ | १६ | ४९ | 23 | 29 | | अपू० | वै० सि० कौ० टीका । संज्ञाप्रकरणम्। |
| \$0.3×8.8 | v | ४३ | " | " | | 1, | वै० सि० कौ० टीका । उत्तराईम् । |
| ₹°•\$×8 | १० | ५० | ,, | >> | | ,, | संज्ञाप्रकरणांशात् स्त्रीप्रत्ययप्रक- रणांशम् । मनोरमाखण्डनं वा । |
| ११×8 . | १० | ५४ | ,, | ,, | | 33 | वै० सि० कौ० टीका । लकारार्थ- प्रक्रियांशात् छदन्तप्रक्रियांशा । |
| १०•२x४ | 5 | 88 | ,, | ,, | १८६८ | ,,, | वै० सि० कौ० टीका । तिङन्त- प्रकरणम् । |
| १०.५×ई.⊏ | १० | ३६ | " | >> | १८७७ | पू० | वै० सि० कौ० टीका । तिङ्खर- निरूपणम् । |
| ११·५×४·५ | १० | ५३ | " | " | | 2 2 | |
| १०.५x४.५ | 9 | 39 | >3 | " | | >> | |

| कमसंख्या | प्रस्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|----------|------------------------|-----------------|------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| ३९९८७ | परिभाषेन्दुशेखरः | नागेशः | १-८, १०-३७। |
| ३९९८८ | शब्दकौस्तुभः | मट्टोजिभट्टः | १-२१ । |
| ३९९=९ | प्रौ ढमनोरमा | भट्टोजिदीक्षितः | १-७४, व्द-१व्५ । |
| ३९९९० | लघुशब्देन्दुशेखरः | नागोजीभट्टः | १- |
| ३९९९१ | " | नागेशभट्टः | १-१०९, १११-२२३, १-६०, १-३१, १-४९ । |
| ३९९९२ | 33 | 22 | १-३, ५-११, १४, १९, २२, २४-२९, ३२- ४६, ४८, ५०, ५२-५३, ५८-५९, ६१, ७०- ७१, ७३, ७५-७६, ७९-८०, ८५, ८९, ९२-९३, ९६ । |
| ३९९९३ | शब्दकौरतुभः | | ५७-१०८ । |
| ३९९९४ | शब्द्रस्तम् | | १-१०५ । |
| ३९९९५ | प्रौढमनोरमा | भट्टोजिदीक्षितः | २६-३५, ३⊏-५१, ५४-७१, ७४-११५, १,११६-२३२, २३२-२५६। |
| ३९९९६ | " | " | १-१२⊏+१। |
| ३९९९७ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | | १-२५ । |
| ३९९९= | " | | १-५ । |
| ३९९९९ | >8 | | ३-३० । |
| 80000 | ,, | | २-१५ । |
| ४०००१ | | | १-४८, ४५-६४, ६४-६२ + १, ८४-८८ । |
| ४०००२ | " | | १७-५५ । |
| ६०००३ | शब्दकौस्तुभः | | १०३, १०३, १०३, ५-९३ । |
| ४०००४ | 59 r | भट्टोजिदीक्षितः | १९, २६-३४, ३६-१०३, १०५-१५७, १७२-२३४, १८-३९ । |
| ४०००५ | वैयाकरणभूषणसारः | कोण्डभट्टः | १-१७, २०, २२-३७, ४१, ५०-६८ । |

| भाकार। | पङ्कि- संख्या | काक्षर- संख्या | (6)4 | आधार: | लिपिकाल: | पूर्णापूर्ण- विवेक: | विशेषविवरणम् |
|------------------------------------|------------------|-------------------|--------|-----------|-----------|------------------------|--------------------------------------------------------------|
| १२•३×४•⊏ | ११ | ५६ | दे.ना. | का. | | अपू० | |
| १२·२x४·७ | १० | ্ধদ | ,, | " | | पु० | अष्टाध्यायीटीका । अ०१ . पा ०१. आ०१ । |
| १२·२x४·७ | १० | ४६ | 99 | 11 | | अपू० | वै०सि० कौ० टीका । संज्ञाप्रकरणा- ददादिप्रकरणांशा । |
| १२·३×४·९ | ११ | ६३ | " | " | | पृ० | वैः सिः कौ॰ टी॰ तिङन्तप्रकरणम्। |
| १२ [.] ४×४ [.] ५ | ११ | ५६ | " | " | য়০ ধ্হহ০ | अपू० | वै० सि० कौ० टी०। संज्ञाप्रकरणात् स्वरप्रकरणान्तः। |
| १०•९x४•५ | ς | ५१ | " | 53 | | " | ,, |
| | | | | İ | | | |
| १२¹२x४'⊏ | १० | ષફ | 33 | 33 | | पू०# | अष्टाध्यायीटीका । श्र० १, पा० १, आ० ७ । |
| ુ.જ×8.8 | १० | ४७ | ,, | 33 | • | अपृ० | वै॰ सि॰ कौ॰ टी॰ टी॰ । संज्ञाप्र- करणात् कारकप्रकरणांशम् । |
| १० ° ¤x४°६ | १० | ३९ | ,, | H | श० १७५४ | 99 | वै॰सि॰कौ॰ टीका । विसर्गसन्धितः तद्धितप्रकरणान्ता । |
| ११×४·६ | ११ | 34 | ,, | ** | श० १८७३ | पू०* | " तिङन्तप्रकरणम् । |
| १०•३×४•५ | १० | ३२ | ٠, | ** | | अपृ० | कृद् न्तप्रकरणम् । |
| १ ०. ३×४.५ | १५ | ४३ | 33 | " | | ** | स्वरप्रकरणम् । |
| 6.8×8.5 | ११ | ३० | ۱, | ,, | | ,, . | भ्वादिशकरणम् । |
| ۲•३×३٠३ | ٦ | રૂરૂ | ,, | ,, | | 3) | कारकप्रकरणम् । |
| ९ [.] ६×४ [.] २ | ₹० | ३२ | ,, | ,, | | > > | तिङन्तप्रकरणम् । |
| १०.४×८ | १३ | ३⊏ | ,, | ,, | | ,, | " |
| ९•९×૪•૨ | १३ | ४८ | ,, | ** | | ,, . | त्रप्टाध्यायीटीका । स्र॰ १, पा० १, आ० ५, ७-९ । |
| 6.≃x8,8 | १० | ₹≒ | " | 33 | | 9> | " ञ्र० १, पा० १, आ० ४-६, ६-९। |
| ९'७x३ ' ४ | 5 | ३९ | " | 33 | | 9.5 | |

| | | | · |
|--------------|-------------------------|--------------------|-----------------------|
| कमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
| ४०००६ | वैयाकरणभूषणसारः | कोण्डभट्टः | २-२९, ६२, ६४-६९ । |
| 80000 | त्तघुराव्देन्दुरोखरटीका | वैद्यनाथपायगुण्डेः | १-२३ । |
| ४०००८ | प्रौडमनोरमा | भट्टोजिदीक्षितः | १-=, १०-१५२, ५३-१२९ । |
| ४०००९ | तत्त्वदीपिका | छोकेशकरः | १-१९० । |
| ४००१० | तत्त्वबोधिनी | | १-=, १-६। |
| ४००११ | अष्टाध्यायी | | १-६५ । |
| ४००१२ | प्रबोधचन्द्रिका | वैजलभूपतिः | १६-२४। |
| ४००१३ | परिभाषेन्दुशेखरटीका | | १-१⊏ 1 |
| ४००१४ | परिभापेन्दुशेखरः | | ३६। (गणनया) |
| | | | |
| ४००१५ | सुबोधिनी | जयकृष्णः | १-१७। |
| ४००१६ | तत्त्वबोधिनी | | १-१६ । |
| ४००१७ | अप्टाध्यायी . | 1 | १-७०, ७२-७४। |
| ४००१८ | व्याकरणग्रन्थविशेष: | | १-११, १४-१५+१। |
| ४००१९ | ,, | | १-= 1 |
| ४००२० | प्रकीर्णपत्राणि | | १७ । (गणनया) |
| ४००२१ | भाषावृत्तिः | पुरुषोत्तमदेवः | 601 ,, |
| ४००२२ | प्रकीर्णपत्राणि | | 331 " |
| } | च्याकरणमन्थविशेषः - | | -१-१४, १४-१७ |
| | संचिप्तसार: | क्रमदीश्वरः | १-१३। |
| ४००२५ | | ,, | १-२। |
| ४००२६ | मुग्धवोधः | | २६। (गणनया) |
| | | | |
| | | | |

| आकार ः | पङ्कि- संख्या | अक्षर- संख्या | ्रिपि । | भायारः | लिपिका लः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेपनिवर्णम् |
|------------------------------------|------------------|------------------|----------------|------------|------------------|------------------------|---------------------------------------------------------------------------------------------------|
| ९·४×४·२ | . 5 | ४३ | दे.ना. | का. | १७=३ | अपू० | |
| ११×४ [.] ८ | १० | ५३ | ,, | ,, | | ,, | चिद्स्थिमाला । |
| ९ . ८×८.४ | १० | ३३ | ** | 24 | १९३० | >2 | वै० सि० कौ० टीका। पूर्वीद्धम्। |
| ۶·७x8 · ३ | v | २९ | ,, | ,, | | ,; | सिद्धान्तचन्द्रिकाच्याख्या । |
| १० [.] ९x४ [.] ७ | 8 | ४१ | 23 | ,, | | ,, | वै० सि० कौ० टीका । संज्ञाप्रकरणम् भ्वादिप्रकरणछ । |
| ११ [.] ९×४ ^{.५} | 9 | ३४ | ,, | N | | पू० . | पाणिनिसूत्रपाठो वा । |
| १०'४x४'२ | 5 | ४१ | ,, | ,, | १८९० | अपू० | |
| १०:९x४'७ | ११ | 88 | ,, | 7 3 | | 93 | त्रिपथगा । |
| १०×४.८ | 9 | २८ | | ** | | 75 | अत्र परिभाषाटीका प्रथमान्तार्थ- मुख्यविशेष्यकशाञ्दवीधखण्डनम् कतिपयपाणिनिसृत्रार्थविचारश्व । |
| ९ . ६×४.६ | ११ | 88 | " | " | | पू० | वै०सि०कौ० टीका। वैदिक प्रकरणस्य। |
| १० - १×४ - १ | १० | ૪૦ | ,, | 33 | • | अपू० | 23 34 |
| ۲:3×8 | 5 | રર | " | ,, | श. १६९४ | पू०* | |
| १३'¤x२'¤ | Ę | ६१ | वङ्ग. | ,, | | अपृं० | |
| १३ . ७४ .८ .८ | 5 | ३८ | " | ,, | | ,,, | · |
| १५•५×३•५ | Ę | ५ ५ | 29 | " | ! | ,, | |
| १४×३ | v | ५६ | " | >> | _ | 53 | पुस्तकं दग्धम् प्रयोगानर्देख्य । अन्ते सृष्टिधरकृता भाषावृत्त्यर्थविवृतिश्च । |
| १५·३×३·६ | 5 | ४९ | ,, | ,, | | 37 | |
| १ ३ •≈×२∙७ | Ę | ဇ၁ | , | ; ; | | 2) | |
| १२.५४•३ 🕠 | ب | ४६ | ,, | " | | " | |
| १२'८×२'४ | ધ | ५२ | ,,· | 5) | | ,, | |
| १७ [.] ५×३ [.] ७ | ધ્ય | ५६ | , | 33 | | ,, | |
| | | | | | | | |

| क्रमसंख्या | प्रन्थनाम | घन्थकारनाम | पत्रसंख्यातिवरणम् |
|------------|------------------------|-------------------------|---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| ४००२७ | मुग्धबोधः | वोपदेवः | १-१५, ४१-९५ । |
| ४००२८ | भाषावृत्त्यर्थविवृतिः | सृष्टिधरशर्मा | २०-२६ |
| ४००२९ | मु ग्धबोधः | | ३।(गणनया) |
| ४००३० | कविकल्पद्रुमः | वोपदेवः | २१-२५+१। |
| ४००३१ | कातन्त्रसूत्रवृत्तिः | दुर्गसिंह: | ४-७, १६-१७, २२, २५-३६, ४४। |
| ४००३२ | व्याकरणग्रन्थविशेषः | | १-१९ । |
| ४००३३ | 33 | | १७, २६-२९, ३१-३७। |
| ४००३४ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | | २-२१। |
| ४००३५ | काशिका | | १-२६, २⊏ । |
| ४००३६ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | • | ४-६, २४, ४-१६, २१-२६, ४=, ५०-५१ ६५-६६,७४-७५, ३०-३३.४०-५५, ५९-६४, ६७-७०, ७२, ७४-९६, १०२-१४१, ९७-१०१, २७-२८, ७६, ७१, ७१, ७३, २-११, १६-१८, १९। |
| ४००३७ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | | ११२-११८ । |
| ४००३८ | तत्त्ववोधिनी | | १, ५-६, १२-७६, ७८-८२+१, ८३-१०७ । |
| ४००३९ | घातुपाठः , | | १-४ । |
| 80080 | सारस्वतम् | अनुभृतिस्व- रूपाचायः | ७१-≂० । |
| ४००४१ | 33 | | १। |
| ४००४२ | सारस्वतं सटीकम् | • | २-३ । |
| ४००४३ | " | | ३-११, १३-१५, २५-३० । |
| ४००४४ | सिद्धान्तचन्द्रिका | | १२-२२ = (२३), २४-=४। |
| ४००४५ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | भट्टोजिदीक्षितः | १-५२, १-५० । |
| ४००४६ | मध्यसिद्धान्तकौमुदी | वरदराजः | १-१०, १०-९५, ९७-१३६, १३६-१३७। |

| आ कारः | पङ्कि- संख्य | अक्षर- । संख्या | लिपिः | अभिष् | लिपिदालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषिवरणम् |
|--------------------------------------|-----------------|--------------------|--------|-------|----------|------------------------|------------------------------------------------------------------|
| १५×३-१ | 4 | ५६ | वङ्ग | का. | | अंपू० | |
| 88× ≨. ₹ | Ę | ξų | ,, | ,, | | " | अष्टाध्यायीटीकाटीका । |
| १५ ५×४ [.] ५ | છ | ३९ | 7. | ** | | 22 | त्यादिप्रकरणम् । |
| १५'५×४'५ | Ę | 88 | " | ,, | श. १६९२ | ** | घातुपाठो वा । |
| १३×२·⊏ | 5 | ६४ | ,, | " | | " | आख्यातप्रकरणम् । |
| १४'२×३•६ | Ę | 4 | 22 | ,, | | # | |
| १३·६×२·५ | 5 | ६≔ | ,, | " | | > | |
| १४ [.] ३×४ [.] १ | १० | ५८ | मै॰ | 27 | | ,, | |
| ११ . ७×३.८ | v | ४९ | दे-ना | ,, | | ,, | अष्टाध्यायीटीका। घ० १, पा० १। |
| विविधः | ९ | २ ८ | " | 12 | | " | प्रक्रियाकोमुदी च । |
| | | • | | | | | |
| | | | | | | | |
| <i>&.</i> &x8.8 | १० | ३३ | >> | " | | " | |
| ११ [.] ४ × ३ [.] ५ | Ę | ४८ | 11 | ,, | | >1 | वै० सि० की: टी० । |
| १५×३·५ | છ | ४= | वङ्ग | >> | | ,,, | |
| १०'२x४·५ | १३ | इर | दे.नाः | " | | 3 3 | |
| ७°१ × ४°५ | ς | ચ ચ | , | 22 | | >> | "नामि" इति सूत्रच्याख्यानम्। |
| ९'२×५ | १५ | ४१ | ,, | ,, | | >> | And Harmanite |
| ς. ωχ ά | १८ | 88 | " | ,, | | ,, | |
| १ ० °१×४°६ | 8 | 28 | ,, | " | १८८५ | ,, | द्विरुक्तप्रिक्तयान्ता । अन्ते भिन्ना- काराणि पत्राणि सन्ति । |
| ९ . ⊏×८.ई | १२ | ४३ | " | ,, | १=३१ | , पू0 | कृतः लिङ्गानुशासनान्ता । |
| १०°=×४ | 5 | 80 | , , | ,, | | अपू० | |
| | | | | | ` | ٠ | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | घ्रन्थकारनाम | पत्रसंस्याविवरणम् |
|------------|---------------------------------|--------------------------|-------------------------------------------------------------------------------|
| ४००४७ | पारसीकप्रकाशः | विहारिकृष्णदासः | १-१०, १३-१४। |
| ४००४८ | शब्दरूपावली | (| १-६ । |
| ४००४९ | वैयाकरणभूषणसारः | कोण्डभट्टः | १-२३, २२-३०, ३२-३६ । |
| ४००५० | वैयाकरणसिद्धान्तक <u>ौ</u> मुदी | भट्टोजिदीक्षितः | १-२६, २८-४२, ४४-६४, ६४-१०३, १०५- ११२, १२०-१५४, १५६-१७३, ७४-७६, ३, १८० । |
| ४००५१ | ,, | 9.9 | १-२०, २२-३२, ३४-७१, ७१-१०२ । |
| ४००५२ | 27 | >> | १-१००, १-२८। |
| ४००५३ | समासचकम् | | १-५। |
| ४००५४ | अष्टाध्यायी | पाणिनिः | ९, ३०-४५, ७५, ९१-९४। |
| ४००५५ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | | १८, २०-३२, ३४-३७, ४०, ४२-४४। |
| ४००५६ | पूर्वपक्षाविः | होरिलशर्मा | १, ३-५, ७, ९-१२, १४-३२ । |
| ४००५७ | वेयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | | २१, २५, ५६, ६२, ६५-६९, ९६। |
| ४००५८ | शब्दरूपावलिः | | १-१०, १२-१७। |
| ४००५९ | शब्दकौस्तुभः _ | | र, ⊏, ११, १४-१५, २६, ३०, ३४। |
| ४००६० | लघुशब्देन्दुशेखरटीका . | | 81 |
| ४००६१ | शब्दकौस्तुभतात्पर्यटीका | | ५,७-१०, १२-१३। |
| ४००६२ | परिभापेन्दुशेखरटीका | | २२-२५, ५१-५६, ५८ । |
| ४००६३ | शब्दकौस्तुभः | भट्टोजिदीक्षितः | १-७, ७-३० । |
| ४००६४ | परिभाषापाठः | | १-५ । |
| ४००६७ | ्र प्रौडमनोरमा | | 8-01 |
| ४००६६ | प्रबोधचन्द्रिका | वैजलभूपालः वैजलभूपालः | १-३२ । |
| | । छघुशब्देन्दुशेखरटीका | | २, =-१३। |
| l l | न् प्रौढमनोरमा | | ४८, ४९, ५२, ६२, ६७, ८२-५४, ८७- ८८, ९३, १००-१०१, १०४, १०७ । |

| | <u> </u> | 1 | | 1 | | [२ _: | | |
|---------------------|---------------|------------------|------------------|--------|-------------|------------------|-----------------------|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| आव.ार: | . प्रा संग | ङ्कि- ह्या स | अक्षर- संख्या | लिपि: | आयार: | लिपिकाल | पूर्णीपूर्ण विवेकः | |
| 8.8×8.8 | Q | | २९ | दे. ना | ्रका. | | अपू० | च्याकरणप्रकरणम् । |
| द*२x३ <i>°</i> ७ | 9 | | ४१ | " | ,, | | पू० | |
| ९-५×४-१ | १ | Ę | 84 | " | 1.5 | १७६९ | 25 | |
| <i>७</i> .६×०१ | ९ | | ४९ | 17 | 73 | | अपू० | |
| द: ६ x३•७ | १ | ₹ . | ३२ | 59 | 7.7 | | 29 | |
| ۳۰६×۶۰۶ | v | ; | २२ | " | " | | पू० | छदन्तप्रकरणम् । |
| द•३x३•७ | 9 | : | રંહ | " | " | | Я | - The state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the |
| ६•६×२• ८ | v | : | ≀३ | >> | " | | अपू० | |
| ९ . ५×४.५ | १० | , ३ | 0 | " | " | | " | |
| १२×४ [.] ७ | १० | 8 8 | 8 | ,, | " | | " | · |
| ९x४ [•] ६ | १० | २ | ર | ,, | " | | ,, | |
| १० : ३x४:३ | 5 | २ | ξ : | ,, | ,, | | ,, | |
| ९·५×४ · २ | 5 | ą | ц, | , | ,, | | 73 | अष्टाध्यायीटीका । |
| ९•३× ४ •१ | ११ | 3; | 8 , | , | " | | 33 | गटान्यायाटाका । |
| 3.8x8. | १० | . 30 | s | , | ,, | | 73 | |
| ९·५×४·१ | १० | ३० | , ,, | , , | , | | " | , |
| १२·६×३·३ | Ę | ध्द≡ | : " | , | , . | | पू० | अष्टाध्यायीटीका । १ अ० १ पा० १ आ० मात्रम् । |
| न'५ × ३ ' ४ | ৩ | ३४ | " | , | , | | " | र न्यन् मानसू । |
| ः'९×४'२ | १३ | ४६ | ,, | ,, | , | | अपू० | वै०सि०कौ०टीका । |
| 7.5×8.8 | 4 | ३१ | ,, | ,, | | | n l | द्वाराज्या ल्डाकी । |
| १'4×8 | Ę | ३० | >> | 72 | | | , , | |
| x8.8× | 5 | २८ | 11 | 39 | | | ,, | वै० सि ० कौ० टीका । |

| कम र्स ख्या | प्रन्थनास | प्र न्थकारनाम | पन्नसंख्याविवरणम् |
|--------------------|--------------------------------|----------------------|---------------------------------------------------------|
| ४००६९ | महाभाष्यम् | पतञ्जिलिः | १-२९, १-३६। |
| ४००७० | प्रौ ढमनोरमाटीका | | ४१ (गणनया) । |
| ४००७१ | शब्दरूपावली | | १-७ |
| ४००७२ | समासचकम् | | १-७ । |
| १००७४ | अप्टाध्यायी | | १-७ । |
| ४००७४ | प्रयोग <u>म</u> ुख्यसारः | वारुड: | १, ३-७, ९ । |
| ४००७५ | पदमञ्जरी | | १- ⊏ । |
| ४००७६ | वैयाकरणसिद्धान्तको मुदी | | ६, २५-२६, ५७,७०-७४, +३, ९०-९५। |
| ४००७७ | शब्दकोस्तुभः | | ३-७,१०,१२,१३,१६,१७,१९-२४,३२-३३ । |
| ४००७८ | वैयाकरणसिद्धान्तकौ मुदी | | १९, ३८, ३९, ४१। |
| ४०० <i>७</i> ९ | शैढमनोरमा | | १-९० । |
| ४००८० | दशलकारसारमञ्जरी | सिद्धान्तवागीश: | १-३+१ |
| ४००८१ | लिङ्गानुशासन म् | | १-४। |
| ४००⊏२ | वैयाकरणभूषणसारः | कोण्डभट्टः | १-३२ । |
| ४०८८३ | प्रौढमनोरमा | | १-३७, ३५-३८, ३८-६९, १-९, १-३६, ३८ ५९, ६१-७५ । |
| ४००८४ | सिद्धान्तचन्द्रिका | .रामभद्राश्रमः | 8-991 |
| ४००६५ | यङ्लुगन्तरूपाणि | | १-२० । |
| ४००८६ | पाणिनिसूत्रं सटीकम् | | १-१६- २-२६, २८-३२, ४-३५ । |
| 800ದೂ | स्वरप्रक्रियाच्याख्या | रामचन्द्रः | १-२५, ११-१८, १-३१, १-१८। |
| ४००द्रद | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | | १-२०। |
| ४००८९ | , , | | १-२५ । |
| ४००९० | , | भट्टोजिदीक्षितः | १०-१०६, १४५ । |
| · | • | | |

| धाया रः | पश्चि- संस्या | धश्वर- शंदया | लिपिः | आन्यारः | लिपिपालः | पूर्णापूरी- विवेग: | विशेषविषरणम् |
|-----------------------------------|------------------|------------------|------------|---------------|----------|-----------------------|--------------------------------------------------|
| १०७x४·६ | १२ | ४९ | दे.नाः | फा. | | पृ० | mandemining t |
| ९·५×४४४ | १४ | ४७ | ,, | ,, | | अर्पे० | चतुर्धाध्यायमात्रम् । |
| ९'२×४.१ | ११ | ३१ | >1 | 31 | | do | |
| ¤.4×4.≈ | 8 | २९ | ,, | " | १८८० | 11 | |
| €.८×გ.5 | १० | १९ | ,, | 11 | | গ্ৰদৃত | |
| ९- ६ ×४-३ | १२ | និន៍ | ,, | ** | | ** | |
| ۶×غ.≃ | १० | ২৩ | 33 | ** | | 1) | |
| ९•३×४•७ | ११ | રૂષ | 2) | > + | | 1) | अप्टाप्यायीटी स्टीका । |
| ९'4x8'१ | ~ | ३१ | " | 10 | | 11 | |
| ९•१×४•२ | २० | ३६ | " | ** | <u> </u> | ,, | अष्टाष्यायीरीका । |
| १४×२ [.] ३ | १० | ₹૪ | ,, | ** | | 11 | र्यं० सि० फी॰ टीफा । |
| የ·የ×ያ·ኅ | १३ | 4Ę | ,, | ** | | पृट | |
| १०x४:५ | १० | ३९ | " | 1) | १⊏५४ | 17 | • |
| १२'७x' ४ ३ | १४ | ૪૭ | ,, | ** | | ** | |
| १०×४ [.] ६ | १० | ફેર | " | ** | | अपृ० | ये॰सि॰की॰टोका । |
| ९′७x४.३ | 5 | રરૂ | •• | ,, | | 1, | |
| ९ [,] ३×४ [,] ५ | ९ | ₹ 38 | , , | ** | કં⊏કંજ | | |
| ९.५×४:६ | १३ | ₹. 3 <i>Ę</i> | 92 | 11 | ,4,0 | do do | Internal Corners |
| 3 100 K | 14 | 44 | | | | अपृ॰ | म्यरप्रकरणम् । यिष्यानपुस्तकाद् भिन्नमिद्म् । |
| ९ [.] ५×४ [.] ६ | १२ | ξo | " | ** | १⊏०६(१) | " | |
| ૧. ৪×৪. ક | ११ | ३० | 11 |) 1 | १९१६ | ** | |
| ११'७×४ ' ३ | હ | ३९ | ,, | ,, | | 1; | |
| १२७×४ | ११ | Ęο | ,, | ,, | श. १७०२ | 22 | |
| | | | | | | | |

| | | · · · · · · · · · · · · · · · · · · · | |
|--------------------|--------------------------------------|---------------------------------------|------------------------------------------------|
| क्रमसंख् या | ग्रन्थनाम | अन्यकारनाम | पन्नसंख्याविवरणम् |
| ४००९१ | धातुपा ठः | | १-७ । |
| ४००९२ | चणादिसूत्रपा ठः | ; ; | १ + १ । |
| ४००९३ | स्थानिवत्सूत्रविचारः | | १-६ । |
| ४००९४ | >> | | १-५ । |
| ४००९५ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी सटीका | भट्टोजिदीक्षितः टी० का० नागेशः | १-४ । (गणनया) |
| ४००९६ | " | | ६१-६३ । |
| ४००९७ | शब्दकौरतुभः | | १-११ । |
| ४००९८ | वैयाकरणसिद्धान्तकौ मुदी | | १। |
| ४००९९ | प्रथमाविभ त्त यर्थविमर्शः | | १-≂ । |
| ४०१०० | वार्त्तिकम् | | १-११ । |
| ४०१०१ | गणपाठः | | १-२२ । |
| ४०१०२ | परिभापापाठः | | १-६ । |
| ४०१०३ | अष्टाध्यायी | | १-४४ । |
| ४०१०४ | ल्घुशं च्देन्दुशेखरः | नागेशः | १-२२०, २२२, २२३-२४२, ३०-४२, ४६-≂६,९५-१३४+१। |
| ४०१०५ | परिभाषेन्दुशेखरटीका | | २-५८ । |
| ४०१०६ | वैयाकरणसिद्धान्तकोमुदी | भट्टोजिदीक्षितः | १-१३७, १-९, १-५१ = ५२, ५३-५४, ५४-१६६, १-१०२ |
| ४०१०७ | 39 | | १-द्रद |
| ४०१०८ | , , | भट्टोजिदीक्षितः | रि-४, ६-६⊏, ७२-७३, ७५-७६, ⊏४-१०७ । |
| ४०१०९ | परिभाषाप्रदीपा ^{द्यिः} | उदयङ्करः | १-६ = ७-१०६ । |
| ४०११० | शब्दकौस्तुभः | भट्टोजिदीक्षितः | १-४५ । |
| ४०१११ | मध्यसिद्धान्तकौमुदी | | १-९२,, १-५६। |
| | | | |

| लागर । | पह्नि- संस्था | णशर- संस्या | शिषा | द्यारमारः | डिपियानः | पूर्णापूरी- विवेदा | विरोपनियरणम् |
|------------------------------------|------------------|----------------|--------|------------|-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|------------------------------------------------------|
| १२×४'१ | १२ | ६२ | दे.ना. | का. | | अपू० | |
| ११.८×৪ | 9 | 88 | 14 | ,, | | do | प्रथमपादमात्रम् । |
| ≃.€×8.8 | 5 | २१ | ,, | " | | 41 | मोखपत्राणि । |
| ९.4×४.5 | १२ | ३२ | ,, | 1, | | अपृ० | n |
| १२×४·१ | १३ | ६१ | ** | ** | | de de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la constante de la const | टी॰ लघुराब्देन्दुरोगराख्या । णिजनोहस्रसर्यान्ता । |
| 88.6×8.8 | ११ | 43 | 71 | ** | | 1) | टी॰ लप्शन्येन्द्ररोतसायया । विदन्तप्रप्रस्मा । |
| १३×४·१ | १० | રૄ⊏ | 34 | 11 | | *** | अग्राष्यायीटीमा । |
| ११'५×४'१ | ıs | ४४ | ,, | #1 | | ** | कारकप्रकरणम् । |
| ९.4x४:२ | ९ | ₹ς | 7. | 71 | | ** | |
| ९x४ [.] २ | _ | રૂ⊏ | 11 | ,, | | ** | फात्यायनधोराम् । |
| १२'७×४'¤ | 80 | ४≈ | ,, | 11 | | yo | |
| 6.8x8.5 | = | 3 2 | ** | ; ; | | #1 | |
| ११×४°९ | १० | ₹= | ,, | ,, | | 11 | |
| १२ [.] ६×४ | ११ | ध्र | >> | ** | श. १७६६ १७५० | अपृ० | यें॰ सि॰ गी॰ टी॰ । |
| ९ .6 x 8.3 | ९ | 33 | ,, | 7/ | श. १९-९ | ** | |
| १० [.] २×४ [.] ५ | Ę | २५ | ,, | 11 | , , , , | ,, | |
| १०'२x४'६ | ς | ३४ | ** | ** | , | Чэ | विष्टन्तमात्रम् । |
| ሪ.ሞ×አ.ጸ | १२ | રૂંહ | 9.9 Tu | ,, | t t | અપૃગ | तिगन्तमात्रम् । |
| ९ . ९×४.५ | १२ | ३७ | 11 | ,, | | पृ ० | |
| ९ •⊏x४.≾ | १३ | ४५ | ,, | ** | h magne a call of call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the call of the | अपृ० | अष्टाप्यागीटीका । प्रथमाप्यायः । |
| ξο×β.⊏ | १० | 34 | ,, | " | | 11 | भ्यादितः स्वरप्रक्रियान्ता । |
| 30 | | | | | | | |

| F | इमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थ कारनाम | पन्नसंख्याविवरणम् |
|---|-----------------|---------------------------------------------|--------------------------|--------------------------------------------------------------|
| | | प्रौढमनोरमा | | ४५-६०, म्ह-१३२, १६२-२२५। |
| | ४०११३ | महाभाष्यं सदीकम् | | 8-801 |
| | ४०११४ | महाभाष्यम् | पतञ्जलिः | ५-५३, ७१-११२ । |
| | `४०११५ | ,, | " | १-३१ । |
| | **** | महाभाष्यं सटीकृम् | पतञ्जलिः टी॰का॰ कैयटः | १-३९ । |
| | 80880 | 2) | " | १-१९१, १९४-२२६। |
| | ४०११⊏ | ,, | टी॰का॰ कैयटः | १-३१, १-९, ४१-६३। |
| | ४०११९ | लघुशव्देन्दुशेखरटीका | | ७। (गणनया) |
| | ४०१२० | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | भट्टोजिदीक्षितः | १-१४२, १-९, ३४-९५, ५३-६३, ६६ । |
| | ४०१२१ | प्रौढमनोरमा | " | १-५९ । |
| | ४०१२२ | वेयाकरणसिद्धा - तकौ <u>म</u> ुदी | " | १९, २६-१६७, १६७-१८४, १८७-२०६, १-१५३, १६१-१८३, १-१९, १-१५। |
| | ४०१२३ | 55 | | १७-३५, ४०-४२ । |
| | ४०१२४ | श्रष्टाध्यायी | | 81 |
| | ४०१२५ | क्रोडपत्रम् | | १-१३+१ । |
| | ४०१२६ | प्रौ ढमनोरमा | | २७-५०, ५५-५८। |
| | ४०१२७ | वैयाकरणभूषणसारः | | १। |
| | ४०१२व | सारस्वतम् | | २-२७ । |
| | ४०१२९ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | | २१-३१+१ । |
| | ४०१३० | ,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,, | | ४-२० । |
| | ४०१३१ | परिभाषेन्दुशेखरकोडपत्रम् | | १-६। |
| | ४०१३ | ,, | | १-२ । |
| | ४०१३३ | ,, | | १-8 । |

| आकारः | पङ्कि- संख्या | अक्षर- संस्या | लिपि: | आबारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः। | विशेषविष्रं रणेम् |
|------------------------------------|------------------|------------------|--------|------------|----------|-------------------------|-----------------------------------------------|
| १२•३×४७ | 5 | ३७ | दे. ना | का. | | अपूर्ं | चें सिं कीं टीकां। |
| १२'५x४'¤ | = | ५३ | " | ,, | | 29 | दीका-प्रदीपाख्या । |
| ११×३·७ | c | ३६ | " | ,, | १६८० | ,, | ञ्च० ४ पा० ४ ञ्चा० १ । |
| १३•६×५·७ | १३ | ४१ | 15 | 79 | | " | |
| ५ . ७x8.≃ | १० | ५३ | >2 |) 2 | | पू० | टीका-प्रदीपाख्या । अ०१ पा०१ आ०२। |
| १२•५×४ | १४ | ५१ | " | " | १८८२ | ,, | अ०१ पा०१ भा०९ । |
| १२·३×४·९ | १२ | પ પ | वङ्ग. | ,, | , | अपू० | N |
| १२ [.] ९×६•५ | १९ | ५० | दे.ना. | " | | 3) | |
| ⊏.6×8.8 | ९ | ३३ | 99 | 99 | | 5) | अन्तिमपत्रमेतद्भिम्रप्रन्थस्य । |
| १०•९x४•६ | १७ | ४१ | >> | " | | पू० | वै०सि०कौ० टीका। कृद्न्तप्रक्रिया- मात्रम्। |
| १२ [.] ३×५ [.] १ | છ | ३२ | • | " | | अपू <i>०</i> | |
| १२'७x४'s | = | રદ્ | รรั | " | | 33 | |
| ११ . ⊏×გ.⊏ | १० | ४८ | ,, | " | | " | |
| १०७४३•९ | હ | ३० | " | ,, | | " | |
| १०'९×४'६ | ११ | ५८ | ,, | ,, | | 54 | वैष सि॰ कौ॰ टीका । |
| ९• ⊏ ×४•६ | ९ | ४६ | ,, | " | |) 3 | |
| १० ੶ ४x४७ | 5 | ३७ | 77 | ,, | | 3 4 | |
| १०.8×8.8 | ~ | ३३ | " | " | | " | |
| १०x४·७ | ९ | २९ | ,, | " | | ,, | |
| १३·५x४·२ | ٩ | ६५ | i, | ,, | | पू० | भाव्यमानेत्यादि परिभाषोपरि । |
| १३·५×४·२ | ९ | ६४ | ,, | ň | | > 3 | गौडमुख्ययोरित्यादि परिभाषोपरि । |
| १३'५x४'२ | ९ | ξo | " | " | | 14 | अर्थवंदित्यादि परिमापोपरि । |

| | कमसंख्या | प्र न्थनाम | ग्रन्थकारनास - | पत्रसंख्याविवरणम् - |
|---|---------------|--------------------------------------|-------------------|------------------------|
| | ४०१३४ | परिभाषेन्दुशेखरकोडपत्रम् | | १-२ । |
| ļ | ४०१३५ | 20 | | १-३ । |
| | ४०१३६ | ,,, | | १-२। |
| | ४०१३७ | , ,, | | १-४। |
| | ४०१३८ | ,, | | १-१२ । |
| | ४०१३९ | 23 | | १-३ । |
| | ४०१४० | 73 | | १-२। |
| | ४०१४१ | >> | | ११ |
| | ४०१४२ | 19 | | १-३ । |
| | ४०१४३ | परिष्कारः | | १। |
| | ८० १४४ | प्रकीर्णपत्राणि | | ८ । (गणनया) |
| f | ४०१४५ | ज्ञापकसमुच्चयः | पुरुषोत्तमः | १-२, ५-६+१, ७-९ । |
| | ४०१४६ | परिभाषेन्दुशेखरटीका | | ६७-७ ၁ |
| | ४०१४७ | " | योगेश्वरः | १-११+१ । |
| | ४०१४८ | परिभाषेन्दुशेखरकोडपत्रम् | | १। |
| | ४०१४९ | ,, | | १-३ । |
| | ४०१५० | त्तघुश ब्देन्दुशेखरकोडपत्रम् | | ४। (गणनया) |
| | ४०१५१ | परिभाषेन्दुशेखरटीका | | १-६ । |
| | ४०१५२ | क्रोडपत्रम् | | १-१० । |
| | ४०१५३ | त्त घुश न्देन्दुशेखरकोडपत्रम् | | १-१४ । |
| | ४०१५४ | ** | | १-≔ । |
| | ४०१५५ | परिभापेन्दुशेखरहोका | | १-५ । |

| धाकारः | पङ्कि: संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | अध्यारः | लिपिकाल: | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|--------------------------------------|------------------|------------------|--------|---------|----------|------------------------|--------------------------------------------------|
| १३·५×४·२ | ९ | ५० | दे. ना | का. | | पू० | नानुवन्वकृतेत्यादि परिभाषोपरि । |
| १३·५×४·२ | 9 | ५६ | 22 | " | | " | कार्यमनुभवन्नित्यादि परिभाषोपरि । |
| १३ ५×४ [,] २ | 9 | ६२ | ,, | " | • | " | निर्दिश्यमानपरिभाषोपरि । |
| १३·५×४·२ | 9 | ५६ | ,, | " | | " | " |
| १३·५×४·२ | ٩ | ६७ | 23 | " | | 31 | श्रन्तरङ्गपरिभाषोपरि । |
| १३·५×४·२ | ९ | ဇဝ | ,, | 99 | | 39 | स्त्रीप्रत्यये चानुपसर्जनेनेति परि- भाषोपरि । |
| १३·५×४·२ | 9 | ६४ | " | " | | 29 | "उत्तरपदाधिकारे" इत्यादि परि- भाषोपरि । |
| १३·५×४·२ | 9 | ဖ၀ | " | 55 | | 79 | 'उणाद्योऽन्युत्पन्नानि' इस्यादि परिभाषोपरि । |
| १३·५×४·२ | १० | ۶υ | ,, | ,, | | ** | सरूपाणमित्यादि पुत्रीपरि । |
| १३·५×४·२ | 9 | ६२ | 23 | 29 | | ** | रषाभ्यामित्यादिषुत्रस्थसमानपदस्य। |
| १३·५×४·३ | 8 | ६७ | " | " | | अपू० | |
| १३•५×४•३ | १३ | ७१ | " | 22 | | 29 | , |
| १३·५×४·३ | b | ५३ | " | 93 | | 39 | |
| १३·५×४·२ | १० | ५७ | " | 79 | | " | टीका-हैमवती । |
| १३·५×४ २ | ९ | ६३ | " | 73 | | ,, | यत्रानेकविधमितिपरिभाषायाः । |
| १३.५×४.२ | 9 | ७९ | ". | ,, | | × | प्रत्ययग्रहण इत्यादि परिभाषायाः। |
| १३.५×४.२ | 9 | ६२ | " | | | n | |
| १३.५×४.५ | १० | ५५ | 79 | " | | 19 | टोका-हैमवती । |
| १३'५x४'२ | १० | ६२ | 79 | " | | " | |
| १३.५ × ४.५ | 8 | ५७ | 39 | >> | | ** | |
| १३.५×४.5 | 5 | ह्५ | 24 | 23 | | " | |
| १३ ^५ ५ × ४ [,] २ | 8 | ५७ | N | 13 | | " | , |

| क्रमंसँ ऍया | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|------------------------------------------------------------|------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| ४०१५६ ४०१५६ ४०१६२ ४०१६२ ४०१६२ ४०१६२ ४०१६२ ४०१६२ ४०१६२ ४०१६२ ४०१६२ ४०१७० ४०१७२ ४०१७२ ४०१७२ ४०१७२ ४०१७२ ४०१७२ | लघुंशब्देन्दुशेंखरदीका क्रोंडंपत्रम् ज्ञापकसंमुच्चयदीका ज्ञापकसमुच्चयदीका ज्ञापकसमुच्चयदीका ज्ञापकसमुच्चयदीका प्रक्रियाप्रकार्शः वैयाकरणसिद्धान्तकीमुदी "व्याकरणसिद्धान्तकीमुदी " लघुसिद्धान्तकीमुदी वैयाकरणसिद्धान्तकीमुदी " सारस्वतम् अष्टांभ्यायी सारस्वतम् | बृहस्पतिमिश्रः पुरुषोत्तमदेवः त्रिलोचनदासः चार्यः | १-द, द । २ । (गणनंथा) १-६३, ६५-६९ । २-५१, ५१-५५, ५६-६३ । ३-९, १६-३४, ३६-६३ । १-१३, १५-६७, ६९ । १-५ । १६-२५, २६-७३ । १२-३ । १-२६, २९-३६ । २५-३१, ३१, ३३-३५ । २-५, ७-६ । २३-३२, ३४-३७, ३७-६६ । ११-२२ । ११-२२ । ११-२२ । ११-१५ । ११-१५ । ११-१५ । |
| ४०१ <i>७</i> ६ ४०१ <i>७</i> ८ | लघुशब्दरत्नम् लघुशब्देन्दुशेखरः | हरिंदीक्षितः नागेशः | १-६२ + १ १-६९ |

| आकार ः | पङ्कि- संख्या | धक्षर- संख्या | लिपि: | आधार: | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|-------------------------------------|------------------|------------------|-------|-------|----------|------------------------|-------------------------|
| १३·५×४·२ | 9 | ५ ३ | दे,ना | का. | | अपू० | |
| १३·५x४ · २ | ų | ५= | 33 | 29 | | >> | त्तघुशब्देन्दुशेखरस्य । |
| ت.ؤ×غ.۶ | 5 | ३२ | " | * | | " | |
| ۳.٤×غ.۶ | Ę | ३० | ,, | ,, | १६६५ | ,, | |
| १०×३ [.] १ | १० | ४९ | ,, | ,, | | ,, | |
| १०·५x३·५ | 5 | ५० | 14 | 99 | | ,, | |
| १० . ८×८.५ | ११ | 88 | w | " | | ,, | वैदिकप्रकरणमात्रम् । |
| १०'¤×४'६ | ٩ | ३५ | " | " | | ,, | |
| १०×३.७ | ११ | ४३ | " | " | | ** | |
| १२·१×३·९ | Ę | ३⊏ | ,, | × | | >> | |
| ९•७×५ | 9 | २७ | ,, | ,, | | ,, | |
| ९-५×५-१ | ११ | ४२ | ,, | " | | " | |
| ९ . ८ × ८.५ | ११ | ३० | " | " | | > | |
| ९.४×४.४ | 5 | ২৩ | ,, | ,, | | 9) | |
| ९·२×४·२ | १० | ३७ | " | ,, | | •• | |
| देन्त्रप•र् | १२ | 30 | " | 27 | | ,, | |
| ९ [.] २ × ४ [.] २ | 9 | ३५ | >> | 29 | | >> | |
| ⊏.8 × 3.∂ | 5 | २६ | " | " | | ,, | |
| ९ × ३·९ | 0 | २२ | " | >> | | ,, | |
| 5'2 × 8'5 | 8 | २३ | ,, | 73 | १८२५ | ,, | |
| १०'५ x ४'५ | 9 | ३९ | ,, | ,, | | ,, | वै० सि० की० टी० टी० । |
| ९ . ५×ॅ४.४ | = | ঽ৩ | " | " | | ,, | वै॰ सि॰ कौ॰ टी॰। |
| ς.≃×8.έ | ११ | 80 | ,, | " | | 7,9 | n |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-----------------------------|--------------------|---------------------------------------------------------------|
| . ४०१७९ | वाक्यपदीयं सटीकम् | | १-२०० । |
| ४०१८० | वृत्तिदीपिका | मौनिश्रीकृष्णभट्टः | १-३३ । |
| ४०१⊏१ | वैयाकरणभूषणसारः | कोण्डभट्टः | १-४६, ४६-⊏७ । |
| ४०१८२ | शब्दरूपावली | | १-५ । |
| ४०१⊏३ | . 19 | | १-४३ । |
| ४०१८४ | शिष्यप्रवोधिका | गोविन्दभट्टः | २-१० ⊏ । |
| ४०१८५ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | भट्टोजिदीक्षितः | १-१९५ । |
| ४०१⊏६ | " | » | १-१०१ । |
| ४०१८७ | 93 | 33 | १-७९ । |
| ४०१८८ | 75 | | १-२१ । |
| ४०१८९ | 39 | | १-२५ + १ । |
| ४०१९० | अष्टाध्यायी | | २-४ । |
| ४०१९१ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | भट्टोजिदीक्षितः | ६९-९४ । |
| 120 60 2 | 33 | | १-२० |
| ४०१९२ | | | |
| ४०१९३ | " | भट्टोजिदीक्षितः | १-८३, ८५-८८, ९०-१२३, १२७-२०७, १-९,९(क-घ)१०-१२८,१-५८,६०-८३। |
| ४०१९४ | सुबोधिनी | जयकृष्णः | १-७७ । |
| ४०१९५ | >> | `99 | १-३७ । |
| ४०१९६ | लघुशब्द रत्न म् | | १२९-१४४ । |
| ४०१९७ | , | हरिदीक्षितः | १-११६, ११८, १२४-१२७, १३८-१८५ । |
| ४०१९८ | शब्दकौस्तुभः | भट्टोजिदीक्षितः | १-२९, ३१ (= ३०) ३१-७४। |
| | | | |
| | गवाक्शब्दव्याख्या | | 8-81 |
| ४०२०० | त्तघुशव्देन्दुशेखरटीका - | - | ३, ७-≒ । |

| भाकारः | पङ्कि संख्या | अक्षर- संख्या | लिपि: | आचार: | लिपिकाल: | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---------------------------|-----------------|------------------|--------|------------|--------------------------|------------------------|---------------------------------------------------------------------------|
| १३·३×६·७ | १० | ३३ | दे.ना. | काः | | अपू० | तृतीयकाण्डम् । |
| १०'५x४'३ | ९ | ३४ | 33 | ,, | १८३(१) | पू० | |
| ९'२×३·१ | v | ४० | " | 73 | १८२० | ,, | |
| ६.७×ई.८ | ११ | ર⊏ | 23 | >> | | अपृ० | |
| ۳،6×8.6 | 5 | १२ | 51 | 59 | १८२१ | " | |
| १० ६x३ . ७ | 9 | ४१ | " | 29 | | ,, | कातन्त्रीयधातुगणवृत्तिः। |
| ९ . ८×८.५ | १० | ३९ | " |)) | | 29 | |
| ८.≃×८.४ | १० | ४७ | 29 | 94 | १८७४ | पू० | तिङन्तप्रकरणम् । |
| १०×४'२ | १० | રૂપ | " | n | १८७४ | 33 | कुद्न्तप्रकरणम् । |
| ९ . ६×८.३ | ११ | ૪ર | " | " | | ,, | वैदिकप्रकरणम्। |
| ९.८×8.8 | १० | ३७ | , N | 24 | | अपूर | । स्वरप्रकरणम् । |
| €.6×8.\$ | v | १५ | ,, | " | | 20 | |
| १०x४·२ | п | ३० | " | " | १ ८९ ८ श. १७६३ | ,, | |
| ९ . ८×८.३ | १० | ३५ | " | 33 | | ,, | |
| १०×३•७ | ى: | ૪૦ | 59 | >> | १६९१ | » | |
| ⊏.4×8.4 | ९ | ३६ | " | ,, | श. १७०३ | पू० | वै०सि०कौ०टीका । स्वरप्रकरणमात्रम् |
| १०.४×४.ट | १० | ३७ | ** | 23 | | 24 | " वैदिकप्रकरणमात्रम्। |
| ₹.8×8. غ | ٩ | ३७ | ,, | " | | अपू० | वै० सि० कौ० टी० टी० । |
| ሪ.8×8 | 5 | ३५ | ,, | ,, | | > > | " |
| १ ३ ·९×५•३ | ११ | ५६ | " | " | | पू०* | अष्टाध्यायीटीका । अत्र प्रथमाध्याय- स्य द्वितीयपादतः प्रथमाध्यायान्तः। |
| ₽ . 8×8. | હ | २९ | 29 | " | | × | |
| ११ [.] ९×४ | १० | ५७ | 33 | 33 | | अपू० | |
| 2000 | | | | | | | |

| | क्रमसंख्या | प्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|------------|----------------------------------|-----------------|-------------------------------------------------------------------------------|
| | ४०२०१ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | भट्टोजिदीक्षितः | ७०-८१, ८३-९० । |
| | ४०२०२ | अष्टाध्यायी | | ३-४⊂ । |
| | ४०२०३ | वार्त्तिकसङ्ग्रहः | | १-४२ । |
| | ४०२०४ | लघुशब्देन्दुशेखरव्या ख्या | | १-३ । |
| | ४०२०५ | छ घुशच्देन्दुशेखरटीका | | १-२५ । |
| | ४०२०६ | लघुशन्देन्दुशेखरन्या ख्या | | १, १-१३, १३-१८+२, ४-१८, १-६४। |
| | ४०२०७ | वर्णात्कारइतिस्त्रविचारः | | १-४ । |
| | ४०२०८ | परिभाषार्थप्रदीपः | गोविन्दाचार्यः | १-२५ । |
| | ४०२०९ | परिभापासङ्ग्रहः | | १-४ । |
| | ४०२१० | छघुश न्द् र त्नम् | हरिदीक्षित: | १-२+३, ४-६+२, १ १ -२१+१, २३ - ३२+१, ३३-३४ + १, ३७-५७, १-३७ । |
| | ४०२११ | भावप्रकाशिका | वैद्यनाथ: | १-१६९ |
| | ४०२१२ | सद्स्थिमाला |))) | १-१२, १५-५५, ५७-१०२। |
| | ४०२१३ | लघुश व्देन्दुशेखरः | | १-४० । |
| | ४०२१४ | ,, | नागोजिभट्टः ् | ३४२-३७१, ३७१-४०७। |
| | ४०२१५ | » | ,, | १-९≂ । |
| | ४०२१६ | 17 | ,, | १-२५ 1 |
| | ४०२१७ | ,, | [| ३४। (गणन्या) |
| | ४०२१⊏ |) ; | नागोजिभदृ: | १-६०, ६०-६४ । |
| | ४०२१९ | ,, | | २७५-२८२, २८४-३१४, ३१६-३३१्। |
| | ४०२२० | छ घुश ब्द् रत्नम् | | २४-५०, ५३(=५२), ५४-५७, ५९-७२, ७४-९१, ९१-१०० । |
| • | ४०२२१ | ल्घुशब्देन्दुशेखरः | | २-१९५, १९५, १९६-२०२ । |

| थासर: | पद्ध- धंस्या | धसर- एंड्या | हिपिः | अपगारः | लिपिदानः | पूर्णांपूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------------------------------|-----------------|----------------|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-----------|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-------------------------------------------|
| \$• . @X8.£ | , 8 | २३ | दे.ना | फा. | | , अपृट | |
| ९·१×३·९ | ् १२ | રૂદ્ | ,,, | ,, | * * * | ; ; ; | ! |
| ९ [.] ७x४ [.] ३ | 3 | ४१ | *** | ,, | १८६= | 11 | 1 |
| ११×४.८ | १२ | ષ્ટર | " | 77 | | 21 | |
| १३•३×५ | 9 | ४७ | ** | ,, |) 4 | 12: | f |
| १२.९×५ | १७ | ६१ | ,, | ,, | | 73 | |
| १२•६×४~ | १२ | ĘĘ | 23 | 1, | | 77 | , |
| १०'५×४'५ ११'९×४'६ | ११ | 3.6 48 | ,, | ,, | Yanga tang di Kata | पृ० | |
| ९•७×४•५ | 3 | 3,6 | " | 23 | १=५६ | ,, | |
| ९.ह×ह. ई | 3 | ३्७ | ,, | 43 | १≂६७ | अपू० | वै० सि॰ कौ॰ टी॰ टी॰ । |
| ९ . ४×४.५ | १० | ३७ | ,, | ,, | | 33 | लघुराव्दरलव्याख्या |
| ९·६×४·२ | ९ | ¦ , ₹8 | ,, | >> | - | 1; | लघुशब्देन्दुशेखरटीका । |
| १०'५x४'९ | [!] | ્રષ્ટદ્ |) } } | 33 | | ** | ें ंसिःकों॰टी॰टी॰ ति डन्तभागः |
| ११.४×४.≃ | ११ | , પુર | वङ्ग | • 5 | १=११ | . ,. | " कारकभागः। |
| ९.६×६.५ | १० | 82 | दे.ना | 17 | १=६३ | йc | " तिङन्तभागः। |
| ९•६×४·३ | 88 | } | ,, | •• | १⊏६३ | 77 | " इदन्तभागः। |
| १० [.] ७x४ [.] ६ | ११ | 88 | 77 | ,, | To the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of th | "9 | " श्रजन्तनधुंसकलिङ्गतोऽन्यय- भागान्तः। |
| ς.α×გ. <u>\$</u> | १२ | ષ્ટર | ** | >5 | १=६२ | 2) | " वहितभागः। |
| ९.५×४.६ | १० | ४२ | ,, | >• | | अपृः | " समासभागः। |
| १०x४५ | १० | ३६ | 1, | 31 | | 1 3 3 3 3 3 3 3 3 3 3 3 3 3 3 3 3 3 3 3 | 27 |
| a,≅X≨,¤ | = | २९ | The state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the s | ** | de compression de la compression de la compression de la compression de la compression de la compression de la compression de la compression de la compression de la compression de la compression de la compression de la compression de la compression de la compression de la compression de la compression de la compression de la compression de la compression de la compression de la compression de la compression de la compression de la compression de la compression de la compression de la compression de la compression de la compression de la compression de la compression de la compression de la compression de la compression de la compression de la compression de la compression de la compression de la compression de la compression de la compression de la compression de la compression de la compression de la compression de la compression de la compression de la compression de la compression de la compression de la compression de la compression de la compression de la compression de la compression de la compression de la compression de la compression de la compression de la compression de la compression de la compression de la compression de la compression de la compression de la compression de la compression de la compression de la compression de la compression de la compression de la compression de la compression de la compression de la compression de la compression de la compression de la compression de la compression de la compression de la compression de la compression de la compression de la compression de la compression de la compression de la compression de la compression de la compression de la compression de la compression de la compression de la compression de la compression de la compression della compression della compression della compression della compression della compression della compression della compression della compression della compression della compression della compression della compression della compression della compression della compression della compression della compression della compressi | To the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of the second of | " आदिवी इलन्तपुँहिङ्गभागान्तः। |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | श्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-------------------------------------|--------------------|----------------------------------------------------|
| ४०२२२ | त्तघुशव्दरत्नम् | | १०१-१२५+१। |
| ४०२२३ | परिभाषेन्दुशेखरदोपोद्धारः | मन्तुदेवः | १-५१ । |
| ४०२२४ | परिभापेन्दुशेखरटीका | वैद्यनाथभट्टः | ४-४२, ४२-१४६, १४⊏, १५०-१५७, १६०-१६२, १६४-१६६ । |
| ४०२२५ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | | १-८, ८-१२,'१२-१५ । |
| ४०२२६ | धात <u>ु</u> पाठः | • | ४-२६, २८-३६, ३७ (=३८), ३९-४०, ४१ (=४२), ४५-४७ । |
| ४०२२७ | चिद्स्थिमाला | वैद्यनाथपायगुण्डेः | १-११, ३१। |
| ४०२२८ | लघुशब्देन्दुशेखरटीका | | २४-६९ । |
| ४०२२९ | सिद्धान्तचन्द्रिका | रामचन्द्राश्रमः | १-४१ । |
| ४०२३० | त्तघुशब्देन्दुशेखरविमशेः | | १-२ । |
| ४०२३१ | त्रघुश ब्देन्दु शेखरव्याख्या | | १-२० । |
| ४०२३२ | छ घुशब्द्रत्नम् | | ११९-१२८ । |
| ४०२३३ | ,, | | १०। (गणनया) |
| ४०२३४ | छघुशब्देन्दुशे खरः | | ४९, ५१-५५, ५८-५९ । |
| ४०२३५ | लघुश व्दरत्नम् | | १-२३ । |
| ४०२३६ | त्तघुशव्द रत्न टीका | | २३, २५-३⊏ । |
| ४०२३७ | घातुरूपाव ली | | १-३, २-७। |
| ४०२३८ | 2) | | १२ = (१४), १४-२३, २३-२७+२ । |
| ४०२३९ | वैयाकरणसिद्धान्तको सुदी | | १-६ । |
| ४०२४० | तत्त्ववोधिनी | | १-६। |
| ४०२४१ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | | १-७, ९-१०, १५-५० । |

| भाकार: | पङ्कि- संख्या | भक्षर- संख्या | लिपि: | भावारः | लिपिकाल: | पूर्णापूर्ण- विवेक: | ं विशेषविव रणम् |
|-----------------------------------|------------------|------------------|-------|--------|----------|------------------------|-----------------------------------------------------------------|
| ९·६×४·३ | ११ | ४० | दे.ना | का. | | अपू० | वै॰ सि॰ की॰ टी॰ टी॰ । श्रव्ययी- भाषांशतो बहुबीहिपय्येन्तम् । |
| ९'५×४'२ | 8 | 80 | ,, | ,, | | ,, | |
| ९·५×४·२ | १० | ४५ | " | 1) | १८६८ | " | काशिकाख्या। |
| ८.⊏×8. ई | १६ | ५० | ,, | " | श. १५४२ | पू० | वैदिकप्रक्रियामात्रम् । |
| ביב×२יב | 8 | ३३ | " | 77 | | अपू० | अत्तरानुक्रमेण स्होकवरः। |
| १२.५x४.८ | १२ | ५२ | >2 | " | | ,, | त्तघुशब्देन्दुशेखरवृत्तिः। |
| १० *७ x४*५ | १० | 8= | ,, | " | | 11 | सञ्जाप्रकरणस्य । |
| १०'४x३'९ | ११ | રૂપ | 53 | 1) | | पू० | पूर्वार्द्धभागस्य । |
| ९ . ≃×८.३ | १३ | ४३ | 73 | " | | अपू॰ | कानिचिद्भ्यादिप्रकरणस्थवाक्या- न्युद्धृत्य लिखितः। |
| ९ ' ⊏×४'३ | १० | છહ | " | 33 | | ** | |
| ९·५x४·२ | १२ | ૪ર | ,, | 33 | | ** | वै० सि० कौ० टी० टीका, कारक- प्रकरणस्य । |
| ९'¤×३'९ | ९ | ४७ | " | " | | >> | वै० सि० कौ० टी० टीका। |
| १०×४'४ | १० - | 8= | ,, | " | | 1) | " तिङन्तप्रकरणस्य । |
| 80.5×3.≈ | v | રૂર | " | 25 | | 11 | दैं० सि॰ कौ॰ टी॰ टी॰ । |
| ९ [.] ६×४ [.] २ | १० | ૪ ૨ | ,, | " | | ,, | |
| ९'१×४'१ | 9 | ३० | ,, | " | | 33 | |
| ९.8×8. ३ | 9 | २७ | 33 | " | | 33 | |
| १०•१×४·६ | ٩ | २६ | " | " | | ** | अन्ययीभावप्रकरणस्य । |
| १०.९×ई.८ | Ę | ३३ | ,, | ** | | ,, | वै० सि० कौ० टीका। |
| \$0.5×8.5 | १० | ₹≒ | " | 22 | | 53 | तिङन्तप्रकरणस्य । |
| | | | - | | 1 | | |

| | कमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकार नाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|----------|---------------------------------|-------------------------------------------|---------------------------------------------------------------|
| | ४०२४२ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | , | १-४६, ५१-६२ । |
| | ४०२४३ | 33 | | १-१६+१1 |
| | ४०२४४ | पाणिनिसूत्रव्याख्या | | १-4+१। |
| | ४०२४५ | वैयाकरणसिद्धान्तक <u>ो</u> मुदी | | □, १३-३३ I |
| | ४०२४६ | ,, | भट्टोजिदीक्षितः | १-३३ । |
| • | ४०२४७ | 33 | | १-६४ । |
| | ४०२४८ | ,, | भट्टोजिदीक्षितः | १-२, ९-१२, ३४-५७ । |
| | ४०२४९ | लघुसिद्धान्तक <u>ौ</u> मुदी | | ३३-५५ । |
| | ४०२५० | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | | २६-५८ । |
| | ४०२५१ | " | | १-२४ । |
| | ४०२५२ | लघुशब्देन्दुशेखरः | | ३०३-३६० । |
| | ४०२५३ | छघुशव्देन्दुशेखर टीका | | ६६-७५ । |
| | ४०२५४ | लघुश ब्दरत्नम् | | .११५-११⊏ Ⅰ. |
| | ४०२५५ | मध्यसिद्धान्तकौमुदी | | २-१० । |
| | ४०२५६ | कालापदीपिका | बीरसिंह देवो- पाध्याय गीतम- पण्डित: | २-७, १०-१४, १६-२९, ३१-३४, ३६-४५, ५७-५१, ५३-६३, ६५, ६७-७⊏ । |
| | ४०२५७ | परिभाषेन्दुशेखरटिप्पणी | ٠ | १-११+१, १ - १९ + १, १-२३ + १ ١ [.] |
| | ४०२५८ | लघुश व्दर त्नम्_ | | ४। (गणनया) |
| | ४०२५९ | 34 | हरिदीक्षितः | १-१२ (= १३) [;] , १४-२५ । |
| | ४०२६० | प्राकृतप्रकाशः सवृत्ति हः | वर्रुचिः वृ० का० भामहः | १-३४ । |
| | ४०२६१ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | • | ८। (गणनया) |
| | ४०२६२ | मध्यसिद्धान्तक <u>ौ</u> मुदी | | ३७-५४ । |

| भादार: | पङ्कि- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आयार: | लिपिकाल: | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---------------------------|------------------|------------------|-----------|---------|----------|------------------------|----------------------------------------------------|
| \$0.8×8.≤ | 5 | గ్రం | दे. ना. | का. | | अपू० | तिङन्तप्रकरणस्य । |
| ९·६×५·१ | १० | ३१ | 79 | >> | | पू० | वैदिकप्रकरणस्य । |
| ९·६×४·६ | १० | ૪ર | >9 | " | | अपू० | च्याख्या-्रहोकमयी । |
| ₽.8×\$.8 | १२ | ५२ | 33 | >> | | 11 | कृद्न्तप्रकरणस्य । |
| ९ • ७x५ · १ | ११ | ४० | ;; | >> | | पूर | आदौ टिप्पणद्य, स्वरिहङ्गानुशासन- प्रकरणे । |
| १०•१×३·९ | و | ર⊏ | ,, | 14 | | अपू० | आदितो हलन्तपुँहिङ्गान्ता । |
| ⊏' ७ ×३'२ | १० | ४१ | ,, | " | १८४३ | " | कृदन्तप्रकरणस्य । |
| ९.५×४.६ | ९ | ३३ | ., | " | | 17 | श्रव्ययभ्वादिप्रकरणयोः । |
| ११·१×३•७ | હ | ३४ | " | >> | | " | सुबन्तप्रकरणस्य । |
| १०×४ ° ३ | ९ | ३६ | " | 33 | | ,, | ,, |
| १२·६×४•= | ११ | ५१ | 55 | >> | | ,, | वै०सि०कौ॰टी०टी०।कारकप्रकरणस्य। |
| 5'9x8'4 | ११ | ₹१ | ,, | ,, | | ,, | सुवन्तप्रकरणस्य । |
| ९'¤x४'१ | १० | 88 | ,, | ,, | | ,, | वै॰ सि॰ कौ॰ टी॰ टीका । स्त्रीप्रत्ययप्रकरणस्य । |
| १०•२×४·९ | १० | ३५ | ,, | 11 | | 3 | कारकप्रकरणस्य । |
| १२·१×२·७ | Ę | ६१ | ,, | ,, | | 21 | कातन्त्रसूत्रवृत्तिव्याख्या । |
| | | | | | | | |
| द:६×४:२ | ዓ | २९ | " | ,, ! | | पू० | o |
| \$0.8×8.8 | १० | ३≂ | " | " | | अपू० | वै०सि०कौ०टी०टी०। कारकप्रकरणस्य। |
| 9.0 × 8.4 | १० | ३४ | ,, | 34 | | " | " |
| ५•६×४ · ७ | ११ | २२ | ,, | ,, | | पृष् | वृत्तिः-मनोरमाख्या । |
| ९-४×४·१ | п | २९ | ,,, | >> | | अपू० | आदितः सरूपाणामितिसूत्रं यावत् । |
| \$0.5×8.0 | ዓ | ३४ | 79 | ,, | | 39 | तिङन्तप्रकरणम् । |

| | क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|-----|---------------|--------------------------------|---------------------------|-----------------------------------------------------------|
| | ४०२६३ | मध्यसिद्धान्तकौमुदी | | १-२४। |
| | ४०२६४ | छघु शव्द् रत्नम् | | ४७। (गणनया) |
| | ४०२६५ | छ घुशब्देन्दुशेखरटीका | | ७६-५९, ९१-९६। |
| | ४०२६६ | कारकचकम् | | १-२ । |
| ~ \ | ४०२६७ | महाभाष्यटीका | | ५३। (गणनया) |
| • | ४०२६८ | रूपमालिका | रङ्गदेव: | १- ४ । |
| | ४०२६९ | प्राकृतस ञ्जीवनी | वसन्तराजः | १-७, ११-१४ । |
| | ४०२७० | त्त <u>घुशब्दरत्</u> नम् | | ९-१० १२-१८, २१-२३, २५ । |
| | ४०२७१ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | | ४-५, ६२-१३९ । |
| | ४०२७२ | " | | ४३-६२ । |
| | ४०२७३ | प्रयोगमुखः | धम्मेकीर्तिः | २८-९१ । |
| | १०२७ ४ | वैयाकरणभूपणसा रः | कोण्डभट्टः | ६-४२ । |
| | ४०२७५ | शिशुवोधः | काशीनाथः | १-९ । |
| | ४०२७६ | त्र घुशब्दरत्नम् | | १-१२। |
| | ४०२७७ | प्रौढमनोरमा | | 801 |
| | ४०२७= | लघुशव्द् रत्न म् | | १-५३। |
| | ४०२७९ | वैयाकरणभूपणसा रः | कोण्डभट्टः | १-२५ । |
| | ४०२८० | परिभापेन्दुशेखरः | नागेशः | १-३९ । |
| | ४०२८१ | परिभाषेन्दुशेखरटिप्पणम् | | २।(गणनया) |
| | ४०२८३ | छघुशव्देन्दुशेखरः | | १-३ । |
| | ४०२८ | महाभाष्यम्_ | पतञ्जलिः . | ३-१५ । |
| | ४०२=१ | महाभाष्यं सप्रदीपम् | पतञ्जितः प्र०का० कैयटः | १-१३८,२०७-२८४,१-९२,१-५५,१-९४, ९६-१०३,१०५,१०७-१०८,१-३५। |

| भाकारः | पङ्कि- संख्या | <i>भक्षर-</i> संख्या | लिपिः | आघारः | िलिपिकालः | पूर्णीपूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---------------------------|------------------|--------------------------------|--------|-----------|-----------|------------------------|--------------------------------------------------------------------------------|
| १० . ई×8.८ | ९ | २९ | दे.ना. | काः | | पू० | छद् न्तप्रकरणम् । |
| ९·६×४·३ | ९ | 88 | ,, | " | | अपू० | वै० सि० कौ० टी० टी० । |
| ⊏⁺₹×੪⁺५ | ११ | ३२ | " | " | | ,, | स्त्रीप्रत्ययप्रकरणस्य । |
| १० . ४×४.५ | 5 | 30 | 23 | " | | ,, | |
| १६·६×४ | ९ | २७ | ,, | 39 | | 33 ' | |
| የ• ३ × ૪• १ | ९ | ३७ | ,, | " | | >> | सिद्धान्तकौमुदी सिद्धशव्दानाम्। |
| १०•२×३'¤ | 5 | ४१ | ,, | ,, | | 53 | प्रथमपरिच्छेदस्य । |
| द: ६ x४ : ६ | १० | ঽ৸ | " | 34 | | 33 | वै॰ सि॰ कौ॰ टी॰ टी॰ । |
| ११-६×४.७ | १२ | ३४ | तेलगु | 33 | | ,, | इकोयणचीतिसूत्रात् पूर्वाद्धे यावत् । |
| १०७४४७५ | १२ | ३६ | " | " | | 33 | |
| १०·१×६·३ | १४ | २१ | दे.ना | " >> | | >> | अत्र ६५-७२ तमाङ्काः प्रप्टसङ्ख्यात्वेन शोपाः पत्रसङ्ख्यात्वेन च त्तिखिताः । |
| १२·१×३·६ | ९ | ५३ | ,, | 29 | १८५५ | " | |
| ९ . ७x५ | . ९ | ३१ | " | 19 | | पू० | |
| ११'५×४'१ | ११ | ४९ | " | " | | अपू० | वै० सि० कौ० टी० टी० । |
| ११•¤×४ | ११ | પ ર | 95 - | 73 | | " | " |
| ११•९×४ | १२ | ५० | 23 | 29 | | <i>"</i> . | 39 |
| ११·९×४ | ११ | ५६ | " | ,, | | >> | |
| ११·५×४ | ११ | ४९ | " | 33 | | पू० . | |
| १ ३ •३×४·१ | 5 | ६४ | 23 | 23 | | अपू० | |
| ११.८×८ | ११ | ४१ | ,, | " | | 79 | वै० सि० कौ० टी० टी० । तिङन्त- प्रकरणम् । |
| १०•≈x४.€ | ११ | ५० | ٠, | 29 | | " | अ०१ पा०१ आ०२। |
| \$0. ≃Χጸ.£ | ११ | ४७ | 39 | ** | | " | · |

| क्रम सं ख्या | . प्रन्थनाम | प्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---------------------|-------------------------------------|----------------------------|--------------------------------|
| ४०२८५ | महाभाष्यं सप्रदीपम् | | १-६ । |
| ४०२⊏६ | 33 | पतञ्जलिः प्र० का॰ कैयटः | ३९-७२ । |
| ४०२८७ | महाभाष्यम् | पतञ्जितः | १७-३६, ३६, ३८-६२, ६४। |
| ४०२८८ | . ,, | " | ७१,७३-९६, ९८, ९८-१०२, ११७-१३९। |
| . ४०२⊏९ | परिभाषाविद्यतिव्याख्या | भैरवः(भवदेवा- त्मजः) | १-७४ । |
| ४०२९० | नागेशोक्तिप्रकाशिका | | १-२ । |
| ४०२९१ | लघु <i>राव्द्</i> रलम् | हरिदीचित: | १-२४ । |
| ४०२९२ | समासचकम् | | १-७ । |
| ४०२९३ | धा तुपाठः | | १-१७ । |
| . ४०२९४ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | भट्टोजिदीक्षितः | १-२४, १५, २६-९७ । |
| ४०२९५ | " | >> | १-३९ । |
| ४०२९६ | " | 25 | १-१४२। |
| ४०२९७ | वैयाकरणभूपणसारः | कोण्डभट्टः | १-२२, १-२२, १८-३९, १-१६। |
| ४०२९८ | त्र घुशब्देन्दुशेखरचन्द्रिका | विश्वनाथः | १-१२२, १२२-१४६, १४६। |
| ४०२९९ | महाभाष्यप्रदीपोद्योतः | नागोजीअट्टः | २७३-४⊏६ । |
| ४०३०० | प्रौढमनोरमा | भट्टोजिदीक्षितः | १-७ |
| ४०३०१ | " | | ११-४६ । |
| ४०३०२ | " | भट्टोजिदीक्षितः | १-२५ । |
| ४०३०३ | शौढमनोरमा सटीका | टी० का० हरिदीक्षितः | १-३७ । |
| ४०३०४ | त्तघुशब्देन्दुशेखरः | भट्टोजिदीक्षितः | ११८-१४३। |
| ४०३०५ | परिभापेन्दुशेखरचन्द्रिका | विश्वनाथः | १-६,९-९८, १००-१८५। |

| आ कार । | पङ्कि- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपि। | भाषारः | लिपिकालः | पूर्णीपूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|--------------------------------|------------------|------------------|----------|--------|---------------------------------|------------------------|-------------------------------------------------------------------------|
| १०•≍×४ [.] ६ | १३ | 80. | दे.ना. | का. | | अपू० | |
| ११×४'७ | १२ | હધ | ,, | " | | " | |
| १०•९×४·६ | १५ | ५६ | ,, | " | | 72 | |
| ९:५×४:२ | ११ | ३९ | 33 | >> | | "; | |
| १३·४×५ | १० | ४९ | 7, | " | १८५७ | पू० | |
| १०×8 ° ⊏ | ९ | २८ | ,, | ,, | | अपू० | त्तघुशव्देन्दुशेखरव्याख्या। |
| 9.9x8.4 | ११ | ४३ | " | ,, | | ,, | बै०सि॰कौ॰टी॰टी॰ । |
| &x&. | 3 | २७ | ,, | ,, | १९१ ८ श. १৬ ८३ | पू० | |
| ९•२×४ | ११ | ३६ | ,, | " | | अपू० | |
| १०• ≍ ×४ [,] ६ | v | ३१ | " | " | | ,, | |
| १०×४'५ | १० | ३९ | 33 | " | | पू० | स्वरवैदिकीमात्रा । |
| १२×९ | १० | ३९ | ,, | ,, | १८८२ श. १७४७ | ,, | पूर्वार्द्धम । |
| १०'१×४'९ . | १० | २६ | " | " | | अपू० | |
| 43.8×8.4 | ષ | ३९ | " | ,, | | " | |
| १०•३×४७७ | ११ | રે⊏ | ,, | ,, | | ,,, | महाभाष्यटीका । |
| १०:७४४:७ | १५ | . ે ૪≂ | " | ,, | | ,, | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदीन्याख्या । |
| ११•९×४ | १० | 8ર | ,,, | " | | " | 25 |
| ११•४×४ | ११ | १ । | " | " | | " | 13 |
| ११.८×8 | १ंव | १ ५७ | , , , ,, | " | | 33 | टीका-शब्दरत्नाख्या । अजन्तस्त्री- लिङ्गतोऽन्ययप्रकरणं यावत् पूर्णा । |
| 8.5 × 8.8 | १ः | ः हिंध | , ,, | ,, | | ** | वै० सि० कौ० टी० टी०। |
| १३. २ × ४. ४ | १ | १ ५= | ; , ,, | ,, | | ,, | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रम्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-----------------------------------|--------------------------|-------------------------------------------------------------------|
| ४०३०६ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | भट्टोजिदीक्षितः | २४८ । (गणनया) |
| ४०३०७ | ,, | ,, | १-१००, १००-१२४, १२४-१३९+१। |
| ४०३०८ | 39 | ,, | १-दद । |
| १०३०९ | ष्ट्र ाध्यायी | | १-३, ३-४५, (= ४६-४७) ४=-५२। |
| ४०३१० | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | | १२-३५ । |
| ४०३११ | शब्दरूपावली | | ७-२४ । |
| ४०३१२ | धातुरूपाव ली | | १-८। |
| ४०३१३ | परिभापामणिमाला | | १-२१। |
| ४०३१४ | महाभाष्यसिद्धान्त- रत्नप्रकाशः | शिवरामेन्द्र- सरस्वती | ९४। (गणनया) |
| ४०३१५ | ,, | " | ६-११६ । |
| ४०३१६ | लघुराव्देन्दुरोखरटीका | | ५३ । (गणनया) |
| ४०३१७ | महाभाष्यसिद्धान्त- रत्नप्रकाशः | | १-७४, ७६-४२८, ४२८-४७३ । |
| ४०३१८ | चैयाकरणसिद्धान्तक <u>ौ</u> मुदी | • | १-49+१1 |
| ४०३१९ | महाभाष्यसिद्धान्त- रत्नप्रकाशः | शिवरामेन्द्र- सरस्वती | ६-३८,३८-३९,५०-६८,७९-१०९,१११-१३९, १३९,१३९-१४१=(१४२)१४३-१६९,७५ । |
| ४०३२० | वैयाक रणसिद्धान्तकौ मुदी | | १-३७। |
| ४०३२१ | " | | १-२२ । |
| ४०३२२ | महाभाष्यप्रदीपोद्योतः | नागेशः | १-७७ |
| ४०३२३ | श्रौ ढमनोरमा | | १-२७ । |
| ४०३२४ | शब्दकौस्तुभः | भट्टोजिदीक्षितः | १-६९, १-२३, ७-२६, २६-२९, ५६-६१ । |
| ४०३२५ | प्राकृतप्रकाशः सवृत्तिकः | वररुचिः वृ०का०–भामहः | १-२३ । |
| ४०३२६ | पारसीकप्रकाशः | विहारिकृष्णदासः | १-९६ । |

| आकारः | पङ्कि- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | मायार ः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशे ष विंवरणम् |
|------------------------------------|------------------|------------------|-------|----------------|----------|------------------------|------------------------|
| ₹ 6 . ¤×β.¤ | v | २७ | दे.ना | का. | | अपू० | |
| १० [.] ६×४ [.] ६ | १० | २९ | " | 3, | | 73 | तिङन्तभागः। १ |
| १० : ९x४ : ६ | 3 | ३५ | ,, | ,, | | पू० | छदन्तभागः। |
| १०°१×३°९ | ९ | १५ | ,, | ,, | १८७२ | ,,* | |
| १०'४x४' ८ | १२ | 88 | ,, | " | | अपू० | |
| १ ०' 8x8'७ | १० | २९ | 73 | ,, | | ,, | |
| १० ⁻ १×४ [.] ६ | ९ | ३४ | ,, | 7) | | 99 | |
| ९·९xद·६ | १२ | १६ | " | ,, | • | पू० | • |
| १० · ९x४·६ | १२ | ५० | 73 | ,, | | अपू० | |
| १० '¤x8'७ | ११ | ۰ کرد ۱ | ,, | 3) | | 23 | |
| ११•२×४ | '. ৎ | ६२ | ,, | ,, | | 23 | |
| १०'द×४'६ | ξ ο | 80 | ,, | ,, | | 73 | |
| 1- m//0 1 | , - | | | | | | |
| १०'७x४'६ | ُو | ३६ | ,, | " | | 3: 3 | |
| १० [.] ९×४'७ | १२ | ૪હ | " | " | | 59 | |
| १०'४४४ | १० | ३९ | ,, | 33 | |) ; | |
| १०•७×३·९ | ц | ३२ | ,, | ,, | | पू० | , |
| १३•४×५ | १३ | 49 | ,, | ,, | | ,, | अ०३, पा० ४, आ० १। |
| ९·५x३·७ | ११ | 88 | 20 | ,, | | अपू० | वै० सि० कौ० टीका । |
| १०·९×४·१ | १० | 80 | " | ,, | | ,, | अप्टाध्यायी टी० । |
| १२'¤×६'४ | १२ | 88 | 30 | " | | पू० | |
| ९• ⊏ ×३•४ | ٤ | २७ | 23 | " | १६६५ | 30 | |

| | क्र मसं ख्या | ं प्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---------------------|--------------------------------------|--------------------|-------------------------------------------------------------------|
| | | सारस्वतम् | | १-११, १७-१६४। |
| | ४०३२८ | प्रौढमनोरमा | | १-५५+१ । |
| | ४०३२९ | लघुशव्देन्दुशेखरः | नागेशः | १-१२, १४-१६६ । |
| | ४०३३० | " | " | १-५१ = ५२,५३-७३,७३,७३-१००, १०२ १४२, १-२८, २८-८०, १-१६३, १-१०१। |
| | ४०३३१ | मध्यसिद्धान्तकौमुदी सटिप्पणा | वरदराजः | १-३२, १-१७५। |
| | ४०३३२ | प्राकृतप्रकाशः . | वररुचिः | १-१९ । |
| | ४०३३३ | 23 | " | १२। (गणनया) |
| | ४०३३४ | मुग्धबोधः | | १, १-१४। |
| | ४०३३५ | पारसीकप्रकाशः | विहारिक्षण्णदासः | १-२= । |
| | ४०३३६ | धातुपाठः | | द्ध, ११-१३ । ° |
| | ४०३३७ | कोडपत्रम् | l l | १-६ । |
| | ४०३३८ | त्र घुसिद्धान्तकौ मुदी | | १। |
| | ४०३३९ | तत्त्ववोधिनी | ज्ञानेन्द्रभिक्षुः | 8-6+81 |
| | ४०३४० | मध्यसिद्धान्तकौमुदी | | १। |
| | ४०३४१ | वैयाकरणसिद्धान्तपरम- त्तघुमञ्जूषा | नागेशः | १-४३ । |
| | ४०३४२ | मनोरमाखण्डनम <u>्</u> | चक्रपाणिः | १-१६७। |
| ļ | ४०३४३ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | भट्टोजिदीक्षितः | २०७। (गणनया) |
| | ४०३४४ | काशिकासारवृत्तिः | वासुदेवः | १-४६ । |
| | ४०३४५ | अष्टाध्यायी | | १-१४ । |
| | ४०३४६ | शब्दकौस्तुभप्रभा | | २-२२ । |
| į | ४०३४७ | कविकल्पद्रुमः सटीकः | वोपदेवः | ५-३६ । |
| | | | | |

| भाकार! | पङ्कि- संख्या | अक्षर- संख्या | 1 16514 | भायारः | लिपिकाल: | पूर्णीपूर्ण- विवेक: | विशेषविवरणम् |
|----------------------|------------------|------------------|---------|------------|----------|------------------------|-----------------------------------------------------|
| 8×8.8 | v | ३० | दे.ना. | का. | | अपू० | |
| १३:⊏×५•५ | १२ | ३४ | " | 23 | | " | वै०सि०कौ०टीका। |
| १३.⊏×३.५ | ९ | 88 | >) | 33 | | ,, | 54 |
| १३•¤×३•५ | १० | ४५ | " | " | १९२४ | ,, | 39 |
| १२·५x४'२ | v | ૪ર | ,, | " | | 55 | |
| १२•५५४४•१ | v | ४९ | 3) | " | | a a | |
| १०:३×३•४ | १४ | ६५ | 3.9 | >> | | पू०* | |
| १५x३·४ | ફ | ४६ | वङ्ग. | *> | | अपू० | कारकपादः । |
| ९·९x ः३ | ११ | ३१ | दे.ना. | " | | ,, | अत्र पूर्व कोशप्रकरणं तच्च पूर्णम्। |
| १ ० .८×८.७ | १० | 88 | 1, | 33 | | ,, | |
| १३•८×५-५ | 9 | ४३ | " | >> | | पू० | |
| ९• ७ ×३·२ | २६ | १४ | " | 33 | | अपू० | |
| ११×४*• | 9 | ३८ | 13 | ** | | 33 | वै०सिद्धान्तकौमुदीटीका । अत्राव्ययः प्रकरणांशः । |
| १२·२×४·३ | ۳. | ३४ | " | " | | " | |
| १२'४×४ ' ६ | 2 | ५१ | ,, | " | | पृ० | |
| १ -° ७x४ | 9 | ४७ | ** | , , | १⊏५९ | 77 | |
| ९.५×३·६ | 5 | ३३ | ,, | " | १७२० | अपृ० | |
| १० ∙ ३x४.उ | १२ | ४३ | ۰, | >> | | 33 | अष्टाध्यायीसूत्रवृत्तिर्वा । |
| द्र.ल×ई.८ | 9 | ३१ | " | " | | ,, | |
| ς. ₀ χ8.≃ | १२ | ३३ | 1, | " | • | ,, | अष्टाध्यायी टी॰ टी॰ । |
| १०:३×५ | १७ | ૪૦ | ,, | ,, | १९१९ | 93 | धातुपाठः मु ग्धबोधानुसारी । |
| | | | | | | , | |

| क्रमसंख्य | ग्रन्थनाम | अन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|-----------|------------------------------------------|-----------------|----------------------------------|
| ४०३४ | सिद्धान्तचन्द्रिका | | १-६, ३७-६४। |
| ४०३४ | अनिट्कारिका सटीका | | १-६ । |
| ४०३५ | परिभापासङ्ग्रहः | • | १, ३-५ । |
| ४०३५ | सहाभाष्यप्रदीपोद्योतः | नागे शः | ४-८७ । |
| ४०३५ | र अष्टाध्यायी | | ६३-७३ । |
| ४०३५ | ,, | पाणिनिः | १-२०, १८-४७ । |
| ४०३५ | 3 ··· | 13 | १-४७ । |
| ४०३५ | < आख्यातचन्द्रिका | | २-२५ । |
| ४०३५ | धातुसङ्गहः | | १-१४ । |
| ४०३५। | ्रधातुचन्द्रिका | ठाकुरदासः | 8-88 1 |
| ४०३५ः | वै थाकरणसिद्धान्तमञ्जूपाकला | | १-५३ । |
| ४०३५९ | 3 | वैद्यनाथभट्टः | १-३६ । |
| ४०३६ः | वैयाकरणसिद्धान्तमञ्जूषा- टिप्पणम् | | १-४। |
| ४०३६ | धातुपाठः | • | 8-881 |
| ४०३६ः | अष्टांभ्यायीच्याख्या | | १-३ । |
| ४०३६ | वार्त्तिकसङ्ग्रहः | रुद्रधरः | १-५६, ६०-६४, ६७-९७, ९९-१०१। |
| ४०३६१ | धातोस्तन्निमित्तस्यैवेति- सूत्रविचारः | | १। |
| ४०३६५ | परिभापेन्दुशेखरटीका | | ३०-३३, ३३-३४, ३६, ३⊏-६६, ६६-६७ । |
| ४०३६१ | प्रौढमनोरमा | भट्टोजिदीचितः | १-७१, ७३-७६, ७६-८१ । |
| ४०३६८ | प्रबोधचन्द्रिका | वैजलभूपालः | 8-88+8 1 |
| ४०३६ः | प्रौडमनोरमा | भट्टोजिदीक्षितः | १-२०, २९-५५, ९१ । |
| . ४०३६ | र महासाष्यम् | | ३५। (गणनया) |
| | | | |

| | आकार: | पङ्कि- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपि: | आधार: | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवर्णम् |
|---|------------------------------------|------------------|------------------|-------|--------|----------|------------------------|----------------------------------|
| • | ११•६×६·७. | 9 | ३१ | देःना | . का. | | अपृ० | आख्यातप्रक्रियामात्रम् । |
| | ११•७×६•५ | v | ३१ | " | " | | पू० | |
| | ९·५×४·३ | 5 | ३० | " | " | १दं६३ | अपू० | |
| | १०'२×४'७ | १२ | ३९ | 53 | 73 | | ** | |
| | હ.≃× ક ,ક | ९ | ঽ⊏ | 79 | 3.9 | | 11 | |
| | ড•९x३•५ | ९ | ર્ફ | " | 29 | १=२९ | " | |
| | ९•२×४•३ | ९ | 80 | 22 | 59 | | पू० | |
| | १०'५x४'६ | ९ | ३९ | " | 59 | | अपू० | कारिकामयी । |
| | ९ [.] ५×४ [.] २ | 5 | ३१ | 59 | " | | "、 | कारिकारूपः । |
| | १७ [,] ३×३ [,] ५ | ११ | ६२ | वङ्गः | ता. प. | | पू० | |
| | १० . ८×८ . ६ | १२ | ४७ | ₹.ना. | का. | | अपू० | |
| | १०°४x४'५ | १२ | ४६ | ** | >> | | 54 | |
| - | १०'७x४७'७ | 5 | ३९ | ,, | " | | × | |
| | १०.४४४५ | १० | ३६ | ,, | " | | Ų,o | |
| | 9x8.5 | vo | ३४ | ,, | >> | | अपू> | कारिकारूपा । |
| | १४.8×०.६ | 4 | 50 E | बङ्ग | " | | ,, | |
| | १०.७४৪.० | 8 | ४७ दे | .ना | " | | 24 | |
| | ९. _ई ×८. _र | १६ | ५२ | ,, | ,, | | 50 | |
| | 8.5×8 | १५ | ३९ ः | ,, | ,, | | पू० | वै०सि०कौ०टीका।तिङन्तप्रकरणम्। |
| | 9°2×8'? | 9 | ३५ | ,, | " | 1 | अपृ० | |
| - | \$0.≅X8.8 | १० | ૪૨ 🏻 | ,, | ,, | | ,, | वै० सि० कौ० टीका कृत् प्रकरणम् |
| | ११ [.] 8×8 [.] 2 | १३ | ३२ | ,, | 90 | - | >> | |
| _ | | | | | | | | |
| | ३० | | ٠ | _ | | | | , |

| | | ····· | | |
|-------------|------------|------------------------------------|---------------------|---------------------|
| • | क्रमसंख्या | प्र न्थना म | श्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
| | ४०३८० | प्रौढमनोरमा | भट्टोजिदीक्षितः | १-१७,१७-२१४, १-१९३। |
| | ४०३७१ | प्रयोगमुख्यसारः | | २-५ । |
| | ४०३७२ | महाभाष्यं सप्रदीपम् | पतञ्जलिः | १११३। (गणनया) |
| | ४०३७३ | लघुशब्देन्दुशेखरः | | १०५-१३० । |
| | ४०३७४ | शव्दरूपाविलः | | १-७1 |
| | ४०३७५ | वैयाकरणभूषणसारटीका | | २-२० । |
| | ४०३७६ | लघुश च्देन्दुशे खरः | | १-९, ११, ११-१५। |
| | ४०३७७ | 29 | | 8-88 1 |
| | ४०३७८ | फिट्सूत्राणि | शान्तनवाचार्यः | १-२। |
| | ४०३७९ | वैयाकरणसिद्धान्तकौ मुदी | | 8-01 |
| | ४०३८० | क्रोडपत्रम् | | १-१३ । |
| | ४०३८१ | प्रौढमनोरमा | | १-५। |
| | | | | |
| | ४०३८२ | महाभाष्यव्याख्या | | १-१८ । |
| | ४०३८३ | परिभाषेन्दुशेखरटीका | | २-१३। |
| | ४०३८४ | वैयाकरणसिद्धान्तकौ मुदी | | १-१५९ । |
| | ४०३८५ | लघुशब् देन् दुशेखरः | नागेशः | १-२६, ४१, ४५-६३ । |
| | ४०३८६ |) शब्दरूपावलिः | | १-२७। |
| | ४०३८७ | पूर्वेपक्षाविः | | १-१० । |
| | ४०३दद | वैयाकरणसिद्धान्त- परमलघुमञ्जूषा | नागेशः | ४६-७४। |
| | ४०३८९ | अष्टाध्यायी . | पाणिनिः | १-११ । |
| | ४०३९० | शौढमनोरमा | | 8-8€1 |
| | ४०३९१ | <u>शौढमनोरमाटीका</u> | | १-२। |

| भाकारः | पङ्कि- संख्या | अक्षर- सँख्या | लिपिः | भाषारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---------------------------|------------------|------------------|--------|--------|----------------------|------------------------|--------------------------------------------------------------------------------------|
| \$¢.\$×8.8 | 9 | ३५ | दे-ना | का. | १८५८ १ ८५९ | पू० | वै० सि० कौ० टीका । |
| ۲:4 × ۶ | १५ | ४९ | ,, | 22 | १७=४ | अपू० | |
| १३°८×५'४ | 5 | ५५ |) ; | " | १८५० | 22 | |
| १०'¤x४'५ | ς | ४६ | 99 | " | | 7> | वै० सि० कौ० टी०। |
| ९'¤x४'२ | 3 | ३४ | " | " | | 71 | |
| ११•६×४ | 83 | ५६ | >> | 23 | | " | |
| १०x४'र | १० | ४६ | " | ,, | | 21 | वै० सि० कौ० टी०। |
| १०·१×४ · ३ | ९ | ३९ | 99 | 53 | | 25 | " |
| १०x४'४ | ११ | ३५ | " | " | | पू० | |
| ९'५x४'१ | १० | ३६ | ,, | ,, | | 77 | तिङ्गानुशासनमात्रम् । |
| ९ ॱ ३x४'५ | 88 | ३६ | 27 | " | | 37 | अर्थविद्रयादिसुत्राणाम् । |
| १०•२ × ४ [.] ५ | 5 | ३⊏ | ,, | " | | अपृ् | वै॰ सि॰ कौ॰ टीका । णेरणी यत्कर्म णी चेरस कर्ताऽनाध्याने, इतिसूत्र- माश्रित्य । |
| १० . ⊏x8. <i>७</i> | १२ | ४३ | 11 | 29 | | ,, | |
| १०x२'५ | ११ | ५० | ,, | >> | | 33 | |
| १० ' ४ २ ३ क | १० | ૪ર | " | ,, | | 22 | डत्तरार् <u>डम्</u> । |
| १०'२×४'२ | १० | ५२ | " | 99 | | 23 | वै० सि॰ कौ०,टी० । |
| ९.4x8.3 | v | ३० | " | ,, | | पू०4 | |
| ९.४×८.६ | ११ | ३९ | " | n | | >; | |
| ८.त्रप्रह.ड | १० | ४६ | 77 | ,, | १८५५ | अपू• | |
| १३ × ४ [,] २ | ९ | ४६ | 22 | " | | >> | • |
| १०.६×८.४ | v | ३३ | " | " | | >> | ुनै० सि० कौ० ही० । |
| १• ६ ×३•⊏ | १५ | ४९ | " | 9.5 | <u> </u> | 11 | |

| | क्रमसंख्या | ं ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसङ्स्याविवरणम् |
|---|---------------|---------------------------------------------|-----------------|----------------------|
| | ४०३९२ | अर्थवस्यूत्रविचारः | | १-४ + १ । |
| l | ४०३ ९३ | वैयाकरणभूपणसारः | | 441 |
| | ४०३९४ | ,, | | १। |
| | ४०३९५ | धातुवृत्तिः | | १७-२१, २७-३०। |
| | ४०३९६ | हलन्त्यमिति सू त्रार्थविचा रः | | १ 1 · |
| | ४०३९५ | यमविचारः | | १-२ । |
| | ४०३९⊏ | कातन्त्रवृत्तिः | दुर्गसिंह: | १-१५ + १, १६-४४ । |
| | ४०३९९ | परिभाषेन्दुशेखरः | | ३-१२ । |
| į | 8080c | वै॰ सि॰ कौमुदीविलासः | भास्करः | १-४५ । |
| i | ४०४०१ | वैयाकरणसिद्धान्तक <u>ौ</u> मुदी | | १-२१। |
| | ४०४०२ | पारसीप्रकाशः | विहारिकृष्णदासः | २०। (गणनया) |
| | Ua Va R | वैयाकरणसिद्धान्तमाला | | ४०। " |
| | 7 | वाक्यपदीयं सटीकम् | | २-१५, २७-५० । |
| | | | | 8-80 1 |
| | 1 | पट्कारकप्रक्रिया | | |
| İ | | वैयाकरणभूषणसारः | | 8-80 1 |
| | 1 | लघुश ब्देन्दुशेखर टीका | | ५। (गणनया) |
| | | कोडपत्रम् | _ | १-३। |
| | ४०४०९ | परिभाषेन्दुशेखरदोषोद्धारः | मन्नुदेवः | 81 |
| | ४०४१० | सारस्वतभाष्यम <u>्</u> | | २। |
| | ४०४११ | वैयाकरणसिद्धान्तमञ्जूषा | | १५ । |
| | ४०४१२ | सिद्धान्तचन्द्रिका | | १। . |
| | ४०४१३ | दशलकारकारिका | | 41 |
| | ४०४१४ | सारस्वतम् | | २०। |

| धाकारः | पङ्कि- संस्था | सस्र- संख्या | स्थिप | वाचारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णं- विवेकः | विशेषविबरणम् |
|----------------------------|------------------|-----------------|-----------|--------|----------|-------------------------|----------------------------------|
| \$0.≅x8.\$ | ९ | ३६ | दे. ना. | का | | अपू० | अन्तिमपत्रं ग्रन्थान्तरस्य । |
| ९ . ०×८.५ | ९ | 80 | ,, | ,, | 8≈88 | ,, | |
| ९×३·९ | ११ | ४६ | " | 59 | | × | |
| १०'६×२'९ | ९ | ५७ | ,,, | 73 | | ** | |
| ९-९ × ३-१ | ११ | ६६ | ,, | " | | ** | |
| १०'७x४'६ | १७ | 48 | " | 79 | | 23 | |
| १५·४×३·५ | 8 | 88 | वङ्गः | ,, | | ,, | आख्यातप्रकरणस्य । |
| ९•७x३•९ | १२ | ধ্ত | दे ना | " | | " | |
| १२:¤x३•२ | 5 | ધરૂ | 30 | ,, | | " | |
| ११•७×३•७ | બ | ३६ | " | 73 | | 72 | वैदिकप्रकरणम् । |
| १० * १×४ <i>.</i> ० | ९ | ২৩ | 29 | 73 | | " | |
| ११·१×३·९ | S | ४९ | " | >) | | *** | |
| १० ७x३ , ७ | 6 | ४१ ४१ | ,, | ,, | | 33 | वाक्यका॰डम् । |
| १३ -६×४'४ | १० | ષ્ઠફ | 75 | ,, | | पू० | |
| १ ০ '৬x৪'৬ | Ę | - 33 | ,, | ,, | | अपू० | |
| १२×५ | १६ | ६६ | ,, | ,, | | 13 | कारकप्रकरणस्य |
| १३×५•२ | ११ | ४५ | " | >> | | " | प्रकृतिप्रत्यययोर्थवोधकताविषये । |
| १०x४'६ | 3 | ३७ | " | ,, | | 24 | • |
| द'६×४'९ | १९ | ४= | 73 | ,, | | " | • |
| ९ : ४४४:३ | १० | ४१ | ,, | ,, | | 33 - | |
| ९•२×४·१ | 9 | ३१ | ,, | " | | " | अनिट्कारिकामात्रम् । |
| ६·९×२·७ | ų | ३४ | ,, | ,, | | " | |
| ¤'६x४'२ | 5 | २५ | ,, | 79 | | ,, | |
| <u> </u> | | | | | | | |

| क्रमसंख्यां | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | - पन्नसंख्याविवरणम् |
|-------------|------------------------------|--------------|---------------------|
| ४०४१५ | अप्टाध्यायी | | 401 |
| ४०४१६ | लघुशब्दरत्नम् | : | १६-४४, ४६-११४। |
| ४०४१७ | पाणिनिसूत्रं सटीकम् | | ३९-१२९, १३१, १३९ । |
| ४०४१८ | व्याकरणय्रन्थविशेप: | | ६। |
| ४०४१९ | प्रकीर्णपत्राणि | | २६। (गणनया) |
| ४०४२० | परिभाषेन्दुशेखरटीका | | ६-७ + १ । |
| ४०४२१ | व्याकरणग्रन्थविशेपः | | २ । (गणनया) |
| ४०४२२ | 59 | | ७२-७८, ८१-८९+७ । |
| ४०४२३ | 33 | | ६। (गणनया) |
| ४०४२४ | लघुशब्द्रत्तटीका | | १-२३, २५-२६+१। |
| ४०४२५ | च्याकरणटीकाम्रन्थ ः | | २। (गणनया) |
| ४०४२६ | व्याकरणय्रन्थविशेप: | | २३-२५, ५२-५३। |
| ४०४२७ | परिभापेन्दुशेखरटीका | | २१-२२ । |
| ४०४२⊏ | च्याकरणम्रन्थविद्योपः | | २४-५२ । - |
| ४०४२९ | " | | १-२३ । |
| ४०४३० | प्रकीर्णेपत्राणि | | ८६। (गणनया) |
| ४०४३१ | लघुराच्देन्दुशेखरटीका | | १-२। |
| ४०४३२ | " | | २। (गणनया) |
| ४०४३३ | " | | १-२। |
| ४०४३४ | " | | १। |
| ४०४३५ | 79 | • | ३ । (गणनया) |
| ४०४३६ | 7) | , | १-२ । |

| आकार: | पङ्कि- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | बाधार: | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|--------------------------------|------------------|------------------|--------|-----------|----------|------------------------|----------------------------------------------------|
| द'१×३'५ | १० | રૂપ | दे.ना. | का. | | अपू॰ | |
| १०·५×३·९ | 5 | ५२ | ,, | ,, | | " | वै॰ सि॰ कौ॰ टी॰ टी॰ । |
| ⊏' ९×8'९ | 9 | ३९ | ,, | 29 | |); | स्वरप्रकरणम् । |
| ⊏.⊄x8.5 | १४ | ४५ | ,, | 25 | | " | |
| विविध: | × | × | वङ्ग | >3 | | ,, | |
| ९.6×\$.6 | 5 | ३८ | देःनाः | 24 | | 39 | एकम् पत्रम् परिभापेन्दुशेखर- मृत्रस्याप्यस्ति । |
| ९.⊏×८.ई | १२ | ३≂ | ,, | ,, | | >9 | उर्वेरितपत्राणि । |
| בישאציב | १२ | ३७ | ,, | ,, | | 73 | |
| १० ' १×३'⊏ | १५ | ६९ | ,, | ,, | | ,, | उर्वेरितपत्राणि । |
| १४×५ [.] ४ | १० | ४७ | 75 | ,, | | ,, | चै॰ सि॰ कौ॰ टी॰ टी॰ टी॰, कारकप्रकरणस्य । |
| १२ : ¤x४:¤ ९:७ x ४:३ | 8 | ५७ | ,, | ,, | | 29 | |
| १०•६×३•६ | 5 | २५ | ,, | ,, | | >> | |
| 9.8×8.5 | १७ | ६१ | ,, | " | | " | |
| ς.á×8. á | ११ | ४६ | ,, | ,, | | ,, | |
| 6.4×8.5 | 80 | ३७ | " | ,, | | >3 | |
| विभिन्नः | × | × | ,, | 23 | | ,, | |
| \$0.4×8.8 | १५ | ४५ | 23 | 23 | | 33 | |
| ९.८×८.३ | 9 | ३३ | ,, | >> | | ,, | |
| १०x४°५ | 9 | ४३ | >> | ,, | | ,, | |
| ११.3×3.0 | १० | ६० | 29 | " | | " | , |
| १२·६×३·५ | १० | ७४ | ,, | 73 | | " | |
| 86.8× ≨ | १३ | ৩१ | 29 | ,, | | ,, | |

| कमसंख्या | प्रन्थनाम | प्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|----------|---------------------------------|--------------|-------------------|
| ४०४३७ | त्तघुश ब्देन्दु शेखरटीका | | १,३। |
| ४०४३८ | " | | २ (गणनया)। |
| ४०४३९ | क्रोडपत्रम् | | १। |
| 80880 | " | | १। |
| ४०४४१ | " | | १-३। |
| ४०४४२ | लघुशब्देन्दुशेखरटीका | | १-४। |
| ४०४४३ | लघुरा ट्द रंत्नटीका | | १-२ । |
| 85888 | वैयाकरणभूषणसारटीका | | १। |
| ४०४४५ | परिभापेन्दुशेखरटीका | | १४। (गणनया) |

| भाकारः | पङ्कि- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधार: | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेक: | विशेषविवरणम् |
|---------------------|------------------|------------------|--------|-------|----------|------------------------|------------------------------|
| १२·९×३·६ | १० | ६६ | दे.ना. | का. | | अपू० | |
| १२'¤×४'६ | ९ | ५० | " | ,, | | - >> | |
| १२.0×8.0 | १५ | હ્ય | 24 | " | | ,, | अन्तादिवच्चेति स्त्रस्य । |
| ११.१×8.0 | ξ | ५३ | ,, | " | | ** | मलाञ्जशोऽन्ते इति सूत्रस्य । |
| १०·६×४·२ | १० | ३५ | " | " | | ,, | "णेरणौ" इत्यादिसूत्रस्य । |
| १०:९×४:५ | १३ | ५६ | 5.7 | " | • | ,, | हैहेप्रयोगे इतिसूत्रादारभ्य। |
| \$\$.\$ x 8 | १५ | ५७ | ,, | " | | " | श्रौडमनोरमाटीकाटीका । |
| १२•=x४•७ | १२ | 48 | ,, | " | ! } | " | |
| ११ [.] १×५ | १५ | ६२ | " | >4 | | ,, | |

द्वाद्शभागोहिखितव्याकरणव्रन्थानामच्तरानुक्रमणिका

अधीगर्थद्येषां कर्मणीति सुत्रार्थविचारः ३८८१७। अनिट्कारिका ३८८९०, ३९२२०, ३९३७१। अनिट्कारिका (सटिप्पणा) ३८४६१। अनिद्वारिका (सटीका) ३८३३८, ३८८१०. ३९४२०, ४०३४९ । अनिट्कारिकाटीका ३९७२१। अनेकमन्यपदार्थेसृत्रार्थविचारः ३८४६२ । अन्वयोपक्रमोपायफलानि ३९६६७। अपरिमाणेत्यादिसूत्रच्याख्या ३९७१५। अभिनवार्थतरङ्गिणी ३८४२७। अर्थवत्त्वपरिष्कारः ३८४५१। अर्थवत्त्वविचारः ३८८५४। अर्थवत्स्त्रक्रोडपन्नम् ३८७०१, ३९८९६ । अर्धवत्स्त्रविचारः ३८५९८, ३९८६३, ४०३९२। अर्थवदितिसुत्रार्थनिर्णयः ३८८६०। अन्ययपाठः ३९४१०। अन्ययार्थः ३८४४८, ३८७४८, ३९४५६ । अन्ययार्थकारिका ३९४६२। अन्ययार्थनिरूपणम् ३९३०६। अष्टाध्यायी ३८००५, ३८००९, ३८०४५, ३८१३२, ३८१४१, ३८१४३, ३८२४१, ३८२७४. ३८३६४, ३८४४७, ३८४५२, ३८५८०, ३८६७९, ३८६८०, ३८७४५, ३८८५९,

३८८८६, ३८८८७, ३८८९१-३८८९४,

३८९२४, ३८९२५, ३९१२९, ३९१४१,

३९४४४, ३९४७३, ३९४८५, ३९५३९, ३९५४०, ३९५६७, ३९६२७, ३९७१३, ३९७१८, ३९७७५, ३९७८२, ३९७९९, ३९८७२, ३९८७३, ३९९१८--३९६२२, ३९९२६, ३९९२७, ३९९४४, ३९९६२, ३९९७३, ४००११, ४००१७, ४००५४, ४००७३, ४०१०३, ४०१२४, ४०१७४, ४०१९०, ४०२०२, ४०३०९, ४०३४५, ४०३ ५२--४०३ ५४, ४०३८९, ४०४१५ । अप्राध्यायीटीका ३८२४५, ३८२४७, ३८२४४. ३८२५५, ३८२८६. ३८२५०. ३८३१२. ३८३१७. ३८३०४. ३८३३१, ३८३४४, ३८३४८. ३८४८९, ३८७०२. ३८७०९, ३८८१३, ६८८६४, ३८८६५, ३८९८५, ३८९९१, ३९१६१, ३९२५० --- ३९२५७. ३९३६४. ३९४३९, ३९३६५, ३९५२३. ३९७२८. ३९६४४, ३९६*६७*, ३९७३१ ३६९३४, ३९९८८, ३९९९३, ४०००३, 80008, ४००३५, ४००५९, ४००६३, 80000 80080, ४०११०, ४०१९८, ४०३२४।

अष्टाध्यायीटी व्हीका ३८२४६, ३८२४८, ३८२५**१-**३८३६४, ३८३२९, ३८४८७-३८४६०, ३८९०३, ३८९७८, ३८९८२, ३८९८३, ३९२४६, ३९२८२, ३९२८३, ३९२४४, ३९८९, ३९२८८—३९९९२, ३९७८, ३९७८८, ४००२८,

अप्टाध्यायीटी०टी०टीका ३८१७० ।

१९३६२, ३९३९२, ३९४०३, ३९४२३, अष्टाध्यायीपाठ: ३८०४४।

आख्यातविवृतिः ३८२७६। आख्यातविवेकः ३८३७०, ३९९६६। आख्यातवृत्तिटिप्पणी ३८००८।

इकोगुणवृद्धीतिवादार्थः ३८८५८। उणादिपाठः ३९३१२।

डणादिवृत्तिः ३८३७१, ३८५८२, ३८८८९, ३९४६४। उणादिसूत्रम् ३८०७१, ३८३३६। **उणादिसूत्रं** (सवृत्तिकम्) ३८४६३, ३९३८०,

३९४१२, 368081 **उ**णादिसूत्रटीका ३९४७२ ।

उणादिसूत्रपाठः ३९३८२,३९४१४,३९५५१,४००९२। उणादिसूत्रमाला ३८१६८। उणादिसूत्रवृत्तिः ३९८१०।

उणादिसुत्रसङ्ग्रहः ३८५८१ । उत्तरपद्त्वे चैतिवार्तिकक्रोडपत्रम् ३८८५७।

उत्तरपक्षावली ३९५४२। 'उपपदमतिङ्' इति सूत्रवादः ३९७९०।

उपपद्मतिङ्सुन्नव्याख्या ३९६५०।

उपसर्गबोधकत्वखण्डनम् ३८५८३। **उपसर्गेवृत्तिः ३८७**९३, ३९४६९, ३९५**१**०। कलापचन्द्रः ३८३४६, ३८३५३, ३९३३०।

कलापटीका ३८००१, ३८३४६। कलापदीपिका ४०२५६। कलापपरिशिष्टप्रबोधः ३८०१४। कलापसूत्रम् ३८०१८।

कलापसूत्रपाठः ३९४५५। कलापसूत्रव्याख्या ३८०१७। कल्पलताटीका ३८८९९। कविकल्पद्रुमः ३८२९४, ३८३३४, ३८४१३, ३८५६५,

४८६५९, ३८८५३, ३९३८३, ३९४६०, ३९६४७, ३९५६९, ३९५७२, ३९६५८, ४००३०। कविकल्पद्रमः (सटीकः) ३७९८५, ४०३४७। कविकल्पद्रुमटीका ३८५६६। कविरहस्यधातुच्याख्या ३९०१४।

कातन्त्रम् ३८३६२, ३८५२२, ३९५८५ । कातन्त्रम् (सवृत्तिकम्) ३८५६१-३८५६४। कातन्त्रकौमुदी ३८५०२।

कातन्त्रकोडपत्रसङ्ग्रहः ३९५७८। कातन्त्रपरिशिष्टम् ३८३२६, ३८३५८।

कातन्त्रपरिशिष्टवृत्तिः ३८०६७, ३८१**१**२, ३९२१३ । कातन्त्रपरिशिष्टसूत्रम् ३८४१०, ३९६७२, ३९६७६।

कातन्त्रवृत्तिः ३८२७७, ३८३५४, ३८३५९, ३८४९४, ३९११७, ३९२०९–३९२११, ३९३३२, ३९३६१, ३९४५८, ४०३४४।

कातन्त्रवृत्तिः (सटीका) ३८३५१, ३९४२४ ।

कातन्त्रवृत्तिटीका ३७९**१**७, ३९२०६, ३९३२**९,** ३९४५७।

कातन्त्रवृत्तिपिक्षिका ३८३२६, ३८३२६, ३८३५७, ३८४**११**, ३९२१४, ३९२**१**५, ३९३३३, ३९३३६,

३९३६३, ३९५८६।

३७९५६,

३६५५६।

३९६६५, ३९८८१, ३९८८२, ३९८९२।

कातन्त्रवृत्तिविवरणम् ३९३३४, ३९३३५।

244. 451 (11.27.2.1.1. 5254.0) 62564.1

कातन्त्रवृत्तिविवरणपश्चिका

३८०४९, ३८०७८, ३८९०८, ३८२७८, ३८९७४, ३८८६९,

३८०४७-

कातन्त्रसूत्रम् ३८१६६, ३८२९३, ३८३२०, ३८३२७, ३३३३०, ३८४१८, ३८९२०, ३९३४१,

कातन्त्रसूत्रं (सष्टिक्तिम्) ३८२८५, ३८३५६, ३८४१२, ३९७६२।

कातन्त्रसूत्रयृत्तिः ३९९६८, ३९६७०, ३९६७५, ३९६७८, ३९६८०, ३९६९६,

३९८३१, ३९८३६, ३९८४६, ३९८४८, ३९८९४, ३९८८३,

४००३१।

कातन्त्रसूत्रज्ञात्त्त्वयाख्या ४०२५६। कातन्त्रसूत्राणि ३९८४४।

कामघेतुः ३७९८५।

कारकप्रह: ३८४६५।

कारकचकम् ३८१६७, ३९५५९, ४०२६६।

कारकचिन्द्रका ३८६७८।

कारकतत्त्वम् ३८३७३, ३८४६६, ३८४९७, ३९४७९। कारकिंक्वियः ३८३४३,३८३७४, ३८३७५, ३८५००।

कारकवर्णनं (सटीकम्) ३८४६७।

.....

कारकवादः ३९४१५।

कारकविचारः ३८४१२, ३९२९०। कारकादिविचारः ३७९२८।

कारकादिविचारः (सन्याख्यः) ३९९६७।

कारिका ३९२१९।

कारिकाविवेचनं (सन्याख्योदाहरणम्) ३८७३९।

कारिकावृत्तिः ३९७००।

काव्यकामघेनुवृत्तिः ३८३६५।

काशिका ३७९२६, ३७९९०, ३८०९९, ३८२८६, ३८२८९, ३८३१७, ३८४२०, ३८६१९,

२०८९६, ३९३९३, ३९३६९, ४००३९, ४०२२४।

काशिका (सटीका) ३८०५६।

```
काशिकाटीका ३९१४६।
```

काशिकाविवरणपञ्जिका ३८११५-३८११९,३३२८५, ३८५८६,३८८५०,३९७२०।

काशिकावृत्तिः ३८१२०, ३८१२२ - ३८३४४, ३८३८६, ३८५८७, ३८६७६,

काशिकावृत्तिटीका ३८७७३—३८०७६।

३७६७७ |

काशिकाव्याख्या ३७९२७।

काशिकासारवृत्तिः ४०३४४।

किरीटः ३८४७०, ३८९१६।

क्रियाकलापः ३९४८१, ३९७१७ ।

कुञ्जिका ३७९६२, ३७९८२, ३९२३१, ३९४८४।

कौमुदीविलासः ३९२८६।

कोडपत्रम् ३८३७७, ३८५३८, ३८८४१, ३८८६२, ३८९०७, ३८९७४, ३८९८१, ४०१२५, ४०१५२, ४०१५७, ४०३३७, ४०३८०, ४०४०८, ४०४३९—४०४४१।

खण्डितपत्राणि ३७९४३।

गजसूत्रविचारः ३९३९४।

गणपाठ: ३७९३१, ३७९४०, ३७९९२, ३८०४१, ३८०७२ ३८३३३, ३८५६७, ३८७००, ३९२८४, ३९२८५, ३९३१९, ३९३७८, ३९४२५, ३९८११, ४०१०१।

गणपाठः (सटिप्पणः) ३९६५५।

गणरत्नम् ३९८१२।

गणरत्नमहोद्धिः ३८४९५, ३८८५२।

गणरलवृत्तिः ३९५८१।

गदा ३८२०३, ३८६०८, ३०६४७, ३८६४९, ३८७३६, ३९१५१, ३९१५२, ३९३५३, ३९५००, ३९६५१। गवाक्शब्दव्याख्या ४०१९९।

गीर्वाणमञ्जरी ३९१४०।

गोपालकारिका सवृत्तिः ३९४६३।

चङ्गकारिका ३९१२६।

चन्द्रकला ३८०१३, ३८४३७।

चन्द्रकीर्तिः ३९६८९।

चन्द्रिकाधातुपाठः ३९५४६।

चारुचारणचातुरी ३८२६१, ३८६०३।

चित्प्रभा ३८६९४।

चिद्स्थिमाला ३७९९४,३८५४३,३९०३६,३९६२०, ४०२२७।

"जनपदशन्दात्चत्रियादन्" इतिसृत्रार्थविचारः ३९०६६

ज्ञापकसमुचयः ३८६९९, ४०१४९, ४०१५९।

ज्ञापकसमुचयटीका ४०१५८।

टिड्ढाणिवितिसुत्रशङ्कासमाधानम् ३८८५१ ।

टीकामन्थविशेप: ३८८०९, ३९१४८।

णेरणावितिस्त्रव्याख्या ३९९०४।

णेरणावितिसुत्रच्याख्यानम् ३९४७८।

णेरणौयत्कर्मेत्यादिषुत्रार्थसिद्धिः ३८८५०।

तत्त्वदीपिका ३८५७९, ३९५५२, ४०००९।

तत्त्ववोधिनी ३७९९८, ३८०४२, ३८०८८, ३८०९१, ३८१३०, ३८१३१, ३८१६९, ३८१८१,

३८२०७, ३८२६७, ३८२७०, ३८२७३,

३८३१६, ३८५०७, ३८७७९, ३८९२६, ३८९२७, ३८९३६, ३८९६४, ३८९६७-

३८९६९, ३९१३२, ३९१३७, ३९१९१,

३९२८१-३९२८३, ३९२९८ - ३९३००,

३९३०५, ३९३४४, ३९५०५, ३९५०६,

३९६४०, ३९६४३, ३९७६०, ३९७६३, ३९८१३–३९८**१**५, ३९८२९, ३९८३०, ३९८३२, ३९८५७, ३९८७४, ३९८७५, ३९९७६, ३९९७७, ३९९७९, ४००१०, ४००१६, ४००३८, ४०२४०, ४०३३९।

तत्त्वविमर्शिनी ३८७३८।

तस्त्रविवरणी ३८९०८।

तन्त्रप्रदीप: ३८११४।

तर्भचन्द्रिका ३८३७८, ३८६९८, ३९२८०, ३९२८८,

३९२८९, ३९४३२, ३९७६२।

तिवादिवृत्तिः ३९११९।

वृतोयादिषु भाषितेतिसूत्रार्थविचारः ३८८४९।

त्रिपथमा ३८२०५, ३८६५०, ३८८८५, ३९३०८, ३९३५२, ३९६५२, ४००१३।

रवतल्वादार्थः ३८५८८।

द्रपेण: ३९४९८।

दशगणकारिकामतम् ३८६९७।

दशलकारकारिका ४०४१३।

दशलकारसारमञ्जरी ४००८०।

दीपव्याकरणम् ३९११९।

धातुकोशः ३८८४२।

घातुचन्द्रिका ४०३५७।

घातुदीपिका ३८५६६।

धातुपरिच्छेदः ३९५८३।

भातुपाठः ३७९५३, ३८०१६, ३८०४०, ३८०४३, ३८०९०, ३८१७४, ३८२६०, ३८२९६, ३८३२३. ३८३२४, ६८३४५, ३८३६७, ३८३६८, ३८४९४, ३८५६८, ३८७४४, ३८८४७, ३८८४८, ३८९०९, ३८९१०, ३९३२१, ३९३२७, ३९३४६, ३९३९१, ३९४०१, ३९५४१, ३९६६३, ३९६९०, ३९८१६, ३९८८०, ३९९१५, ४००३९, ४००९१, ४०२२६, ४०२९३, ४०३३६,

धातुपाठः (सटीकः) ३७६८९।

धातुभेदः (सप्रयोगः) ३९५८२।

धातुरत्नमञ्जरी ३८०३३, ३८९११; ३८९१२।

भातुरूपावली ३८०४६, ३८०५९, ३८०४७, ३८०८५-३८०८७, ३८०९२-३८०९४, ३८१८०, ३८२९५, ३८२९७, ३८३१०, ३८५२६, ३८८४४-३८८४६, ३८९०६, ३८९१३, ३८९१५, ३९७५६, ३९८४५, ४०२३७, ४०२३८, ४०३१२।

घातुलक्षणम् ३९६९४।

धातुवृत्तिः ३८०६०, ३८०६१, ३८११३, ३८१९७, ३८१९८,३८९८४,३८९८५,३८८९,३८८९६(क), ३९३८६, ३९४०४,३९४०५,३९५६१, ३९६७४,३९९४२,४०३९५।

धातुवृत्तिव्याख्या ३८६५४।

धातुवृत्यनुक्रमणिका ३९९६३।

धातुसङ्ग्रहः ४०३५६।

धातोस्तन्निमित्तस्यैवेतिसूत्रविचारः ३८५२३,४०३६४।

धात्वर्थनिपातार्थनिर्णयः ३९१४५।

निन्किश्दरकारिका (सटीका) ३८९८९, ३८९८८, ३९६१८।

नन्दिकेश्वरकारिका (सन्याख्या) ३८७३८।

नपदान्तसूत्रकोडपत्रम् ३८५९०।

नागेशोक्तिप्रकाशिका ४०२९०।

नाजानन्तर्ये इतिपरिभाषाविचारः ३९८६२ ।

३९१४३, ३९१४४, ३९२१६, ३९३१३, ∫ नामिसूत्रादिकोडपत्रम् ३८६०४।

30606

निपातस्वविचारः ३९८६१।

निर्धारणपष्ठीविचारः ३८१४६।

न्यायार्थमञ्जूषा ३९४०८।

न्यासः ३८११९, ३८५८६, ३८८५५, ३६१४६।

पदचन्द्रिकावृत्तिः ३७९५९,३९१४७।

पद्मञ्जरी ३७९२७, ३७५९८, ३८०५६, ३८५९१, ३८६०५, ३८७७३ - ३८७७६, ३९५४९,

800091

पद्मञ्जरीकुसुमविकासः ३८१७०।

परमलघुमञ्जूपा ३८५९२।

परिभाषा (कातन्त्रम्) ३९८४४।

परिभाषापाठः ३७९७०, ३८२४०, ३८२५८, ३८२५९,

३८३६६, ३८६५१, ३८८३८ - ३८८४०,

३९०३१, ३९०३२, ३९२७२, ३९३२७,

३९३२८, ३९३७७, ३९३७९, ३९४९६,

४००६४, ४०१०२ ।

परिभाषाप्रदीपार्चिः ३८४७२, ३८५९३, ३८६९६, ३८७७२, ४०१०९।

परिभाषाभास्करः ३७९७१, ३८५९४, ३८५९५,

> ३८६९५, ३९३५४, ३९३९९,

३९६०६।

परिभाषामणिमाला ३८३७९, ३८५०३, ४०३१३।

परिभाषार्थप्रदीपः ४०२०८।

परिभापार्थमञ्जरी ३८५९७, ३९०२५, ३९०२८,

३९१५३, ३९९०३।

परिभापार्थसङ्ब्रहः ३८७७७।

परिभाषार्थोत्तंसः ३८८३७।

परिभाषावली ३८५०४।

परिभापाविवृतिच्याख्या ३८३८१,३८३८२,४०२८९।

परिभाषावृत्तिः ३८९६९,३८७९३,३८८३६।

परिभापाशिरोमणि: ३८६०६।

परिभाषासङ्ग्रहः ४०२०९, ४०३५०।

परिभाषासूत्रम् ३९६८६।

परिभपेन्दुचन्द्रिका ३८३८३, ३८५९६।

परिभाषेन्दुशेखरः ३७९५५, ३७९७२,

३८०५७,

३८१७१. ३८२१३.

३८२५७, ३८३११, ३८३१९, ३८६४४, ३८८३४,

३८८३५,

३९०२९, ३९०३०, ३९१४९, ३९**१**५०, ३९४८७, ३९६३६,

३९६४६. ३९६५६. ३९७३८,

३९७४७, ३९८०४, ३९८१७,

३९८१८, ३९९७५, ३९९८७,

४००१४, ४०२८० 199508

परिभाषेन्दुशेखरः (सिटप्पणः) ३९४९५, ३९९८५,

38868 1

परिभाषेन्दुज्ञेखरः (सटीकः) ३८२०३, ३८४७१,

३८६९४, ३८७३६, ३९५०० ।

परिभाषेन्दु दोखरः (सविवृत्तिः) ३९१५१।

परिभाषेन्द्रशेखरकाशिका ३८२०६।

परिभापेन्दुशेखरकोडपत्रम् ४०१३१-४०१४२, ४०१४८, ४०१४९1

परिभाषेन्दुशेखरगदा ३९६२५,३९९६९।

परिभाषेन्दुरोखरचन्द्रिका ३८७७०, ३८७७१,

४०३०५।

परिभाषेन्दुशेखरदिप्पणम् ४०२८१।

परिभापेन्दुशेखरटिप्पणी ३८६४५, ४०२५७।

परिभाषेन्दुशेखरटीया ३७९३०, ३८०८३, ३८१३९, ३८२०४, ३८२०५ ३८३८०परिभाषेन्दुशेखरटीका

३८३८०-३८३८३, ३८४२७, ३८४२८, ३८४४९, ३८४६९, ३८५२४, ३८६०७ - ३८६०९, ३८६४६, ३८६४७, ३८६४९, ३७६९८, ३८६९९, ३८६९६, ३८७३७, ३८७६९, ३८८३३, ३८८७९-३८८८४, ३९०२६, ३९१५२, ३९१५३, ३९१९०, ३९३५२, ३९३५३, ३९६२३, ३९६२४, ३९६५१, ३९६५२, ३९७६४, ३९५७९, ३९८५९, ३९८६५, ३९९३९, ३९९५०, ३९९५१, ४००१३, ४००६२, ४०१०५, ४०१४६, ४०१४७, ५०१५१, ४०१५५, ४०२२४, ४०३६५, ४०३८३, ४०४२०,

४०४२७, ४०४४५।

परिभापेन्दुशेखरत्रिपथमा ३९७८६। परिभापेन्दुशेखरत्रिपथमाच्याख्या ३८४२६।

परिभाषेन्द्वशेखरदोषोद्धारः ३८६१०, ३८६४८, ३९८६९, ३९९०१, ४०२२३, ४०४०९।

परिभाषेन्द्वज्ञेखरविवृतिः ३९०२४, ३९०२७ । परिभाषेन्द्वज्ञेखरज्ञिरोमणिः ३८९१६ ।

परिभापेन्दुशेखरहैमवती ३८४५५।

परिशिष्टसूत्रम् (कातन्त्रम्) ३९८४४।

परिष्कार: ४०१४३।

परीक्षा (वैयाकरणभूपगसारटीका) ३९४९०।

पाणिनिस्त्रं (सटीकम्) ४००८६, ४०४१०।

पाणिनिस्त्रपाठः ४००११।

पाणिनिसूत्रवृत्तिः ३६५११।

पाणिनिसूत्रवृत्त्यर्थसङ्ग्रहः ३८७९२।

पाणिनिसूत्रव्याख्या ३८८७८, ३८९२३, ४०२४४ । पाणिनिसूत्रसूची ३९५०७ ।

पाणिनीयवाद्नक्षत्रमाला ३८४२५।

पाद्मव्याकरणम् ३९३३१।

पारसीकप्रकाशः ४००४७, ४०३२६, ४०३३५, ४०४०२।

पूर्वपक्षसमाधिसङ्ग्रहः ३८८०९।

पूर्वेपस्रावितः ३९१५४, ४००५६, ४०३८७ ।

पूर्वेपक्षावली ३८१६१,३९८१९।

प्रकीर्णपत्राणि ४००२८, ४००२२, ४०१४४, ४०४१९, ४०४३० ।

प्रकीर्णपल्लवः ३९८९५।

प्रकीर्णप्रकाशः ३८६५२।

प्रक्तियाकौमुदी ३७९४४,३८०६२,३८१२४,३८१२५, ३८१२७,३८१४९,३८२९,३८२१४,

३८२३४,३८३३२,३८३६१,३८४४३,

३८४४४, ३८६११-३८६१४, ३८७३४, ३८७३५, ३८७४७, ३८८७७, ३९०२०,

३९०२२,३९०२३,३९०४९,३९३१६, ३९४००,३९५९०,३९६६२,४००३६।

प्रिक्तियाकौसुदी (सटीका) ३७९४५; ३७९४६।

प्रक्रियाकौमुदी (सन्याख्या) ३९८७९।

प्रक्रियाकौमुदीटीका ३९१५५, ३९७२३।

प्रक्रियाकौमुदीप्रसादः ३७९४८, ३०९८०, ३८००४,

३८१२६, ३८२१६, ३८४२४, इ८८०३, ३९७२४।

प्रक्रियाकौमुदीव्याख्या ३८४५६।

प्रक्रियादोषसङ्ग्रहः ३८६५६।

प्रक्रियाप्रकाशः ४०१६१।

प्रिक्तयान्याकृतिः ३८६१६ । प्रतिपिद्धार्थोयमितिभाष्यिवचारः ३९४८० । प्रत्ययलोपे प्रत्ययलक्षणिति सूत्रविचारः ३८६५३ । प्रत्ययम्रहणे यस्मादितिपरिभाषाविचारः ३९३५१ । प्रत्याख्यानसङ्महः ३८४२३,३९८२० ।

प्रत्याहारमण्डनम् ३९९४१ । प्रथमाविभक्तयर्थेविमर्शः ४००९९ ।

प्रदीपः ३८१९२, ३९२२२, ३९२२३।

प्रदीपन्याख्या ३८४७४।

प्रवोधचन्द्रिका ३०९२५,३०९८८,३८२३८,३८२८४, ३८२९०,३८४२२,३८६८६,३८६१७, ३८८०४,३८९२८,३९०००,३९३६०, ३९५६२,३९६६४,३९८२१,३९८३७, ३९८३८,३९९६४,४००१२,४००६६, ४०३६७।

प्रयोगमुखम् ३८८०२। प्रयोगमुखः ४०२७३।

प्रयोगमुख्यसारः ४००७४, ४०३७१।

प्रयोगविचारः ३९२९९।

प्रयोगविधिः ३८८३२, ३९११२, ३९११३।

प्रयोगिववेकसङ्ग्रहः ३८५०**१**, ३८९२९, ३८९३०, ३९९७१।

प्रयोगसारः ३७९८९, ३९२१७, ३९२९३।

प्रसिद्धपद्वोधः ३९३३८।

प्राकृतकारिका ३९२०५।

प्राकृतकौसुदी ३८४९६।

प्राकृतचन्द्रिका ३८६८४, ३८८२८, ३९२०५ ।

प्राकृतप्रकाराः ४०३३२, ४०३३३ ।

प्राक्तप्रकाशः (सवृत्तिकः) ३८७८९, ३८७९०, ३८९१९, ३९४६४, ३९४६८, ४०२६०, ४०३२५।

प्राकृतवृत्तिः ३८६८२, ३८६८३।

प्राकृतसञ्जीवनी ३८८२७, ४०२६९।

प्रावृतसूत्रम् ३८९१८।

प्रातिपदिकान्तेतिसूत्रविचारः ३८६१८।

प्रातिपदिकार्थसूत्रविचारः ३९००१।

प्रौढमनोरमा ३७९३६, ३७९६६, ३८०७५, ३८२००, ३८२०२, ३८२२१, ३८२८२, ३८२८३, ३८३०६, ३८३०७, ३८३१८, ३८३६९,

> ३८३८७-३८३८९, ३८४०४, ३८४६६, ३८६५६, ३८६६०-३८६६३, ३८६६६, ३८७२७, ३८७७८, ३८८०७, ३८९३२-

३८९३५, ३८९३७, ३८९३८, ३९००२-३९००५, ३९०९३, ३९१०९, ३९१८९, ३९२२९, ३९३६६, ३९३९६, ३९३९७,

३९४५९, ३९४६६, ३९४७१,३९६१६, ३९६४९, ३९७४८ - ३९७५१, ३९७५८,

३९७९१, ३९७९४, ३९८०२, ३९८२३-३९८२५, ३९८५०, ३९८७६, ३९८८९= ३९८८१, ३९९६०, ३९९८०, ३९९८२-

४०००८, ४००६५, ४००६८,४००७९, ४००८०, ४००८३,४०११२, ४०१२१, ४०१२६, ४०२७७, ४०३०० - ४०३०२,

३९९८४, ३९९८९, ३९९९६, ३९९९६,

४०३२३, ४०३२८, ४८३६६, ४८३६८, ४०३७०, ४०३८१, ४०३९०।

प्रौढमनोरमा (सटीका) ३८९४१,३८९४६,३९७३९, ३९७९४, ४०३८३।

श्रौढमनोरमा (सञ्चव्दरत्ना) ३८२६६, ३८८४३, ३८९५१,३८९५२।

प्रौढमनोरमाकुचमर्दनम् ३८९३९,३९८७०,३९९८१।

३८३४०, ३८३४१, ३८४७८,

प्रौढमनोरमाखण्डनम ३८९५० । **प्रोहमनोरमाटीका** ३८४१९, ३८६८१, ३८८११, ३८९४०, ३८९४२-३८९४४, ३९७३७, ४००७०, ४०३९१, 80883 1 प्रौहर्म**नोरमा**ठ्याख्या ३७९६७ ।

श्रीढमनोरमाव्याख्यानम् ३८९४५।

फाक्किककार्थप्रकाशः ३:१५३।

फिट्सुत्राणि ३९५४८, ४०३७८।

फिटसुत्राणि (सवृत्तिकानि) ३९४४०।

बहुवचने भल्येदितिस्त्रविचारः ३९००६। बालकौमुदी ३९१५६।

बालबोधः ३९८२६।

बालबोधिनी ३९५५।

वृहच्छब्दुरस्तम् ३७९९५, ३८००६, ३८६८१, 1 88898

भावप्रकाशिका ४०२११।

भावप्रदीप: ३९४८२ ।

भाषावृत्तिः ३८२४४, ३८२४५, ३८२४७,३८२५८, ३९२५५, ३८२६२, ३८३३१, ३८३४८, ३८४८९, ३९६९७, ४००२१।

भाषावृत्त्यर्थविवृतिः ३८००१, ३८२४६, ३८२४८, ३८३२९, ३८२५१ - ३८२५४. ३८४५७ - ३८४६०. ३९१५९,

३९१६०, ३९२६०, ४००२८।

भौरवी ३८०८३, ३८४७१, ३९९५८।

मध्यमनोरमा ३७९८६, ३८३६३, ३८३९०।

मध्यसिद्धान्तकौमुदी ३८०३६ - ३८०३९, ३८१३८, ३८१५६, ३८१८७, ३८१९९, ३८२११, ३८२३५, ३८३१३,

मध्यसिद्धान्तकौमुदी ३८४९१, ३८४९२, ३८५२०, ३८८००, ३८९४८, ३८९४९. ३९०५२ - ३९०५५. ३९२१८, ३९३१८, ३९३२२, ३९३२६, ३९४०२, ३९६२९, ३९६३७, ३९६३८, ३९७४३, ३९७४६, ३९७५५, ३९९०७ - ३९९११, ३९९२९, ३९९३०, ३९९४३, ३९९४६, ३९९४९, ३९९५९, ४००४६, ४०१११, ४०२५५, ४०२६२, ४०२६३, ४०३४०।

मध्यसिद्धान्तकौमुदी (सटिप्पणा) ४०३३१। मध्यसिद्धान्तकौमुदी (सटीका) ३९४८४। मध्यसिद्धान्तकीमदीटीका ३८०३४, ३८३९०।

मध्यसिद्धान्तकौमदीच्याख्या ३७९८६।

मध्यसिद्धान्तकौमुदीविवृत्तिः ३८४२०।

मनोरमा ४०२६०। मनोरमाखण्डनम् ३८७५०, ३८०५८, ४०३४२ ।

मनोहरा ३८९६६।

महाभाष्यम् ३८६२०, ३८६२१, ३८७५९ - ३८७६४, ३८९५६, ३८९५७, ३९०७१, ३९४४२, ३९४५१, ३९६११, ४००६९, ४०११४, ४०११५, ४०२८३, ४०२८७, ४०२८८, 303561

808861 महाभाष्यं (सप्रदीपम्) ३८०१९-३८०२१, ३८३९१,

महाभाष्यं (सटीकम्) ३७९३७, ३८१९२, ३९२२२,

३८३९२, ३८७९९, ३८९५३-ॱ३७९५६,३८९७३,३९०६९, ३९०७०, ३९३७५, ३९४४६,

> ३९४४७, ३९४७०, ३९५२४. ३९६०२,३९६०३,४०२८४-४०२८६,४०३७२।

३९२२३, ४०११३, ४०११६-

```
सुरधबोधटीका ३८०६६,३८०६६,३८३६०,३८३६२,
महाभाष्यं (सप्रदीपविवरणम् ) ३८२३६।
                                                       ३८९०९, ३८९१७, ३८५१८, ३९३४०,
महाभाष्यं ( सप्रदीपोद्योतम् ) ३७९६४, ३८८१२,
                                                       ३९५७५, ३९६३०, ३९६५९, ३९६८१,
                        ३८९७१ ।
                                                       ३९६८२, ३९६८५,३९६९८।
महाभाष्यटीका
                       ३८४०१,
                                 ३८७६५
              ३८०१२,
                                          सुरधवोधपरिशिष्टम् ३९७०६,३९७०७।
              ३८५०५,
                       ४०२६७ ।
                                           मुग्धबोधसूत्रपाठः ३९५७३।
महाभाष्यप्रदीपः
                       ३८४०३,
                                 ३८६६६-
              ३७९७५,
                                           यङ्लुगन्तप्रक्रियाप्रकाशिका ३८७६७।
              ३८६७३,
                       ३९०६७,
                                 ३९०६८,
              ३९४९१,
                        ३९५९७ ।
                                           यङ्तुगन्तप्रयोगविचारः ३८१५९।
महाभाष्यप्रदीपप्रकाशः ३८६६९,३८७९८।
                                           यङ्कुगन्तरूपाणि ४०२८५ ।
महाभाष्यप्रदीपविवरणम् ३८०७३,
                                 ३८०७४.
                                           यदागमपरिभापाविचारः ३८९५८।
                    ३८४००,
                                 ३९६४५।
                                           यमचातुर्विध्यनिर्णयः ३८१४४। .
महाभाष्यप्रदीपोद्योतः
                  ३७९८७, ३७९९७, ३८४७६,
                   ३८४७७, ३८६०२, ३८६६४,
                                           यमविचारः ४०३९७।
                  ३८६७४, ३८६७५, ३८६८७-
                                           येननाप्राप्त इतिपरिभाषाविचारः ३८९५९।
                   ३८६९०, ३८६९२, ३८६९३.
                   ३८९७०, ३८९७२, ३९२८७,
                                           योगविभागसूत्रसङ्ग्रहः ३८८०८।
                   ३९३५८, ३९३५९, ३९३८९,
                   ३९४३६, ३९४३७, ३९४७५-
                                           रत्नप्रकाशिका ३९४९४।
                   ३९४७७, ३९५९८, ३९५९९,
                                           रत्नाणेव: ३८०१०, ३८४५०, ३८५४०, ३९३०४।
                   ३९७१९, ३९७२२, ४०२९९,
                   ४०३२२, ४०३५१।
                                           रप्रत्याहारखण्डनम् ३८०६८, ३९४१८।
महाभाष्यप्रदीपोद्योतनम् ३८४७५,३८६९१।
                                           रप्रत्याहारमण्डनम् ३८१४७, ३८२१४, ३९१२८,
                                                           ३९४५०, ३९६१५ ।
महाभाष्यविवरणम् ३८५३३।
                                           राजादिवृत्तिः ३८६४३, ३९६९१।
महाभाष्यव्याख्या ४०३८२।
                                           रुचाद्गिणवृत्तिः ३८०९३।
महाभाष्यसिद्धान्तरत्नप्रकाशः ३८००२,
                                 ३८७६६,
                        ४०३१४,
                                  ८०३१५,
                                            रुचादिवृत्तिः ३८२१५।
                        ४०३१७,
                                  ४०३१९।
महाभाष्यसूक्तिरत्नाकरः
                     ३८०९५ ।
                                            रूपमालिका ३८१३६,३८१७६, ३८१९५, ३८६२७,
```

सुग्धनोध: ३८०२५, ३८०५४, ३८२५६, ३८४०६-३८४०९, ३८४१४, ३८४९०, ३८५१०, ३९३४२, ३९३४३, ३९९७०, ३९५७४,

३९३४२, ३९३४३, ३९९७०, ३९९७४, ३९९७६, ३९६६४, ३९६७३, ३९६८४,

३९८४७, ३९८४९, ४००२६, ४००२७, ४००२९, ४०३३४। रूपावतारः ३८१२३।

रूपसङ्ग्रहः ३८२२८।

३९४६७, ४०२६८।

रूपावली ३८२३९।

लघुचन्द्रिका ३९१२०।

```
लघुद्रपेण ३९४१०।
लघुभाष्यम् ३९५६०, ३९६१२।
लघुवैयाकरणभूषणसारः ३९९६४,३९९६५ ।
लघुशन्द्रतम् ३७९६७, ३८३०९, ३८४१७, ३८४१८,
           ३८७८४- ३८७८८, ३८७९६, ३९०९८,
           ३९१२५, ३९२३२, ३९२५९, ३९३९५,
           ३९४३१, ३९६३१, ३९६४७, ३९६४८,
           ३९७४०, ३९७५२, ३९७५३, ३९७७१,
           ३९७७२, ३९८०३, ३९८०५, ४०१७६,
           ४०१९६, ४०१९७, ४०२१०, ४०२२०,
           ४०२२२, ४०२३२, ४०२३३, ४०२३५,
            ४०२३६, ४०२५४, ४०२५८, ४०२५९,
            ४०२६४, ४०२७०, ४०२७६, ४०२७८,
            ४०२९१, ४०४१६।
लघुशब्द्रत्तटीका ४०४२४,४०४४३।
लघुशब्द्रत्नभावप्रकाशिका
                     ३९९१७,
                                ३९९५२-
                     388991
लघुशब्दरस्तव्याख्या ४०२११।
लघुशव्देन्दुचन्द्रिका ३८७५९।
लघुशब्देन्दुरोखरः
               ३७१३२,
                        ३७९३३, ३७९३५,
                ३७९५१, ३७९६८, ३८०५८,
                        ३८१८०, ३८१९४,
               ३८०७०,
                ३८२६४, ३८२७१, ३८५४१,
               ३८९४२,
                        ३८७८२,
                                ३८७८३,
                ३८८१८,
                        ३८८२०,
                                36000-
               ३९०१२,
                        ३९०४८,
                                ३९०९१,
               ३९०९२, ३९०९४ - ३९०९६,
                                ३९४०६,
               ३९२३३ - ३९२३७,
               ३९४१६, ३९४३०,
                                ३९४८६,
               ३९५८७,
                        ३९६४५,
                                ३९६५७,
               ३९७०९ - ३९७१२,
                                ३९७८५,
                ३९७९२,
                        ३९८०७,
                                 ३९८०८,
                ३९८६६, ३९९७२,
                                ३९९९०-
                ३९९९२,
                        ४००९५,
                                ४००९६,
```

लघुशब्देन्दुशेखरः 80808 80800 80805. ४०२१३ - ४०२१९, ४०२२१, ४०२३४, ४०२८२, ४०२५२. ४०३३०, ४०३०५, ४०३३९, ४०३७६, 80300 ૪૦३७३, ४०३८५ । लघुशब्देन्दुशेखरः (सटिप्पणः) ३९६४२। लघुशब्देन्दुशेखरकोडपत्रम् ४०१५०, ४०१५४ । लघुशन्देन्दुशेखरचन्द्रिका ४०२९८। लघुशब्देन्दुशेखरचूडामणि: ३९०७८। लघुश**ब्दे**न्दुशेखरच्योत्स्ना ३८८२२, ३९०३७, ३९०८२, ३९५२१, ३९६२२, ३९९०२। लघुशव्देन्दुशेखर**टीका** ३७९९४, ३८१३८, ३८५४३, ३८७३२, ३८७३३, ३८७९४, ३८७९९, ३८८२१, ३८८६८, ३८९३१, ३९०३६, ३९०५६, ३९०७९, ३९०८३, ३९०८४, ३९०८६ - ३९०९०, ३९१४२, ३९१७१, ३९१७५-३९१७८, ३९२४७, ३९३५०, ३९५८३, ३९५०२, ३९५०८, ३९५१४-३९५२०, ३९५२२, ३९६२०, ३९६२१, ३,९७८७, ३,९८६०, ३९८७७, ३९९४०, ४०००७, ४००६०, ४००६७, ४०११९, ४०१५६, ४०२७०, ४०२०५, ४०२१२, ४०२२८, ४०२५३, ४०२६५, ४०३१६, ४०४०७, ४०४३१-४०४३८, ४०४४२ । लघुशब्देन्दुशेखरदोषोद्धारः ३९०३५, ३९८५६, ३९७८९, ३९८६४। त्तघुशच्देन्दुशेखरप्रभा ३८४८३। लघुशव्देन्दुशेखरभावार्थदीपिका ३८४८२:।.

त्तघुशन्देन्दुशेखरिवमर्शः ४-२३०। त्तघुशन्देन्दुशेखरिवयृतिः ३८४९८, ३९०८५, ३९७८८ त्तघुशन्देन्दुशेखरिवयृतिसङ्महः ३८४८१।

त्तघुशन्देन्दुशेखरविषमपदवाम्यविवृति: ३८४८०। ताघुशन्देन्दुशेखरव्याख्या ३८४७९, ३८४८४-३८४५३,

39000, 39009, 39389,

४०२०४, ४०२०६, ४०२३१।

त्तघुसिद्धान्तकोमुदी ३८१०४, ३८१५०, ३८१५५, ३८१८३, ३८१८४, ३८**१**९६,

> ३८२७९, ३८३३३, ३८५२७, ३८५२८, ३८५७३, ३८७३**१**,

३८८०६, ३९०५७-३९०६५, ३९०९९, ३९१०२, ३९१७४,

३९५०९, ३९५४१, ३९७२६,

३९९२८, ३९९३१, ४०१६८, ४०२४९, ४०३३८।

लघुसिद्धान्तच्न्द्रिका ३९१२१-३९१२४।

छिता ∕३८५२१ ।

लिई वृत्तिः ३८२१०, ३८८९७।

लिङ्गानुशासनम् ३८२०६**,** ४००८१ ।

लिङ्गानुशासनम् (सवृत्तिकम्) ३९३८१ ।

लिङ्गानुशासनवृत्तिः ३८४०५।

लिटिघातोरनभ्यासस्येतिसूत्रविचारः ३९४०७।

वर्णात्कार इतिसूत्रविचारः ४०२०७।

वाक्यपदीयम् ३८०३०, ३८०३१, ३८५३४, ३८५४४-३८५४६, ३८८१६, ३९०७७।

वाक्यपदीयम् (सटीकम्) ३८०२२, २८०२९, ३८८१४, ३८८१९, ३८८१९, ३८८२४,

३८८२५, ३८८७३, ३९५९४, ४०१७९, ४०४०४।

वाक्यपदीयटीका ३८५४७, ३८५४८, ३८६५२।

वाक्यपदीयप्रमेयसङ्ग्रहः ३८१४५।

वाक्यप्रकाशसूत्रम् (सटिप्पणम्) ३९२६९।

वाक्यवाद्व्याख्या ३९५०३। *

वाक्यविचारः ३९०१३।

वादचूडामणिः ३९६१९।

वादनक्षत्रमाला ३९०७५, ३९०७६।

वादसुधाकरः ३८३८४, ३८३८५, ३८५२९, ३८६२२,

३९०१४, ३९३९८। वादिघटसुद्गरभाष्यम् ३९५६३।

वार्त्तिकम् ४०१००।

वार्त्तिकसङ्पहः ४०२०३, ४०३६३। विभक्त्यर्थनिर्णयः ३८९४९,३८९९०,३८६२३।

विभक्त्यर्थेनिरूपणम् ३९१७२, ३९४१३।

विभक्त्यर्थविचारः ३८४४६,३८५३५।

विभवत्यथेविवेचनम् ३९०१५।

विविधकोडपत्रसङ्ग्रहः ३९०७४।

विवृत्तिः ३९३५३।

विशेष्यत्वविशेषणत्वयोद्वैविध्यविचारः ३९५७९।

विषमा ३८४७९, ३८९८४।

वृत्तिदीपिका ३७९५६, ३८१११, ३८५३१, ३८५५१,

४०१८० ।

वृत्तिवादः ३७९४१।

वैद्कीप्रक्रिया ४०१६२।

वैयाकरणभूपणम् ३८६२४, ३८८७४।

वैयाकरणभूषणम् (सटीकम्) २३८५०९।

. .

वैयाकरणभूषणकारिका ३९६०५।

वैयाक्रण-

३७९३८, ३७९९३, ३८०६८, वैयाकरणभूपणसारः ३८२९१, ३८२९९, ३८३०५, ३८३१५, ३८४२१, ३८४४५, - ३८५३६, ३८५५२ - ३८५५७, ३८७४३, ३८७५३ - ३८७५५, ३९०१६, ३९०१८, ३८८६१. ३६१६९, ३९०७२. ३९०७३, ३९४४३, ३९२२१, ३९३३९, ३९५६४, ३९६२६, ३९५५८, ३६७८४, ३९६३५, ३९७८३, ३९९७८, ३९७९६, ३९८९३, 80086º ४०००५, 3000E. ४००८२, ४०१२७, ४०१८१, ४०२७४, ४०२७९, ४०२६७, 80363, ४०३९४, 130808 वैयाकरणभूषणसारः (सटीकः) ३९४९८ । वैयाकरणभूषणसारकान्तिः ३५१६८ । वैयाकरणभूपणसारटीका ३८६१९, ३८७४८, ३८७४९, ३८९८•, ३९१७०, ३९३५६, ३९४१७, ३९४९७, ३६६१७, ३९५९३, ४०३७५, 808881 वैयाकरणभूषणसारतत्त्वविवृत्तिः ३८७२०। वैयाकरणभूपणसारदर्पणः ३७९६०, ३८२८८, ३८८२३, ३८९१७, ३९०५०, ३९१६७। वैयाकरणभूषगसारपरीक्षा ३८३९९। वैयाकरणभूषगसारऌघुद्पेण: ३८७५१,३८७५२ । वैया क्ररणभूपणसारविवृत्तिः ३९०५१, ३९३५५ । वैयाकरणभूषणसारच्याख्या ३८०८४, ३८२८९ ३८५३०, ३९२७४। वैयाकरणमतोन्मज्जनम् ३८५०५। वैयाकरणमतोन्मज्जनम् (सटीकम्) ३९०१९ ।

वेयाकरणश**ब्द्र**स्नमाला ३८३९६, ३९५५४। ३७९४९, ३७९७३, ३७९८१, ३८०३२, सिद्धान्तकोमुदी ३८०५२, ३८०७९, ३८०८०, ३८११०, ३८१३३, ३८१३४, ३८१६२, ३८१७७, ३८१८२, ३८१८५, ३८१८८, ३८२०१, ३८२१२, ३८२२०, ३८२३०, ३८२३१, ३८२३७, ३८२८१, ३८२९२, ३८३०२, ३८३१५, ३८३९४, ३८३९८, ३८५१३-३८५१६, ३८५६०, ३८७२३-३८७२६, ३८७४६, ३८९९२-३८९९९, ३९०९७, ३९१००, ३९१०१, ३९१०३-३९१०८, ३९१३३-३९१३६, ३९१३८, ३९१३९, ३९१७९-३९१८३, ३९२२५, ३९२२६, ३९२३८-३९२४०, ३९२६२, ३९२६५, ३९२९१, ३९३०७, ३९३०९-३९३११, ३९३२३-३९३२६, ३९३७६, ३९४२९, ३९४३८, ३९४४९, ३९४६५, ३९४८८, वर्पर्व, वर्पवर, वर्पप्व, वर्पप्व, ३९६३२ ३९६३४, ३९६३९, ३९६४१, ३१६५३, ३९७१६, ३९७३२-१९७३७, ३९७४१,३९७४२, ३९७४४, ३९७४५, ३९७२९, ३९७६५, ३९७६६, ३६७६८-३९५७०, ३९७५४, ३९७५६, ३९७७७, ३९७८१, ३९७९७, ३९८०६, ३९८२८, ३९८३३, ३९८६७, ३९८६८, ३९८७१, ३९८७८, ३९८८५-३९८८८, ३९८९७-३९९००, ३९९०५, ३९९०६, ३९९१३, ३९९१४, ३९९३६ -३९९३८, ३९९४५, ३९९४७, ३९९४८, ३९९५६, ३९९५७, ३९९६८, ३९९७०, ३९९९७, ३९९९८-४०००२, ४००३४, ४००३६, ४००३७, ४००४५, ४००५०-४००५२, ४००५५, ४००५७, ४००७६, ४००७८, ४००८८-४००९०, ४००९८, ४०१०६-४०१०८, ४०१२०, ४०१२२, ४०१२३,४०१२९, ४०१३०, ४०१६३, ४०**१६**६, ४०**१**६७, ४०१६९, ४०१७०-४०१७२, ४०**१८५**-४०१८९, ४०१९१-४०१९३, ४०२०**१**, ४०२२५, ४०२३९, ४०२४१-४०२४३, ४०२४६-४०२४८, ४०२५०,४०२५१,

वै०सि०कौमुदी ४०२६१, ४०२७१, ४०२७२,४०२९४-४०२९६, ४०३०६-४०३०८, ४०३१०, ४०३१८, ४०३२०,४०३२१,४०३४३, ४०३७९, ४०३८४, ४०४०१।

वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी(सटीका) ३८२६९,३८३०८, ३८७८०,३८७८१, ३९३०५,४००९५,

वैःसि॰कौ॰टीका ३७९९८,३८०१०,३८०११,३८०३५, ३८०४२, ३८०८२, ३८०८८, ३८०९१,

80068 1

३८१२९-३८१३१, ३८१६०, ३८१८१, ३८२००, ३८२०२, ३८२०७, ३८२२१, ३८२६६, ३८२६७, ३८२७०, ३८२७३, ३८२८२, ३८३०६, ३८३०७, ३८३०९, ३८३१६, ३८३१८, ३८३८७-३८३८९, ३८४०४, ३८४५३, ३८५०७, ३८५४०, ३८५४१, ३८६०१, ३८७२७, ३४८०७, ३८८१८, ३८८२०, ३८८३१, ३८९२६-३८९२७, ३८९३२ - ३१९३८, ३८९६३-३८९६९, ३९००७ - ३९०१२, ३९०४८, ३९१०१, ३९१३० - ३९१३२, ३९१३७, ३९१८४-३९१८९, ३९१९१, ३९२२९, ३९२५८, ३९२६३, ३९२७६, ३९२८१-

३९२८३, ३९२९८ - ३९३००, ३९३०४, ३९३४४, ३९३६६, ३९३९६, ३९३९७, ३९४०६, ३९४१६, ३९४२७, ३९४४५,

३५४७१, ३९४८६, ३९५०१, ३९५०४-३९५०६, ३९५८७, ३९६६१, ३९६४०,

३९६४३, ३९६४५, ३९६४९, ३९५**५७**, ३९७०९ - ३९७१२ , ३९७४८ - ३९७५१,

३९७५८, ३९७६०, ३९७६३, ३९७७३, ३९७८५, ३९७९१, ३९७९२, ३९७९४, ३९८०२, ३९८०३, ३९८०७, ३९८०८,

३९८१३ - ३९५१५, ३९८२३, ३९८२५, ३९८२९, ३९८३०, ३९८३१, ३९८३२.

३९८५०, ३९८५७, ३९८६६, ३९८७४-३९८७६, ३९८८९ - ३९८९**१,** ३९९६०,

३९९७२, ३९९७६, ३९९७७, ३९९७९,

३९९८०, ३९९८२ - ३९९८४, ३९९८९-

वै०सि०कौ०टीका ३९९९२, ३९९९५, ३९९९६, ४०००८, ४००१०, ४००१५, ४००१६, ४००३८,

४००६५, ४००६८, ४००७९, ४००८३, ४०१०४, ४०११२, ४०१२१, ४०१२६, ४०१७७, ४०१७८, ४०१९४, ४०१९६, ४०२१३ - ४०२२१, ४०२३४, ४०२४०,

४०२५२, ४०२७७, ४०२८२, ४०३०४, ४०३२३, ४०३२८ - ४०३३०, ४०३३९, ४०३६६, ४०३६८, ४०३७०, ४०३७३,

४०३७६ - ४०३७७, ४०३८१, ४०३८५,

३९३४५, ३९४२६, ३९४५९,

109808

वै० सि० कौ० विलासः ३८९६५, ३९०४६, ३९२७९, ३९६००, ४०४००।

वैः सि० कौ० च्याख्या ३७९५४, ३८०७५, ३८४५०, ३८५१९, ३८५२०, ३८५५९, ३८६९९, ३८६६०-३८६६३, ३८७२८, ३९००२-३९००५, ३९२९७, ३९३०१-३९३०३,

४०३००,-४०३०२ । वै० सि० दीपिका ३९७८०।

वै० सि० परमलघुमञ्जूषा ३९०३४, ३९८००, ४०३४१,

वै० सि० मञ्जूषा ३८०५०, ३९८२७, ४०४११।

वै० सि० मञ्जूपाकला 🛮 ४०३५८, ४०३५९।

वै० सि० मञ्जूपाटिप्पणम् ४०३६० ।

वै० सि० मञ्जूषाच्याख्या ३८०५१।

वै० सि> माला ४०४०३ ।

वै० सि० रत्नाकरः ३८४४२।

वै॰ सि॰ लघुमञ्जूषा ३७९४२, ३७९८३, ३८०६४,

३८०६९, ३८३००, ३८७१०-३८७१२, ३८७९७, ३९२२७, ३९२३०, ३९३५७, ३९३८४,

३९४३४, ३९४६१, ३९४९२,

३९६१०, ३५७०१, ४०३८८ (

३९७२५, ३९७७८।

```
वै० सि० लघुमञ्जूषा ( सटीका ) ३७९६१, ३७९८२, | शब्दकौरतुभटीका
                          382381
```

वै० सि० लघुमञ्जूपाकुञ्जिका ३८७५६। वै० सि० लघुमञ्जूपाटीका ३७९६२, ३७९६३ ।

च्याकरणकोडपत्रम् ३८२६३, ३८५३७।

व्याकरणप्रन्थविशोपः ३७९४७, ३८६१६, ३८६२९,

३९४२१, ३९८:९, ४००१८, ४००१९, ४००२३, ४००३२, ४००३३, ४०१६४, ४०४१८,

४०४२१, ४०४२२, ४०४२३, ४०४२६, ४०४२८, ४०४२९।

व्याकरगढीकामनथविरोपः ३९११०, ३९७२७, ४०४२५ ।

च्याकरणदीपिका ३८८२६।

च्याख्यानप्रक्रिया ३८८९८।

च्युत्पत्तिवादकोडपत्रम् ३८५७१ !

शङ्करकविवरस्क्तम् ३९४२४।

शान्दकीस्तुभः ३७९३४, ३७९७६, ३८१९१,३८३०४, ३८३१२, ३८३३६, ३८५३२, ३८६८५,

> ३८७०२ - ३८७०९, ३८७१३-३८७१६, ३८८१३, ३८८६४, ३८८६५, ३८९८५-३८९९१, ३९१६१, ३९२५०-३९२५७, ३९२६१, ३९२६४, २९२६६-३९२६८,

> ३९४३९, ३९९२३, ३९६४४, ३९७२८-३९७३१, ३९९३४, ३९९८८, ३९९९३, ४०००३, ४०००४, ४००५९, ४००६३,

> ४००७७, ४००९७, ४०११०, ४०१९८, ४०३२४।

शब्दकौस्तुभः (सटिप्पणः) ३९३६४।

शब्दकौस्तुभः (सटीकः) ३८३९८।

शब्दकौस्तुभटिष्पणी ३८६२५।

३७९९**१**, ३८५३९, ३८७**१७-**३८७२०, ३८९७६ - ३८९७८, ३८९८२, ३९९८३; ३९०२१, ३९२४६, ३९२७५, ३९०४७,

३९२७७,

शब्दकौस्तुभतत्त्वम् ३८६२६।

शब्दकौरतुभतात्पर्यम् ३८९०३।

शच्दकौस्तुभतात्पर्यटीका ४००६१।

शब्दकौस्तुभप्रभा ३८३५७, ३८५३९, ३९१६२, ३९५४४, ३९५८८, ३९५८९, ३९५९१, ३९५९२, ३९८२२,

४०३४६ ।

शन्दकौस्तुभविषमन्याख्या ३८७२१।

शब्दकौरतुभवृत्तिः ३८९७९।

शन्दकौरतुभन्याख्या ३८१३५, ३८९८४, ३९५९० ।

शब्द्दीप: ३९३९०।

शन्द्रमाला ३९९१६ ।

शब्दमालिका ३८२४२।

श्वरत्तम् ३८१४२, ३८२६५, ३८२७२, ३८९४७, ३९०४४, ३९०४५, ३९१६३, ३९२२८, ३९४३३, ३९६६८, ३९७३९, ३९७५७, ३९७९६, ३९९९४, ४०३०३।

शब्दरस्तटीका ३८४३२, ३८४३४,३८८६३,३९४९४।

शब्द्रस्तप्रकाशिका ३८४३०, ३८४३१, ३९९५८।

शब्द्रस्तभावप्रकाशिका ३७९५०, ३७९५७, ३७९६५, ३८२०८, ३८४३३, ३८८०१, ३८९०२, ३९१५७, ३९१५८।

शब्दरत्नाकरः ३८३५१, ३९६९५।

शब्दरूपाणि ३९२४८, ३९२४९।

शब्दरूपावितः ३८२६८,३९१६४,३९१६५,३९१७३, ३९५२५-३९५२९,३९७९३,३९७९८, ३९८०१,३९९२९,४००५८,४०३७४, ४०३८६।

शब्दरूपावली ३८१९३, ३८२४२, ३८२४३,३८२४९, ३८३०३, ३८३३९, ३८४८७, ३८४८८, ३९०३८-३९०४३, ३९३४७, ३९४०९,

३९४११, २९४३६, ३९४४१, ३९५६**१,** ३९७६१, ३९९७४, ४००४८; ४००७१, ४०१६६, ४०१८२, ४०१८३, ४०३१**१**।

शब्दरूपावली (संदिप्पणा) ३९२२४।

शब्द्वचायम् ३९२७१। शब्द्विनायकः ३८४२९।

शब्दसारः ३९१६६।

शब्दशोभा ३९२७०, ३९६०१।

शब्दानुशासनं (सवृत्तिकम्) ३९११४।

शव्दानुशासनवृत्तिः ३८१०९।

शब्दार्थसारमञ्जरी ३८३४९, ३९३६९।

शब्देन्दुशेखरः ३८४४१।

श**ट्देन्दुरोखर**टीका ३८०१३, ३८४३६ - ३८४४०, ३८५७०, ३८६००, ३८६३०,

२८६२१, ३९३८७, ३९४९३।

शन्देन्दुशेखरदोपोद्धारः ३९३८८। शन्देन्दुशेखरन्याख्या ३८५९९।

शाङ्करी ३८६०७, ३९९५१।

शाब्द्बोधप्रक्रिया ३८८६६, ३८९०१।

शाब्दिकप्रक्रिया ३९९१६।

शाब्दिकाभरणम् ३९४२२ ।

शिक्षा ३९८४४।

शिरोमणि: ३८४५६, ३८४६९, ३८४७०।

शिशुवोधः ४०२७५।

शिष्यप्रवोधिका ४०१८४।

श्रीकृष्णलीलामृतम् ३९४२४।

श्रीसूक्तिरत्नाकरः ३८०९९। श्रेषरी ३९०८४।

इलोकयोजिनकोपायः ३९२७३।

पट्कारकम् ३९५८४।

पट्कारकम् (सटीकम्) ३८७९१। पट्कारकनिरूपणम् (सटिप्पणम्) ३९६०४।

पट्कारकपरिच्छेदः ३९४१५।

पट्कारकप्रक्रिया ३९२४९, ४०४०५ । पट्कारकविचारः ३८१०९ ।

पट्कारकविरचनम् ३८८७०। पट्कारकविवेचनम् ३८३७६।

पोडशकारिका (सटीका) ६८७२२ ।

संचिप्तसार: ३९९७७, ३९८९९, ४००२४, ४००२६। संचिप्तसार:(सटीक:) ३८०५९।

संक्षिप्रसार: (सवृत्तिक:) ३९६८३, ३९६९९।

र्रुचिप्तसारटीका ३८३२१,३८३२२। संक्षिप्तसारदीपिका ३९६९२।

संक्षिप्तसारवृत्तिविवरणम् ३९७०४।

संक्षिप्तसारवृत्तिविवरणक<u>ौर</u>ुदी ३९७०३ **।**

(संक्षिप्तसार टी॰टी॰टीका)

संस्कृतमञ्जरी ३९१४०।

सदस्थिमाला ४०२१२।

सभ्याभरणम् (सटीकम्)

सभ्याभरणम् (सटीकम्) ३९३९३, ३९४४८। समासकुसुमावली ३९५४३।

समासचक्रम् ३८१७९, ३८२९८, ३८३०१, ३८९११, ३८९१२, ३८८३२, ३८८६७, ३९१११-

३९११३, ३९२४२-३९२४४, ३९२९४-३९२९६, ३९३७३, ३९४८९, ३९५३०-

३९५३२, ३९५३४, ३९५३६, ३९७५४, ४००५३, ४००७२, ४०२९२ ।

समासचऋचूडामणिः ३९५३३।

समासचूडामणिः ३८४९३, ३९३८९्।

समासज्ञापकः १९६३७।

समासज्ञापकावली ३९७०५।

समासतत्त्वम् ३९३७३।

समासपादः (सटीकः) ३८५५८।

समासवादः ३८३६०, ३९३७४। समासविचारः ३९२७८।

VINITALIA ATTACA

समासविधिः ३९९३९।

समासविधियादः ३९८९४।

समासापावनापुः ४१०४०

समासादिविचारः ३७९२९।

सम्बन्धोद्योतः ३८७९३।

सम्बन्धोपदेशः ३९१२६, ३९१९२।

सरूपागामेकरोष इतिसूत्रविचारः ३९२४१। सर्वेमङ्गला ३८४४९।

सापेक्षवादः ३९६६०, ३९६६१, ३९६६६, ३९८५१।

सारसिद्धान्तकौमुदी ३८१५८, ३८४३५, ३८५७२,

३९३६७, ३९६१४, ३९६२८1

सारस्वतम् ३८००३, ३८०५३, ३८१३७, ३८१५२, ३८१५४, ३८१५७, ३८१६५, ३८१७२, ३८१७८, ३८१७९, ३८१९०, ३८२२२, सारस्वतम् ३८२२३, ३८२२६, ३८२२७, ३८२३३, ३८३३७, ३८३४२, ३८३४७, ३८४०२, ३८४७३, ३८५०८, ३८५७५ - ३८५७८,

३८६३२ - ३८६३६, ३८६४२, ३८६५७, ३८६५८, ३८७४१, ३९१९३ - ३९१९८, ३९२१२, ३९३१४, ३९३१७, ३९३६८,

३९५६६, ३९६०९, ३९८३४, ३९८४०-३९८४३, ३९९१२, ३९९२४, ३९९३२, ४००४०, ४००४१, ४०१२८, ४०१७३,

४०१७५, ४०३२७, ४०४१४।

साररवतम् (सटोकम्) ३८**१**८६, ३९२०८, ३९५५७, ४००४२, ४००४३ ।

सारस्वतम् (सभाष्यम्) ३९२०७।

सारस्वतिटप्पणम् ३९३१५ ।

सारस्वतचन्द्रिका ३८१८९ ।

सारस्वतदीका ३८१६३, ३८२१८, ३९६८९। सारस्वतदीपिका ३८१७३, ३८३४७।

सारस्वतप्रक्रिया ३८०६३, ३८०७६, ३८०९७, ३८०९८, ३८१०२, ३८१०३, ३८१०६, ३८१०७, १३८४९९, ३८९२१, ३९११५, ३९११६,

109898

सारस्वतभाष्यम् ३९९६३, ४०४१०।

सारस्वतलघुभाष्यम् ३८९०४।

सारस्वतरूपमाला ३९३४८।

सारस्वतप्रदीपिका ३७९३९।

सारस्वतविवृत्तिः ३७९७४।

सारस्वतवृत्तिः ३८१६४।

सारस्वतसूत्रपाठः ३८२१७, ३९३२०, ३९३७२।

साहित्यद्पेणटीका ३९४२४।

३८०९६, ३८१४०, ३८१८०, सिद्धान्तचन्द्रिका ३८२२९, ३८२३२, ३८२७५, ३८२८०, ३८६३८ - ३८६४१, ३८७४२, ३९१२७, ३९१९९-३९२०४, ३९२९२, ३९३७०, ३९४९९, ३९५६५, ३९७०८, ३९९२३, ४००४४, ४००८४, ४०२२९, ४०३४८, ४०४१२। सिद्धान्तचन्द्रिकावृत्तिः ३९२७८। सिद्धान्तचन्द्रिकाच्याख्या ३८५७९, ३९५५२ । सिद्धान्तपद्माकरः ३८४२६। ३७९९९, ३८०००, ३८०८२, सिद्धान्तरत्नाकरः ३९५९५ । सिद्धान्तसारः (सटीकः) ३९६०७, ३९६०८ । सिद्धान्तसुधानिधिः ३८०१२। सुपद्ममकरन्दः ३९६८७। सुपद्मव्याकरणम् ३८६३७, ३९४५२, ३९६७९, ३९६८८ ।

सुपद्मसूत्रपाठः ३९४५३।
सुत्रोधिनी ३७९५४, ३८०११, ३८१२९, ३८७२८,
३८८३१, ३८९६३, ३९१३०, ३९१३१,
३९२६०, ३९३०१-३९३०३, ३९३४६,
३९४४६, ३९४०१, ३९५०४, ३९७७३,
३९८३१, ३९९३६, ४००१६, ४०९९४,

सुक्तिरताकरः ३८९०५। सूत्रसप्तसती ३९६१३। स्थानिवत्सूत्रविचारः ४००९३, ४००९४। स्थानिवत्सूत्रार्थविचारः ३८८३०। स्थानेऽन्तरतम इतिसूत्रकोडपत्रम् ३८६२६। स्फोटचन्द्रिका ३७९६९,३८७२९,३८७३०,३८९६१, ३९४१९। स्फोटतत्त्वम् ३८९००। स्फोटतत्त्वनिरूपणम् ३९४२८। स्फोटनिरूपणम् ३८९६२ । स्कोटरलम् ३८२८७। स्फोटविचारः ३८१०१। स्यादिप्रक्रिया ३८८७१। स्वरप्रक्रिया ३८८७५। स्वरप्रक्रियाच्याख्या ३८८७६, ४००८७ । स्वरसिद्धान्तचन्द्रिका ३८४६८। स्वरितविवृतिः ३८८२९। स्वरितवृत्तिः ३८९२२ । हरिनामामृतव्याकरणम् ३८०८९ । "हलस्यम्" सूत्रविचारः ३८९६० । हलन्त्यमितिसूत्रार्थविचारः ४०३९६। हल्ङ्यादिसूत्रविचारः ३८१४८।

हेमवती ४०१४०, ४०१५१।

शुद्धिपत्रम्

| অগ্তুত্ত্ ম্ | शुद्धम् | क्रमसंख्या | स्तम्भ | |
|----------------------------------------|----------------------------------|----------------|------------|--|
| | टीकानाम कला ? | ३७९६१ | १२ | |
| × v3, v-? २ ९ | ७३, ७३-१२ ९ | ३७९९४ | Я | |
| १-२२९ | १-३, ६-१०४, १०४-१८१, १८३-२२५, | ३८००१ | 8 | |
| 1 4.444 | <i>₹७-</i> ₹ <i>₹</i> | | | |
| पू० | अपू० | 30008 | 8,8 | |
| ८८ -१ ०० | 25, 800 | ३८०६२ | 8 | |
| कीटद्षा | कीट दुष्टा | ३८०८५ | १३ | |
| X | श्रीसृक्तिरल्लाकर इति नामान्तरम् | ३८०९५ | १२ | |
| १ सं-पर्न | १ में पत्रं | ३८ १ १५ | १२ | |
| ' ३८ ३३ | ३८१३३ | ३८१३३ | 8 | |
| वै० सि० कौ० टीका | वै० सि० कौ० टी० टीका । | ३८२७२ | १२ | |
| अ०१-२ । | अ० १-२) " | ३८४६० | १२ | |
| शङ्करी | शाङ्करी | ४०३०६ | ર | |
| अख्यातकृद्नतप्रकरणम् । | आख्यातकृद्न्तप्रकरणे । | ३८६३९ | १२ | |
| वैदिकस्वरप्रकरणमात्रम् | " वैदिकस्वरप्रकरणमात्रम् | ३८६६१ | १२ | |
| *** 48-8.4 | ••• ५४-१०६ | ३८७४८ | 8 | |
| १ ५५ | १-५५ | १८७४९ | 8 | |
| 3 66 q | ३८८१६ | ३८८१६ | 8 | |
| हलन्तपुपुंहिङ्गान्ता | ह ळन्त पुंहिङ्गान्ता | ३८८२२ | १२ | |
| 3648 | 80238 | ३८८५४ | १ | |
| वं० सि॰ | चै <i>॰</i> सि॰'' | ३८८६३ | १२ | |
| 3<5<8 | ६८८९४ | <i>३८८९४</i> | 8 | |
| १-३, २-४ | २- ४ | ३८९७८ | 8 | |
| २ (गणनया) | ५ गणनया | <i>३८९७९</i> | 8 | |
| ' _र ''''२-३ <i>५</i> | ···२ ७-३ ५ | ३८१८८ | 8 | |
| ंटि॰ मराठीभाषायाम् | टो॰ मराठीभापायाम् | ३९२२४ | १ २ | |
| अष्टाध्यायीटीका ः | वै० सि० कौ० टी० टीका | ३९२४७ | १२ | |
| ं अष्टाध्यायीटीका | अप्टाध्यायीटी० टीका | ३९२७७ | १२ | |
| . 9009 | १८५५ | ३९३९१ | १० | |
| . १-१३९, १-१४८, | १-१४८, | ३ ९४ ७७ | 8 | |
| । टी० कुड्सिका | হী০ ক্তব্বিকা | ३९४८४ | १२ | |
| क्रज्योत्स्नाख्या | ब्योत्स्ना ख्या | ३९५२१ | १२ | |
| कर्मण्यणइतिस्त्रदीका | क्रमण्यणितिसूत्रटीका | ३९५८० | 3 | |
| वै० सि२ कौ० टी० टी० टीका | वै० सि० कौ० टी० टीका | ३९६२१ | १२ | |
| वै० सि० कौ० टी० टीका | वै॰ सि॰ कौ॰ टीका | ३९६४५ | १२ | |
| , , | 99 | ३९६५७ | १२ | |
| رب ج | 12 | ३९७०९ | १२ | |

"

"

;;

,,

98038

३९७१२

"

| अशुद्धम् | ग्र दम् | क्रमसंख्या | स्तम्भे |
|------------------------------|-------------------------------|------------|---------|
| ० सि० कौ० टी० टीका । | वै० सि० कौ० टी० टीका। | ३९७५७ | " |
| वै० सि० कौ० टी० टीका | वै० सि० कौ० टीका | ३५७८५ | ** |
| वैयाकरणसङ्घान्तपरमलघुमञ्जूषा | वैयाकरणसिद्धान्तपरमलघुमञ्जूपा | ३९८०० . | ર |
| वै० सि० कौ० टी० टीका | वै० सि० कौ० टीका | ३९८०७ | १२ |
| गौडमुख्ययोरित्यादि | गौणमुख्ययोरित्यादि | ४०१३२ | १२ |
| वै० सि० कौ० टी० टीका | वै० सि० कौ० टीका | ४०२१३ | १२ |
| " | " | ४०२३४ | १२ |
| ,, | ,, | ४०२५२ | १२ |
| ** | , | ४०२८२ | १२ |
| 2) | ,, | ४०३०४ | १२ |
| १-१६७ | १-६ ७ | ४०३४२ | 8 |